दशा फल विचार

योगिनी दशा, अष्टक वर्ग और गोचर फल

कृष्ण कुमार

दशा फल विचार

योगिनी दशा, अष्टक वर्ग और गोचर फल सहित

संकलन व संपादन :

कृष्ण कुमार

ज्योतिष विशारद

(सदस्य ज्योतिष संकाय दिल्ली चैप्टर–1)

एल्फा पब्लिकेशन

2640, रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली-110006

प्रकाशक :
अमृत जैन
एल्फा पब्लिकेशन
2640, रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली–110006
फोन : 23268053, 23275468

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

ISBN : 81-7948-016-X

संस्करण- 2021

मूल्य : 250-00

पुस्तक मिलने का स्थान:
पुस्तक भारती
भारतीय विद्या भवन
कस्तूरबा गाँधी मार्ग, नई दिल्ली–110001
फोन : 23381369

टाइपसैटिंग : मिलन कम्प्यूटर, 4487, रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली-6
Mobile : 9818891366

अपनी बात

विज्ञ पाठक भली भांति जानते हैं कि जन्म कुंडली में ग्रहों की, परस्पर दृष्टि–युति अथवा भावों में स्थिति, के कारण बनने वाले शुभ योग तत्सम्बंधी ग्रह दशा या भुक्ति (अन्तरदशा) काल में ही फल दिया करते हैं।

"राशि फल विचार" तथा "भाव फल विचार" के बाद ज्योतिष मित्रों, जिज्ञासु विद्यार्थीगण तथा बंधु–बांधवों ने "दशा फल विचार" पर लिखने का आग्रह किया।

इस विषय पर मेरे गुरु श्री महेन्द्र नाथ केदार, सुप्रसिद्व ज्यार्तिविद आदरणीय जगन्नाथ भसीन, श्री जैड. ए. अन्सारी की उत्कृष्ट रचनाएँ बाजार में उपलब्ध हैं। अतः इस विषय पर कुछ भी लिखने का, मैं साहस नहीं जुटा पाया।

मेरे अभिन्न मित्र डाक्टर सुरेन्द्र शास्त्री (जम्मू वाले), श्री संजय शास्त्री तथा श्री हरीश आहूजा का विचार था कि ज्योतिष शास्त्र तो समुद्र सरीखा है। इसमें गोता लगाने वाले को सुंदर बहुमूल्य मोती न मिलें–ये भला कब संभव है। अतः ये मानना कि शेष कुछ नहीं बचा, सभी कुछ समाप्त हो गया, सत्य के विपरीत बड़ी भ्रामक स्थिति है।

परस्पर विचार विमर्श के बाद निर्णय हुआ कि एक बहुत छोटा सा मात्र 100-120 पृष्ठ का संकलन बनाया जाए, जिसमें मात्र महत्त्वपूर्ण बातों की जानकारी क्रमबद्ध वैज्ञानिक पद्धति से प्रस्तुत की जाए। संकलित सामग्री को पाठक विभिन्न कुंडलियों में स्वयं जांच परख सकें तथा अपने विचार व अनुभव लेखक को बता सकें, इस के लिए भी पुस्तक का आकार छोटा रखना आवश्यक था।

इस पुस्तक में ग्रह दशा फल का संकलन, भाव कौतुहलम्, उत्तर कालामृत, जातक परिजात तथा सारावली जैसे मानक ग्रंथों से, मूल श्लोक सहित, किया गया है। योगिनी दशा के उपयोग पर श्री राजीव झांजी व श्री एन०के० शर्मा की पुस्तक निश्चय ही बेजोड़ है। वही योगिनी स्कंध की प्राण शक्ति है।

प्रायः ग्रह दशा का विचार करते समय ग्रह गोचर का भी ध्यान रखना पड़ता है। शुभ दशा तथा शुभ गोचर बहुधा अप्रत्याशित लाभ व मान वृद्धि दे दिया करते हैं। अतः "ग्रह गोचर फलम्" स्कन्ध का भी समावेश किया गया। अन्त में, अष्टकवर्ग के व्यावहारिक प्रयोग पर भी एक अध्याय जोड़ दिया गया है। इससे पुस्तक का आकार तो निश्चय ही बढ़ गया किन्तु शायद उससे भी अधिक इसकी उपयोगिता बढ़ी है।

मित्रों के आग्रह से योगिनी दशा को भी सम्मिलित किया गया तथा विषय को स्पष्ट करने के लिए कुछ व्यावहारिक कुंडलियों का भी उपयोग हुआ है। मुझे पूर्ण विश्वास है पाठक इस संकलन को उपयोगी पाएंगे तथा इस पुस्तक को स्नेह व सम्मान देकर मेरा मनोबल बढ़ाएंगे।

संत रैदास जयन्ती
24 फरवरी, 2005

विद्वानों का अनुरागी
कृष्ण कुमार
दूरभाष (011)25282850

बी–1/120 पश्चिम विहार
नई दिल्ली–110063

❊ ❊ ❊

कृतज्ञता ज्ञापन

ज्योतिष का पठन पाठन तथा प्रचार प्रसार, ऋषि ऋण से उऋण होने का श्रेष्ठ व सरल साधन है। भारत के प्राचीन दिव्यदृष्टा ऋषियों द्वारा अर्जित दैव विद्या की सुरक्षा व समृद्धि में संलग्न सभी महानुभावों का मैं हृदय से आभारी हूँ जिनके कारण आज भी ये दिव्य ज्योति, मानवमात्र के, जीवन को आलोकित कर रही है।

परम् आदरणीय डॉक्टर बी.वी. रमण, श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी (ज्योषमति के आदि संस्थापक) आचार्य मुकन्द दैवज्ञ कुछ ऐसे कीर्ति स्तंभ हैं जिनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम ही होगी।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद द्वारा आयोजित ज्योतिष प्रशिक्षण कार्यक्रम से जुड़े विद्वान श्री जे. एन शर्मा, डाक्टर ललिता गुप्ता, श्री आर्य भूषण शुक्ल, डाक्टर निर्मल जिन्दल, श्री के. रंगाचारी, श्री एम.एन. केदार, श्री राम लाल द्विवेदी, डॉक्टर गौड़, इंजीनियर रोहित वेदी, आचार्य एम.एम. जोशी, श्रीमती कुसुम वशिष्ठ निश्चय ही आदर व प्रशंसा के पात्र हैं, जिन्होंने ज्योतिष की दिव्य ज्योति से अनेक छात्रों के जीवन को सुखी व समृद्ध बनाया। मैं इन सभी विद्वानों का आभारी हूँ।

अपने मित्र व सहृदय पाठकों के स्नेह को भूल पाना मेरे लिए असंभव है। कदाचित यही तो मेरी लेखनी की प्राणशक्ति है। श्री अमृतलाल जैन, उनके सुपुत्र श्री देवेन्द्र कुमार जैन तथा उनके सहयोगी संपादन मंडल के सभी सदस्यों का मैं धन्यवाद करना चाहूँगा जिनके कृपापूर्ण सहयोग के बिना ये संकलन बनना असंभव था।

अन्त में उस नटखट चितचोर की बात करना जरूरी है। शायद एक वही तो हम सब के भीतर बैठ कर नित नये खेल किया करता है। कोई लेखक बनता है तो कोई प्रकाशक, कभी कोई पाठक बनता है तो कोई इस ज्ञान का उपभोक्ता...। सब कुछ बस वही तो है।

उस नटवरनागर की कृपा सदा सभी पर बनी रहे। सभी जन स्वस्थ व सुखी रहें, सम्मान व समृद्धि पाएं। इस प्रार्थना के साथ ज्योतिष प्रेमियों को यह कृति सादर समर्पित है।

ज्योतिष प्रेमियों का कृपाभिलाषी

कृष्ण कुमार

श्रीगणेशायनमः

एकदन्तो महाबुद्धिः सर्वज्ञो गणनायकः।
सर्वसिद्धि करश्चास्तु गौरीपुत्रो विनायक।।

मंगलाचरण

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहू केतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकराः भवन्तु।।

जो ब्रह्मा बनकर सृजन करता है, विष्णु के रूप में सभी का पालनहार है तथा महादेव बन संहार किया करता है, उसी के नियंत्रण में रहने वाले ग्रह सूर्य, चन्द्रमा, भूमि पुत्र मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु तथा केतु ये सभी ग्रह शान्ति प्रदान करने वाले हों। सभी के लिए कल्याणकारी हों।

सर्वे भवन्तु सुखिन : सभी जन सुखी हों

* * *

विषय सूची

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	दशा स्कंध	
अध्याय 1	**दशा फल विचार के कतिपय सूत्र** 1.2 शुभ फल 1.3 मंगल नीच नहीं 1.4 राहु या केतु भी उत्तम 1.5 त्रिकोणेश युक्त ग्रह दशा 1.6 धन लाभ दशा 1.7 पाप ग्रह शुभ युक्त या दृष्ट होने पर शुभ 1.8 दशा फल किस प्रकार 1.9 लाभेश दशा फल 1.10 शुभ अशुभ दशा फल 1.11 ग्रह दशा फल विचार (शंभु होरा प्रकाश मतानुसरेण) 1.12 दशा में भाव कारकत्व विचार 1.13 भावाधिपति दशा विचार 1.14 दशा भुक्तिनाथ का भाव और राशि में प्रभाव संबंध 1.15 दशानाथ और भुक्तिनाथ एक ही राशि में 1.16. दशा व अन्तर्दशानाथ परस्पर केंद्र व त्रिकोण भाव में होने पर शुभ व सुख-दायी 1.17 पाप ग्रह से सुख 1.18. नीच राशिस्थ या शत्रु क्षेत्री ग्रह की दशा 1.19 शीर्षोदय या पृष्ठोदय राशि में स्थित ग्रह की दशा 1.20 राहु केतु का दशा फल 1.21 ग्रह स्थिति से दशा फल (पूर्णा व रिक्ता दशाएँ) 1.22 ग्रहों के विषय व विचारणीय आयाम 1.23 मंतरेश्वर की फलदीपिका से 1.24 समीक्षा	**1-34**
अध्याय 2	**सूर्य दशा फलम्** 2.1 बली सूर्य से धन मान व यश प्राप्ति 2.2 सूर्य दशा का फल 2.3 सूर्य की शुभ दशा में राजा से लाभ व अधिकार प्राप्ति 2.4 अशुभ दशा में चोर तथा अग्नि भय 2.5 पांच स्थान के योग और सूर्य दशा फल 2.6 लग्नस्थ सूर्य दशा में राज्य लाभ 2.7 उच्चस्थ	**35-42**

सूर्य से पद प्रतिष्ठा का लाभ 2.8 शत्रुगृहगत सूर्य दशा में नेत्र या मुख रोग 2.9 नीचस्थ, त्रिक भाव में सूर्य से परदेस वास 2.10 फलदीपिका के अनुसार सूर्य राशि 2.11 भावगत सूर्यदशा विचार (सर्वार्थ चिंतामणि से) 2.12 **सूर्य की अन्तर्दशाएं** 1. सूर्य–सूर्य 2. सूर्य–चंद्र 3. सूर्य–मंगल 4.सूर्य–राहु 5. सूर्य–गुरु 6. सूर्य–शनि 7. सूर्य–बुध 8. सूर्य–केतु 9. सूर्य–शुक्र 2.13 विशेष फल।

अध्याय 3 **चंद्र दशा फलम्** **43-49**

3.1 चंद्रमा की दशा में राज कृपा तथा सज्जनों का स्नेह मिले 3.2 चंद्रमा की शुभ दशा में माता को सुख तथा धन और वाहन का सुख 3.3 शुभ चंद्रमा से बुद्धि व धैर्य प्राप्ति 3.4 चंद्रमा की अशुभ दशा, निद्रा, आलस्य या शोक संताप कारक 3.5 नीच रशि गत चन्द्र दशा में शोक संताप 3.6 पूर्ण चंद्र दशा में स्त्री सुख 3.7 चंद्र दशा में धन वैभव तथा स्त्री सुख 3.8 धन भावगत चंद्र दशा में धन व सुख 3.9 फलदीपिका के अनुसार 3.10 विभिन्न भावों में स्थित चंद्रमा की दशा 3.11 **चंद्रमा की अन्तर्दशाएं** 1. चंद्र–चंद्र 2. चंद्र–मंगल 3. चंद्रमा–राहु 4. चंद्रमा–गुरु 5. चंद्रमा–शनि 6. चंद्रमा–बुध 7. चंद्रमा–केतु 8. चंद्रमा–शुक्र 9. चंद्रमा–सूर्य 3.12 विशेष फल।

अध्याय 4 **मंगल दशा फलम्** **50-56**

4.1 मंगल की दशा में राजा, चोर, अग्नि तथा विष. से भय 4.2 मंगल की शुभ दशा में बुद्धि, पराक्रम से धन व यश लाभ 4.3 मंगल की शुभ दशा में सरकार, व्यापार भूमि या जुआ से लाभ 4.4 मंगल की अशुभ दशा में स्त्री, पुत्र व भाईयों से वैर विरोध 4.5 महर्षि पराशर के अनुसार बली मंगल की दशा भूमि भवन का लाभ देती है 4.6 फलदीपिका के अनुसार मंगल दशा में अग्नि या युद्ध से धन। 4.7 मंगल की भावगत स्थिति का दशाफल 4.8 **मंगल की अन्तर्दशाएं**

1. मंगल–मंगल 2. मंगल–राहु 3. मंगल–गुरु 4. मंगल–शनि 5. मंगल–बुध 6. मंगल–केतु 7. मंगल–शुक्र 8. मंगल–सूर्य 9. मंगल–चंद्र 4.9 विशेष फल।

अध्याय 5 **राहु दशा फलम्** **57-62**

5.1 राहु की दशा में सरकार से परेशानी तथा धन व यश की हानि 5.2 राहु की शुभ दशा में धन, धर्म तथा अधिकार प्राप्ति 5.3 स्त्री पुत्र का वियोग तथा परदेशवास 5.4 राहु की उच्च राशि वृष, मूलत्रिकोण राशि, मिथुन 5.5 अष्टम या द्वादश में राहु 5.6 फलदीपिका के अनुसार राहु का अशुभ फल 5.7 राहु का शुभ फल 5.8 राहु का विशेषफल वृश्चिक, मीन में राहु शुभ है 5.9 राहु की दशा और भाव गत स्थिति। 5.10 **राहु की अन्तर्दशाएं** 1. राहु–राहु 2. राहु–गुरु 3. राहु–शनि 4. राहु–बुध 5. राहु–केतु 6. राहु–शुक्र 7. राहु–सूर्य 8. राहु–चंद्रमा 9. राहु–मंगल 5.11 विशेष फल।

अध्याय 6 **गुरु दशा फलम्** **63-69**

6.1 गुरु की दशा में राज कृपा, पद व अधिकार की प्राप्ति 6.2 शुभ गुरु की दशा में सुख, सौभाग्य, धन तथा सत्ता लाभ 6.3 गुरु दशा में शत्रु नाश 6.4 गुरु की अशुभ दशा में उदर या कर्ण रोग तथा राजभय 6.5 गुरु की सामान्य दशा में लाभ व यश की प्राप्ति। 6.6 महर्षि पराशर के अनुसार उच्चस्थ गुरु से राजसम्मान व कार्यसिद्धि 6.7 स्त्री, पुत्र, मित्र समागम 6.8 अशुभ गुरु दशा में कर्ण, रोग 6.9 गुरु की भावगत स्थिति का दशा फल 6.10 **गुरु की अन्तर्दशाएं** 1. गुरु–गुरु 2. गुरु–शनि 3. गुरु बुध 4. गुरु–केतु 5. गुरु–शुक्र 6. गुरु–सूर्य 7. गुरु–चंद्रमा 8. गुरु–मंगल 9. गुरु–राहु 6.11 विशेष

अध्याय 7 **शनि दशा फलम्** **70-76**

7.1 शनि की दशा में कलंक, शत्रु भय व आर्थिक कष्ट 7.2 शनि की शुभ दशा में धन वैभव तथा सत्ता

लाभ 7.3 शनि दशा–वृद्धा स्त्री संग 7.4 स्त्री व परिजन का वियोग 7.5 अधिकारियों से धन लाभ तथा अशुभ शनि की दशा बंधन, पराजय तथा परिजन का वियोग देती है 7.6 महर्षि पराशर के मतानुसार 7.7 फलदीपिका के अनुसार 7.8 शनि की भावगत स्थिति और दशा फल 7.9 **शनि की अन्तर्दशाएं** 1. शनि–शनि 2. शनि–बुध 3. शनि–केतु 4. शनि–शुक्र 5. शनि–सूर्य 6. शनि–चंद्रमा 7. शनि–मंगल 8. शनि–राहु 9. शनि–गुरु 7.10 विशेष फल।

अध्याय 8 **बुध दशा फलम्** **77-83**

8.1 बुध की दशा में धन, वाहन, संतान तथा विद्वानों से सुख मिले 8.2 बुध की शुभ दशा में वस्त्राभूषण, धन–धान्य तथा बंधुओं का सुख बढ़े 8.3 बुध दशा में बुद्धि और प्रतिष्ठा में वृद्धि 8.4 पापी बुध त्रिदोष जन्य पीड़ा, बंधन, उद्वेग व चिंता देता है। 8.5 बुध बनाता है राजदूत या एजेन्ट 8.6 महर्षि पराशर के अनुसार उच्च बुध से स्त्री पुत्र सुख 8.7 बुध, त्रिक भाव 6.8.12 में होने से भोग तथा धन नाश 8.8 फलदीपिका के अनुसार बुध की महादशा में लाभ वाणी में प्रगल्भता होती है 8.9 बुध की भावगत स्थिति और दशा फल 8.10 **बुध की अन्तर्दशाएं** 1. बुध–बुध 2. बुध–केतु 3. बुध–शुक्र 4. बुध–सूर्य 5. बुध–चंद्रमा 6. बुध–मंगल 7. बुध–राहु 8. बुध–गुरु 9. बुध–शनि 8.11. विशेष उच्च राशि किंतु नीच नवांश के बुध की दशा असफलता कारक।

अध्याय 9 **केतु दशा फलम्** **84-88**

9.1 केतु की दशा में स्वजन से विदाद, उदर–पीड़ा, धन नाश तथा देह कष्ट की प्राप्ति 9.2 शुभ केतु की दशा में परदेश में भाग्योदय, धन लाभ तथा स्पर्धा में विजय 9.3 केतु की अशुभ दशा में दीनता व संताप बढ़े 9.4 केतु से बुद्धि विवेक नष्ट 9.5 महर्षि पराशर के मतानुसार केतु केन्द्र में स्त्री पुत्र सुख तथा भ्रमण

देता है। 3,6,11 भाव में सुख देता है केतु 2,8, 12 भाव में जेल या बंधु नाश 9.6 फलदीपिका के अनुसार केतु महादशा का अनिष्ट फल स्त्री, मालिक से पीड़ा कफ, पैर या दांत रोग 9.7 केतु की भावगत स्थिति और दशाफल 9.8 **केतु की अन्तर्दशाएं** 1. केतु–केतु 2. केतु–शुक्र 3. केतु–सूर्य 4. केतु–चंद्रमा 5. केतु–मंगल 6. केतु–राहु 7. केतु–गुरु 8. केतु–शनि 9. केतु–बुध 10. विशेष फल

अध्याय 10 शुक्र दशा फलम् **89-95**

10.1 शुक्र की दशा में सुंदर पत्नी, सुख वैभव तथा मित्रों के सहयोग से धन व यश की प्राप्ति 10.2 शुक्र की दशा मे पद, प्रतिष्ठा, वाहन, धन तथा यश मिले 10.3 शुक्र दशा में स्त्री को कष्ट 10.4 शुक्र दशा में संगीत, स्त्री संग 10.5 शुक्र की अशुभ दशा में श्रेष्ठ व गुणीजन से विवाद, वाहन से कष्ट तथा स्त्री से सुख हानि 10.6 शुक्र महादशा में स्त्री, पुत्र प्राप्ति 10.7 महर्षि पराशर के मतानुसार उच्च राशिगत शुक्र से सब सुख वैभव 10.8 फलदीपिका के अनुसार शुक्र की महादशा शुभ फलदायक, प्रियजनों को कष्टप्रद 10.9 शुक्र की भावगत स्थिति और दशाफल 10.10 **शुक्र की अन्तर्दशाएं** 1. शुक्र–शुक्र 2. शुक्र–सूर्य 3. शुक्र–चंद्रमा 4. शुक्र–मंगल 5. शुक्र–राहु 6. शुक्र–गुरु 7. शुक्र–शनि 8. शुक्र–बुध 9. शुक्र–केतु 10.11 विशेष फल

अध्याय **11 ग्रह दशा विशिष्ट फलम्** **96-115**

11.1 उच्चराशिस्थ ग्रह का दशा फल (1) सूर्य (2) चंद्रमा (3) मंगल (4) राहु (5) गुरु (6) शुक्र (7) शनि (8) राहु (9) केतु 11.2 स्वगृही ग्रह का दशाफल 11.3 मित्रक्षेत्रीग्रह दशा का फल 11.4 शत्रु क्षेत्री ग्रह का दशा फल 11.5 षष्ठेश का दशा फल 11.6 अष्टमेश का दशा फल 11.7 द्वादशेश का दशा फल 11.8 सप्तमेश का दशा फल 11.9 अस्तंगत ग्रह का

दशा फल 11.10 दशा प्रवेश के समय चंद्रमा से शुभता 11.11 बली व निर्बल ग्रह का दशा फल 11.12 भावेश का दशा फल (भाव कौतुहलम्, महर्षि पराशर तथा जातकतत्त्वम् के मतानुसार) 11.13 दशाफल में विशेषता 11.14 शुभाशुभ भावस्थ ग्रह दशा फल 11.15 वक्री ग्रह का दशाफल 11.16 हीनबली ग्रह का दशाफल 11.17 भावगत ग्रह की दशा/भुक्ति 11.18 समीक्षा

गोचर स्कंध

अध्याय 12 **सूर्य का गोचर फल** 116-119
12.0 सूर्य का गोचर फल 12.1 चंद्र राशि से विभिन्न भावों में सूर्य का गोचर फल–प्रथम भाव में सूर्य से द्वादश भाव में सूर्य तक 12.2 मतान्तर सूर्य का गोचर 12.3 नक्षत्र गोचर

अध्याय 13 **चंद्रमा का गोचर फल** 120-122
13.0 चंद्रमा का गोचर फल 13.1 चंद्र राशि से विभिन्न भावों में चंद्रमा का गोचर फल-प्रथम भाव में मंगल से द्वादश भाव मे चंद्रमा तक 13.2 चंद्रमा का नक्षत्र गोचर

अध्याय 14 **मंगल का गोचर फल** 123-125
14.0 जन्म चंद्रमा से 3, 6, 11वें भाव में गोचर का मंगल शुभ 14.1 जन्म चंद्रमा से विभिन्न भावों में मंगल का गोचर फल-प्रथम भाव में मंगल से द्वादश भाव में मंगल तक 14.2 मंगल का नक्षत्र गोचर।

अध्याय 15 **बुध गोचर फल** 126-128
15.0 जन्म राशि से 2, 4, 6, 8, 10, 11वें भाव में बुध का गोचर शुभ 15.1 चंद्र राशि से विभिन्न भावों में बुध का गोचर फल-प्रथम भाव में बुध से द्वादश भाव में बुध तक

अध्याय 16 **गुरु का गोचर फल** 129-131
16.0 जन्म राशि से 2, 5, 7, 9, 11वें भाव में गुरु का

गोचर शुभ 16.1 चंद्र राशि से विभिन्न भावों में गुरु का गोचर फल-प्रथम भाव में गुरु से द्वादश भाव में गुरु तक।

अध्याय 17 **शुक्र का गोचर फल** **132-134**
17.0 जन्म राशि से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12वें भाव में शुक्र का गोचर शुभ 17.1 चंद्र राशि से विभिन्न भावों में शुक्र का गोचर फल-जन्म चंद्रमा (प्रथम भाव) पर गुरु से द्वादश भाव में शुक्र तक 17.2 बुध, गुरु तथा शुक्र का नक्षत्र गोचर

अध्याय 18 **शनि का गोचर फल** **135-140**
18.0 जन्म राशि से 3, 6, 11वें भाव में शनि का गोचर शुभ 18.1 चंद्र राशि से विभिन्न भावों में शनि का गोचर फल-प्रथम भाव में शनि से द्वादश भाव में शनि तक 18.2 शनि की साढ़े साती ढैय्या 18.3 शनि संबंधी अन्य फल

अध्याय 19 **राहु का गोचरफल** **141-143**
19.0 जन्म राशि से 3, 6, 11वें भाव में राहु का गोचर शुभ 19.1 चंद्र राशि से विभिन्न भावों में राहु का गोचर फल-प्रथम भाव में राहु से द्वादश भाव में राहु तक 19.2 शनि, राहु तथा केतु का नक्षत्र गोचर।

अध्याय 20 **केतु का गोचर फल** **144-146**
20.0 जन्म राशि से 3, 6, 11वें भाव में केतु शुभ 20. 1 चंद्र राशि से विभिन्न भावों में केतु का गोचर फल-प्रथम भाव में केतु से द्वादश भाव में केतु तक 20.2 टिप्पणी।

अध्याय 21 **गोचर ग्रह वेध फलम्** **147-153**
21.0 पाप समुदाय फल 21.1 गोचर चंद्रमा का फल 21.2 शुभ ग्रह गोचर वेध तालिका 21.4 विपरीत वेध तालिका 21.5 नक्षत्र वेध तालिका 21.6 अशुभ स्थान के लिए वेध तालिका 21.7 वेध का महत्त्व (जातक परिजात से वेध तालिका) 21.8 शनि की साढ़े साती में वेध का उपयोग तथा ग्रह मूर्ति संज्ञा।

अध्याय 22 **महत्त्वपूर्ण ग्रहों का गोचर फल** **154-158**

22.0 दशमेश का गोचर फल 22.1 गोचर ग्रहों का प्रभाव 22.2 गोचर ग्रहों का प्रभाव कब 22.3 गंतव्य राशि का गोचर फल 22.4 ग्रहों का भोग मान 22.5 शनि पद परिज्ञान 22.6 कारक ग्रह से कारक भाव में गोचर फल 22.7 गोचर सूर्य का विशेष फल 22.8 गोचर से भाव सिद्धि काल 22.9 भाव फल के समय सूत्र 22.10 ग्रहों की निष्फलता का ज्ञान 22.11 समीक्षा।

अष्टक वर्ग

अध्याय 23 **अष्टक वर्ग का उपयोग** **159-173**

23.1 **सूर्याष्टक वर्ग**–सूर्याष्टकवर्ग में सर्वाधिक शुभ बिंदु वाली राशि पर सूर्य का गोचर विवाह, विदेश यात्रा तथा व्यापारिक समझौते के लिए शुभ 23.2 **चंद्राष्टक वर्ग**–चंद्राष्टक वर्ग में सर्वाधिक शुभ बिंदु वाली राशि पर जिस कन्या का चंद्रमा हो उससे विवाह सुख व समृद्धि देता है। 23.3 **मंगल का अष्टक वर्ग**–मंगल के अष्टक वर्ग में सर्वाधिक शुभ बिंदु वाली राशि पर मंगल का गोचर भूमि, भवन या स्वर्णाभूषण की खरीद के लिए उत्तम समय 23.4 **बुध का अष्टक वर्ग**–बुध के अष्टक वर्ग में जिस राशि को अधिक शुभ बिंदु मिले (i) उस पर बुध का गोचर विद्या संबंधी कार्यों में यश व सफलता का कारक। जिस दिशा को बुध के अष्टक वर्ग में सर्वाधिक बिंदु मिलें उस दिशा में मुख करते हुए अध्ययन करना सुख व सफलता देता है। 23.5 **गुरु का अष्टक वर्ग**–गुरु की शुभ राशि (सर्वाधिक बिंदु वाली) पर गोचर गुरु का संचार बैंक में खाता खोलने के लिए उत्तम। 23.6 **शुक्र का अष्टक वर्ग**–शुक्र के अष्टक वर्ग में सर्वाधिक शुभ बिंदु पाने वाली राशि पर शुक्र का गोचर सुख वैभव के साधन जुटाने के लिए उत्तम समय 23.7 **शनि का अष्टक वर्ग**–शनि के अष्टक वर्ग में अधिक

शुभ बिंदु पाने वाली राशि पर गोचर शनि का संचार नौकरी में सुख तथा वेतन वृद्धि कारक **23.8 सर्वाष्टक वर्ग**–सुख व संपन्नता के योग। जीवन का उत्तम भाग। सर्वाष्टक वर्ग से स्वभाव जानना। अरिष्ट काल **23.9 अष्टक वर्ग के अन्य उपयोग**–लाभ तथा सुख कब। शुभ व कल्याणकारी वर्ष। सर्वाष्टक वर्ग में बिंदुओं का फल। 23.10 विभिन्न अष्टक वर्ग में बिन्दु फल विचार। 23.11 समीक्षा।

योगिनी स्कंध

अध्याय 24 योगिनी दशा **174-191**

24.1 योगिनी दशाओं के नाम और फल 24.2 **मंगला** की दशा में विभिन्न अन्तर्दशाएं (कुल अवधि 1 वर्ष) 24.3 **पिंगला** में विभिन्न अन्तर्दशाएं (अवधि 2 वर्ष) 24.4 धान्या में अन्तर्दशाएं (अवधि 3 वर्ष) 24.5 **भ्रामरी** में अन्तर्दशाएं (अवधि 4 वर्ष) 24.6 **भद्रिका** की अन्तर्दशाएं (अवधि 5 वर्ष) 24.7 **उल्का** में विभिन्न अन्तर्दशाएं (अवधि 6 वर्ष) 24.8 **सिद्धा** में विभिन्न अन्तर्दशाएं (अवधि 7 वर्ष) 24.9 **संकटा** में विभिन्न अर्न्तदशाएं (अवधि 8 वर्ष) 24.10 योगिनी दशा जानने के नियम तालिका 1 योगिनी दशा का नैसर्गिक क्रम और अर्न्तदशा अवधि तालिका 2 जन्म नक्षत्र की राशि में स्थिति और विस्तार। तालिका 3 नक्षत्र संख्या से योगिनी दशा का ज्ञान। तालिका 4 नक्षत्र समानुपाती योगिनी दशा का शेष तालिका तालिका 5 योगिनी दशा में अन्तर्दशाओं की अवधि। 24.11 समीक्षा।

अध्याय 25 योगिनी दशा का प्रयोग **192-203**

25.1 **संकटा-उल्का** में प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर अमेरिका में डाक्टरी पढ़ने का अवसर मिला 25.2 **धान्या-धान्या** में महिला का विवाह 25.3 **मंगला-संकटा** की दशा में माता की मृत्यु 25.4 **उल्का-धान्या** की

दशा में प्रोन्नति व लाभ 25.5 **पिंगला-भद्रिका** की दशा में कार्यालय में चोरी 25.6 **उल्का-संकटा** की दशा में नौकरी से लाभ 25.7 **सिद्धा-भद्रिका** की दशा में विदेश यात्रा तथा लेखन क्षेत्र में सफलता 25.8 **उल्का पिंगला** की दशा में आत्महत्या 25.9 **धान्या-धान्या** में कैंसर का आपरेशन व स्वास्थ्य लाभ 25.10 **सिद्धा उल्का** में संतान सुख 25.11 पंडित जवाहर लाल नेहरु **संकटा-संकटा** में प्रधानमंत्री बने 25.12 डा० राजेन्द्र प्रसाद (भारत के राष्ट्रपति) **सिद्धा-सिद्धा** में राष्ट्रपति बने 25.13 समीक्षा

अध्याय 26 **घटना की पुष्टि में योगिनी और विंशोत्तरी का प्रयोग** **204-220**

26.1 उच्च शिक्षा के लिए विदेश में छात्रवृत्ति (गुरु–राहु तथा संकटा–संकटा) 26.2 जलयान इंजीनियरिंग में चयन गुरु–सूर्य तथा उल्का–भद्रिका 26.3 पिता की वाहन दुर्घटना में मृत्यु (गुरु राहु तथा उल्का सिद्धा) 26.4 पिता की मृत्यु (शनि–शुक्र तथा धान्या भद्रिका की दशा में) 26.5 उच्चशिक्षा के लिए विदेश गमन (बुध–शनि तथा पिंगला–भद्रिका) 26.6 महिला का विवाह (बुध– शनि तथा सिद्धा–संकटा) 26.7 तेरह वर्षीय बालक कमांडो प्रशिक्षक बना (बुध–राहु तथा उल्का भद्रिका) 26.8 जातक उच्चशिक्षा के लिए अमरीका गया (शुक्र–चंद्र तथा उल्का धान्या) 26.9 जातक ने विदेश यात्रा की (राहु–बुध तथा भ्रामरी–उल्का) 26.10 श्री एच. डी. देवगौड़ा प्रधानमंत्री बने (शुक्र–राहु तथा भ्रामरी–उल्का) 26.11 समीक्षा।

अध्याय 27 **वर्ग कुंडली में दशा विचार** **221-239**

27.1 पत्नी संसद सदस्य बनी (**शनि-राहु** की दशा में) 27.2 बड़े भाई के साथ दुर्घटना (**चंद्र-मंगल** की विंशोत्तरी दशा में) 27.3 नौकरी के लिए चयन (**राहु मंगल** की दशा में) 27.4 पदोन्नति (**शनि-गुरु** की

दशा में) 27.5 बच्चे नौकरी की तलाश में विदेश गए (**शुक्र-राहु** की दशा में) 27.6 पिता के लिए मान सम्मान का समय (**बुध-चंद्र** की दशा) 27.7 पिता की मृत्यु (**शनि-चंद्रमा** की दशा में) 27.8 समीक्षा

अध्याय 28 **वर्ष कुंडली में दशा विचार** **240-248**

28.1 योगिनी दशा 28.2 विदेश में छात्रवृति 28.3 लड़की की शादी (शुक्र–गुरु; धान्या–धान्या में) 28.4 कैंसर रोग (राहु–केतु; धान्या–धान्या में) 28.5 उच्च पद की प्राप्ति (योगिनी दशा सिद्धा में) 28.6 अपहरण (शनि–गुरु; भद्रिका–भद्रिका) 28.7 समीक्षा।

अध्याय 29 **राशि दशा फल** **249-263**

29.1 भाव (राशि) फल का सामान्य नियम 29.2 दशाप्रद राशि का भाव संबंध 29.3 अशुभ राशि दशा 29.4 बाधा स्थान व बाधापति 29.5 दशाप्रद राशि से त्रिकस्थ राहु अनिष्ट प्रद 29.6 शुभ दशा 29.7 राशि दशा प्रवेश कुंडली 29.8 नीचस्थ ग्रह से भाग्यहानि 29.9 मारक दशा 29.10 राहु का प्रभाव 29.11 दशाप्रद राशि के त्रिकोण का पापत्व 29.12 राशि दशा पर चतुर्थस्थ ग्रह का प्रभाव 29.13 राशि दशा में शुभ ग्रहों की भूमिका 29.14 राशि दशा में 18 गुणों का महत्त्व 29.15 उच्चस्थ ग्रह की राशि दशा 29.16 मूल त्रिकोण राशि की दशा 29.17 स्वगृही ग्रह की दशाा 29.18 भिन्न राशिस्थ ग्रह की दशा 29.19 शत्रु राशिस्थ ग्रह की दशा 29.20 नीच राशिस्थ ग्रह की दशा 29.21 राहु अधिष्ठित राशि की दशा 29.22 केतु अधिष्ठित राशि की दशा 29.23 भाग्यप्रद राशि दशा 29.24 राशि दशा का फल कब 29.25 राशि दशा में शुभता विचार 29.26 विशेष राशि दशा फल 29.27 समीक्षा।

अध्याय 30 **घटना का समय और स्वरूप निर्धारण** **264-293**

30.1 घटना का स्वरूप 30.2 संभावनाएं उदाहरण (1) नेताजी सुभाष बोस (2) महारानी लक्ष्मीबाई (3

छत्रपति शिवाजी (4 सरदार पटेल (5) सर शेषाद्रि अय्यर (6) श्री मोहम्मद अली जिन्नाह (7) श्री हैनरी फोर्ड (8) श्री धीरुभाई अंबानी (9) श्री नल्सी वाडिया (10) बिल गेट्स 30.3 समीक्षा 30.4 क्षमता व सामर्थ्य (Capacity and Capability) 30.5 ग्रह दशा क्रम 30.6 घटना का स्वरूप (Nature of Events) 30.7 कारकत्व विचार 30.8 समीक्षा

अध्याय 31 अशुभ दशा का उपचार **294-305**

31.1 अशुभ दशा 31.2 सावधानी और सुरक्षा 31.3 ग्रहों के कारकत्व 31.4 उपचार की आवश्यकता 31.5 ग्रह पूजन 31.6 ग्रहों के मंत्र और जप संख्या 31.7 ग्रहों का हवन और दान 31.8 अन्य उपाय–प्रार्थना 31.9 विद्वानों के अनुभव और संस्मरण 31.10 समीक्षा

परिशिष्ट

1. चंद्र स्पष्ट से ग्रह दशा का भोग्य काल जनना
2. ग्रह की दशा अर्न्तदशा क्रम और अवधि
3. अर्न्तदशा में प्रत्यन्तर दशा तालिका
4. सन्दर्भ ग्रंथ सूची

* * *

अध्याय-1

दशा फल विचार के कतिपय सूत्र

1.1 बहुधा ज्योतिष बन्धुओं की कठिनाई होती है कि, जन्म कुंडली शुभ होने पर भी जातक को शुभ फल प्राप्त नहीं होते। कभी तो दशा, भुक्ति (अन्तर्दशा) व गोचर में ग्रहों की ऐसी विषम परिस्थिति बनती है कि जातक व्याकुल हो जाता है। ऐसे दुःखी जन को सुखी बनाना, उसमें आशा उत्साह व उमंग जगाना, ही ज्योतिषी की सफलता है। अस्तु।

1.2 शुभ फलदायी दशा

1. जो ग्रह जन्म कुंडली में केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या धन भाव में (1, 2, 4, 5, 7, 9, 10, 11वें भाव) हों।
2. जो ग्रह उच्च राशि, स्वराशि या मित्र राशि में हो।
3. जो ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हों।
4. जो ग्रह भाव मध्य में स्थित या षडबल में बली हों तो उनकी दशा अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा व सूक्ष्म दशा बहुधा **धन, स्वास्थ्य, सुख व सम्मान** दिया करती है।
5. त्रिषडाय या **त्रिक भाव में स्थित पाप ग्रह** (सूर्य, मंगल, शनि, राहु) अथवा **दुःस्थान के स्वामी ग्रह यदि दुःस्थान में हो तो** भी अपनी दशा व भुक्ति में **शुभ फल** दिया करते हैं।

1.3 मंगल नीच नहीं

यों तो कर्क राशि का मंगल नीच होता है किन्तु, ऐसा मंगल अपनी मेष राशि से चतुर्थ (सुख भाव) में होने से व वृश्चिक से भाग्य भवन में (नवमस्थ) होने से व्यापार व्यवसाय तथा **मान सम्मान की वृद्धि** तथा भाग्योदय किया करता है। मंगल की दशा अन्तर्दशा में जातक **लाभ और प्रतिष्ठा** पाता है।

1.4 राहु या केतु भी उत्तम

राहु या केतु केंद्र या त्रिकोण में स्थित हों, अथवा केंद्र स्थान में बैठा राहु/केतु

त्रिकोणाधिपति (पंचमेश/नवमेश से युक्त या दृष्ट हो तो, अपनी दशा/भुक्ति में **शुभ फल** देता है। इसी भांति त्रिकोण भाव में स्थित छायाग्रह (राहु/केतु), यदि केंद्राधिपति से युक्त या दृष्ट हो तो भी उसकी दशा शुभ व सुखदायी होगी।

1.5 त्रिकोणेश युक्त ग्रह दशा

कोई भी ग्रह, पंचमेश या नवमेश से युक्त होने पर, शुभ ग्रह बन जाता है व अपनी दशा-भुक्ति में शुभ फल देता है। ऐसा ज़ातक मित्र, **बुद्धि**, **भाग्य**, प्रारब्ध तथा पिता व **प्रशासन का सहयोग** पाकर **सुखी** होता है।

1.6 धन लाभ दशा

1. धन संपदा का विचार लग्न या चंद्र से, (i) द्वितीय भाव द्वारा किया जाता है अर्थात द्वितीय भाव में स्थित कोई भी ग्रह, (ii) द्वितीय भाव को देखने वाला ग्रह या (iii) द्वितीय भाव का अधिपति ग्रह अपनी दशा व भुक्ति में निश्चय ही **धन संपदा** प्रदान करता है।
2. इसी प्रकार द्वितीयेश (धनेश) जिस राशि में स्थित हो, वह राशीश (धनेश का नियंत्रक) भी, यदि शुभ युक्त या दृष्ट हो तो, अपनी दशा-अन्तर्दशा में स्वास्थ्य, **सम्मान व सुख** समृद्धि दिया करता है।

1.7 पाप ग्रह शुभ युक्त या दृष्ट होने पर शुभ

1. नैसर्गिक **पाप ग्रह** (सूर्य, शनि, मंगल, राहु) यदि पाप भाव (तृतीय, षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव) में स्थित हों तो, अपनी दशा में क्रमशः भाई बहन का स्नेह सहयोग, रोग-ऋण का नाश, बाधा व कष्ट की समाप्ति तथा मान वैभव की वृद्धि दिया करते हैं।
2. इसी प्रकार पाप भाव या दुष्ट भाव (3,6,8,12 वे भाव) के स्वामी कहीं भी बैठ कर यदि शुभ ग्रह (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) या शुभ भावों के स्वामी (केंद्र, त्रिकोण, धन व लाभ स्थानों के अधिपति ग्रह) से युक्त या दृष्ट हों तो वह दुष्ट ग्रह भी अपनी दशा/भुक्ति में रोग, पीड़ा, भय, **कष्ट से मुक्ति** दिलाकर **धन वैभव** बढाएंगे।

1.8 दशा फल किस प्रकार

1. प्रायः शुभ ग्रह

   (i) **पहले उस भाव संबंधी फल** को देते हैं जिस भाव में ये शुभ ग्रह स्थित हों,

(ii) **मध्य में राशि** के गुण धर्मानुसार फल देते हैं।

(iii) अंत में जिन ग्रहों से वे दृष्ट हों उन **दृष्टा ग्रहों का फल** दिया करते है। भाव, राशि युति व ग्रह दृष्टि से फल का यह कालक्रम शुभ ग्रहों के लिये है।

2. अशुभ भावाधिपति ग्रह अपनी दशा भुक्ति में

(i) पहले उस राशि संबंधी फल देगा जिस राशि में ये ग्रह स्थित है।

(ii) तत्पश्चात उस भाव के कारकत्व संबंधी फल देगा जिसमें ये पाप ग्रह स्थित है तथा

(iii) अन्त में विभिन्न ग्रहोंकी इस दशा/भुक्ति नाथ पर पड़ने वाली दृष्टि के अनुसार फल मिलेगा। यहाँ राशि, भाव तथा अन्य ग्रह की दृष्टि युति से फल का क्रम अशुभ ग्रह के लिए जानें।

3. दशाफल दर्पण ने ग्रह व राशियों के स्वभाव व भावों के महत्त्व का सुन्दर समन्वय किया है, जो निश्चय ही सटीक व सच्चे फल कथन में सहायक होता है।

1.9 लाभेश दशा फल

1. यों तो लाभ स्थान, त्रिषडाय के अन्तर्गत आता है व लाभेश को एकादशेश होने से पापी कहा गया है, किंतु लाभेश ग्रह अपनी दशा अन्तर्दशा में **धन का लाभ** निश्चित रूप से देता है।

2. मतान्तर से लाभेश, जब लग्न से केंद्र अथवा त्रिकोण भाव में, स्वगृही, मित्रगृही, उच्च राशिस्थ या शुभ दृष्ट हो तो, अपनी दशा भुक्ति में **धन, मान व सुख** की वृद्धि करता है।

3. **लाभस्थान में बैठा पाप ग्रह** भी अपनी दशा भुक्ति में लाभ व **आय की वृद्धि** किया करता है।

1.10 शुभ-अशुभ दशा फल

1. जिस प्रकार बगिया में रंग बिरंगे पुष्प सुंदर लगते हैं। एक रंगीन चित्र में विभिन्न रंगों की उपस्थिति उसको अधिक आकर्षक बनाती है। कुछ ऐसी ही बात मनुष्य के जीवन की है।

2. हमारा जीवन सुख–दुख, हर्ष व पीड़ा के ताने बाने से बुना गया है। दुख और कष्ट; संवेदना सहानुभूति, दया-करुणा, स्नेह तथा सहयोग की भावना को पुष्ट कर, समर्पण के शिखर तक पहुँचाता है।

3. यदि संसार में रोग न होते तो चिकित्सा व औषधि विज्ञान कैसे उन्नति करते। बाढ़ को रोकने के लिये ही तो बांध बने जिनसे बाद में बिजली पैदा हुई।
4. मनुष्य को श्रम से मुक्ति दिलाने के लिये विभिन्न मशीनें बनीं, रेल, मोटर, हवाई जहाज, सभी तो मनुष्य के दुख दर्द मिटाकर उसका सुख बढ़ाने के लिये बने।
5. मनुष्य का ज्ञान विज्ञान भी, प्राणी मात्र को सुखी बनाने में सहयोग करता है। **अनिष्ट व अशुभ की चिंता** या आशंका **में ही सुख, सफलता** व समृद्धि **का बीज छिपा है**। ये बात ज्योतिष बंधुओं को भली प्रकार जान लेनी चाहिए।
6. **मंगल** का रक्त से संबंध होने कारण बहुधा मंगल अपनी दशा भुक्ति में रक्त विकार, उच्च या निम्न रक्तचाप, अनुज से विरोध, विष अग्नि अथवा शस्त्र या शत्रु द्वारा जातक को भय दिया करता है।
7. **राहु** सूर्य का शत्रु होने से, अपनी दशा भुक्ति में पिता के लिये कष्टकारी होता है। राहु अपनी दशा अन्तर्दशा में राज भय, राजदंड/ जुर्माना अपमान, रोग, स्त्री व संतान को कष्ट, घर परिवार में शोक/मनसंताप, भय व दरिद्रता देता है। कभी व्यर्थ ही भटकाता भी है। यदि राहु शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो अशुभ फल में कमी होती है।
8. **केतु** की दशा भुक्ति भी धन धान्य की हानि, रोग-आपत्ति, चिंता विषाद व भय दिया करती है,। **शुभ स्थान में बैठा**, शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट **केतु**, पापी नहीं होता वरन अपनी दशा अन्तर्दशा में **शुभ फल** देता है।
9. **शुभ ग्रह** जितना भी अधिक **बली हो दीप्त**, स्वस्थ मुदित शान्त हो वह उतना ही **शुभ फल** देगा।
10. पाप ग्रह जितना निर्बल हो दीन, दुखी, विकल, खल, अस्त हो वह उतना ही कम अशुभ या पाप फल देगा। अतः **पापी ग्रह का दुर्बल होना अच्छा है** तो शुभ ग्रह का बली होना; स्वास्थ्य, सम्मान, धन व समृद्धि के लिये उत्तम माना गया है।

1.11 ग्रह दशा फल विचार *(शंभु होरा प्रकाश मतानुसार)*

1. **सूर्य** को संसार की आत्मा, जीवनशक्ति, रांजा व पिता माना गया है। सूर्य अग्नि तत्व ग्रह, होने से, पृथकता या अलगाव भी किया करता है। मनुष्य, का स्वाभिमान अहंकार बढ़ने से वह, स्वयं को सर्वोपरि व सर्वश्रेष्ठ मान कर कभी मित्र व संबंधियों से झगड़ा कर बैठता है।

   (i) **सूर्य की दशा**/भुक्ति में मनुष्य परदेश में रहता है। कभी राजा की भांति

बिना परिश्रम किये लाभ पाता है। जैसे ब्याज, पूंजी निवेश पर लाभांश की आय या जमीन-मकान का किराया आदि।

(ii) अस्त्र शस्त्र, ब्राह्मण, राजा अथवा चिकित्सा वृति से भी सूर्य की दशा/भुक्ति में धन लाभ होता है।

(iii) सूर्य का धन भाव या द्वितीयेश से संबंध व्यक्ति को **चिकित्सा क्षेत्र** में रूचि देता है। ध्यान रहे शनि व राहु सरीखा, सूर्य भी पृथकतावादी ग्रह होने से, शरीर से कष्ट पीड़ा व मन से **दुख, चिंता** और अवसाद को दूर करने या **मिटाने मे सक्षम** है।

(iv) प्रायः **सूर्य तथा शनि का लग्न व लग्नेश पर प्रभाव चिकित्सा द्वारा धन** दिलाता है। जातक कुशल चिकित्सक बनता है।

(v) मंत्रणा, परामर्श या सलाह द्वारा जातक राजा व प्रजा का प्रिय होता है। समाज में मान सम्मान व यश पाता है। ऐसा मनुष्य दयालु व परोपकारी होता है।

(vi) लग्नेश व दशमेश सरीखा **सूर्य भी यश कीर्ति व मान** प्रतिष्ठा बढ़ाया करता है। सात्विक ग्रह होने से सूर्य **अध्यात्म की ओर उन्मुख** भी अवश्य करेगा।

(vii) सूर्य निर्बल या पाप प्रभाव में होने से, अपनी दशा-भुक्ति में नेत्र पीडा, उदर रोग, ऋण, पराजय, राजभय, शत्रु, चोर व अग्नि से हानि देता है। कभी पुत्र मित्र व पत्नी से मतभेद या कलह की संभावना बढ़ जाया करती है।

(viii) सूर्य यदि मंगल व षष्ठेश से युक्त दृष्ट हो, तो चोर से भय होता है।

(ix) सूर्य के साथ मंगल या केतु हो तो अग्नि से भय होता है।

2. **चन्द्रमा** बली होने पर अपनी दशा/भुक्ति में धन, धान्य, स्नेह-सम्मान व सुख समृद्धि दिया करता है। जातक को **लोकप्रियता व प्रतिष्ठा** प्राप्त होती है। चंद्रमा मन का सुख है, स्वास्थ्य है, ग्रह परिषद में रानी, माता, भूमि व बागवानी का प्रतीक है। राजकृपा चंद्रमा से ही प्राप्त होती है।

(i) जातक, देवता, ब्राह्मण व आस्तिकजन की सेवा द्वारा सुख सफलता पाता है। चंद्रमा मन व वाणी में कोमलता व मधुरता देता है। जातक की रूचि सुगंधित पदार्थ, पेय व फल मूल आदि पदार्थों में होती है।

(ii) ऐसा जातक जलसेना, जल आपूर्ति विभाग, मिनरल वाटर, दूध, सोडा वाटर या शर्बत संबंधी कार्यों से धन पाता है।

(iii) आधुनिक ज्योतिषियों ने सभी प्रकार के प्रवाह, संचार प्रणाली, परिवहन, दूरदर्शन, सिनेमा तथा कंप्यूटर को भी चंद्रमा के अधिकार क्षेत्र में सम्मिलित कर लिया है। **जहाँ भी गति है, प्रवाह, है,** मधुरता व सौम्यता है **उसे ही चंद्रमा का अधिकार क्षेत्र** व कारकत्व जानें।

(iv) कृषि व्यापार में भी चंद्रमा सफलता व उन्नति देता है।

(v) चंद्रमा दुर्बल, पाप युक्त/दृष्ट अथवा शत्रु से पीड़ित होने पर, उत्साह भंग कर, मन में निराशा, विषाद व अवसाद पैदा करता है। जातक निद्रालु, अकर्मण्य व आलसी बन जाता है। मन में उद्विग्नता व व्याकुलता, झगड़ने की प्रवृत्ति 'खीजना, झुंझलाहट' होती है। कफ-वायु विकारों से जातक को कष्ट या पीड़ा होती है।

3. **मंगल** साहस, पराक्रम, परिश्रम तथा संघर्ष शक्ति का प्रतीक है। वह सेनापति है। मंगल, शुभ व बली होने पर, अपनी दशा/भुक्ति में जातक से **साहस व शौर्य** के काम कराता है।

(i) जातक सेना, पुलिस, गुप्तचर या सुरक्षाकर्मी होकर धन लाभ पाता है।

(ii) मंगल, अग्नि तत्व ग्रह होने से, भट्टी, बेकरी, ताप उपचार तथा **धातु की ढलाई** या फोर्जिगं द्वारा धन देता है।

(iii) बिजली का सामान, **रसायन,** हीटर, हॉट प्लेट, ओवन आदि से जातक को धन लाभ होता है।

(iv) मंगल क़ा संबंध षष्ठ भाव से है, अतः यह मुकद्दमे, झगड़े, **कोर्ट कचहरी** के काम से भी लाभ दिलाता है।

(v) दुर्बल मंगल अपनी दशा/भुक्ति में पाप फल यथा राजदंड, आग चोरी, शत्रु, रोग, रक्त विकार, अनैतिक आचरण या झगडा फसाद द्वारा धन की हानि व कष्ट दिया करता है।

4. **राहु** को पापी और अनिष्टकारी ग्रह माना गया है।

(i) यदि ये शुभ स्थान व शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट न हो तो प्रायः अशुभ व अनिष्टकारी फल दिया करता है। स्थान च्युति, **अवनति, अपमान,** धन की हानि, राज भय अथवा पिता को राहु की दशा-भुक्ति में कष्ट हुआ करता है।

(ii) राहु अपनी दशा या भुक्ति में मन में चिंता, उद्विग्नता, खीज-झुंझलाहट, बुखार या रोगाणु जनित असाध्य रोग, पत्नी को रोग व कष्ट तथा **परिवार में अशांति** देता है।

(iii) राहु दैत्य होकर भी, देवता सरीखा रूप धारण कर देवताओं के मध्य बैठकर, अमृत पाने में सफल हो गया था। अतः राहु की दशा या अन्तर्दशा में मंत्रोपासना, **देवार्चन, धर्मग्रंथों का पाठ**, तीर्थाटन, दान पुण्य करना **उत्तम फल** दिया करता है। ये भी विज्ञजनों के अनुभव में आया सुखद सत्य है।

(iv) राहु में **गुरु व बुध की भुक्ति विशेष शुभ** व सुखदायी हुआ करती है।

(v) राहु की दशा भुक्ति में लोभ व स्वार्थ से प्रेरित, अन्याय व दुष्कर्म भयावह हो सकता है। ऐसा होना स्वाभाविक है क्योंकि राहु ने स्वयं भी तो कपट का फल तुरंत ही पा लिया था।

5. **गुरु** की दशा भुक्ति में

(i) जातक के मन में आस्तिकता का भाव सुदृढ़ होता है वह पवित्र शास्त्रों के स्वाध्याय, व पुण्य कर्मों से राजा और प्रजा की कृपा तथा यश और कीर्ति प्राप्त करता है।

(ii) उसे धन, यश व सम्मान की प्राप्ति से सुख होता है तथा **अभीष्ट सिद्धि** प्राप्त होती है।

(iii) धन व गुरु जन का कारक होने से, आचार्य वरिष्ठ जन, ब्राह्मण तथा देवता की कृपा से, स्वर्ण, रत्न, **वस्त्राभूषण का लाभ,** जातक सहज ही पाता है। स्त्री व संतान से उसे भरपूर सुख मिलता है।

(iv) मन में सात्विक वृत्ति के कारण प्रसन्नता व संतोष की भावना निरन्तर बनी रहती है। **सत्संग द्वारा आध्यात्मिक क्षेत्र** में जातक विशेष **उन्नति** करता है।

(v) गुरु निर्बल व पीड़ित होने पर, उदर रोग या पीड़ा, कंठ रोग, श्रवण शक्ति की हानि, अपयश व व्यर्थ की निंदा अपनी दशा-भुक्ति काल में दिया करता है।

6. **शनि** की दशा-भुक्ति में जातक मान सम्मान व अधिकार पाता है। उसकी धारणा शक्ति (बुद्धि की ग्रहण शक्ति) प्रबल हो जाती है। उसे कुल में प्रधानता **प्रसिद्धि तथा धन संपदा** मिलती है।

(i) ऐसा भला क्यों न हों जबकि शनि काल पुरूष का राज्येश व लाभेश है। अतः राजा सरीखा अधिकार तथा **सुख समृद्धि** देना शनि का सहज कर्म है।

(ii) ये मात्र एक दुर्योग ही समझना चाहियें कि अधिकांश जातक अपने दोष, दुष्कर्म व दुर्बलता के कारण शनि के शुभ फल पाने में असमर्थ रहते हैं।

(iii) शनि अपनी दशा/भुक्ति में देवता, ब्राह्मण व संतजन की पूजा अर्चना द्वारा मनुष्य को विनम्र बनाकर परम सुख की ओर ले जाने को उत्सुक रहता है। शनि द्वारा दिया गया **दुख व दैन्य, मात्र गंदगी दूर करने की क्रिया** है।

(iv) दुर्बल पापी शनि, वात, पित्त, कफ विकार जनित रोग व पीड़ा देता है। खाज, खुजली और दाद सरीखे रोग, दास व आधीनस्थ कर्मचारियों की हड़ताल से हुई हानि अथवा प्रौढ़ा या वृद्ध स्त्री से संभोग के कारण अपयश-निंदा को भी शनि का ही पाप फल जानें।

(v) शनि पापी नहीं वरन धर्मात्मा है। ये असार भोग वैभव को नष्ट कर, जातक के मन को भगवान की ओर मोड़ता है। धर्म में श्रद्धा व भगवान पर विश्वास, यदि जातक के मन में जाग जाए तब तो निश्चय ही वह अपना लोक-परलोक को सहज ही सुधार लेगा।

7. **बुध** हास्य विनोद, विद्या बुद्धि, विवेक, दक्षता-निपुणता का प्रतीक ग्रह है।

(i) बुध को विष्णु या यज्ञ रूप माना गया है। यह कालपुरूष का पराक्रमेश व षष्ठेश तथा ग्रह परिषद का राजकुमार है।

(ii) बुध की दशा अन्तर्दशा में, जातक **विद्या**, विवेक तथा **बुद्धि** पर आधारित कार्यों **से सुख**, यश व धन पाता है। उद्योग व्यापार व शिल्प में उसकी सहज रूचि होती है। वह जादूगरी या **कारीगरी** से लोगों का मनोरंजन कर उनको सुख देता है।

(iii) ऐसा जातक परोपकार व जनहितकारी कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेता है। गाने बजाने में उसकी रूचि होती है। वह विनम्र होता है तथा **गुरुजन** व सज्जन व्यक्तियों **को आदर** देता है। उसे विद्या से विनम्रता, योग्यता, धन, धर्म व सुख मिला करता है।

(iv) कभी प्रजाजन व स्त्री से स्नेह सम्मान प्राप्त होता है। **बुध की दशा-भुक्ति** में नया **घर**, उत्तम वस्त्राभूषण व **धन संपदा** जातक को मिला करती है।

(v) दुर्बल व पीड़ित बुध की दशा-भुक्ति में मनुष्य वात पित्त कफ से पीड़ा व कष्ट पाता है। धन की हानि, अपयश, मतिभ्रम, या बुद्धिदोष से उसको

प्रायः दुख मिलता है।

8. **केतु** की दशा प्रायः मंगल सरीखा प्रभाव देती है। केतु को भी राहु सरीखा पापी माना गया है।

   (i) यह एक छाया तमोग्रह है जो अपनी दशा अन्तर्दशा में धनहानि, दुख विषाद, परिवार में कलह क्लेश, मानसिक उलझन, परेशानी, सगे संबंधियों से झगड़ा व दूरी और कभी कारावास या बंधन भी दे दिया करता है।

   (ii) **केतु शुभ** होने पर विद्या में गहनता, **शोध की प्रवृत्ति**, तात्विक विवेचन क्षमता व **वैराग्य तथा मोक्ष** देता है।

   (iii) केतु शुभ होने पर अपनी दशा-भुक्ति में सभी दोष, विषमता व **अप्रिय स्थितियों** से मनुष्य को **छुटकारा** दिलाने में सक्षम है।

9. **शुक्र** एक प्रबल भोगात्मक ग्रह है। ये कालपुरूष की कुंडली में धनेश-सप्तमेश होकर द्वादश भाव में मीन राशि में उच्चस्थ है।

   (i) शुक्र अपनी दशा/भुक्ति में धन, रत्न, कीमती वस्त्र, उत्तम **वाहन व वैभव सामग्री** तथा रतिसुख देता है। इस दशा अवधि में जातक गाने, नाचने, सुख वैभव, राग रंग व दांपत्य सुख पाता है।

   (ii) शुक्र यदि बली व सतोगुणी ग्रहों से प्रभावित हो तो जातक सुशील, सदाचारी, **दानवीर, पुण्यात्मा** एवम् सत्संगी होता है। देवता, गुरुजन तथा ब्राह्मणों की कृपा से वह धन वैभव व सुख सम्मान पाता है। उसे स्वर्ण, रत्न आभूषण, स्त्री पुत्र व वाहन सुख की प्राप्ति होती है। कभी खोया अथवा नष्ट धन भी पुनः प्राप्त होता है।

   (iii) शुक्र पीड़ित होने पर शरीर में कफ-वायु के प्रकोप से रोग व कष्ट होता है। मन में संताप, नीच जन से वैर विरोध व पुत्र से वैमनस्य होता है।

   (iv) गुरु व शुक्र, ग्रह परिषद में मंत्री पद पर प्रतिष्ठित हैं। गुरु धर्म कर्म में कुशल वेदनिष्ठ ब्राह्मण है; तो शुक्र भी मंत्रानुष्ठान व यज्ञादि से **धन वैभव देने में प्रवीण** है। शुक्र की प्रवृत्ति तनिक राजसी है। यों ये न्यायप्रिय, सत्यनिष्ठ व अपने अधिकार पाने के लिए सचेष्ट रहता है। इसे पक्षपात व अन्याय तनिक भी नहीं भाता। ये समता व समान अवसर व अधिकारों का पोषक है।

   (v) गुरु व शुक्र दोनों ही शुभ ग्रह हैं। किंतु गुरु यदि अध्यात्मवादी बनाकर परलोक सुधारता है तो शुक्र स्वर्ग को धरती पर उतार लाने में विश्वास

करता है। दोनों ही परोपकारी हैं व स्वार्थ, लोभ मोह के प्रबलहन्ता भी।

1.12 दशा में भाव कारकत्व विचार

जन्मांग में विचारणीय भाव की राशि का स्वामी भावेश कहलाता है।

(i) कोई ग्रह जिस भाव में स्थित है उस भाव का फल पहले देगा तदुपरांत

(ii) वह जिस राशि में है उस राशि के गुणानुसार फल देगा अन्त में

(iii) जिन ग्रहों की उस पर दृष्टि है अथवा जिन ग्रहों द्वारा दशानाथ दृष्टित है उनके प्रभाव के अनुसार दशा फल देगा। यहाँ ये बताया गया है कि दशानाथ जिस भाव का स्वामी या कारक है उसके फल अपनी दशा-भुक्ति में किस प्रकार देगा।

1. **लग्न की दशा** प्रायः जातक का स्वास्थ्य व देह संबंधी सुख दुख दर्शाती है। लग्नेश की दशा में लग्न के शत्रु (षष्ठेश या शत्रु ग्रह) की भुक्ति में शरीर को कष्ट व मृत्यु होना संभव है। कारण लग्न का संबंध आयुष्य व शरीर से होता है। अतः स्वास्थ्य प्रभावित होना स्वाभाविक बात है।

2. **धन भाव** द्वितीय भाव का संबंध

(i) धन, कुंटुंब, तथा प्रांरभिक विद्या (मतान्तर से विद्या कितनी,कैसी व कब तक) भी धन भाव से जानें। द्वितीय भाव नेत्र व वाणी का कारक भी है।

(ii) धनेश अपनी दशा/भुक्ति में **धन, कुंटुंब सुख** व विद्या दिया करता है। जातक को स्वादिष्ट भोजन मिलता है तथा वाणी प्रभावशाली होती है।

(iii) धनेश का सूर्य से संबंध होने पर जातक **परोपकारी धनी व विद्वान** होता है।

(iv) धनेश का *गुरु से संबंध* ज्ञान विवेक व अध्यात्म की ओर झुकाव देता है किंतु धनेश का *शनि से संबंध* विद्या प्राप्ति में बाधा देता है, स्वल्प/हीन विद्या देता है।

(v) यदि सूर्य या चंद्रमा निर्वल, नीच, शत्रु युक्त/क्षेत्री होकर, मंगल तथा केतु से दृष्ट हो तो जातक नेत्र हीन अथवा विषम दृष्टि दोष (अंधत्व) से पीड़ित होता है। प्रायः धनेश की दशा/भुक्ति में ये घटना होती है।

(vi) **अंधत्व योग** के लिये चंद्र षष्ठ भाव में; सूर्य अष्टम, शनि द्वादश तथा

मंगल द्वितीय भाव में हो तो सूर्य नेत्र ज्योति का कारक होकर दुःस्थान (त्रिकभाव) में बैठने से दुर्बल हो जाता है। पाप ग्रह मंगल द्वितीयस्थ हो व शनि तथा सूर्य द्वारा दृष्ट भी हो तो जातक की नेत्र ज्योति बचना कठिन हो जाता है। उसकी दृष्टिहीनता की प्रबल संभावना होती है।

3. **तृतीय भाव** भाई बहन, साहस, पराक्रम तथा परिश्रम का प्रतीक है। ये भाव जातक का स्नेह, सहयोग तथा सहभागिता या साझांपन भी दर्शाता है। यदि जन्मांग में

   (i) द्वादशेश तृतीय भाव में हो तो वह तीसरे भाव की हानि करेगा। ऐसा जातक भाई बहन के सुख से वंचित रहेगा। उनसे द्वेष या मतभेद रखेगा। कभी स्वार्थी होकर मात्र अपने शरीर पोषण में लगा रहेगा।

   (ii) तृतीयेश मनुष्य के अहंता को भी दर्शाता है कदाचित इसी कारण, तृतीयेश का अष्टम भाव तथा अष्टमेश से यदि संबंध हो तो, जातक **आत्मघात** कर बैठता है। तृतीयेश की दशा में अष्टमेश की भुक्ति आत्महत्या का कारण बन सकती है।

4. **चतुर्थ भाव** से प्रायः भूमि, भवन, माता व मन के सुख का विचार किया जाता है। परिवार की सुख शान्ति व मित्रों का विचार भी अनेक विद्वान ज्योतिषी चतुर्थ भाव से करते हैं। इसे सुख भाव भी कहा जाता है।

   (i) प्राचीन विद्वानों ने दशम भाव को राजा व चतुर्थ को प्रजा का प्रतीक माना है। चतुर्थेश की दशा में चंद्रमा की भुक्ति जातक को जनप्रिय बनाकर राजनीति में सफलता देती है।

   (ii) यदि चतुर्थ भाव पीड़ित हो या चतुर्थेश पापग्रह से दृष्ट-युक्त हो तो ऐसा चतुर्थेश अपनी दशा/भुक्ति में राज द्रोह या जनता द्वारा जातक का नकारा जाना दर्शाता है। यों चंद्रमा भी जनता/प्रजा का कारक माना जाता है। इस प्रकार चतुर्थेश या चंद्रमा का नीचस्थ होना **चुनाव में पराजय** दे सकता है।

5. **पंचम भाव** से *संतान, धारणा शक्ति, बुद्धि बल, हर्ष-प्रसन्नता तथा प्रेमी-प्रेमिका (प्रगाढ़ मैत्री) का विचार* किया जाता है।

   (i) कुछ मनीषी नवम भाव को पिता भाव मान कर पंचम भाव से पिता का भाग्य (सफलता/उन्नति) जानने का प्रयास करते हैं तो अन्य मनीषी **शत्रु व रोग नाश का विचार** (षष्ठ से द्वादश होने के कारण) पंचम भाव से करते है।

(ii) इसी प्रकार पंचम भाव से **सट्टा, लाटरी** द्वारा धन प्राप्ति का भी ज्ञान होता है।

(iii) पंचम भाव में राहु-केतु की स्थिति हो तथा पंचमेश बली, शुभग्रह युक्त-दृष्ट हो तो पंचमेश की दशा-भुक्ति में *अनायास अनार्जित धन* (रेस, लाटरी, शर्त सट्टे से) प्राप्त होता है। श्री भसीन का मत है कि योग कारक कोई भी ग्रह राहु-केतु से संबंध करने पर अपनी दशा-भुक्ति में धन दिया करता है।

6. **षष्ठ भाव** से *रोग, ऋण, शत्रु व संघर्ष का विचार* किया जाता है।

(i) षष्ठेश अपनी दशा अन्तर्दशा में प्रायः रोग व शत्रु भय दिया करता है।

(ii) यदि दशानाथ से षष्ठस्थ ग्रह की अन्तर्दशा (भुक्ति) हो अथवा दशानाथ के नैसार्गिक शत्रु की भुक्ति में प्रायः अनिष्ट व पाप फल मिला करता है।

(iii) यदि भुक्तिनाथ (अन्तर्दशा वाला ग्रह) दशानाथ के साथ ही लग्नेश का भी शत्रु हो तथा दशानाथ से षष्ठ या अष्टम भाव में हो तो जातक को **अधिक हानि व कष्ट** मिलता है।

(iv) संक्षेप में, दशानाथ का शत्रु या दशानाथ से षष्ठ स्थान में स्थित ग्रह अथवा

(v) लग्न से षष्ठ भाव का स्वामी ग्रह (षष्ठेश) अपनी भुक्ति में रोग, शत्रु भय, बाधा या पदच्युति दिया करता है। कभी–कभी तो इस अवधि में परम स्नेही व इष्टजन भी जातक के शत्रु बन जाते हैं।

7. **सप्तम भाव** से प्रायः *विवाह व व्यापारिक सांझेदारी का विचार* किया जाता है। पति-पत्नी का रंग रूप, चरित्र, स्वभाव तथा सामाजिक प्रभाव, अथवा विवाह कब, ससुराल कैसी अर्थात् दांपत्य सुख का विचार, सप्तम भाव से ही होता है।

(i) सप्तम भाव में शनि की राशि, स्थिति-दृष्टि, विवाह में विलंब दिया करती है तो बुध की राशि (मिथुन व कन्या) **शीघ्र विवाह** में सहायक होती है।

(ii) सप्तमेश की दशा/भुक्ति अथवा सप्तम भाव के कारक शुक्र की दशा या भुक्ति में **विवाह योग** होता है।

(iii) कुछ मनीषी शुक्र के साथ गुरु की दशा/भुक्ति या **गोचर गुरु की सप्तम भाव या सप्तमेश से दृष्टि युति होने पर** विवाह की बात कहते हैं।

8. **अष्टम भाव** को *जीवन की पूर्णता, आयुष्य, मृत्यु, अपमान व मृतक धन या वसीयत* का प्रतीक मानते हैं। अष्टमेश की दशा मृत्यु देने में समर्थ होती है। कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सूर्य अथवा चंद्रमा से अष्टम भाव का स्वामी अपनी दशा-भुक्ति में मृत्यु दे सकता है।

   (ii) **देव केरलकार** के विचार से तीन लग्नों में अष्टमेश की दशा-भुक्ति के साथ ही यदि गोचर शनि की अष्टमेश के नवांश के स्वामी (नवांशपति) की राशि में स्थिति या दृष्टि हो तो जातक की मृत्यु हो सकती है।

   (iii) यदि अष्टमेश पापी होकर लग्नस्थ हो तथा लग्न शुभ ग्रह की दृष्टि युति से वंचित हो तो, अष्टमेश की दशा-भुक्ति में देह कष्ट अथवा देह की हानि हुआ करती है।

   (iv) इसके विपरीत अष्टमेश बली, शुभ ग्रह से युक्त/दृष्ट हो तो जातक दीर्घायु होता है। लग्नेश और अष्टमेश यदि दोनों ही ग्रह बली हों तो जातक स्वस्थ व दीर्घायु होता है।

9. **नवम भाव** को भाग्य भवन कहा जाता है। प्राच्य ग्रंथों में इसे धर्म भाव माना गया है। यों भी भाग्य, पुण्य कर्म का फल ही तो है। भाग्य शब्द का प्रयोग नियति अथवा दैवीय कृपा के रूप में होता है। यथा ठेले वाला, ट्रक चालक, टैक्सी ड्राइवर, कुली, कबाड़ी सरीखे व्यवसाय को बहुधा नियति से जोड़ दिया जाता है। अतः *व्यवसाय व जीविका का विचार* भाग्य भवन से किया जाता है।

   (i) इसी के साथ दैवी अनुग्रह, किस्मत, तकदीर, भाग्य, आशा व योग्यता से अधिक फल की प्राप्ति भी नवम भाव से जानी जाती है।

   (ii) नवमेश की दशा/भुक्ति में प्रायः **भाग्योदय, पदोन्नति,** धन मान तथा **सुख समृद्धि** की प्राप्ति होती है.

   (iii) यदि नवमेश पापी हो या दशानाथ और भुक्तिनाथ पाप ग्रह के साथ नवमस्थ हो तो दुर्भाग्य, दैन्य, दुख व अपमान मिलता है। जातक को मिथ्या कलंक व अपयश का भागी होना पड़ता है।

   (iv) नवम भाव से पुत्र का पुत्र या *पौत्र* तथा संतान के वृद्धि बल का भी विचार किया जाता है।

10. **दशम भाव** की प्राचीन विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रंशसा गायी है। संत तुलसीदास की बड़ी स्पष्ट घोषणा है "कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करहिं, सो तस फल चाखा" अर्थात उस परमात्मा ने ये संसार कर्म

प्रधान (कर्म पर आधारित) बनाया है। जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। ये तथ्य ज्योतिषीय जन्मकुंडली से अधिक भला कौन जान सका है। इसमें नवम स्थान धर्म, दशम कर्म तो उसके तुरंत बाद एकादश स्थान लाभ का होता है। जन्मांग की मानो स्पष्ट घोषणा है कि धर्म पर आधारित जनकल्याण व परोपकार के कार्य करने से ही सच्चे लाभ की प्राप्ति होती है। वही जन्म जन्मान्तर से संसार में भटकते जीव की सच्ची कमाई है। अस्तु। (ii) प्राचीन मनीषियों के विचार से सूर्य, मंगल, शनि, राहु तथा केतु सरीखे पाप ग्रह भी बली होकर (शुभ दृष्ट/युत, स्वक्षेत्री/मित्र क्षेत्री) दशमस्थ होने से जनकल्याण के कार्य (यज्ञकर्म) कराते हैं। जातक जनता का **संरक्षक व पालनकर्ता** होता है। दशमेश शुभ ग्रह हो, शुभ दृष्ट/युत हो तो निश्चय ही अपनी दशा अन्तर्दशा में अर्थात् उन्नति, मान सम्मान, **प्रतिष्ठा व वैभव** देगा।

11. **लाभ स्थान** लग्न से एकादश भाव, लाभ स्थान या आय भवन के नाम से प्रसिद्ध है। लाभ स्थान को त्रिषडाय (तीन, छः व ग्यारह) भाव मानकर दोष पूर्ण तथा निदिंत भाव भी कहा गया है। अनुभव में यही आया है कि (i) लाभेश की दशा/भुक्ति *धन संबंधी शुभ फल* देती है। विविध स्रोत से धन का लाभ होता है किंतु देह *कष्ट व मानसिक पीड़ा* भी शायद कुछ बढ़ जाती है। मन में चिंता, क्लेश, परिवार में तनाव अशान्ति होने के कारण ही कदाचित इसे अनिष्ट/पाप दशा माना गया है। (ii) एकादश भाव शरीर के लिये प्रायः कष्टदायी होता है व एकादशेश की दशा/भुक्ति भले ही धन का लाभ दे किंतु देह व स्वास्थ्य की हानि करती है। यदि लाभेश की दशा में दशानाथ व लग्नेश के शत्रु की भुक्ति (अन्तर्दशा) हो तब तो महान विपत्ति व संकट की स्थिति बन जाती है। (iii) एकादश भाव माता के लिये मृत्यु स्थान है (ये चतुर्थ भाव से अष्टम भाव जो है)। अतः लाभेश की दशा/भुक्ति **माता के लिये कष्टप्रद** या मृत्यु देने वाली हो सकती है। लाभेश की दशा व भुक्ति काल में यदि गोचर का शनि एकादश भाव में युति/दृष्टि करे तो माता की मृत्यु होना संभव है।

12. **द्वादश भाव** से *व्यय, हानि या विनाश का विचार* किया जाता है। ये त्रिक भाव का अंग होने से अशुभ माना गया है। किंतु अन्य मनीषियों ने इसे *भोग वैभव व ऐश्वर्य* का प्रतीक बताया है।

    (i) महर्षि पराशर के विचार से द्वितीय व द्वादश भाव के स्वामी सम होते हैं तथा अपनी अन्य राशि के शुभत्व बल (शुभ ग्रह की दृष्टि/युति) के

अनुसार दशा फल देते हैं।

(ii) व्ययेश जिस भाव में हो अथवा जिस ग्रह से युक्त/दृष्ट हो प्रायः उसका फल भी अपनी दशा/भुक्ति में दे दिया करता है।

(iii) द्वादश भाव के स्वामी की दशा में शुभ/योगकारक ग्रह की भुक्ति में सुख, भोग, **वैभव, समृद्धि बढ़ेगी** ये बात निसंकोच कही जा सकती है।

(iv) गोचर में शुभ ग्रह की द्वादश भाव पर दृष्टि युति, निश्चय ही जातक को उदार बनाकर, दान धर्म व परोपकार पर धन व्यय कराती है।

1.13 भावाधिपति दशा विचार

ग्रह जिस भाव का अधिपति हो, जिस भाव में स्थित हो अथवा जिन बातों का कारक हो उस भाव को अपनी दशा/अन्तर्दशा में प्रभावित किया करता है। पंचमेश अथवा पंचमस्थ ग्रह या गुरु (संतान का कारक) संतान संबंधी बातों पर अपनी दशा/अन्तर्दशा में निश्चय ही शुभ/अशुभ प्रभाव डालता है। विभिन्न भावेश की दशा का फल निम्न प्रकार होगाः

1. **लग्नेश की दशा**

(i) शारीरिक सुख, स्वास्थ्य, धन व बल को बढ़ाने वाली होती है।

(ii) यदि लग्नेश अष्टमस्थ हो तो शारीरिक पीड़ा होती है।

(iii) लग्नेश में शनि की अन्तर्दशा से धन की हानि व कुंटुंब से विरोध या सौमनस्य की कमी होती है।

2. **द्वितीयेश की दशा** मारकेश होने से

(i) शारीरिक कष्ट व पीड़ा देती है किंतु धन संपदा बढ़ाने वाली भी होती है।

(ii) द्वितीयेश पाप ग्रह से युक्त हो तो मानहानि, धनहानि, स्वजन से विरोध व बंधन योग (कारावास) भी होता है।

(iii) द्वितीयेश (या द्वितीयस्थ पाप ग्रह) की महादशा में शनि, मंगल, सूर्य, राहु सरीखे पाप ग्रहों की अन्तर्दशा में धन संपदा की हानि होती है।

(iv) पाप ग्रह द्वितीयेश हो कर द्वितीयस्थ होने पर अपनी दशा में राज भय देता है, धन-मान की हानि व देश निकाला देता है। पापी द्वितीयेश में पाप ग्रह की अन्तर्दशा भूमि, संपत्ति व भाई बहन संबंधी सुख की हानि करती है।

(v) शुभ ग्रह की अन्तर्दशा कभी अशुभ नहीं होती। द्वितीय भाव में यदि शुभ ग्रह हो, तथा धनेश भी शुभ (बुध, गुरु, शुक्र चंद्र) ग्रह हो तो द्वितीयेश की दशा/अन्तर्दशा में **जातक उन्नति करता है।** उसकी संपत्ति व यश बढ़ता है। उसे संतान सुख भी मिलता है।

(vi) द्वितीयेश पाप ग्रह होकर यदि पाप ग्रह से युति करे तो द्वितीयेश की दशा/उपदशा भूत व्याधि, चिंता, विषाद व विविध प्रकार के दुख व कष्ट देने वाली होती है।

3. तृतीयेश की महादशा :

(i) यदि तृतीयेश शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र, चंद्र) हो अथवा शुभ ग्रह के साथ स्थित हो तो तृतीयेश की दशा/अन्तर्दशा में उत्साह, साहस, पराक्रम की वृद्धि, भाई बहन से प्रेम व सहयोग बढ़ता है।

(ii) तृतीयेश यदि पाप ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, राहु) हो तो पाप ग्रह की अन्तर्दशा भाई बहन से वैर विरोध करा के सुख सौमनस्य की हानि किया करती है।

(iii) पापी तृतीयेश की पाप ग्रह से युति अशुभ प्रभाव बढ़ा देती है। ऐसे तृतीयेश की दशा में पापग्रह की भुक्ति (अन्तर्दशा) शत्रु की वृद्धि करती है तो कभी **चोरी से धन नाश** व शस्त्राघात की पीड़ा देती है।

(iv) साधारणतया तृतीयेश की दशा कष्टकारक व चिन्ता देने वाली होती है तथा इसमें पाप ग्रह की अन्तर्दशा भाई बहन व संबंधियों से मतभेद व वैमनस्य बढ़ाती है।

4. चतुर्थेश की महादशा :

(i) चतुर्थेश यदि पाप ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि) हो तो पाप ग्रह का अन्तर आने पर भूमि, भवन व कृषि की हानि, मानसिक क्लेश या घर परिवार व माता के **सुख में कमी** होती है।

(ii) बहुधा चतुर्थेश की दशा में पाप ग्रह, अस्त ग्रह या नीच ग्रह की अन्तर्दशा आने पर जातक को **अपने देश का त्याग** करना पड़ता है व बंधुजन का वियोग या विनाश होता है।

(iii) चतुर्थेश यदि शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह के साथ स्थित हो अथवा चतुर्थ भाव में कोई शुभ ग्रह स्थित हो तो चतुर्थेश की दशा में **भूमि, भवन का लाभ** व वाहन सुख प्राप्त होता है। माता, मित्र व स्वयं अपने मन को सुख होता है।

(iv) चतुर्थेश (सुखेश), बली शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट होने पर, अपनी दशा में **नया मकान** बनवाता है।

(v) लग्नेश व सुखेश की दशा में, यदि दोनों चौथे या दशम भाव में हों तो, जातक बड़ा कारोबार करता है किंतु इस अवधि में पिता को कष्ट भी होता है। सुखेश में लग्नेश/दशमेश की अन्तर्दशा में जातक विद्या विषयक लाभ, **विश्वविद्यालय की डिग्री** पाता है।

5. **पंचमेश की महादशा :**

(i) पंचमेश यदि शुभ ग्रह (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) हो तो उसकी दशा में **धन व संतान की वृद्धि,** राजसम्मान, बंधु बांधवों से स्नेह व अभिष्ट सिद्धि होती है।

(ii) पंचमेश की दशा, धन धान्य, विद्या-सुबुद्धि, **यश व मान** दिया करती है। माता के लिये मारकेश होने से **माता को कष्ट** पीड़ा या मृत्यु देती है।

(iii) पंचमेश पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) होने पर **पुत्र** तथा स्त्रीग्रह (चंद्र, शुक्र) होने पर **पुत्री जन्म** भी संभव है।

(iv) पंचमेश की महादशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा (सूर्य, मंगल, शनि, राहु) से राज पीड़ा व भय, पुत्रों पर आपत्ति तथा धन हानि व कष्ट होता है।

(v) पंचमेश की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) **ईश्वर** प्रेम, **भक्ति** व सिद्धि देती है।

(vi) पंचमेश त्रिकोण भाव का स्वामी होने के कारण, स्वयं *कभी पापी नहीं होता* व पाप ग्रह भी शुभ फल देता है किंतु पंचमेश के साथ पाप ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, राहु) की दृष्टि/युति उसे अशुभ बना देती है।

6. **षष्ठेश की महादशा :**

(i) षष्ठेश की दशा में रोग-शत्रु की वृद्धि व भय होता है। पंचम भाव संतान भाव है तो षष्ठेश, संतान के लिये मारकेश होने के कारण, **संतान को कष्ट** होता है।

(ii) षष्ठेश की महादशा में पापग्रह की अन्तर्दशा (सूर्य, मंगल, शनि, राहु) राज कोप, अग्नि, रोग व शत्रु का भय व शोक देती है।

(iii) पापी षष्ठेश की दशा में, पापग्रह की अन्तर्दशा रोग शोक व शत्रु भय के साथ मुकद्दमेबाजी में भी, जातक को उलझा कर राजदंड (जुर्माना

या कारावास) देती है।

(iv) कभी इस दशा में जातक को **असाध्य रोग** जनित कष्ट भी भोगना पड़ता है।

7. सप्तमेश की महादशा :

(i) सप्तमेश की दशा में शोक, शारीरिक कष्ट व पदावनति होती है।

(ii) सप्तम भाव मारक है अतः सप्तमेश की दशा प्रायः अशुभ फल देती है।

(iii) सप्तमेश पाप ग्रह हो तो इसकी दशा में **स्त्री को कष्ट** होता है।

(iv) सप्तमेश शुभ ग्रह हो तो भी अपनी दशा में स्त्री को सामान्य कष्ट देता है।

(v) सप्तमेश में पाप ग्रह की अन्तर्दशा (सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु) में जातक को स्त्री सुख की हानि होती है, वह परदेश में भटकता है।

(vi) इस दशा में कभी राजदंड या राजभय होता है। **स्त्री से झगड़ा** व देश निर्वासन की संभावना होती है।

8. अष्टमेश की महादशा :

(i) अष्टमेश की दशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा शत्रु से भय, **धन नाश,** यज्ञ की हानि अथवा स्थान च्युति सरीखा कष्ट देती है।

(ii) बहुधा स्त्री, मित्र, कंटुंब व भाई संबंधी सुख की हानि होती है। अष्टमेश की दशा में मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट, पत्नी की मृत्यु/वियोग तथा कभी विवाहादि मंगल कार्य भी होते हैं। कारण अष्टम भाव चतुर्थ (पारिवारिक सुख) का त्रिकोण स्थान है।

(iii) यदि अष्टमेश पाप ग्रह (मंगल, शनि, राहु, सूर्य) होकर द्वितीय भाव में स्थित हो तो अपनी दशा में **मृत्यु** देने मे सक्षम है।

9. नवमेश की महादशा :

(i) नवमेश की दशा में धार्मिक प्रवृत्ति होती है।

(ii) जातक दान पुण्य, तीर्थयात्रा व यज्ञ आदि करता है। वह बुद्धि विद्या द्वारा उन्नति पाता है। उसे राज सम्मान, समाज में **यश प्रतिष्ठा, धन** व महत्त्वपूर्ण कार्य में सफलता मिलती है।

(iii) नवमेश की दशा में पाप ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, राहु) का अन्तर आने पर **माता पिता की मृत्यु** या कष्ट तथा धन नाश व बंधन प्राप्त होता है।

(iv) शुभ ग्रह (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, केतु) की अन्तर्दशा में धार्मिक विचार मन में आते है। जातक दान पुण्य, **परोपकार** व जनकल्याण के कार्य करता है।

(v) यदि नवमेश पाप ग्रह हो तथा उसमें राहु, शनि, मंगल, सूर्य सरीखे पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो जातक परदेश में भटकता है। बंधु वर्ग से झगड़ा व विक्षोभ होता हैं। उसे अनेक दुख व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

10. दशमेश की महादशा :

(i) उच्चाधिकार, धन, और मान प्रतिष्ठा देती है। **राज सम्मान** व राज्याश्रय की प्राप्ति होती है। समाज में यश व कीर्ति बढ़ती है।

(ii) माता पिता को ये दशा, मारकेश होने से कष्टदायी होती है। दशमेश की दशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा मित्रों से वियोग, अपमान, **पदच्युति**, धन व सुख की हानि करती है।

(iii) दशमेश पापी या नीच होने पर, पाप ग्रह की अन्तर्दशा, प्रियजन को रोग देकर सुख व यश की हानि, पदच्युति व धन का नाश करती है। कभी तो व्यक्ति को कारावास, कठिन रोग व नाना प्रकार के **दुख** झेलने पड़ते हैं।

(iv) यदि कोई ग्रह दशम भाव में उच्च व शुभ वर्ग में हो तो ऐसे ग्रह की दशा, **भाग्योदय**, मान सम्मान में वृद्धि, तथा धन व सुख देने वाली होती है।

11. एकादशेश की महादशा :

(i) एकादश भाव लाभ स्थान है अतः लाभेश की दशा लाभ देने वाली होती है।

(ii) जातक व्यापार, व्यवसाय से प्रचुर **लाभ व मान** सम्मान पाता है।

(iii) लाभेश (षष्ठ भाव से षष्ठेश) पाप ग्रह से युत/दृष्ट होने पर, जातक को अपनी दशा/भुक्ति में **रोगी** बनाता है।

(iv) लाभेश की दशा में (शनि, मंगल, सूर्य, व राहु) पाप ग्रह की अन्तर्दशा राजभय, **धनहानि**, कृषि का नाश व दुःख देती है।

12. द्वादशेश की दशा :

(i) द्वादश भाव हानि या व्यय भाव है। व्ययेश की दशा में, आर्थिक कष्ट, रोग, चिंता, कुंटुबीजन को कष्ट व आकस्मिक धन हानि या अधिक खर्चे अचानक सिर पर पड़ने, से **चिंता व दुख** होता है।

(ii) द्वादशेश की दशा में शनि, सूर्य अथवा मंगल की अन्तर्दशा स्त्री, संतान व कुटुंबियों से **मतभेद** देती है तथा धन, मान बल व पुरूषार्थ की कमी होती है।

(iii) द्वादशेश की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में चोर, सर्प, व विष आदि से भय होता है। यदि **शुक्र द्वादश भाव में** हो या द्वादशेश हो तो द्वादशेश की दशा भोग **ऐश्वर्य की वृद्धि** कर जातक को धनाढय् व सुखी बनाती है।

(iv) द्वादश भाव हानि, व्यय, अन्यत्व (विदेशी) व पृथकता का भाव है अतः *द्वादश भाव में स्थित ग्रह अपनी दशा में प्रायः अपव्यय तथा अति व्यय दर्शाते हैं।*

(क) *यथा* **सूर्य द्वादश भाव में** स्थित होकर मनुष्य को निस्वार्थ भाव से परोपकार में लगाकर समाज का कल्याण कराता है।

(ख) **चंद्र द्वादश भाव में** होने पर जातक को अत्याधिक संवेदनशील, भावुक व अधीर बनाता है। कभी जातक निराशा व अवसाद की यंत्रणा सहता है।

(ग) **मंगल द्वादश भाव में** होने पर जातक अति परिश्रमी, हाड़ तोड़ परिश्रम करने वाला या आत्मपीड़क होता है।

(घ) **बुध द्वादश भाव में** हो तो जातक पात्र-अपात्र का निर्णय किए बिना सभी को सलाह, उपदेश देकर बुद्धि बल का अपव्यय करता है।

(ङ) **गुरु द्वादश भाव में** हो तो जातक उदारमना, दानी व अपनी धन संपत्ति जनता में लुटाने वाला होता है।

(च) **शुक्र द्वादश भाव में** होने पर जातक भोगी, वीर्य शक्ति का अति व्यय करने वाला अथवा पुस्तकों को पढ़ने वाला विद्या व्यसनी होता है।

(छ) **शनि अथवा राहु द्वादश भाव में** जाकर जातक से परिश्रम कर उसे थका डालते हैं। कभी जातक स्नायुविक रोग से भी पीड़ित होता है।

(ज) **केतु द्वादश भाव में** होने पर *सभी अशुभ/अनिष्ट का नाश कर मनुष्य को मुक्ति के द्वार तक ले जाता है।*

1.14 दशा-भुक्ति नाथ का भाव और राशि में प्रभाव

1. यदि कोई **शुभ ग्रह** (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) **केंद्र या त्रिकोण भाव में** स्थित हो तो वह अपनी दशा अन्तर्दशा में *निश्चय ही शुभ फल* देगा। उदाहरणार्थ

दशा फल विचार के कतिपय सूत्र–21

(i) शुभ ग्रह लग्नस्थ हो कर अपनी दशा/अन्तर्दशा में **स्वास्थ्य, सुख,** सम्मान व धन प्रदान करेगा।

(ii) **चतुर्थ भाव में स्थित** हो तो भूमि, **भवन, वाहन,** माता व परिवार का सुख देगा।

(iii) **पंचम भावस्थ** होने पर उत्तम **विद्या, बुद्धि तथा श्रेष्ठ संतान** सुख देगा।

(iv) **सप्तमस्थ शुभ ग्रह** की दशा में **स्त्री संबंधी सुख** व दांपत्य जीवन में उत्तम फल मिलेंगें।

(v) नवमस्थ शुभ ग्रह भाग्योदय करेगा, **धर्म में आस्था व विश्वास** देगा, पिता का सुख देगा।

(vi) **दशमस्थ शुभ** ग्रह व्यापार **व्यवसाय में उन्नति** देकर मान सम्मान और प्रतिष्ठा बढ़ाएगा।

2. **उच्च व स्वराशि में स्थित ग्रह** अपनी दशा में शुभ परिणाम देते हैं। ध्यान रहे पाप ग्रह भी अपनी उच्च/स्व राशि में शुभ फल देंगे। यथा

(i) **सूर्य मेष व सिंह में** स्थित होने पर, अपनी दशा में, राज्य **सम्मान व सुख** देगा। **मंगल** मकर, मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो तो अपनी दशा में भाईयों का सुख, भूमि भवन का सुख देगा, पराक्रम व साहस की वृद्धि कर सफलता देगा। **शनि** तुला, मकर, कुंभ राशिस्थ हो तो मातहतों का स्नेह व सम्मान देगा, परदुखकातर बनाकर सेवा कराएगा, दुख दारिद्रय मिटाएगा।

(ii) जन्मांग में कोई ग्रह अल्पबली हो किंतु नवमांश कुंडली में अपनी उच्च/स्वराशि में स्थित होने से *नवमांश बली* हो तो ऐसा ग्रह अपनी दशा में अपने स्वभावानुसार/भावेशानुसार ***शुभ फल*** अवश्य देगा। इसके विपरीत कोई ग्रह यदि जन्मांग में बली (उच्च राशिस्थ, स्वक्षेत्री, मित्रगृही, शुभ ग्रह युक्त) हो किंतु नवमांश कुंडली में वही ग्रह (नीच राशि, शत्रुग्रस्त, शत्रुगृही) अल्प बली हो तो उसकी दशा में आरंभ में शुभ फल किंतु उत्तरार्ध में मिश्रित फल प्राप्त होते हैं।

(iii) जो ग्रह अपनी नीच राशि या अपने शत्रु की राशि में हो तो उसकी दशा के आरंभ में ही अशुभ फल मिलने शुरु हो जाते है। यदि नवमांश कुंडली में इस ग्रह को बल मिल जाए तो बाद में थोड़े शुभ फल भी अवश्य मिलते हैं व दुख कष्ट में कमी होती है।

3. यदि कोई ग्रह जन्मांग (जन्म कुंडली) में अल्प बली (नीच राशिस्थ, शत्रु क्षेत्री,

शत्रु/पाप ग्रह युक्त) हो तथा नवमांश कुंडली में भी अल्प बली हो तब तो कदाचित उस दशा में कष्ट भोग ही अधिक मिलेगा। संक्षेप में इसे यों जाने जो ग्रह शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट, केंद्र/त्रिकोण भाव में स्थित हों अपनी उच्च, स्वराशि, मित्रगृही हों उनकी संपूर्ण दशा निश्चय ही शुभ फल दिया करती है। इसके विपरीत दु:स्थान नीच राशिस्थ, शत्रुगृही, पाप दृष्ट/युक्त ग्रह अपनी दशा में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर हैरानी परेशानी एवम् दुख चिंता बढ़ाते हैं।

4. **फल कब मिलेगा : चर राशि** में स्थित ग्रह की दशा आरंभ में उत्तम, मध्य में मध्यम व अन्त में कष्ट/अल्प सुख देती है।

   स्थिर राशि (लग्न में हो तो उसमें) स्थित ग्रह की दशा आरंभ में कष्ट/कठिनाई देकर बाद में सुख देती है।

   द्विस्वभाव राशि (लग्न में हो तो उसमें) स्थित ग्रह की दशा आरंभ में कष्ट, मध्य में मध्यम व अन्त में शुभ फल दिया करती है।

तालिका		
चर	**स्थिर**	**द्विस्वभाव**
1 मेष	2 वृष	3 मिथुन
4 कर्क	5 सिंह	6 कन्या
7 तुला	8 वृश्चिक	9 धनु
10 मकर	11 कुंभ	12 मीन

(i) **चर** की दशा आरंभ में उत्तम और अन्त में अशुभ,

(ii) **स्थिर** राशि में स्थित ग्रह की दशा आरंभ में थोड़ी कठिनाई बाधा देकर बाद में सुख समृद्धि देगी ये निश्चित है।

(iii) **द्विस्वभाव** की दशा के आरंभ में कष्ट किंतु अन्त में में सुख बीच में मिश्रित फल मिलता है।

5. **दिग्बली ग्रह :** अपनी दशा में, धन वैभव व सुख समृद्धि देते हैं। **लग्न (पूर्व दिशा) में** गुरु व बुध **चतुर्थ भाव** (उत्तर दिशा) में चंद्र व शुक्र, **सप्तम भाव** (पश्चिम दिशा) में शनि तथा **दशम भाव** (दक्षिण दिशा) में सूर्य व मंगल दिग्बली होते हैं।

6. **अभीष्ट सिद्धि :** त्रिक भाव (6, 8, 12वें भाव दु:स्थान या बुरे भाव भी हैं)

को छोड़कर अन्यत्र कहीं भी स्थित ग्रह, अपनी दशा में अरिष्ट की शान्ति व अभीष्ट सिद्धि प्रदान करता है।

7. **अरिष्ट विचार :**

(i) भाग्येश के शत्रु की दशा में बुद्धि विनाश व **राजभय** होता है।

(ii) राहु ग्रस्त ग्रह तथा राहु अधिष्ठित राशि के स्वामी की दशा में अरिष्ट व अशुभ होता है।

(iii) लग्नेश अष्टम भाव में स्थित हो तो उसकी दशा अन्तर्दशा में शारीरिक कष्ट व पीड़ा होती है। मतान्तर से अष्टम भावस्थ सभी ग्रह अपनी दशा में दुख, रोग, क्लेश व कठिनाई बढ़ाते हैं।

(iv) पाप ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु) की दशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा शत्रु जन्य बाधा, आर्थिक हानि, धन चिंता, **रोग शोक व भय** दिया करती है।

8. **शुभ/अशुभ फल विचार :**

(i) जिस ग्रह की महादशा हो उसका प्रभाव, पहले व अन्तर्दशा वाले ग्रह का प्रभाव बाद में पड़ता है। यथा पाप ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आरंभ में कष्ट देकर बाद में सुख व लाभ देती है।

(ii) इसके विपरीत शुभ ग्रह की महादशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा आरंभ में सुख किंतु बाद में कष्ट देती है।

(iii) शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) की अन्तर्दशा सुख, **सम्मान, धन, वैभव** देती है तो अशुभ ग्रह (पाप ग्रह) की महादशा में सूर्य, मंगल, शनि राहु की पाप दशा धन हानि, अपमान, दुख क्लेश दिया करती है।

9. **द्रेष्काण का प्रभाव :** ध्यान रहे ग्रह दशा कभी भी एक सरीखी नहीं रहती बल्कि उसके शुभत्व में कभी कमी या वृद्धि हुआ करती है। हमारे संत विद्वानों ने जनकल्याण हेतु गहन चिन्तन मनन व विचार मन्थन के बाद जो सूत्र खोजे वे निम्न प्रकार हैं–

(i) जो ग्रह *प्रथम द्रेष्काण* में (0-10 अंश तक) हो तो आरंभ में ही ग्रहदशा फल मिलता है।

(ii) जो ग्रह *द्वितीय द्रेष्काण* में (10 अंश से अधिक 20 अंश तक) हो तो ऐसा ग्रह अपनी दशा का फल दशा के मध्य भाग में विशेष रूप से देगा।

(iii) जो ग्रह *तृतीय द्रेष्काण* में (20 अंश से अधिक व 30 अंश या राशि के

अन्त तक) हो तो ऐसा ग्रह प्रायः दशा के अंत में विशिष्ट फल देता है।

(iv) उदाहरण के लिये सूर्य की दशा अवधि 6 वर्ष है। इसके तीन भाग करें तो 2 वर्ष का आरंभ काल, 2 से 4 वर्ष मध्यकाल व 4-6 से अंतकाल कहलाएगा। यदि सूर्य प्रथम द्रेष्काण में हो तो प्रथम भाग में फल मिलेगा, द्वितीय द्रेष्काणस्थ सूर्य मध्य भाग में तो तृतीय द्रेष्काण का सूर्य अन्तिम तिहाई दशा अवधि में विशिष्ट फल देगा।

दशानाथ को दशेश व अन्तर्दशानाथ को भुक्तिनाथ भी कहा जाता है। दोनों का परस्पर भाव संबंध दशाफल को प्रभावित किया करता है।

1.15 यदि दशानाथ व अन्तर्दशानाथ एक ही राशि में स्थित हों तो जातक स्वास्थ्य, सम्मान, धन व सुख पाता है। ध्यान रहे दशानाथ दिशा निर्धारक होता है। वह प्रवृत्ति व फल की प्रकृति (शुभ/अशुभ) निश्चित किया करता है। यदि दशानाथ अपनी उच्चराशि, मूल त्रिकोण राशि, स्वराशि, मित्र राशि में शुभ ग्रह युत या शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो बली होने से शुभ व सुखदायी फल देगा। जातक का मान सम्मान बढ़ेगा, स्वास्थ्य उत्तम होगा उसको देहसुख तथा धन लाभ प्राप्त होगा।

2. इसके विपरीत अपनी नीच राशि में स्थित, शत्रु राशि में स्थित, शत्रु युक्त या शत्रु दृष्ट ग्रह दुर्बल होने से पापी हो जाता है। ऐसे ग्रह की दशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा स्वजन वियोग, परदेश वास (स्थान त्याग) व्यापार में हानि, अवनति, अपमान, रोग, तथा विवाद-वैमनस्य सरीखे कष्ट देती है। अन्तर्दशा यदि शुभ (बली) ग्रह की हो तो अनिष्ट फल बहुत कम या नहीं भी होता। नियम ये है कि दशा, अन्तर्दशा व प्रत्यन्तर दशा के *स्वामी ग्रह* यदि *परस्पर केंद्र या त्रिकोण* में हो तो **शुभ फल** देने वाले बन जाते है।

3. कोई भी ग्रह जन्मांग में अपने स्थान से अगले भाव में (द्वितीय या धनभाव) जाने पर धन बढ़ाता है व शुभ फल देता है। निश्चय ही जन्मांग में ग्रहों का **अपनी राशि से द्वितीय स्थान** में बैठना, जीवन में उन्नति, लाभ, **मान प्रतिष्ठा** और सुख सफलता देता है।

4. अमेरिका के राष्ट्रपति आइजन हावर के जन्मांग में अष्टमेश शुक्र निज राशि तुला से अगले भाव अर्थात् नवम भाव में तो नवमेश मंगल निज राशि वृश्चिक से भाव अगले कर्म अर्थात् दशम भाव में स्थित है। इसी प्रकार दशमेश गुरु भी अपने स्थान से द्वितीय भाव अर्थात् लाभ स्थान में चला गया है। जातक ने जीवन में बहुत उन्नति की व सम्मान पाया। ध्यान देने योग्य बात है कि

श्री आइजर हावर

14 अक्तूबर 1890 सांय 5.15; 37°45' उत्तर, 96°32' पश्चिम

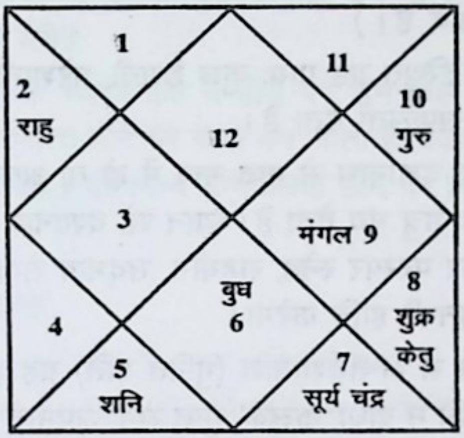

दशमेश नीच राशिस्थ है तो दशमेश का नियंत्रक शनि शत्रु क्षेत्री होकर षष्ठस्थ है किंतु फिर भी जातक एक सशक्त व समृद्ध राष्ट्र अमेरिका का राष्ट्रपति बना।

1.16. दशा व अन्तर्दशानाथ परस्पर केंद्र व त्रिकोण भाव में होने पर शुभ व सुखदायी हो जाते हैं।

1. जो ग्रह दशानाथ से **चतुर्थ स्थान** में होता है वह अपनी भुक्ति (अन्तर्दशा) में मन, माता, भूमि व वाहन सुख को प्रभावित करता है।
2. इसी प्रकार यदि दशानाथ व अन्तर्दशानाथ परस्पर ***समसप्तक*** हो तो निश्चय ही पत्नी के सुख व स्वास्थ्य को प्रभावित करेंगे। जातक का दांपत्य सुख यानि पति पत्नी के परस्पर संबंध भी अप्रभावित नहीं रह पाएँगे। ऐसा ग्रह भावेश व कारकत्व के साथ पति पत्नी के सुख दुख को भी (परस्पर स्थिति के कारण) प्रभावित करेगा ही।
3. यदि अन्तर्दशा वाला ग्रह, दशापति से ***दशम भाव*** में हो तो व्यापार, व्यवसाय, सामाजिक मान प्रतिष्ठा संबंधी शुभ/अशुभ फल देगा।
4. इसी प्रकार अन्तर्दशानाथ यदि दशानाथ से ***पंचम भाव*** में हो तो विद्या, बुद्धि (विवेक, धारणा शक्ति) संतान व उपासना संबंधी फल मिलेंगे।
5. अन्तर्दशानाथ यदि दशानाथ से **नवम भाव** में हो तो उस अवधि में भाग्योदय, तीर्थाटन, पिता को सुख व धन की प्राप्ति होती है।
6. इसके विपरीत यदि अन्तर्दशानाथ-दशापति से *तीसरे भाव, षष्ठ, अष्टम व*

द्वादश भाव में हो तो प्रायः अनिष्ट फल मिला करते हैं। (यहाँ एकादश भाव लाभ स्थान होने से धन संपदा के लिये शुभ व श्रेष्ठ माना गया है किंतु स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है।)

7. **तीसरे भाव** में स्थित ग्रह प्रायः कुछ हैरानी, परेशानी, परिश्रम व भागदौड़ के बाद सुख सफलता देता है।
8. यदि कोई ग्रह, दशानाथ से **षष्ठ भाव** में हो तो अपनी अन्तर्दशा में ऋण, रोग, विवाद व शत्रु भय देता है। ध्यान रहे दशानाथ व अन्तर्दशानाथ सम सप्तक होने पर परस्पर स्नेह, सहयोग, सद्भाव सेवा जनित सुख देते है। षष्ठस्थ ग्रह इनकी हानि करेगा।
9. यदि दशानाथ से अन्तर्दशानाथ (भुक्ति पति) ग्रह ***अष्टमस्थ*** हो तो इस अन्तर्दशा अवधि में बाधा, कलंक, गुप्त रोग, अपमान या मृत्यु सरीखे कष्ट मिलते हैं। कभी वसीयत अथवा बड़ों से उपहार द्वारा धन मिलता है।
10. यदि अन्तर्दशापति ग्रह दशापति से ***द्वादश भाव*** में हो तो अन्तर्दशा अवधि में व्यय चिंता, धन हानि या देह सुख में कमी होती है। दया करुणा, पूजा अनुष्ठान से बाधा व कष्ट मिट जाते हैं। ध्यान रहे द्वादश भाव नवम (धर्म) स्थान से चतुर्थ (माता का) स्थान है। अतः पूजा उपासना व धर्म की पूंजी बढ़ाने हेतु तपश्चर्या के लिये ये कालाविधि उत्तम होगी।
11. सूर्य राजा व सरकार का प्रतीक है। अतः मारक स्थान में स्थित सूर्य, अपनी दशा/अन्तर्दशा में, राजभय, दंड/कारावास दे सकता है। सूर्य जन्मांग में यदि शनि से युक्त अथवा दृष्ट हो तो सुख सफलता देने से पहले खूब परिश्रम व मेहनत कराता है।
12. केंद्र भाव सुरक्षा स्थान हैं इनमें स्थित ग्रह प्रायः अशुभ व अनिष्ट फल नहीं दिया करते। अशुभ व पाप ग्रह भी अनिष्ट नहीं कर पाते अतः उन्हें भी शुभ कहा जा सकता है।
13. सूर्य, मंगल, शनि, राहु केतु को पाप या अशुभ ग्रह माना जाता है। ध्यान रहे शुभ ग्रह (चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र) केंद्र, त्रिकोण, धन व लाभ स्थान में स्थित होकर, अपनी दशा/अन्तर्दशा में स्वास्थ्य, सुख, संतोष व समृद्धि देता है। **पाप ग्रह 3, 6, 8, 12वें भाव में शुभ माने जाते हैं।**
14. दशा फल के लिये मात्र तृतीय, षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव ही अशुभ माने गये हैं। अन्य सभी भाव यथा लग्न (देह) द्वितीय (धन, कुंटुंबी, वाणी) चतुर्थ (मन, माता, मकान, मोटरगाड़ी) पंचम (संतान, विद्या, विवेक) संप्तम (पत्नी,

दांपत्य, सांझेदारी) नवम (धर्म, भाग्य, पिता) दशम (व्यापार, व्यवसाय, मान प्रतिष्ठा) एकादश (आय, लाभ) सुख समृद्धि देने वाले हैं। अतः इनमें बैठे ग्रह शुभ फल ही देंगे।

15. दशानाथ स्वगृही या स्वनवमांश में होने पर शुभ फल देगा। इसी प्रकार केंद्राधिपति ग्रह षष्ठस्थ होने पर पापी बन जाता है। किंतु मात्र 20 प्रतिशत ही फल हानि होती है। दशानाथ योगकारक होने पर निश्चय ही शुभ फल देगा।

1.17 पाप ग्रह से सुख

1. **दिग्बली पाप ग्रह** की दशा भी प्रायः स्वास्थ्य,सम्मान, धन सुख व समृद्धि दिया करती है। क्रूर या पाप ग्रह मंगल, शनि, सूर्य दिग्बली होने पर सदा शुभ व अच्छे फल देते हैं।
2. **पाप ग्रह का दुःस्थान से संबंध** (3, 6 8, 12वें भाव का स्वामीत्व अथवा इन भावों में स्थिति) दुख, दरिद्रय व **शत्रु का नाश** करता है। दुःस्थान में स्थित पाप ग्रह यदि शुभ व योग कारक ग्रहों से युक्त/दृष्ट हों तो अपनी दशा अन्तर्दशा में रोग, शोक से मुक्ति दिलाकर स्वास्थ्य, सम्मान, सुख व समृद्धि देता है। पाप ग्रह प्रायः दुःस्थान में बैठ कर अनिष्ट व अशुभ का नाश करते हैं।
3. **शुभ ग्रह का केंद्र व त्रिकोण से संबंध** शुभ ग्रह केंद्र व त्रिकोण में शुभ फल देते हैं। शुभ ग्रह दो केंद्र स्थान के स्वामी होने पर (बुध या गुरु) केन्द्राधिपति दोष के कारण अपना शुभत्व खो बैठते हैं व सम बन जाते हैं। किंतु पाप ग्रह (क्षीण चंद्र, पापयुक्त बुध, सूर्य, शनि, मंगल) केंद्र के स्वामी होने पर अपना पाप फल नहीं दिया करते। यदि कोई पाप ग्रह केंद्रेश व त्रिकोणाधीश भी हो तब तो वह बहुत शुभ बन जाता है। ऐसा ग्रह अपनी दशा अन्तर्दशा में **स्वास्थ्य सम्मान** और सुख समृद्धि देता है।

1.18. नीच राशिस्थ/शत्रु क्षेत्री ग्रह की दशा

(i) यदि कोई शुभ ग्रह, अपनी नीच राशि/शत्रु राशि में स्थित होकर षष्ठ या अष्टम भाव में स्थित हो तो अपनी दशा/अन्तर्दशा में शारीरिक कष्ट, पीड़ा, व यातना दिया करता है।

(ii) केंद्रेश शुभ ग्रह (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) यदि दूसरे, सप्तम या द्वादश भाव में स्थित हों तो इन्हें मारकत्व दोष लग जाता है तथा ये अपनी दशा में **रोग**

शोक व मृत्यु तक दे दिया करते हैं।

(iii) शुभ ग्रह यदि त्रिषडाय या अष्टम भाव के स्वामी (अर्थात 3,6,8,11 वें भाव में स्थित राशि के स्वामी) हों तो उनकी शुभता में कमी आ जाती है। पाप संबंध होने पर तो वे अपनी दशा/अन्तर्दशा में अशुभ अनिष्ट फल दिया करते हैं।

1.19 शीर्षोदय/पृष्ठोदय राशि में स्थित ग्रह की दशा

1. **शीर्षोदय** राशि अर्थात् मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ या 5,6,7,8,3,11 राशि में स्थित ग्रह अपनी दशा/अन्तर्दशा के प्रथम तिहाई भाग में विशेष फल दिया करता है।
2. **पृष्ठोदय** राशि स्थित दशानाथ अर्थात मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर या 1,2,4,9,10 राशि में बैठा ग्रह अपनी दशा के अंतिम तिहाई भाग में विशेष बली और शुभ प्रद होता है।
3. **उभयोदय राशि** अर्थात मीन राशि में बैठा कोई ग्रह अपनी दशा की मध्यावधि (दूसरे तिहाई भाग) में विशेष शुभ फल तथा धन समृद्धि देता है।

1.20 राहु केतु का दशा फल

(i) यदि तमोग्रह या राहु केतु केंद्र भाव में स्थित होकर त्रिकोणाधिपति ग्रह से युक्त या दृष्ट हो,

(ii) अथवा त्रिकोण (पंचम/नवम भाव में) केंद्रेश से युक्त/ दृष्ट होकर स्थित हों तो वे अपनी दशा/अन्तर्दशा में **धन, सम्मान** व **सुख** की वृद्धि करते हैं।

1.21 ग्रह स्थिति से दशा फल

1. **संपूर्णा दशा :** जन्म कुंडली में जो ग्रह उच्च राशिस्थ या अति बली (षडबली) हो, उसकी दशा अन्तर्दशा संपूर्णादशा कहलाती है। इस दशा काल में मनुष्य **सुख वैभव** तथा समृद्धि पाता है। उसे धन, स्वास्थ्य, भूमि, भवन मान सम्मान व यश मिलता है।
2. **पूर्णादशा :** जो ग्रह स्वराशि में, शुभ ग्रह से युक्त/दृष्ट हो तथा जिसका इष्ट फल अधिक हो, उसकी दशा/अन्तर्दशा में पदोन्नति, **लाभ, सफलता** व सुख मिलता है।
3. **शुभ दशा :** जो ग्रह मित्र क्षेत्री, मित्र या शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट,

वर्गोत्तम या उच्च नवांश में हो अथवा सप्तवर्ग बली हो तो उस ग्रह की दशा **उन्नति व प्रगति** देकर, सुख वैभव व धन की वृद्धि करती है।

4. **आरोहिणी दशा :** जो ग्रह अपनी नीच राशि को छोड़कर कुंडली में अपनी उच्च राशि की ओर बढ़ रहा हो, तो उस ग्रह की दशा या अन्तर्दशा आरोहिणी दशा कहलाती है। आरोहिणी दशा **महत्त्वाकांक्षी बना कर** परिश्रम कराते हुए धन-धान्य-स्वास्थ्य व **सम्मान** देती है। शत्रु व रोग नष्ट होते हैं या पूरी तरह से दब जाते हैं।
5. **अवरोहिणी दशा :** जन्मांग में जो ग्रह परमोच्च स्थिति त्याग कर अपनी नीच राशि की ओर अग्रसर हो रहा हो; वह अपनी दशा या अन्तर्दशा आने पर क्लेश, रोग, पीड़ा, **शत्रु बाधा,** धन हानि व व्यय तथा **रोग चिंता** दिया करता है।
6. **अशुभ या अधमा दशा :** जन्मांग में जो ग्रह नीच राशिस्थ, शत्रु क्षेत्री अथवा नवांश चक्र में नीचस्थ या शत्रुराशि में शत्रु ग्रह से युक्त हो तो उसकी दशा या अन्तर्दशा में विषम परिस्थितियाँ पैदा होती हैं, तथा मनुष्य भय, क्लेश रोग तथा बाधा से कष्ट पाता है।
7. **रिक्ता दशा :** जो ग्रह अति नीच, षडबल में निर्बल व पीड़ित होता है उसकी दशा रिक्ता अर्थात् शुभ प्रभावों से वंचित दशा कहलाती है। यह बिना पतवार की नौका सरीखी स्थिति है। जीवन में उतार चढ़ाव आते हैं, हैरानी परेशानी सुख दुख धूप छांव सरीखे चलते हैं।
8. **अनिष्ट दशा :** परमनीच, शत्रुराशि, शत्रु या नीच नवांश, पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट ग्रह की दशा/अन्तर्दशा अनिष्टकारी होने से, अनिष्ट दशा कहलाती है। इस दशा अवधि में जातक रोग, कष्ट, संकट व पीड़ा पाता है। उसके धन व सुख की हानि होती है। कभी विद्या व व्यवसाय में बाधा-रूकावट पड़ती है।
9. **कष्ट दशा :** सूर्य के अति समीप होने से ग्रह अस्त कहलाते हैं। ऐसे अस्त ग्रह 'प्रायः शुभ फल देने में असमर्थ रहते हैं।

अस्तंगत तालिका (सूर्य से दूरी)

ग्रह	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मार्गी	12°	17°	14°	11°	10°	16°
वक्री	–	8°	12°	11°	8°	16°

(i) यदि शुक्र या मंगल सूर्य से अस्त हो तो **दापंत्य जीवन में तनाव** व

काम सुख की हानि होती हैं।

(ii) इसी भांति गुरु, चंद्र अथवा शनि भी अस्त होने पर भाव संबंधी विघ्न बाधा, असफलता-असंतोष, दुख पीड़ा, **अपमान** अवमानना देकर अनिष्ट व अप्रिय घटनाओं की संभावना बढ़ाते हैं।

(iii) **बुध को अस्त होने का दोष नहीं होता** बल्कि बुध आदित्य योग जातक को बुद्धिमान, व्यवहार कुशल, चतुर सुजान बनाकर प्रभावशाली व्यक्तित्व द्वारा धन, मान व यश देता है।

10. **भाग्येश व गुरु संबंध :** दशानाथ ग्रह से केंद्र या त्रिकोण भाव में गुरु या भाग्येश हो, अथवा दशानाथ पर गुरु या भाग्येश की दृष्टि हो, तो निश्चय ही दशाकाल में **भाग्योदय** होगा। जातक को पिता, धन व धर्म, का लाभ व सुख मिलेगा। पापग्रह की दशा में भी ऐसा योग बनने पर उत्तम सुख प्राप्त होंगे व दुख तथा क्लेश से बचाव होगा। यदि दशानाथ शुभ ग्रह हो तब तो निश्चय ही राजयोग सरीखा उत्कृष्ट फल प्राप्त होगा। कुछ विद्वान गुरु या भाग्येश से युक्त ग्रहों की दशा में भी उत्तम फल प्राप्त होना मानते हैं। ध्यान रहे, गुरु कालपुरुष का नवमेश (भाग्येश) है अतः निश्चय ही शुभ फल देगा।

1.22 ग्रहों के विषय

सभी ग्रह अपने कारकत्व के अनुरूप अपनी दशा/अन्तर्दशा (भुक्ति) में जातक पर प्रभाव डालते हैं।

1. **सूर्य** आत्मा, पिता, पद, प्रतिष्ठा, स्वास्थ्य व शक्ति (शारीरिक व आत्म बल) के साथ धन व लक्ष्मी का कारक है।
2. **चंद्रमा** से मन, माता, बुद्धि, राजकृपा तथा धनसंपदा का विचार किया जाता है।
3. **मंगल** से पराक्रम, परिश्रम, संघर्ष शक्ति, अनुज, भूमि,शत्रु, रोग व चचेरे भाई का ज्ञान होता है। मंगल बली होने पर, जातक अपने पराक्रम से सुख व सफलता पाता है।
4. **बुध** विद्या, बुद्धि, बंधु, माया, मित्र, मनोरंजन, वाणी, कार्यक्षमता का कारक है। अतः शुभ होने पर अपनी दशा अन्तर्दशा में बुध मौज मस्ती कराएगा मित्र मंडली का सुख देगा।
5. **गुरु** ज्ञान, प्रजा, धर्म, धन, संतान, शरीर की पुष्टि, मंत्रोपासना का कारक है। गुरु अपनी अन्तर्दशा में प्रायः स्नेह, सहयोग, सुख व समृद्धि देता है।

जातक की धर्म में रुचि होती है।

6. **शुक्र** वस्त्राभूषण, दांपत्य सुख, पत्नी से संबंध, सुख वैभव तथा वाहन का कारक होता है। शुभ शुक्र अपनी दशा में सुख, समृद्धि व दांपत्य सुख देता है।
7. **शनि** आयु, जीवन, जीविका (नौकरी), दास-दासी या दुःख देता है। मृत्यु व विपत्ति का विचार भी शनि से होता है। कालपुरूष का लग्न, शनि की नीच राशि है। अतः इसे काल पुरूष का दुख माना गया है। बहुधा शनि विलम्ब या बाधा देता है।
8. **राहु** से दादा का विचार किया जाता है। तीसरे भाव अथवा मिथुन/वृष राशि का उच्चस्थ राहु साहस पराक्रम बढ़ाता है।
9. **केतु** से नाना का विचार किया जाता है। द्वादश भाव का केतु मोक्ष दायी व मुक्ति कारक माना गया है। केतु अपनी दशा/भुक्ति में प्रायः अनिष्ट व अशुभ से छुटकारा दिलाया करता है।

1.23 मंतरेश्वर की फलदीपिका से

मंतरेश्वर मुनि ने सूर्य का खराब फल बताया है–कदाचित यहाँ सूर्य अनिष्ट स्थान में पड़ा है अथवा अनिष्ट स्थान का स्वामी होगा तब ही ऐसे अनिष्ट फल की संभावना है।

1. **सूर्य** अपनी दशा में कलह कराता है, परस्पर मनमुटाव मतभेद या अलगाव की स्थिति पैदा करता है। सूर्य विच्छेदक ग्रह है। अकस्मात राजा का कोप व कुटुंब में रोग होता है। नाहक भटकना पड़ता है। कभी परस्पर वैर विरोध बढ़ने से चित्त में दुःसह कोप हो। ऐसा जातक गुप्त धन की चिंता, अग्नि से भय, स्त्री या पुत्र का भी कष्ट पाता है। कभी अन्न की चिंता भी होती है। सूर्य उत्तम स्थान में होने पर, क्रूर व कठिन कार्यों से लाभ मिलता है। राजदरबार व समाज में गुणों की प्रशंसा तथा यश व कीर्ति का विस्तार होता है। मनुष्य वन/पर्वत पर निवास कर प्रसिद्धि पाता है। जातक सदैव उद्यमी व उद्योगशील बना रहता है। उसके स्वभाव व कार्य में तीक्ष्णता होने से वह विजय व सफलता जनित सुख पाता है।
2. **चंद्रमा** की महादशा में मन प्रसन्न रहता है। सभी कार्य सिद्ध होते हैं। धन की प्राप्ति होती है। जातक सुखपूर्वक उत्तम भोजन पाता है। स्त्री, पुत्र, रत्न, वस्त्राभूषण, गौ, कृषि व भूमि का लाभ मिलता है। जातक चंद्रमा की दशा या अन्तर्दशा में देवता व ब्राह्मण का पूजन (सम्मान) करता है। शुक्ल

पक्ष की एकादशी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक का चंद्रमा बली होने से उत्तम फल प्रदान करेगा।

3. **मंगल** की दशा आने पर अग्नि, अस्त्र, राजा अथवा युद्ध कार्य द्वारा धन की प्राप्ति होती है। कभी जातक असत्य वचन, कपट आचरण या धोखा आदि देकर भी लाभ पाता है। जातक औषधि, शल्य क्रिया या अन्य क्रूर कार्यों से धन पाता है। मंगल की दशा या भुक्ति में रक्त विकार, पित्त प्रकोप, तथा ज्वर की पीड़ा होती है। कभी अपने ही स्त्री, पुत्र, बंधु व गुरुजन से विद्वेष होता है। जातक दूसरों के लिये (पराए काम करने वाला) कार्य करता है। इसके उद्योग व परिश्रम से अन्य लोग लाभ पाते हैं।

4. **बुध** की दशा में मित्रों से समागम होता है। विद्वान लोग जातक की प्रशंसा करते हैं। यश, प्रतिष्ठा व कीर्ति का विस्तार होता है। गुरु जन की कृपा मिलती है। जातक प्रभावशाली ढंग से अपनी बात कहने में सफल होता है। बुध प्रायः जनकल्याण व परोपकार के काम कराता है। स्त्री, पुत्र, मित्र तथा बंधु से स्नेह, सौहार्द व सहयोग मिलता है। जातक हर्ष व महत्त्व प्राप्त करता है।

5. **गुरु** की दशा/उपदशा में जातक की धार्मिक प्रवृत्ति होती है। उसे दैवीय अनुभव व दैवी कृपा की अनुभूति होती है। उपासना या मंत्र सिद्धि की संभावना बढ़ती है। गुरु संतान का कारक होने से संतान संबंधी प्रसन्नता या सुख देता है। **राज सम्मान** व समाज में प्रतिष्ठा मिलती है। विशिष्ट व्यक्ति जातक को आदर देते हैं। उत्तम वाहन सुख मिलता है। मन की इच्छाएँ पूरी होती हैं। स्त्री पुत्र, मित्र व बंधुओं से मेल मिलाप तथा स्नेह सहयोग जनित सुख उसे प्राप्त होता है।

6. **शुक्र** एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है जो, परस्पर स्नेह सहयोग द्वारा, सुख की सृष्टि करता है। अतः शुक्र की दशा या भुक्ति में, जातक क्रीड़ा व सुख भोग के साधन पाता है। उसे उत्तम वाहन, रत्न, वस्त्र, आभूषण व सुंदर स्त्रियों से सुख की प्राप्ति होती है। जातक ज्ञान वृद्धि के कार्यों में सफलता पाता है। आमोदपूर्ण यात्राएं, पर्यटन व पिकनिक से उसे सुख होता है। राजा से सम्मान मिलता है। घर में मंगल कार्य व **सामाजिक उत्सव** होने की प्रसन्नता होती है।

7. **शनि** प्रायः रोग कष्ट व पीड़ा देता है। जातक स्वयं वात जनित पीड़ा से कष्ट पाता है। कभी स्त्री या पुत्र को भी रोग की संभावना बढ़ती है। जातक अनर्गल तथा व्यर्थ की कष्टदायी बातें कहता है। खेती (फसल) नष्ट हो

जाती है। दुष्ट स्त्री में आसक्ति होती है। अपने परिवार से वियोग या बिछोह होता है। कभी स्थान (पद/नौकरी) त्याग कर जाना पड़ता है। मानसिक सुख संतोष व धन का नाश होता है।

8. **राहु** की महादशा या अन्तर्दशा में जातक राजा से, चोर से, विष से, अग्नि या शस्त्र से भय पाता है। मन में उद्विग्नता अशान्ति व झुंझलाहट बनी रहती है। संतान को कष्ट होता है। बंधुओं से दूर रहना पड़ता है। नीच लोग अपमान व अपयश देते हैं। अपना पद (स्थान, नौकरी) छूटने का भय बना रहता है। प्रायः सभी कार्यों में हानि, **अपयश व असफलता** ही हाथ लगती है। बहुधा जातक अपने पद (अधिकार) से वंचित हो जाता है।

   राहु शुभ ग्रह के साथ या शुभ भाव में स्थित हो तो राजा के सरीखा **सुख व वैभव** देता है। धन की वृद्धि होती है समाज में यश, प्रतिष्ठा व प्रताप की वृद्धि होती है। **कन्या, वृश्चिक या मीन राशि का राहु** अपनी दशा/भुक्ति में देशाधिपत्य, **सुख, वैभव** तथा मान प्रतिष्ठा **दिया करता है** किंतु बहुधा दशा के अंत में सभी कुछ समेट कर साथ ले जाता है।

9. **केतु** की महादशा या भुक्ति में राजा, चोर, शत्रु अथवा शस्त्र से भय या पीड़ा होती है। कभी देह में गर्मी बढ़ने से फोड़े फुंसी व अन्य उष्णता के रोग होते हैं। कभी केतु की दशा में कुल को कलंक लगता है। अपयश व अपकीर्ति के कारण देश छोड़ना पड़ सकता है। इस अवधि में जातक को अग्नि का भय होना संभव है।

1.24 समीक्षा

1. इस अध्याय में शुभ फल देने वाली दशा को जानने का महत्त्वपूर्ण सूत्र दिया है। पाप ग्रह हीन बली होने पर, तो शुभ ग्रह बली होने पर अपनी दशा भुक्ति में शुभ फल दिया करता है।
2. जो ग्रह त्रिकोण भाव के स्वामी से युक्त हो वो पापी होने पर भी शुभ फल देता है।
3. पाप ग्रह पाप स्थान में होने पर शुभ फल देते हैं।
4. धन व लाभ स्थान या धनेश-लाभेश से सम्बन्ध करने वाले ग्रह धन लाभ दिया करते हैं।
5. भाव, भावेश तथा ग्रहों के कारकत्व पर पैरा 1.11 से 1.15 तक विस्तार से चर्चा हुई है।

6. दशा नाथ व भुक्तिनााथ के परस्पर भावसंबंध पर, पैरा 1.16 तथा **पाप ग्रह से सुख** पैरा 1.17 में बताया गया है।
7. नीच या शत्रु क्षेत्री ग्रह की दशा पर पैरा 1.18 शीर्षोदय राशि में स्थित ग्रह की दशा पैरा 1.19 तो राहु केतु की दशा पर पैरा 1.20 में विचार हुआ है।
8. आरोहिणी, अवरोहिणी, रिक्ता व पूर्णा दशा पर पैरा 1.21 में विचार किया गया है।
9. ग्रहों के विषय और कारकत्व पर चर्चा पैरा 1.22 में हुई है।
10. विभिन्न ग्रहों के दशाफल शंभु होरा प्रकाश के मतानुसार पैरा 1.11 पर तथा फलदीपिका के अनुसार ग्रह दशा फल 1.23 पर संकलित हैं।
11. सूर्यादि नवग्रह का दशा विचार अध्याय दो से दस तक किया जायेगा।

●●●

अध्याय-2
सूर्य दशा फलम

2.1 सूर्य दशा फल (अवधि 6 वर्ष)

उद्वेगिता हृदि ततो परितो लताव, द्दायद्वाद उत वित्त वियोग योगाः।
चिन्ता भयं नरपते रवि पाक काले, रोगागमो भवति भानु दशा प्रवेशे।।

(भाव कौतुहलम 16.5)

सूर्य की दशा में जातक उद्विग्नता, चिन्ता तथा मानसिक संताप पाता है। कभी पैतृक संपदा को लेकर विवाद होता है तो कभी धन की हानि होती है। कोई जातक रोग, राजदंड या उच्च अधिकारियों से भी कष्ट पाता है।

टिप्पणी

(1) केन्द्र त्रिकोण या लाभस्थ सूर्य यदि (i) भाग्येश अथवा दशमेश से दृष्टि–युति संबंध करे। (ii) सूर्य अपनी उच्चराशि (मेष) मूलत्रिकोण या स्वराशि (सिंह) में (iii) षडबली या सप्तवर्गों में शुभ और बली हो तो सूर्य की दशा में जातक **राजसम्मान, धन, मान, यश** व कीर्ति पाता है।

(2) सूर्य की युति पंचमेश से होने पर सूर्य की दशा में **पुत्र लाभ** होता है।

(3) सूर्य की युति द्वितीयेश या लाभेश से होने पर सूर्य की दशा में जातक धन व **संपदा की वृद्धि** पाता है।

(4) सूर्य का संबंध चतुर्थ भाव से होने पर सूर्य की दशा **भूमि, भवन** तथा **वाहन सुख** देती है। ऐसा जातक यश व ख्याति पाता है।

(5) सूर्य त्रिक भाव (6, 8, 12वें भाव) का स्वामी होने पर अपनी दशा में अनिष्ट फल देता है।

(6) यदि सूर्य त्रिषडाय (3, 6, 11वें भाव) का स्वामी हो तब भी सूर्य की दशा विशेष अच्छी नहीं होती। भाईयों से मन मुटाव तो कभी गलत कामों में बल प्रयोग (तृतीयेश सूर्य के कारण) की प्रवृत्ति देती है। लाभेश सूर्य लाभ तो

अवश्य देता है किन्तु जातक को परिश्रम अधिक करना पड़ता है।

2.2 सूर्यदशा का फल

सूर्योत्कृष्टदशा करोति सुतधीप्रज्ञाधिकारोच्छ्रय-
ज्ञानार्थागमकीर्ति पौरूषसुखप्राप्तीश्वरानुगृहान्।
भानोः पापदशातिकष्टविबलोद्योगार्थहान्यामया-
रातिक्षोभमहीशमोंपजनकारिष्टादिबाधोदयान् ।

(*उत्तर कालामृत 6:6*)

सूर्य शुभ हो तो उसकी दशा में पुत्र, धारणात्मक और विवेचनात्मक बुद्धि, अधिकार, आत्मज्ञान, धन, यश, पुरूषार्थ, सुख तथा ईश्वर की कृपा की प्राप्ति होती है। यदि **सूर्य अशुभ हो** तो अतीव कष्ट, दुर्बलता, पुरूषार्थ में निष्फलता, धन का नाश, शत्रु से पीड़ा, राजा का कोप अथवा पिता को रोग आदि घटनाएँ होंगी।

2.3 सूर्य की शुभ दशा के फल

भानुदशायां लभते वनौषधाध्वविषदौर्जनैरर्थान्।
गिरिदन्तचर्मवह्निक्रौर्यनरेन्द्राहवाद्यैश्च ।।
नृपतिरर्थावाप्तिं धैर्यं भूयस्तथोद्यमं तैक्ष्ण्यम्।
ख्यातिं प्रतापवृद्धिं श्रेष्ठत्वं भूपतित्वं च।।

(*सारावली 41:25-26*)

सूर्य की शुभ दशा में वन, औषध, मार्ग, विष, दुर्जनता, पर्वत, हाथीदाँत, मृगचर्म, क्रूरता, राजा संग्राम, इन सब से धनलाभ, विशेष करके राजा से धनलाभ, धैर्य, उद्योग, तीक्ष्णता, सुयश और प्रताप की वृद्धि तथा समाज में मान–सम्मान व आधिपत्य या उच्च अधिकार प्राप्त होता है।

2.4 सूर्य की अशुभ दशा के फल

भृत्यार्थचोरचक्षुः शस्त्राग्न्युदकक्षितीश्वराद्बाधाः।
सुतपत्नीबन्धुजनैर्निपीडितः स्याच्च पापरतिः।।
क्षुत्तृष्णार्तिः शोको हृत्पीडा पैत्तिकास्तथा रोगाः।
गात्रच्छदो भवति हि सूर्यदशायामनिष्टायाम्।।

(*सारावली 41:27-28*)

सूर्य की अशुभ दशा में नौकर, धन, चोर, नेत्र, शस्त्र, अग्नि, जल और राजा;

से क्लेश, पुत्र-स्त्री-बन्धुओं से अपमान, पापबुद्धि, क्षुधा-तृष्णा से पीड़ा, हृदयरोग, पित्तरोग तो कभी अंग-भंग होता है।

2.5 **स्वोच्चनीचत्रिकोणर्क्षकेन्द्रशत्रुगृहैस्तथा ।**
पञ्चप्रकारसंयुक्त दशा भानोः प्रकीर्तिताः।।

(*सारावली 41:53*)

उच्च, नीच, त्रिकोण, केन्द्र और शत्रुराशि इन 5 स्थानों के योग से सूर्य ग्रह की दशा 5 प्रकार की होती है।

2.6 **राज्यं ददाति विपुलं दशा रवेर्लग्नसंस्थितय नृणाम्।**
केन्द्रस्थितस्य दद्यात् कटिगलनेत्रप्रकोपमरिगस्य।।
नीचस्य दशा भानोरक्षणोर्नाशं ज्वरं शिरोरोगम्।
बन्धनमन्याश्चरूजः कुष्ठामयदर्शनं चिह्नम्।।

(*सारावली 41:54-55*)

लग्नस्थित रवि की दशा में राज्यलाभ, अन्य केन्द्र में और शत्रुगृहगत रवि की दशा में कमर, गला, नेत्र में पीड़ा, नीचस्थित रवि की दशा में नेत्र और मस्तक में कष्ट, ज्वर, बन्धन और अन्य रोग तथा कुष्ठादि का भय होता है।

2.7 **स्वोच्चप्राप्तस्य दशा ददापि राज्यं सहस्रकिरणस्य।**
तुरगातपत्रचामरकरीन्द्रसंवर्धितं सम्यक्।।
सवितुर्दशा च पुंसो विदधाति पुरा त्रिकोणसंस्थस्य।
उत्तमविषयपतित्वं विध्वंस्ताशेषदुःखस्य।।

(*सारावली 41:56-57*)

उच्चगत रवि की दशा में छत्र-चामरादि राजचिह्न सहित राज्य का लाभ तथा हाथी-घोड़े आदि वाहनों का लाभ होता है। **मूल त्रिकोण** में स्थित रवि की दशा में श्रेष्ठ देशों का अधिपत्य मिलता है और सब दुःखों का नाश होता है।

2.8 **शत्रुगृहेऽर्कदशायां नयनविनाशो भवेच्च कुब्जत्वम्।**
ज्वालावक्त्रजरोगा भवन्ति कुनयात् परिभवाश्च।।
अष्टमगतस्य भानोर्दशा क्षयं नयति सर्वगात्रं च।
भ्रमयति देशाद्देशं प्रमापयत्यपि च विक्लिष्टम्।।

(*सारावली 41:58-59*)

शत्रुगृहगत सूर्य की दशा में नेत्रपीड़ा, कूबड़पन, दाह, मुखरोग तथा अनीति करने से लोक में अनादर होता है। **अष्टम्भावगत रवि** की दशा में समस्त शरीर में रोगभय तथा देश-देशान्तर के भ्रमण से परेशानी होती है।

2.9 महर्षि पराशर के अनुसार

1. जन्मकाल में **सूर्य अपने मूलत्रिकोण, स्वगृह, स्वोच्चराशि या परमोच्चस्थान, केंद्र, त्रिकोण, लाभस्थान,** इनमें से कहीं भी भाग्येश तथा कर्मेश के साथ रहे। स्वयं सूर्य प्रबल हो तथा अपने वर्ग में भी बलिष्ट हो तो अपने दशाकाल में वह धनलाभ आदि परमसौख्य, तथा राजसम्मान आदि को देनेवाला होता है। पंचमेश से सम्बद्ध रहने पर पुत्र भी होता है। धनेश के साथ संबंध रहने पर हाथी तक ऐश्वर्य कहना चाहिए। वाहनेश (चतुर्थेश) के साथ संबंध से वाहन सुख होता है। राजा की संतुष्टि से वह मनुष्य धनी, सेनापति, सुखी तथा वस्त्राभूषण, संपन्न होता है।

2. **नीचराशि, त्रिक में स्थित सूर्य** पापयुक्त हो, राहुकेतु के साथ हो या दुःस्थान (6,8,12) के अधिपति से युक्त हो, तो अपने दशाकाल में महाकष्ट, धन-धान्य का क्षय, राजकोप, परदेश-निवास, राजदंड, ज्वरपीड़ा, यश हानि, बन्धुमित्रविरोध, पितृक्षयभय तथा अन्य प्रकार से अशुभ फल देता है। उस समय पितृवर्ग में मानसिक सन्ताप, तथा अकारण जनद्वेष होता है किन्तु नीचादिस्थ सूर्य पर शुभग्रहों की दृष्टि से, कभी बीच में सुख भी अवश्य मिलता है जबकि मात्र पाप ग्रह की दृष्टि होने पर सर्वथा अशुभ फल कहना चाहिए।

2.10 फलदीपिका के अनुसार

1. यदि **सूर्य उत्तम स्थान में** हो तो क्रूरता से, सफ़र (यात्रा) से, राजाओं द्वारा एवम् कलह से धन-प्राप्ति कराता है। मनुष्य वनों में और पहाड़ों में घूमता है। जातक सदैव उद्योगशील हो यश पाता है। उसके स्वभाव और कार्य में तीक्ष्णता होती है तथा उसे विजय और सुख प्राप्त होता है।

2. **सूर्य अनिष्ट स्थान का स्वामी** हो या अनिष्ट स्थान में पड़ा हो तब सूर्य अपनी दशा में कलह कराता है। अकस्मात् राजा का कोप होता है। कुटुंब में रोग या व्यर्थ का मतभेद होता है। परिभ्रमण कराता है। आपस में वैर, चित्त में दुःसह कोप, और गुप्त धन तथा अन्न को अग्नि से भय तथा पुत्र और स्त्री को भी कष्ट होता है।

2.11 भावगत सूर्य दशा विचार (सर्वार्थ चिंतामणि)

लग्नस्थ सूर्य	धन हानि, देह की निर्बलता, सुख में कमी।
द्वितीयस्थ सूर्य	वाणी दोष, धन नाश, बंधुजन वियोग, भूमि तथा वाहन सुख में कमी।
तृतीयस्थ सूर्य	भाई से वैर विरोध, धैर्य, धन लाभ तथा राजसम्मान।
चतुर्थस्थ सूर्य	पद अधिकार की हानि, चोर विष या अग्नि से भय।
पंचमस्थ सूर्य	बुद्धि भ्रम, मित्रों तथा संतान से विवाद और क्लेश।
षष्ठस्थ सूर्य	रोग, धन हानि तथा मन में क्लेश।
सप्तमस्थ सूर्य	पत्नी को रोग, दांपत्य सुख की हानि, कुभोजन की प्राप्ति।
अष्टमस्थ सूर्य	देह कष्ट, पद प्रतिष्ठा की हानि, अपयश।
नवमस्थ सूर्य	भाग्य हानि, पिता से विवाद, राज कोप या दंड।
दशमस्थ सूर्य	धन, मान की वृद्धि। सुख और यश की प्राप्ति।
लाभस्थ सूर्य	सभी कार्यों में सफलता, स्त्री पुत्र का सुख, वाहन और वस्त्राभूषण की प्राप्ति।
व्ययस्थ सूर्य	धन तथा भूमि भवन की हानि, पैरों में रोग, माता पिता को क्लेश।

2.12 सूर्य की अन्तर्दशाएँ (सूर्य दशा अवधि 6 वर्ष)

1. **सूर्य में सूर्य (3 मास 18 दिन) :** सूर्य की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो ब्राह्मण तथा भूपति से धन लाभ होता है। शस्त्रादि से धन मिलता है। मन में रोग या क्लेश होता है और विदेश तथा वन की यात्रा होती है।
2. **सूर्य में चन्द्र (6 मास):** सूर्य की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो बन्धु और मित्रों से धन की प्राप्ति होती है। मित्रों तथा सज्जनों से प्रमाद हो अथवा स्वयं को पीलिया आदि रोग से सन्ताप होता है।

शमयति रिपुप्रतापं नीरोगत्वं करोति धनलाभम्।
भानुदशायां चन्द्रः प्रविशंस्तन्नास्ति यन्न शुभम्।।

(सारावली)

मतान्तर से सूर्य की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो शत्रुओं का नाश,

आरोग्य, धन-लाभ आदि सब प्रकार के सुख की प्राप्ति होती है।

3. **सूर्य में मंगल (4 मास 6 दिन)** : सूर्य की दशा में मंगल की जब अन्तर्दशा होती है तो रत्न, स्वर्ण तथा धन की प्राप्ति होती है। राजा से लाभ अर्थात् राजा की कृपा और बहुत शुभ फल मिलता है किन्तु पित्त रोग की वृद्धि होती है।

विद्रुमसुवर्णमणयः संग्रामजयः प्रचण्डता पुंसः।
असृजो दशाप्रवेशे सूर्यदशायां भवति सौख्यम्।।

(सारावली)

सूर्य की दशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तो रत्न, सुवर्ण, मणि की प्राप्ति, संग्राम में विजय, तेजस्विता और सुख का लाभ होता है।

4. **सूर्य में राहु (10 मास 24 दिन)** : सूर्य में जब राहु की अन्तर्दशा आती है तब मृत्यु भय होता है अर्थात् कभी भी अचानक मृत्यु हो जाये। बन्धु वर्ग को शत्रुओं से पीड़ा, मन को सन्ताप या पदच्युति हो सकती है।

5. **सूर्य में बृहस्पति (9 मास 18 दिन)** : सूर्य में जब बृहस्पति की अन्तर्दशा आती है तो मनुष्य सर्वपूज्य होता है। अर्थात् सब जगह उसका आदर होता है। कभी अपने पुत्र से धन की प्राप्ति होती है। वह देवताओं और ब्राह्मणों का पूजन करता है। सत्कर्म के आचरण करता है और सज्जनों के साथ समागम करता है।

व्याधिभिररिभिर्व्यसनैः पापैश्च विमुच्यते तथाऽलक्ष्म्या।
अनुयाति धर्मपदवीं जीवस्यान्तर्दशा यदा भानोः।

(सारावली)

कभी सूर्य की दशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तो रोग, शत्रु, पाप और दीनता इन सब का नाश होकर धर्म और सुख की प्राप्ति होती है।

6. **सूर्य में शनि (11 मास 12 दिन)** : सूर्य में जब शनि की अन्तर्दशा होती है तो मन में आलस्य होता है। सब लोग शत्रुता करते हैं। मन में दुःख रहता है अथवा निम्न स्तर की आजीविका होती है। कभी राजा और चोर से भय होता है।

आदित्यस्य दशायां शनैश्चरान्तर्दशा यदा भवति।
नृपपरिभूतो दीनो विपक्षरसार्थेन हतशक्तिः।।

(सारावली)

सूर्य की दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो राजभय, दीनता तो कभी शत्रुओं

से पराजय होती है।

7. **सूर्य में बुध (10 मास 6 दिन)** : सूर्य में जब बुध का अन्तर होता है तो बन्धुओं को पीड़ा होती है। मन में दुःख की अनुभूति होती है। मनुष्य अकर्मण्य या उद्यमहीन हो जाता है। कभी उसे थोड़ी मात्रा में सुख भी मिलता है।

दद्रूविचर्चिकाद्यैः पाम्ना कुष्ठैश्च गर्हितशरीरः।
तरणिदशायां प्रविशति बुधो यदा स्यादरेर्वृद्धिः।।

(सारावली)

सूर्य की दशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो दाद, खुजली, कुष्ठादि रोग और शत्रुओं की वृद्धि होती है।

8. **सूर्य में केतु (4 मास 6 दिन)** : जब सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा होती है तो असमय में मृत्यु की सम्भावना रहती है और मन दुःखी रहता है। कभी कण्ठ में या नेत्रों में बीमारी होती है। लग्न से 3,6,10,11 (उपचय स्थान) में केतु हो या केतु शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो अपनी भुक्ति में धन, लाभ तथा **मान प्रतिष्ठा की वृद्धि** करता है। मारक भाव का केतु अपमृत्यु का भय देता है। *दुर्गापाठ, बकरी दान या मृत्युंजय जप* करने से शान्ति मिलती है।

9. **सूर्य में शुक्र (1 वर्ष)** : जब सूर्य में शुक्र होता है तो जल में या जल मार्ग से धन की प्राप्ति होती है। दुष्ट स्त्री से सहवास होता है। शुभ सम्वाद प्राप्त होता है क्योंकि शुक्र स्त्री व जलग्रह होने के साथ सूर्य का शत्रु भी है। अतः दुष्ट स्त्री से सम्बन्ध करा के कलंक देता है।

शिरसो रूग्गलरोगश्छिद्रं सहसा ज्वरः शूलम्।
तपनदशायां शुक्रे देशत्यागो भवेदरिभिः।।

(सारावली)

मतान्तर से रवि की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो मस्तक और कण्ठ में रोग, ज्वर, शूल और शत्रु से पराजय की पीड़ा होती है।

2.13 विशेष फल :

1. सूर्य की दशा के आरम्भ में पिता को रोग और धन का क्षय होता है। मध्य में सब प्रकार की बाधायें उपस्थित होती है। बहुधा दशा के अन्त में सुख होता है।
2. **यदि उच्च राशि गत किन्तु नीच नवांश** में सूर्य हो तो सब प्रकार का

अपवाद और भय होता है। पुत्र, स्त्री, पितृवर्ग और बन्धुओं का मरण होता है अथवा कृषि आदि में धनक्षय की संभावना बढ़ती है।

3. **यदि सूर्य नीच राशि में हो किन्तु उच्च नवांश में हो** तो उसकी दशा में राजा से धन प्राप्ति और सब प्रकार सुख की वृद्धि होती है। कभी दशा के अन्त में धन नाश और मृत्यु का भय होता है।

2.14 समीक्षा

1. सूर्य यदि शुभ व बली हो तो अपनी दशा में धन, वैभव, पद, प्रतिष्ठा तथा राजसम्मान देता है। (पैरा 2.1 से 2.3)
2. सूर्य की अशुभ दशा नेत्र रोग, अग्नि भय, पित्त रोग, अपमान तथा राजदंड का भय दिया करती है।
3. केन्द्र या त्रिकोण भाव में अपनी उच्च, मूल त्रिकोण या स्वराशि में स्थित सूर्य राजा सरीखा प्रताप, प्रतिष्ठा व धन वैभव देता है। (पैरा 2.9)
4. भागवत सूर्य दशा का विचार पैरा 2.11 में हुआ है।
5. पैरा 2.12 में सूर्य की अन्तर्दशाओं का जातक परिजात व सारावली के आधार पर विचार किया गया है।
6. पैरा 2.13 में उच्चराशि किंतु नीच नवांश में बैठे अथवा इससे उलट स्थिति होने पर दशाफल की चर्चा के साथ अध्याय की समाप्ति हुई है।
7. अध्याय 3 में 'चंद्र दशा फलम्' पर विचार होगा।

●●●

अध्याय-3

चन्द्र दशा फलम

3. चंद्र दशा फल (अवधि 10 वर्ष)

3.1 चन्द्र दशा फल

सदापाके राकेशितुरधिकृतिर्भूपतिकृता सतां संगोरंगोत्सवकृति प्रीतिरतुला।
अलंकारागारो रिपुकुलमलंकारज सुखं कलावत्यारत्या गम इभरथारामरमणम्।।

(*भाव कौतुहलम 16.6*)

चन्द्रमा की दशा में जातक, राजा की कृपा से, उच्च अधिकार पाता है। उसे सज्जनों का स्नेह सहयोग व समर्थन मिलता है। वह नृत्य, नाटक अथवा मंगल समारोह में समय व्यतीत कर सुख पाता है। वह सुसज्जित घर में निवास करता है। धन, धान्य, वस्त्र और आभूषण मिलने से उसकी प्रसन्नता बढ़ती है। शत्रुओं का नाश, रूपसियों का संग, वाहन तथा गंध से उस को सुख होता है।

टिप्पणी

(1) पूर्णिमा का चंद्रमा

(2) केन्द्र या त्रिकोण भावाधिपति से युक्त चंद्रमा

(3) उच्च राशिस्थ या स्वगृही चंद्रमा यदि केन्द्र, त्रिकोण या लाभस्थ हो

(4) चन्द्रमा की युति चतुर्थेश, नवमेश या दशमेश के साथ हो। इनमें से किसी भी स्थिति (1 से 4 तक) का चंन्द्रमा अवश्य ही अपनी दशा में **धन, मान, प्रतिष्ठा** व सुख देगा।

इसके विपरीत

(5) अमावस्या के समीप का क्षीण चन्द्रमा

(6) नीच राशिस्थ चंद्रमा

(7) पाप ग्रह से युक्त चंद्रमा। इनमें से (5 से 7 तक) कोई भी चंद्रमा अपनी दशा में देह व मन की पीड़ा, स्वजन से क्लेश, अपमान व अपयश, माता को रोग पीड़ा तथा **धन की हानि** दिया करता है।

3.2 चन्द्र दशा का फल

चन्द्रोत्कृष्टदशा करोति जननीश्रेयस्तटाकादिकः
क्षेत्रारामगृहापसद्विजवरश्रीशोभनान्दोलिंकान् ।।
इन्दोः पापदशान्नहीनकृपणानन्दार्थनाशामय-
प्रज्ञाहीनजुगुप्समातृहरणक्रोधादिशीतज्वरान् ।

(उत्तर कालामृत)

चन्द्रमा यदि शुभ हो तो उसकी दशा में माता को सुख, तालाब खेत, बगीचा, भवन, सात्विक ब्राह्मणों का आशीर्वाद, धन तथा अच्छी सवारी आदि प्राप्त होते हैं। यदि **चन्द्रमा अशुभ** हो तो मनुष्य अन्न हीन, दुःखी व क्रोधी होता है। कभी माता को कष्ट तो कभी शीत ज्वर से उसे पीड़ा होती है।

3.3 चन्द्रमा की शुभ दशा के फल

चन्द्रदशायां वित्तं स्त्रीसंगममार्दवात्पथि विहारात्।
जलतुहिनक्षीररसैरिक्षुविकारैस्तथा क्रीडा।।
द्विजमन्त्राणां लब्धिः पुष्पाम्बरसेवनं मधुरता च।
तैक्ष्ण्यावाप्तसिद्धिः पूजां प्राप्नोति गुरुनृपाभ्यां च
मेधाधृतिपुष्टिकरी चन्द्रदशा शोभना नित्यम्।।

(सारावली 41:29-30)

चन्द्र की शुभ दशा में स्त्रीसंगम, मृदुता, मार्ग गमन, जल, बर्फ, दूध, रस, गुड़ तथा चीनी से धनलाभ, क्रीड़ा, ब्राह्मणों से मन्त्र का लाभ, पुष्प, वस्त्र, मिष्ठान्न भोजन, तीक्ष्णता से अभीष्ट सिद्धि, गुरुजन और राजा से आदर तथा बुद्धि और धैर्य की प्राप्ति होती है।

3.4 चन्द्रमा की अशुभ दशा के फल

कुरुते भयं कुलस्य च चन्द्रदशा स्वकुलविग्रहं कष्टम्।
अर्थविनाशमकस्माद्भूपसदो द्वेष्यतां लभते।
निद्रालस्यं स्त्रीणां भयजननी शोकदा त्वशुभा।।

(सारावली 41:31-32)

चन्द्र की अशुभ दशा में भय, अपने परिवार में कलह, कष्ट, अचानक धन नाश, राजसभा से द्वेष, निद्रा, आलस्य तथा स्त्री को कष्ट अथवा शोक-सन्ताप होते हैं।

3.5 चन्द्र के छः अन्य दशाफल

सामान्यतश्च षोढा चन्द्रदशा भिद्यते समासेन।
स्वोच्चसुहृच्छत्रुगृहे नीचे क्षीणे प्रपूर्णे च।।
तत्रोच्चदशा राज्यं नीचदशा मरणमरिदशा बन्धम्।
कथयति नलिनीशत्रोर्मित्रदशा स्वजनसम्प्राप्तिम्।।
क्षीणेन्दुदशायोगे चिह्नान्येतानि लक्षयेद्विद्वान्।
उदरामयज्वरशिरोनयनोत्कोपप्रतिश्रयाच्चापि ।।

(सारावली 41:60-62)

साधारण रूप से चन्द्रमा की दशा भी उच्च, नीच, मित्रराशि, शत्रुराशि, क्षीणता और पूर्णता के भेद से 6 प्रकार की है। उनमें (1) उच्च राशि गत चन्द्र की दशा में राज्य का लाभ; (2) नीच राशि गत चंद्र की दशा में मरण; (3) शत्रुगृह गत चंद्र की दशा में बंधन; (4) मित्रराशि में चंद्र की दशा में स्वजन से सुख; (5) क्षीण चन्द्र की दशा में उदररोग, ज्वर, मस्तक और नेत्र में पीड़ा होती है। (6) पूर्ण चन्द्रमा की दशा में स्वास्थ्य सम्मान तथा धन वैभव की वृद्धि होती है।

3.6 बलिनः परिपूर्णस्य च शशिनः कुरूते सदा दशा पुंसाम्।
दयितासहस्त्रपरिवृतमन्तः पुरमुत्तमस्त्रीकम्।
भवति नरस्य भ्रंशो विषयस्यान्तःपुरस्य भृत्यानाम्।
अष्टमचन्द्रदशायां म्रियते च स्वजनपरिभूतः।
यन्त्रातृणकाष्ठगोमयवंशकरञ्जीफलोदकाजीवी
भवति कदन्नकुचेली नृपोऽपि भृतकोऽरिगृहदशायाम्।

(सारावली 41:63-65)

1. मतान्तर से **पूर्ण चन्द्र** की दशा में स्त्री-संभोगादि सुख होता है।
2. **अष्टमभावगत** चन्द्र की दशा में अपने नौकरादि की हानि, स्वजन से अपमान, मरण, यन्त्र, तृण, काठ, गोबर, बाँस, करजनी फलऔर जल से आजीविका, कदन्न और कुवस्त्र की प्राप्ति तो कभी राजा सरीखा धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति भी नौकरी करके निर्वाह करता है।

3.7 हिमकिरणदशायां मन्त्रदेवद्विजाप्तिर्युवतिजनविभूतिः स्त्रीधनक्षेत्रसिद्धिः।
कुसुमवसनभूषागन्धनानाधनाढयो भवति बलविरोधे चार्थहा वातरोगी।।

(जातक पारिजात)

चन्द्रमा की महादशा में मंत्रों की उपासना, देवताओं की भक्ति तथा ब्राह्मणों

का सत्कार होता है। स्त्री की प्राप्ति, धन और क्षेत्र की प्राप्ति होती है। कभी स्त्रियों से वैभव प्राप्त होता है। वस्त्र, पुष्प, भूषण, चन्दन आदि सुन्दर वस्तुएँ तथा अनेक प्रकार के धन प्राप्त होते हैं। यदि **चन्द्रमा बलहीन हो तो** चन्द्रमा की दशा में **धनक्षय** होता है। कभी जातक को वात रोग से भय होता है अर्थात् उसे वायु के रोग होते हैं ।

3.8 महर्षि पराशर के अनुसार

प्रबल शुभग्रहयुक्त पूर्णचन्द्र यदि अपने उच्च, स्वगृह, केंद्र, त्रिकोण या लाभस्थ हो, बली कर्मेश, भाग्येश या सुखेश के साथ हो तो अत्याधिक ऐश्वर्य, धनधान्यदि समृद्धि आदि **अनेक लाभ** होते हैं। ऐसे जातक के घर में अनेक शुभकार्य, वाहन-सौख्य, राजदर्शन, यत्नतः किसी भी कार्य की सिद्धि तथा घर में सारी समृद्धियाँ, मित्र तथा राजा के द्वारा भाग्यवृद्धि, राज्यलाभ तथा श्वेत वस्त्रप्राप्ति होती है। धनस्थानगत चंद्र उच्च या स्वगृही हो तो भी अनेकविध धनलाभ, भाग्यवृद्धि, विशेष राजसम्मान, तथा विद्यालाभ होता है।

3.9 फलदीपिका के अनुसार

चंद्रमा की महादशा में मन प्रसन्न रहता है। सब प्रकार के कार्य तथा धन की सिद्धि होती है। सुख पूर्वक भोजन प्राप्त होता है। स्त्री, पुत्र आभूषण, वस्त्र, रत्न, गौ और कृषि की भूमि का लाभ होता है। कोई जातक ब्राह्मणों का पूजन (सम्मान) कर सुख वैभव पाता है।

3.10 विभिन्न भावों में स्थित चंद्रमा की दशा

भाव	दशाफल
लग्नस्थ चंद्रमा	मन बुद्धि का विकास, भावुकता, संवेदना, सहानुभूति ध्यान व धारणा शक्ति, सत्यनिष्ठा
द्वितीयस्थ चंद्रमा	धन तथा कुटम्ब सुख पाने वाला आश्रयदाता, बुद्धिमान, प्रभावशली वक्ता।
तृतीयस्थ चंद्रमा	भाई बंधुओं से विवाद, ईर्ष्या व द्वेष से क्लेश बढ़े।
चतुर्थस्थ चंद्रमा	अतिसंवेदनशीलता, भावुकता या मानसिक संतुलन की कमी से क्लेश हो
पंचमस्थ चंद्रमा	विद्या बुद्धि का लाभ, मित्रों का सहयोग तथा रचनात्मक कार्यों में सफलता से यश मिले।

षष्ठस्थ चंद्रमा	रोग व शत्रु भय, कभी धन हानि व ऋण की चिन्ता हो।
सप्तमस्थ चंद्रमा	दांपत्य सुख की हानि, पत्नी से मतभेद
अष्टमस्थ चंद्रमा	पद भंग, स्थानान्तरण, विपदा मृत्युभय
नवमस्थ चंद्रमा	धर्म और सदाचार में दृढ़ आस्था, कभी आध्यात्मिक क्लेश मिले।
दशमस्थ चंद्रमा	व्यापार में उतार चढ़ाव, नए अवसर मिलें, प्रगति हो तथा कार्यकुशलता व दक्षता से सम्मान मिलता है।
एकादशस्थ चंद्रमा	धन लाभ और यश बढ़े, कमी परधन हरण की इच्छा हो।
द्वादशस्थ चंद्रमा	भोग लिप्सा बढ़े, सुख तथा धन पाने की इच्छा से मनुष्य पाप करे। कभी दिव्य अनुभूति हो तथा परोपकार में मन लगे।

3.11 चन्द्रमा की अन्तर्दशाएँ (चन्द्र दशा अवधि 10 वर्ष)

1. **चन्द्रमा में चन्द्रमा (अवधि 10 मास) :** चन्द्रमा की महादशा में जब चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो विद्या, स्त्री, गीत तथा वाद्य में प्रीति होती है। पट्ट वस्त्र की प्राप्ति होती है। सत्संग का सुख होता है। जातक को देह सुख होता है। राजा, मंत्री या सेनापति से वह सत्कृत होता है। कभी तीर्थयात्रा होती है। उसे पुत्र, मित्र से सुख होता है। पृथ्वी (राज्य), घोड़े और गायों का उसे लाभ होता है। बहुत **धन वैभव** पाने से जातक सुखी और संपन्न होता है।

2. **चन्द्रमा में मंगल (अवधि 7 मास) :** चन्द्रमा की महादशा में जब मंगल की अन्तर्दशा होती है तब विरोध बुद्धि होती है अर्थात् लोगों का अप्रिय करने की इच्छा मन में होती है। कभी स्थान नाश और धन क्षय होता है। जातक रोगी रहता है तथा मित्र और भ्रातृ वर्ग से क्लेश पाता है।

पित्तासृग्वह्निभयं क्लेशं रोगं करोति वक्रदशा।
चन्द्रदशायां च भयं प्रमोषणं चैव चोरैश्च।।

(सारावली)

मंगल की अन्तर्दशा हो तो पित्त, शोणित विकार और अग्नि का भय्र, कष्ट, रोग और चोर का भय होता है।

3. **चन्द्रमा में राहु (अवधि 1 वर्ष 6 मास) :** जब चन्द्रमा की महादशा में राहु

की अन्तर्दशा हो तो शत्रुओं और रोग से भय होता है। बन्धुनाश और धनक्षय होता है। मन को क्लेश प्राप्त होता है। कभी ऐसे मनुष्य को कुछ भी सुख नहीं मिलता।

4. **चन्द्रमा में बृहस्पति (अवधि 1 वर्ष 4 मास) :** जब चन्द्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा होती है तो सवारी आदि नाना प्रकार के वैभव प्राप्त होते हैं। वस्त्र, भूषण और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। यत्न से कार्य सिद्धि होती है अर्थात् जातक के सभी उद्योग सफल होते हैं।

चन्द्रदशायां प्राप्ता त्रिदशेडचदशा करोति धनलाभम्।
यत्नोपात्तमकस्माद्वस्त्रालंकारविविधहस्त्यश्वम् ।।

(सारावली)

गुरु की अन्तर्दशा हो तो अकस्मात् वस्त्र, भूषण, धन और वाहन का लाभ होता है।

5. **चन्द्रमा में शनि (अवधि 1 वर्ष 7 मास) :** माता को पीड़ा, मन को दुःख तथा वात पित्त आदि से पीड़ा होती है। वाणी प्रभावहीन होती है तो कभी जातक को शत्रु से धमकी मिलती है। संक्षेप में चन्द्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा निकृष्ट होती है।

स्वजनायासवियोगं रोगाभिभवं तथा महाव्यसनम्।
चन्द्रदशायां सौरिः करोति निःसंशयं पुरूषम्।।

(सारावली)

शनि की अन्तर्दशा हो तो स्वजन का वियोग, रोगभय और महाव्यसन से धन व यश का नाश होता है।

6. **चन्द्रमा में बुध (अवधि 1 वर्ष 5 मास) :** चन्द्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो मातृ वर्ग से धन प्राप्ति होती है। जातक को विद्वानों का आश्रय मिलता है तो कभी वस्त्र और आभूषण की प्राप्ति होती है।

चन्द्रदशायां ज्ञदशाप्रवेशने चिह्नमुत्तमो लाभः।
गजवाजिनां धनानां सम्प्राप्तिः सौख्यमतुलं च।।

(सारावली)

चन्द्रमा की दशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो वाहन, धन और सब सुख का लाभ जातक को हुआ करता है।

7. **चन्द्रमा में केतु (अवधि 7 मास) :** चन्द्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा होती है तो स्त्री को रोग होता है। बन्धुओं का नाश व काँख में रोग या

अन्य प्रकार की बीमारी होने का भय अथवा द्रव्य नाश होता है।

8. **चन्द्रमा में शुक्र (अवधि 1 वर्ष 8 मास)** : स्त्रियों से धन लाभ होता है। खेती और पशु से लाभ होता है। जल से उत्पन्न वस्तुओं से या जल मार्ग से धन प्राप्ति होती है। इस प्रकार धन के लिए यह दशा उत्तम है किन्तु माता को रोग भय होता है।

तुहिनकरस्य दशायां प्रविशत्यन्तर्दशा यदाऽऽस्फुजितः।
जलयानवस्त्रभूषबहुपत्नीभिः समागमं कुरूते।।

(*सारावली*)

चन्द्रदशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो नौका, वस्त्र, भूषण और स्त्रियों से जातक को सुखलाभ होता है।

9. **चन्द्रमा में सूर्य (अवधि 6 मास)** : जब चन्द्रमा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो राजा से ऐश्वर्य प्राप्ति हो अथवा राज सम्मान मिले या किसी श्रेष्ठ वस्तु से धन लाभ हो। इस अवधि में **व्याधि का नाश** और शत्रुओं का क्षय होता है। इस अन्तर्दशा का शुभ फल है, इसमें प्रायः सुख मिलता है।

क्षयरोगभयं शौर्य नृपप्रभावं सदा विभवम्।
चन्द्रदंशायां पुंसो भानुः कुरूतेऽर्थलाभं च।।

(*सारावली*)

चन्द्रमा की दशा में रवि की अन्तर्दशा हो तो क्षयरोग का भय, किन्तु पराक्रम, राजाओं से विभव तथा सब प्रकार से धनलाभ होता है।

3.12 विशेष

महादशा के **प्रारम्भ** में चन्द्रमा जिस भाव में बैठा होता है उस भाव का फल मिलता है। दशा के **मध्य** में राशि जनित शुभाशुभ होता है। और दशा के **अंत** में दृष्टि फल होता है अर्थात् चन्द्रमा यदि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो शुभ फल तथा पाप ग्रह वीक्षित हो तो पाप फल जानें। दशा के अन्त में कभी लग्न का फल भी होता है।

●●●

अध्याय-4

मंगल दशा फलम

4. मंगल की दशा

4.1 **अनल गरल भीतिः शस्त्रघातो नराणाम**
अरिगण नृपचौर व्यालशंका कुलत्वम्।
क्षितिसुत परिपाके कामिनी पुत्रकष्टं
भवति वमन माधिर्व्याधिरर्थक्षतिश्च।।

(भाव कौतुहलम् 16:7)

मंगल की दशा में जातक अग्नि, विष, शस्त्राघात, शत्रु, राजा, चोर तथ सर्प से भय पाता है। कभी संशय, संदेह या उद्विग्नता भी मन को संताप दिया करती है। जातक की पत्नी व पुत्र रोग पीड़ित होते है। वह स्वयं भी देह पीड़ा, मानसिक क्लेश, वमन तथा धन की हानि से कष्ट पाता है।

टिप्पणी

मंगल यदि नीचस्थ, हीनबली, पाप युक्त अथवा पाप भाव (त्रिषडाय, त्रिक भाव) से संबंध करे तब शायद उपरोक्त पाप फल अवश्य प्राप्त होंगे।

इसके विपरीत केन्द्र या त्रिकोण भाव से मंगल का संबंध हो या मंगल उच्चस्थ (मकर), स्वगृह (मेष, वृश्चिक) अथवा मित्र ग्रह से दृष्ट-युक्त हो तो ऐसा जातक पराक्रमी, **धनी, मानी, यशस्वी,** सेनापति या किसी संस्था का अध्यक्ष होता है।

4.2 मंगल की दशा का फल

भौमोत्कृष्टदशा करोति वसुधाप्राप्तीष्टवस्त्वागम-
प्रज्ञास्वच्छमनः पराक्रमधनारातिक्षयांश्चानुजान्।।
पापांगारदशानुजार्तिकलहं क्षेत्रग्निबाधाव्रणा-
क्षिक्षीणादिमहीशपीडसुजनक्रोधासिवेधामयान् ।

(उत्तर कालामृत 6:8)

मंगल दशा फलम्–5।

मंगल यदि शुभ हो तो उसकी दशा में भूमि की प्राप्ति, इष्ट वस्तु का लाभ, प्रखर बुद्धि, पवित्र मन, पराक्रम, धन की प्राप्ति, शत्रुनाश, तथा छोटे भाइयों की प्राप्ति होती है। यदि **मंगल अशुभ** हो तो छोटे भाइयों को कष्ट या भाई से झगड़ा, भूमि तथा अग्नि से हानि, भय, घाव, आँखों की कमजोरी, राजा से कष्ट, सज्जनों की ओर से क्रोध, तलवार से घाव तथा व्याधि आदि के संताप होते हैं।

4.3 **भौमदशायां लभते नृपाग्निचोरप्रयोगरिपुमर्दैः।**
व्यालविषशस्त्रबन्धनसुतैक्ष्ण्यकूटैश्च धनबहुलम्।
क्षित्याजाविकताम्रकसुवर्णवेश्यादिभिस्तथा द्यूतैः।
आसवकषायकटुकै रसश्च धनधान्यभाग्भवति।।

(सारावली 41:33-34)

मंगल की शुभदशा में राजा, चोर, व्यापार, शत्रु पर विजय, सर्प, विष, शत्रु, बन्धन, कूट (नकली वस्तु), भूमि, बकरा, भैंस, ताँबा, सोना, वेश्या, जुआ अथवा मदिरा, कसैला और कटु (मिर्च आदि) रस से बहुत धन–धान्य का लाभ होता है। जातक को अग्नि, भूमि और वाहन से धन प्राप्त होता है। वह शस्त्र से लड़े, या व्यापार करे। अग्नि से तात्पर्य यह है कि जहाँ फैक्टरी मिल का काम होता है वहाँ उसका मालिक होने अथवा नौकरी करने से लाभ होता है। कभी भूमि या मकान के कारोबार या इनकी दलाली का काम करने से लाभ होता है।

मंगल परिश्रम से भी लाभ देता है, जिनमें मुख्य हैं वनौषधि का निर्माण और विविध प्रकार की क्रूरता के कार्य। मंगल की दशा में दूसरे को ठगने से भी लाभ होता है। यह सब फल तब होते है जब मंगल अच्छा पड़ा हो।

4.4 **मित्रकलत्रविरोधो भ्रातृसुतैर्विग्रहश्च तृष्णा च।**
मूर्च्छा शोणितदोषः शाखाच्छेदो व्रणश्चापि।।
परदाररतिर्द्वेष्यो गुरुसत्यानामधर्मनिरतश्च।
पित्तकृतैरपी दोषैरभिभूतो मानवो भवति।।

(सारावली 41:35-36)

मंगल की अशुभ दशा में मित्र तथा स्त्री से विरोध, भाई और पुत्रों से कलह, तृष्णा, मूर्च्छा, रक्तदोष, अंग-भंग, घाव, परस्त्री से प्रेम, गुरु और सत्य से द्वेष, अधर्म से प्रेम और पित्तप्रकोप से कष्ट होता है।

यह फल तब होते है जब मंगल अनिष्टकर हो–पित्त, खून, खराबी, शरीर में पीड़ा आदि दोष मंगल के फल हैं। मंगल की दशा में नीच स्त्री का सेवन और

अपनी स्त्री से वैर–विरोध होता है। पुत्र, बन्धु, गुरु से भी वैर हो अर्थात् इनसे सद्भाव न रहे। कोई जातक कुत्सित अन्न का भोजन करता है।

4.5 महर्षि पराशर के मतानुसार

परमोच्च, स्वोच्चराशि, स्वगृह, मूलत्रिकोण, केंद्र त्रिकोण, लाभस्थान या धनस्थान में बली भौम शुभग्रह से युक्त या दृष्ट (जन्म-समय में) हो तो राज्यलाभ, भूलाभ, धनधान्यादि **सम्पत्ति लाभ**, राजसम्मान, वाहन-वस्त्र-भूषण की प्राप्ति, विदेश में स्थानलाभ तथा भाईयों का सुख होता है। बली मंगल केंद्रस्थ या तृतीयस्थ हो तो **पराक्रम से धनलाभ**, युद्ध में शत्रुक्षय, दशारम्भ में स्त्री-पुत्रसौख्य, राजसम्मान तथा अन्यान्य सुख होते हैं। दशा के अन्त में कष्ट भी हुआ करता है।

नीचादि स्थान में निर्बल भौम, पापयुक्त या पापदृष्ट हो तो भौम की दशा प्रायः शुभ नहीं होती।

4.6 फलदीपिका के अनुसार

यदि मंगल की दशा हो तो अग्नि, राजा, युद्ध आदि से धन प्राप्त होता है। जातक को झूठ बोलने, धोखा देने, औषधि बनाने या बेचने से तथा विविध प्रकार के क्रूर कर्मों से भी धन लाभ होता है।

मंगल की महादशा के समय पित्त-प्रकोप, रक्त-प्रकोप तथा ज्वर, आदि की पीड़ा होती है। वह नीच स्त्री का सेवन करता है। अपने पुत्र, स्त्री, बंधु और गुरुजन से विद्वेष कर वह दूसरों के भाग्य निर्माण में लगा रहता है। उसके प्रयास और परिश्रम से अन्य लोगों का भाग्योदय हुआ करता है।

4.7 मंगल की भावगत स्थिति का दशा फल

लग्नस्थ मंगल	चोर, विष या स्वजन से विरोध के कारण कष्ट होता है।
द्वितीय मंगल	धन वृद्धि, कुल में सुख व संपन्नता तथा स्नेह व सम्मान देता है। कभी चेहरे या नेत्र का रोग भी होता है।
तृतीयस्थ मंगल	धैर्य, धन, पराक्रम, भाइयों को सहयोग तथा राजसम्मान देता है।
चतुर्थस्थ मंगल	स्थान हानि, बंधु बांधवों से मतभेद या चोर अग्नि व राजा से भय देता है। परिवारिक सुख में कमी होती है।
पंचमस्थ मंगल	विद्या, बुद्धि, मित्रों से कलह, नेत्र रोग तो कभी पुत्र सुख में कमी या वियोग देता है।

षष्टस्थ मंगल	भूमि भवन संबंधी विवाद या कष्ट, दुर्घटना अग्नि भय तो कभी जटिल रोग दिया करता है।
सप्तमस्थ मंगल	सप्तम भाव में स्थित मंगल की दशा में स्त्री सुख की हानि तथा गुप्तांग के रोग की संभावना बढ़ती है।
अष्टमस्थ मंगल	पद प्रतिष्ठा की हानि, रोग, दुर्घटना, अन्न में अरुचि तथा विदेश यात्रा देता है।
नवमस्थ मंगल	गुरु जनों को कष्ट, धर्म कार्यों में बाधा तो कभी उच्च अधिकारियों से मतभेद के कारण विपत्ति देता है।
दशमस्थ मंगल	असफलता, उद्यम व उत्साह भंग, अपयश तथा धन और सम्मान की हानि देता है। कभी विद्या, पुत्र सुख तथा देह सुख की कमी होती है।
एकादशस्थ मंगल	राज सम्मान, संग्राम में विजय, वाणी से दूसरों का उपकार तथा यश दिया करता है।
द्वादशस्थ मंगल	राजा से भय, धन हानि, स्त्री सुख में कमी तथा भाईयों से मतभेद या अनबन देता है।

टिप्पणी–उच्च राशि या उच्च नवांश का मंगल सभी कार्यों में **सफलता व सिद्धि** देता है। स्वर्धा प्रतियोगिता में शत्रुओं पर विजय पाने से सुख मिलता है।

4.8 मंगल की अन्तर्दशाएँ (मंगल दशा अवधि 7 वर्ष)

1. **मंगल में मंगल (अवधि 4 मास 27 दिन) :** मंगल की महादशा में जब मंगल की अन्तर्दशा हो तो शरीर में विशेष उष्णता, मित्र से वैर, भाइयों को पीड़ा, राजा से भय और समस्त कार्य का नाश तथा धन का अपव्यय हुआ करता है।
2. **मंगल में राहु (अवधि 1 वर्ष 18 दिन) :** जब मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो राजा और चोर से भय, धन धान्य का नाश तथा दुष्ट कार्यों में सिद्धि होती है। इसका आशय यह हुआ कि जघन्य और कुत्सित कार्यों में सिद्धि होती है। जैसे चोरी, डकैती, ठगी अथवा हत्या सरीखे कुत्सित कामों में सफलता मिलती है।
3. **मंगल में बृहस्पति (अवधि 11 मास 6 दिन) :** मंगल की महादशा में जब बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो ब्राह्मण से धन मिलता है। **भूमि का लाभ** और व्यक्ति को आनन्द होता है। सब लोग उसका आदर करें और सर्वत्र विजयी

हो। इस अन्तर्दशा में **श्रेष्ठ सुख** मिलता है।

वक्र दशायां च गुरोः सुचरितकरणेन शुभधर्मा।
नृपतिर्विशुद्धचेताः पुण्यानि करोत्यनन्तानि।।

(सारावली 42:27)

गुरु की अन्तर्दशा में कोई जातक शुद्ध हृदय से सत्कर्म और धर्म का आचरण करता है तथा सुख पाता है।

4. **मंगल में शनि (अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन)** : यह अन्तर्दशा बहुत दुःखपूर्ण है। नाना प्रकार के कष्ट होते हैं। बहुत दुःखपूर्ण व्याधि होती है। राजा, शत्रुओं और चोरों से भय होता है। कभी धन का नाश होता है।

व्यसनानि व्यसनानां भवन्त्युपर्युपरि जनविनाशश्च।
वक्रदशायां रविजे प्रविशति चान्तर्दशायां हि।।

(सारावली 42:29)

शनि की अन्तर्दशा हो तो विपत्ति, जन-धन की हानि होती है।

5. **मंगल में बुध (अवधि 11 मास 27 दिन)** : मंगल की महादशा में जब बुध की अन्तर्दशा हो तो तब वैश्य वर्ग से **धन लाभ** होता है। घर मकान की वृद्धि होती है, गौओं का सुख होता है। धन सम्पत्ति के लिए यह अन्तर्दशा अच्छी रहती है, किन्तु कभी शत्रु के उपद्रव से मन में क्लेश रहता है। इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि शत्रु बाधा हो और मन क्लेशित रहे।

दिशति भयं शत्रुभ्यो वाजिगजानां प्रमोषणं चोरैः।
दाहं च यदा प्रविशति भौमदशायां बुधस्य दशा।।

(सारावली 42:26)

कुजदशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो शत्रु और चोर से भय तथा सन्ताप होता है।

6. **मंगल में केतु (अवधि 4 मास 27 दिन)** : मंगल की महादशा में जब केतु की अन्तर्दशा रहती है तब काँख में रोग से संताप होता है। बन्धुओं और भाइयों को पीड़ा हो। कभी कोई दुष्ट मनुष्य शत्रुता कर दुख देता है।
7. **मंगल में शुक्र (अवधि 1 वर्ष 2 मास)** : मंगल की महादशा में जब शुक्र की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य सुखी रहता है। किन्तु स्त्री जन से उसका वैर होता है, चाहे अपनी से, अथवा दूसरी स्त्रियों से। कभी नवीन स्त्री भी मिलती

है, और जातक को आभूषणों की प्राप्ति होती है। उसे उत्तम वस्त्रों का लाभ होता है। वह बन्धु-वर्ग से लाभ अर्थात् धन पाता है।

रूधिरदशायां शुक्रप्रवेशने भवति संगरभयार्तिः।
व्याधिव्यसनायासैर्धनापहारः प्रवासैश्च।।

(सारावली)

मंगल की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो युद्ध में पराजय, व्याधि, व्यसन, चोर और प्रवास से धन की हानि होती है।

8. **मंगल में सूर्य (अवधि 4 मास 6 दिन)** : मंगल की महादशा में जब सूर्य की अन्तर्दशा हो तो तब आत्मवर्ग से मन में दुःख होता है। अपवाद लगते है। गुरुजनों से वैर होता है। पित्त की व्याधि पीड़ा होती है। लोगों से कलह होता है।

चण्डं सहासनिरतं नरेन्द्रसंग्रामपूजितं धन्यम्।
विविधधनागमयुक्तं भौमदशायां करोति रविः।।

(सारावली)

मंगल में सूर्य की अन्तर्दशा में जातक साहसी, धनी, राजा से समादृत व सुख सम्पन्न होता है।

9. **मंगल में चन्द्रमा (अवधि 7 मास)** : मंगल की महादशा में जब चन्द्र की अन्तर्दशा हो तो नाना प्रकार से वित्त का सुख होता है। वस्त्र, मोती, मणि की प्राप्ति होती है। निन्द्रा अधिक आती है, आलस्य बढ़ जाता है और मन में उद्वेग रहता है।

विविधधनागमलाभं सौख्यं बहुमित्रसम्प्रप्तिम्।
वक्रदशाया चन्द्रः करोति मुक्तमणिप्रभृतीन्।

(सारावली)

चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो अनेक प्रकार के धन और सुख का लाभ, स्त्रियों की सहायता से मणि-मुक्तादि की प्राप्ति होती है।

4.9 विशेष :

मंगल की प्रारम्भिक दशा में मान हानि होती है। महादशा का जब मध्य होता है तब धन का नाश होता है तथा अन्त में राजा से भय हो। कभी शत्रुओं से बाधा तथा अग्नि से भय हो। इस मंगल के प्रसंग में अग्नि भय कई बार आया है। पहले समय में घास फूस के मकान होते थे इसलिए आग का बहुत भय रहता था। अब

भी देहात में बहुत से घरों में आग लग जाती है तथा चोरों का भय होता है। शहरों में भी बिजली की तारों में शार्ट सर्किट के कारण आग लगती है।

(i) यदि **मंगल उच्च राशि में हो किन्तु नीच नवांश** में हो तो इसका बहुत निकृष्ट फल होता है। पुत्र और सहोदर भाई मर जाते है।

(ii) किन्तु यदि **मंगल नीच राशि में हो और उच्च नवांश** में हो तो कृषि फलती फूलती है। भूमि का विस्तार होता है। धन धान्य की वृद्धि होती है। और सुख प्राप्त होता है।

4.10 समीक्षा

1. मंगल अग्नि तत्त्व ग्रह होने से क्रोध, क्षोभ, अग्नि भय, शस्त्राघात या दुर्घटना दे सकता है। शुभ मंगल धैर्य, बल, पराक्रम, प्रखर बुद्धि, भूमि भवन तथा अग्निपरक आजीविका से लाभ देता है।
2. महर्षि पराशर व मंतरेश्वर द्वारा बताए गए मंगल के दशाफल पैरा 4.5 तथा 4.6 में दिए गए हैं।
3. मंगल की भावगति स्थिति का दशाफल पर प्रभाव पैरा 4.7 पर दिया है।
4. पैरा 4.8 में मंगल की अंतर्दशाओं का फल जतक परिजात व सारावली पर आधारित है।
5. पैरा 4.9 में मंगल की उच्च राशि किन्तु नीच नवांश अथवा इसके विपरीत स्थिति का दशाफल बताया गया है।
6. अगले अध्याय में 'राहु दशा फलम्' पर चर्चा होगी।

●●●

अध्याय–5

राहु दशा फलम

राहु की दशा (अवधि 18 वर्ष)

5.1 राकेशारातिपाके नृपकुलवशतो द्रव्य नाशो विनाशो
मानस्यातीव रोगागमनमपि नृणां तात कष्टं विशेषात्।
कान्तापत्याकुलत्वं हितजनखलताऽरातिरायाति
सद्यव्यामोहागारमन्तः परित उत तत स्तुंगतांकता वा।।

(भाव कौतुहलम 16:8)

राहु की दशा में राजकुल (सरकार) के कारण विनाश तथा धन व प्रतिष्ठा की हानि होती है। जातक विविध रोगों से कष्ट पाता है। पिता को भी कष्ट व क्लेश झेलना पड़ता है। कभी पत्नी के कुल के लोग भी परेशानी बढ़ाते है। मित्रों के विश्वासघात या दुष्टता के कारण शत्रु घर तक पहुँच जाते हैं। बुद्धि तथा विवेक की कमी मोह को बढ़ाती है। जातक अपदस्थ हो कर, अपमान व भय पाता है।

टिप्पणी–केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित राहु अथवा नवमेश या दशमेश से राहु का संबंध होने पर, राहु की दशा **धन, मान,** पद, प्रतिष्ठा देकर **भाग्यशाली व सुखी** बनाती है।

5.2 राहु दशा का फल

राहूत्कृष्टदशा करोति सकलश्रेयोमहद्राज्यकृ-
द्धर्मार्थागमपुण्यतीर्थचलनज्ञानप्रभावोदयान् ।।
राहोः पापदशाऽहिभीतिविषजः सर्वांगरोगार्तिकृ-
च्छस्त्राग्न्यन्त्यविरोधवृक्षपतनारातिप्रपीडोदयान् ।।

(*उत्तर कालामृत 6:13*)

राहु जब शुभ हो तो अपनी दशा में सब प्रकार की भलाई करता है, महान् राज्य देता है। धर्म तथा धन की प्राप्ति, पुण्य तीर्थों की यात्रा, ज्ञान तथा प्रभाव (influence) वृद्धि देता है। **यदि अशुभ हो** तो उसे सर्पविष से भय, सब अंगों में रोग, शस्त्र तथा अग्नि से भय, नीचजन से विरोध, वृक्ष से गिरना तथा शत्रु से पीड़ा देता है।

5.3 सौख्यदिवित्तस्थितिनाशनं च कलत्रपुत्रादिवियोगदुःखम्।
अतीव रोगं परदेशवासं विवादबुद्धिं कुरूते फणीशः।

(*जातक पारिजात*)

राहु अपनी महादशा में सुख का नाश करता है। धन नाश करता है। मनुष्य को पद से गिराता है। स्त्री, पुत्र का वियोग करता है। जिसके कारण दुःख होता है। कभी यह कोई विशेष जटिल रोग करता है। मनुष्य को परदेश ले जाता है। राहु की दशा में लोगों से प्रायः मिथ्या विवाद बढ़ता है।

5.4 महर्षि पराशर के मतानुसार

राहु का उच्च स्थान वृष, और केतु का वृश्चिक है। दोनों की क्रमशः मूलत्रिकोण राशि मिथुन तथा धनु है। राहु का घर कुंभ, केतु का वृश्चिक है या किन्हीं आचार्यो के मतानुसार दोनों की स्वराशि क्रमशः कन्या, मीन है। जन्म-समय में यदि उच्चादि स्थान में राहु हो तो उसकी दशा में धन-इत्यादि का अनेकविध सुख, मित्र तथा राजा के द्वारा अभीष्टप्राप्ति, वाहन, पुत्रलाभ, नूतनगृह-निर्माण, धर्मचिंतन, महोत्सव, **विदेश में राजसम्मान**, वस्त्र, अलंकारादि के लाभ होते हैं। वही राहु शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो, योगकारक ग्रह के साथ हो, केंद्र, त्रिकोण, या लाभस्थान अथवा दुश्चिक्य अर्थात् तृतीय भाव में हो तो महाराज-प्रसाद से अतुल सम्पत्ति की प्रप्ति होती है! उसे राजा और प्रजा से सम्मान मिलता है। यवन-प्रभु का सम्मान तथा घर में अनेकविध कल्याण होते हैं।

5.5 अष्टम या व्यय स्थान में राहु

हो तो उसकी दशा कष्टप्रद होती है। वह पापग्रह से सम्बद्ध हो, या मारक ग्रह से युक्त हो अथवा नीचराशिस्थ हो तो जातक को स्थानभ्रंश, मनोव्यथा, स्त्री-पुत्र का नाश, कुत्सित अन्न का भोजन, दशारभ्भ में शरीरपीड़ा तथा धन-धान्य का क्षय होता है। दशामध्य में वह सुखी, और स्वदेश में धनलाभ तो दशान्त में कष्ट, स्थानभ्रंश तथा मनोव्यथा आदि फल होते हैं।

फलदीपिका के अनुसार

5.6 राहु का अशुभ फल

राहु की महादशा में राजा से, चोर से, विष से, अग्नि से, तथा शस्त्र से भय या संतान को कष्ट होता है। मन में घोर अशान्ति और उद्वेग रहता है। बन्धुओं का नाश, नीच लोगों से अपमान तथा अपयश की प्राप्ति होती है। अर्थात् कोई ऐसा दुष्कर्म हो जाये जिसके कारण बदनामी हो। अपना स्थान (मकान या नौकरी)

छूट जाये। जो कार्य करे उसमें असफलता और हानि हो तथा जातक अपने पद प्रतिष्ठा से गिर जावे।

5.7 राहु का शुभ फल

राहु यदि शुभग्रह के साथ हो और प्रशस्त (उत्तम) भाव में हो तो राहु की महादशा बहुत शुभ फल देने वाली होती है। जातक का वैभव राजा के समान होता है। जातक के सब **अभीष्ट कार्य सिद्ध** होते हैं वह अपने घर में सुखपूर्वक रहता है। उसके पास दृढ़ता से धन संचय होता है और पृथ्वी पर उसकी कीर्ति फैलती है, वह प्रसिद्ध होता है।

5.8 राहु का विशेष फल

यदि **कन्या, वृश्चिक या मीन राशि का राहु** हो तो राहु की दशा के सम्बन्ध में कुछ विशेष विचार बताते हैं। यदि इन तीनों राशियों में से किसी में राहु हो तो **देशाधिपत्य** अर्थात् उच्च हुकूमत प्राप्त हो और बहुत अधिक सुख और; पालकी की सवारी मिलती है। यह सुख वैभव, राहु की दशा में प्राप्त होते हैं किंतु दशा के अन्तिम काल में यह सब नष्ट भी हो जाते हैं।

5.9 राहु की दशा और भाव गत स्थिति (सर्वार्थ चिन्तामणि से)

लग्नस्थ राहु	की दशा में बुद्धिहीनता या मूर्खता पूर्ण कार्य से कष्ट होता है। कभी राजा, चोर या अग्नि से भय होता है। युद्ध में पराजय, बुंधुओं का वियोग तथा शस्त्रादि का भय भी संताप देता है।
द्वितीय राहु	सत्ता सुख तथा धन संपदा की कमी करता है। भोजन समय कुसमय मिलता है। कभी दुष्ट राजा की सेवा के कारण मन में विषाद और क्षोभ होता है।
तृतीयस्थ राहु	राहु की दशा में भाइयों, पुत्रों तथा मित्रों का श्रेष्ठ सुख होता है। जातक पराक्रमी और उत्साही होता है। वह राजसम्मान और विदेश यात्रा का सुख पाता है।
चतुर्थस्थ राहु	राहु की दशा में राज कोप, भूमि भवन या कृषि की हानि तथा स्त्री पुत्र की ओर से चिन्ता होती है । कभी मन में अवसाद या विरक्ति की वृद्धि होती है।
पंचमस्थ राहु	राहु की दशा में विद्या में विघ्न, विवाद में कमी, मान तथा भोजन संबंधी सुख का नाश होता है।

षष्ठस्थ राहु	राहु की दशा रोग, विष, अग्नि या राजा से भय देती है। धन लाभ में कमी तथा हितैषियों से वियोग भी संताप देता है।
सप्तमस्थ राहु	राहु की दशा में दांपत्य सुख तथा धन वैभव और ऐश्वर्य की हानि होती है। कभी परदेश गमन, विष भय या मृत्यु भय होता है।
अष्टमस्थ राहु	राहु की दशा धन व पुत्र सुख की हानि करती है। कुटुम्ब से वैर विरोध होता है। चोर, अग्नि और राजा से भय मिलता है। कभी मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट की संभावना होती है।
नवमस्थ राहु	माता पिता से वियोग, गुरुजन और बंधुओं का नाश तथा विदेश गमन कराता है। कभी मित्र व पुत्रों से मतभेद क्लेश देता है।
दशमस्थ राहु	कर्म में प्रवृति, पुण्य संचय तथा सुख व सफलता देता है। शुभ राशिस्थ राहु पद प्रतिष्ठा व उच्च अधिकार या सत्ता सुख देता है। पाप राशि का राहु अपमान, अपयश और मिथ्या कलंक देता है।
लाभस्थ राहु	की दशा में जातक धन, मान व यश पाता है। दांपत्य सुख की वृद्धि होती है।
व्ययस्थ राहु	स्त्री व पुत्र से विवाद, सुपत्ति की हानि तथा परदेश या विदेश वास देता है।

5.10 राहु की अन्तर्दशाएँ (राहु दशा अवधि 18 वर्ष)

1. **राहु में राहु (अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन)** : यदि राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो जातक की स्त्री बीमार होती है। लोगों से विवाद, तथा बल बुद्धि का नाश होता है। वह धन का अपव्यय करता है। कभी दूर देश की यात्रा हो सकती है तथा मन में बहुत दुःख होता है।
2. **राहु में बृहस्पति (अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन)** : जब राहु की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो व्याधि नाश अर्थात् रोग और शत्रुओं का नाश होता है। जातक पर राजा की प्रीति, धन का आगमन तथा पुत्र लाभ होता है। उसके मन में सदैव उत्साह बना रहता है।
3. **राहु में शनि (अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन)** : जब राहु की महादशा में शनि

की अन्तर्दशा हो तो वात और पित्त के कारण शरीर में नाना प्रकार के रोग होते हैं तथा बन्धुओं और मित्रों को पीड़ा होती है। कभी दूर देश में निवास करना पड़ता है।

4. **राहु में बुध (अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन)** : राहु की महादशा में जब बुध की अन्तर्दशा हो तो दोस्तों से समागम होता है। मित्रों से संयोग होता है। अपनी पत्नी से मिलन होता है। धन का आगम होता है तथा राजा की प्रीति व कृपा प्राप्त होती है।
5. **राहु में केतु (अवधि 1 वर्ष 18 दिन)** : जब राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो घर में चोरी होती है। मान हानि, पुत्र नाश और धन तथा पशुओं का क्षय होता है। नाना प्रकार के उपद्रव होते हैं, जिससे जातक व्याकुल रहता है।
6. **राहु में शुक्र (अवधि 3 वर्ष)** : राहु की महादशा में जब शुक्र की अन्तर्दशा होती है तब किसी जातक को विदेश से वाहन की प्राप्ति होती है। छत्र, चामर आदि की सम्पत्ति या पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है, किन्तु रोग और शत्रु का भय होता है तो कभी बन्धुओं से भी भय होता है।
7. **राहु में सूर्य (अवधि 10 मास 24 दिन)** : जब राहु में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो दान और धर्म में रति होती है। जातक का सबसे प्रेम रहता है। सब उपद्रवों का नाश होता है किन्तु कभी संक्रामक रोग का संचार होता है। संक्रामक रोग छूत से लगने वाले रोग हैं। सूर्य सात्विक ग्रह होने से अपनी भुक्ति में धार्मिक बुद्धि तथा श्रेष्ठ व प्रतिष्ठित सज्जनों के सहयोग से अनिष्ट का नाश करता है।
8. **राहु में चन्द्र (अवधि 1 वर्ष 6 मास)** : राहु में जब चन्द्र की अन्तर्दशा होती है तो जातक को भोग और सम्पत्ति सदैव प्राप्त होते हैं। खेती की वृद्धि होती है। मित्रों से अच्छे संवाद मिलने से प्रसन्नता प्राप्त होती है।
9. **राहु में मंगल (अवधि 1 वर्ष 18 दिन)** : राहु की दशा में जब मंगल की अन्तर्दशा हो तो सब प्रकार के उपद्रव होते हैं। सब कार्यों में मूर्खता होती है अर्थात् कोई कार्य सीधा नहीं होता और चित्त भ्रान्त हो जाता है। स्मृतिदोष के कारण ठीक से कुछ भी याद नहीं रहता।

5.11 विशेष

(1) **कर्क, वृष और मेष में राहु हो** तो उसकी दशा में धन और धान्य का लाभ होता है। विद्या, विनोद होते है। **राजा से सम्मान** मिलता है। स्त्री–पुत्र

का सुख मिलता है।

(2) **कन्या, मीन तथा धनु राशि में राहु** हो तो पुत्र और स्त्री का लाभ होता है। देशाधिपत्य प्राप्त होता है। नरवाहन अर्थात् पालकी प्राप्ति हो। महादशा के अंत में सब सुख वैभव का नाश हो जाता है।

(3) **वृष, कर्क, सिंह और कन्या का राहु** हो तो राजा बने या राजा के सदृश वैभव प्राप्त हो, हाथी, घोड़े का मालिक हो, सेना हो। जातक सब जीवों का उपकार करता है और बहुत धनी होता है। वह सुखी, विद्वान और सुशील होकर अपनी स्त्री और पुत्रों से सुखी रहता है।

(4) राहु की दशा जब **प्रारम्भ** होती है तब दुःख मिलता है। दशा के **मध्य** में बहुत सुख मिलता है। दशा के **अंत** में पिता या गुरुजन का नाश होता है और कभी पदच्युति भी होती है। राशि संख्या 1, 2, 3, 4, 5, 6, 9, 12 का राहु शुभ फल देता है।

4.10 समीक्षा

1. उत्तर कालामृत, जातक परिजात, पराशर होराशास्त्र तथा मंतरेश्वर के मतानुसार 'राहु दशा फल पर विचार हुआ है।
2. राहु की शुभ भाव में शुभ ग्रह से दृष्टि युति धन, मान व सुख सफलता देती है।
3. पैरा 5.9 पर राहु की भाव गत स्थिति का दशाफल पर प्रभाव सर्वार्थ चिन्तामणि के मतानुसार दिया गया है।
4. राहु की अन्तर्दशाएं पैरा 5.10 पर दी हैं।
5. राहु की राशिगत स्थिति का दशाफल पर प्रभाव की चर्चा पैरा 5.11 में की गई है।
6. अगले अध्याय में 'गुरु दशा फलम्' पर चर्चा होगी।

●●●

अध्याय-6

गुरु दशा फलम

6. गुरु की दशा (अवधि 16 वर्ष)

6.1 उर्वी गुर्वी समायात्यवनिपति कुलान् नायकत्वं जनानां
कान्ता दन्ता बलाग्रागम इह क्रमलालंकृता वासशाला
मैत्री सद्भिर्महभिद्गुरुजनगरिमा कालिमारातिकास्ये ह्यद्या।
विद्यानवद्या भवति च वचसभीशितुः पाककाले।।

(भाव कौतुहलम् 16:9)

गुरु दशा में जातक अवनिपति (राजा) की कृपा से पद, प्रतिष्ठा तथा भूमि (राज्य) पाता है। वह ग्राम या नगर का अध्यक्ष होता है। उसे पत्नी तथा वाहन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। उसके घर में मानो स्वयं लक्ष्मी का ही वास होता है। ऐसा जातक **धन वैभव** संपन्न व **समृद्धिशाली** होता है। धनी मानी, तथा प्रभावशाली विद्वानों से उसकी मैत्री होती है। वह शत्रुओं का मुंह काला करता है अर्थात् जातक के हाथों शत्रु पराजय व अपमान पाते हैं। गुरु की दशा में जातक नए ज्ञान का प्रकाश व सुख पाता है।

टिप्पणी—यदि गुरु शुभ भावाधिपति, शुभदृष्ट, शुभयुक्त अथवा उच्चराशिस्थ (कर्क) या स्वक्षेत्री (धनु, मीन) हो तो निश्चय ही गुरु की दशा में शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं।

6.2 बृहस्पति की दशा का फल

जीवोत्कृष्टदशा करोति विपुलग्रामाधिकारात्मज-
श्रीसौभाग्यगुणाकराश्रितजनाश्वान्दोलिकावैभवान् ।
जैवी पापदशा महीसुरभयाधिव्याधिधैर्यच्युता
धान्यानर्थमहीसुरातिजनकक्रोधाशनार्तिक्षयान् ।

(उत्तर *कालामृत 6:10*)

1. **गुरु यदि शुभ हो तो** उसकी दशा में बहुत से गाँवों का मुखिया बनना, पुत्र प्राप्ति, धन तथा सौभाग्य प्राप्ति, शुभ गुणों की प्राप्ति, नौकरों का सुख, वाहन आदि का सुख तथा अन्य वैभव प्राप्त होते हैं।

2. **यदि गुरु अशुभ** हो तो राज्य की ओर से कष्ट, भय, मानसिक क्लेश तथा रोग, धैर्य का नाश, धान्य तथा धन की कमी, ब्राह्मण वर्ग से कष्ट, पिता की ओर से क्रोध, भोजन से कष्ट तथा क्षय आदि रोग होते हैं।
3. गुरु 'सुख' का कारक है। अतः जिन कुण्डलियों में गुरु निर्बल हो, विशेषतया निर्बल लग्न वाली कुंडलियों में, उन व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट प्रायः बना रहता है।
4. इसलिए देव केरल ग्रन्थ में कहा है–

देहे पापे देहपीडा, जीवे पापे तथैव च। (पृष्ठ 34)

अर्थात् लग्न स्थान पाप प्रभाव में हो तो देह में पीड़ा रहती है और गुरु पाप प्रभाव में हो तो भी ऐसा ही कष्ट होता है।

6.3 **त्रिदशपतिगुरुदशायां मन्त्रिनरपनृत्यनीतिभिर्वित्तम्।**
मानगुणानां लब्धिरतिप्रतापः सुहृद्विवद्धिश्च।।
कान्तासुवर्णवेसरगजाश्वभोगी सदा पुरुषः।
मांगल्यपौष्टिकानां लाभो द्विषतां विनाशश्च।।
लाभो भवति नराणां प्रीतिः सद्भूमिपैः सार्धम्।
जनताया नृपवक्त्रात्पण्याग्राद्गुरुजनाच्च धनलाभः।।

(सारावली 41:42-43)

गुरु की शुभदशा में मन्त्री, राजा तथा नाटकीय नीति से धनलाभ कभी मान, गुण, प्रताप और मित्रों की वृद्धि एवम् स्त्री, सुवर्ण, पशु तथा वाहनों का लाभ होता है। मंगल और बल-पुष्टि का उदय, शत्रु का नाश, राजाओं (धनी मनी सज्जन का) से मैत्री, जनता तथा सरकार, व्यापारी और गुरुजनों से भी जातक को धनलाभ होता है।

6.4 **गात्रश्वथपृथुशोकं पंगुत्व गुल्मकर्णरोगांश्च।**
पुंस्त्वविनाशं मेदःक्षयं नृपतितो भयं समाप्नोति।।

(सारावली 41:44)

गुरु की अशुभ दशा में देह में शोथ, अधिक शोक, पंगुता, उदर और कर्ण रोग, वीर्य और मेद का क्षय तथा राजभय होता है।

6.5 **स्थानप्राप्ति वित्तयानाम्बराप्ति राजस्नेहं चित्तशुद्धि विभूतिम्।**
ज्ञानाचांर पुत्रदारादिलाभं देवाचार्यः स्वे विपाके करोति।।

(जातक पारिजात)

बृहस्पति की महादशा में उच्च पद की प्राप्ति, धनप्राप्ति, वाहन और

वस्त्रप्राप्ति होती है। राजा से सम्मान मिलता है। चित्त शुद्धि बनी रहती है। पुत्र व स्त्री का उत्तम सुख रहता है। जातक सदाचारी होता है। उसके ऐश्वर्य और ज्ञान की वृद्धि होती है।

6.6 महर्षि पराशर के मतानुसार

1. गुरु स्वोच्च, स्वगृह, केंद्र, लाभस्थान, त्रिकोण या मूलत्रिकोण, उच्च के नवांश या स्वनवांश में हो तो राज्यलाभ, महासुख, **राजसम्मान**, हाथी घोड़ों का सौख्य, देव-ब्राह्मण का पूजन, स्त्री, पुत्र वाहन तथा वस्त्र का सुख, यज्ञकार्य में सिद्धि, वेदान्त-श्रवण, राजप्रसाद से मनोरथ सिद्धि, पालकी (शिबिका), सुख सुविधाएं, पुत्र-स्त्री का लाभ आदि सभी प्राप्त होते हैं।
2. गुरु नीचराशिगत, अस्त, या पापयुक्त, अष्टम या द्वादशस्थानगत हो तो जातक को स्थान भ्रंश, मनस्ताप, पशुधन की हानि होती है किन्तु तीर्थयात्रादि से सुख मिलता है। दशारभ्भ में कष्ट, फिर पशुधनों का लाभ, दशा के मध्य में सुखप्राप्ति तथा अन्त में राजसम्मान मिलता है।

6.7 फलदीपिका के अनुसार

1. बृहस्पति की दशा में मनुष्य धार्मिक कार्य करता है, उसे संतान प्राप्ति या संतान संबंधी हर्ष प्राप्त होता है। राजा उस मनुष्य की प्रतिष्ठा अर्थात् उसका सम्मान करता है। अन्य विशिष्ट व्यक्ति भी उसकी प्रशंसा करते हैं; हाथी, घोड़े तथा सवारी की प्राप्ति होती है। हृदय की आकांक्षाएँ पूर्ण हों। अपनी स्त्री, पुत्र व मित्रों से समागम से सुख मिलता है।

6.8 गुरु की दशा में जातक नवीन वस्त्र, आभूषण नौकर तथा पारिवारिक सुख में वृद्धि पाता है। उसे समाज तथा सरकार से यश, धन पद व प्रतिष्ठा मिला करती है। कभी कर्ण रोग, कफ जन्य पीड़ा या गुरुजन के वियोग की संभावना होती है।

6.9 गुरु की भाव गत स्थिति का दशा फल

लग्नस्थ गुरु	वस्त्राभूषण तथा श्रेष्ठ वाहन की प्राप्ति से जातक सुखी होता है।
द्वितीय गुरु	धन संपदा की वृद्धि, कुटम्ब में स्नेह और सम्मान तथा उत्तम भोजन और वस्त्राभूषण मिलने से सुख होता है। जातक बुद्धिमान तथा सामर्थ्यवान होता है।

तृतीयस्थ गुरु	भाइयों का उत्तम सुख मिलता है। राज्य से धन व सम्मान तथा वस्त्राभूषण का श्रेष्ठ सुख मिलता है।
चतुर्थस्थ गुरु	जातक राजा या नृपतुल्य होकर धन मान व प्रतिष्ठा पाता है। उसे श्रेष्ठ वाहन सुख मिलता है।
पंचमस्थ गुरु	मंत्रोपासना में सफलता और सिद्धि, राजसम्मान तथा संतान लाभ होता है।
षष्ठस्थ गुरु	स्त्री और पुत्र का लाभ, निरोगता तथा शत्रु नाश का सुख मिलता है। गुरु पर अनिष्ट प्रभाव चोर या शत्रु से धन हानि कराता है।
सप्तमस्थ गुरु **अष्टमस्थ गुरु**	स्त्री, पुत्र व धन का सुख, संग्राम में विजय तथा विदेश यात्रा का सुख होता है। पुण्य कर्म में उसकी सहज रुचि होती है। बंधुजन का वियोग, स्थान हानि तथा विदेश गमन होता है। कभी दशा के अंत में राजसम्मान, संतान सुख तथा स्त्री सुख प्राप्त हुआ करता है।
नवमस्थ गुरु	स्त्री, पुत्र, धन धान्य और वाहन सुख में वृद्धि होती है। वह धार्मिक समारोह में भाग लेकर यश पाता है।
दशमस्थ गुरु	धन, पुत्र और स्त्री संबंधी सुख बढ़ता है। समाज में मान सम्मान व यश मिलता है। जातक पद, प्रतिष्ठा व उच्च अधिकार या सत्ता सुख पाता है।
लाभस्थ गुरु	पद प्रतिष्ठा, राज्य तथा धन लाभ देता है। स्त्री पुत्र और मित्रों का उत्तम सुख मिलता है।
व्ययस्थ गुरु	जातक को श्रेष्ठ वाहन की प्राप्ति होती है। कोई जातक नाना प्रकार के क्लेश से त्रस्त होकर अपना स्थान छोड़कर दूर परदेश में जा बसता है।

6.10 अन्तर्दशाएँ (गुरु दशा अवधि 16 वर्ष)

1. **बृहस्पति में बृहस्पति (अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन)** : बृहस्पति की महादशा में जब बृहस्पति का अन्तर होता है तो राज्य के अधिकारियों से प्रीति होती है। मन में उत्साह रहता है। सब कार्य सफल होते हैं। विद्या की वृद्धि होती है एवं ज्ञान–विज्ञान प्राप्त होता है।

2. **बृहस्पति में शनि (अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन)** : जब बृहस्पति में शनि की अन्तर्दशा आती है तो मन में ताप होता है। चित्त में द्वेष वृद्धि होती है। पुत्र के कारण धन व्यय होता है। सब कार्यों का नाश होता है अर्थात् असफलता मिलती है।

वेश्यामद्यद्यूतैरभिभूतो महिषखरयुक्तः।
सौरे जीवदशायां विलुप्तधर्मो भवेत्पुरुषः।।

(*सारावली 42:41*)

(ii) शनि की अन्तर्दशा में वेश्या, मदिरा या जुए से जातक पराभूत होता है। भैंस और गधे आदि से जीविका करता है। ऐसा जातक कभी धर्म विरुद्ध आचरण किया करता है।

3. **बृहस्पति में बुध (अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन)** : जब बृहस्पति में बुध की अन्तर्दशा होती है तब वैश्यवर्ग या व्यापारी वर्ग से धन लाभ होता है। राजा की कृपा होती है। सुखपूर्वक समय बीतता है। मनुष्य सत्कर्म करता है और सदाचारी होता है।

व्याधिविनाशं सौख्यं मित्रैः सह संगतिं तथा पूजाम्।
मातापित्रोर्भक्तिं जीवदशायां बुधे लभते।।

(*सारावली 42:39*)

(ii) बुध की अन्तर्दशा में रोग का नाश, मित्रों का योग और माता-पिता की भक्ति होती है।

4. **बृहस्पति में केतु (अवधि 11 मास 6 दिन)** : जब बृहस्पति में केतु की अन्तर्दशा हो तो मुक्ता, प्रवाल तथा भूषण की प्राप्ति होती है। मनुष्य तीर्थ यात्रा करता है। गुरु और राजा से धन की प्राप्ति होती है अर्थात् अर्थागम हुआ करता है।

5. **बृहस्पति में शुक्र (अवधि 2 वर्ष 8 मास)** : जब बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा होती है तब वाहन आदि धन वैभव की प्राप्ति होती है। छत्र, चामर का वैभव होता है, किन्तु जातक की पत्नी को पीड़ा होती है और जन विद्वेष होता है।

रिपुभयविनाशदुःखैरभिभूतो ब्राह्मणोपजीवी च।
जीवदशायां शुक्रे प्रविशति नित्यं भवेत्पुरुषः।

(*सारावली 42:40*)

कभी शुक्र की अन्तर्दशा में शत्रुभय, धनहानि और ब्राह्मणों की सहायता से

जीविका होती है।

6. **बृहस्पति में सूर्य (अवधि 9 मास 18 दिन)** : जब बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो शत्रुनाश, जय, सौख्य प्राप्त होते हैं चित्त में सदैव उत्साह रहता है। धनागम होता है। राजा की कृपा होती है और शरीर निरोग रहता है।

रिपुभयकलहैर्मुक्तः प्रयाति गुरुतां नरेन्द्रस्य।
विक्रमसाहससौख्यैर्जीवदशायां रवौ चरति।।

(*सारावली 42:36*)

(ii) बृहस्पति की दशा में रवि की अन्तर्दशा हो तो जातक शत्रु और रोग के भय से मुक्त होकर राजा से सम्मान पाता है। वह पराक्रम, साहस और सुख से युक्त होता है।

7. **बृहस्पति में चन्द्र (अवधि 1 वर्ष 4 मास)** : जब बृहस्पति में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो स्त्रियों से सुख और चित्त में उत्साह होता है। जातक ऐश्वर्यवान होता है। उस पर राजा की कृपा होती है तथा दिव्य वस्त्र और भूषण प्राप्त होते हैं।

पत्नीसहस्त्रभर्ता जितरोगरिपुः परोन्नतिं लभते।
प्रकटयति राजचिह्नं चन्द्रदशा गुरुदशायां हि।।

(*सारावली 42:37*)

(ii) चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो अनेक स्त्रियों से सुख मिलता है। ऐसा जातक रोग और शत्रु को जीतकर तथा राजा सरीखा प्रतिष्ठित होकर सब क्षेत्रों में उन्नति किया करता है।

8. **बृहस्पति में मंगल (अवधि 11 मास 6 दिन)** : जब बृहस्पति में मंगल का अन्तर हो तो कर्मनाश, घूमना (यात्रा), ज्वर ताप और अपमान का भय होता है। कभी धन का नाश होता है और मन में किसी कार्य के लिए उत्साह नहीं रहता।

तीक्ष्णः परोपतापी शूरो रणलब्धकीर्तिधनः।
सौख्यमनन्तं लभते जीवदशायां कुजे चरति।।

(*सारावली 42:38*)

(ii) मतान्तर से मंगल की अन्तर्दशा में तीक्ष्णता, शत्रु की पराजय, शूरता, रण में यशलाभ और सब प्रकार के सुख होते हैं।

9. **बृहस्पति में राहु (अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन)** : जब बृहस्पति में राहु

का अन्तर हो तो सब क्लेशों का भय, रोग तथा सब उपद्रवों के कारण उपस्थित होते हैं। धन का नाश होता है।

6.11 विशेष :

(i) यदि **बृहस्पति उच्च राशि का हो किन्तु नवांश में नीच** का हो तो बृहस्पति की दशा में शत्रुओं और चोरों का भय होता है। राज भय रहता है और जातक का अशुभ होता है।

(ii) यदि **बृहस्पति नीच राशि का हो किन्तु अपने उच्च नवांश** में हो तो महाराजाओं की प्रसन्नता, विद्या, सुख, धन, यश, वैभव का विस्तार होता है और देशधिपत्य प्राप्त होता है। महाराजा शब्द से धनी मानी व प्रतापी व्यक्ति जानें।

6.12 समीक्षा

1. प्रायः सभी विद्वानों ने गुरु की दशा भुक्ति को बहुत शुभ व कल्याणप्रद माना है। इस अवधि में जातक धन, मान, गौरव तथा कीर्ति प्राप्त कर सुखी होता है।
2. गुरु यदि अशुभ भाव में या पाप पीड़ित हो तो बहुत कष्ट, क्लेश तथा धन व यश की हानि देता है।
3. गुरु की शुभ व अशुभ दशा पर सारावली, जातक परिजात, पराशर होराशास्त्र तथा फलदीपिका के संदर्भ में विचार हुआ है।
4. पैरा 6.9 पर गुरु की भावगत स्थिति का दशाफल पर प्रभाव की चर्चा की गई है।
5. गुरु की अन्तर्दशाओं पर पैरा 6.10 पर विचार हुआ है।
6. अगले अध्याय में 'शनि दशा फलम्' पर चर्चा होगी।

●●●

अध्याय-7

शनि दशा फलम

7. शनि की दशा (अवधि 19 वर्ष)

7.1 **मिथ्यावादेन तापोऽरिनरजनकृतातंकता रंकता वा कृत्या**
गुप्ता प्रतप्ता मतिरपि कुजनैरर्थनाशो जनानाम्।
कान्तापत्यादिरोगो जनककनक गोवाजि दन्तावलानां विच्छेदो
मित्र भेदो दिनपसुत दशायामनर्थो विशेषात्।

(*भाव कौतुहलम् 16:10*)

शनि की दशा में जातक, मिथ्या कलंक, शत्रु के आतंक अथवा निर्धनता से, कष्ट पाता है। कभी दुष्ट जनों की कुसंगति से, वह पापकर्म कर, आर्थिक हानि पाता है। उस का मन असंतुलित रहता है तो कभी पत्नी व पुत्र, रोग से पीड़ित होते हैं। वह स्वर्ण, गाय, हाथी तथा पिता से अलगाव पाता है। कोई जातक धन वैभव तथा पिता के सुख से वंचित होता है। मित्रों से उसका मतभेद या वैमनस्य होता है। ऐसा जातक जाने अनजाने या अनचाहे रूप से अवांछनीय दुष्कर्म भी किया करता है।

7.2 **मन्दोत्कृष्टदशा करोति विभवप्रज्ञादियज्ञादिक-**
क्षेत्रग्रामपुराधिनायकबहुव्यापारदक्षोत्सुकान् ।।
मान्दी पापविषप्रयोगधनहृद्देहाद्यानर्थोदयान्
राजक्रोधविरूद्धकार्यविकलान् रोगादिबाधोदयान्।

(*उत्तर कालामृत 6:12*)

1. **शनि यदि शुभ हो** तो अपनी दशा में वैभव तथा प्रखर बुद्धि देता है। यज्ञादि करवाता है। मनुष्य को खेत, गाँव शहर आदि का मुखिया और बहुत प्रकार के व्यापारों में चतुर बनाता है।
2. जब **शनि अशुभ** हो तो पाप, विष का प्रयोग करना, धन का नाश, देह में कष्ट, राज्य की ओर से क्रोध या दंड, निषिद्ध कर्मो में लगना, अंगहीन (लंगड़ा आदि) होना तथा रोग आदि अनेक बाधाएँ देता है।

7.3 सौरेर्दशां प्रपन्नः प्राप्नोति पुमान्खरोष्ट्रमहिषाद्यान्।
कुलटां जरदंगी वा कुलित्थतिलकोद्रवादींश्च।
वृन्दग्रामपुराणमधिकारभवं च सत्कारम्।
लोहत्रपुकादीनां स्वकीयपक्षस्थिरास्पदं चैव।।

(सारावली 41:48-49)

शनि की शुभदशा में गधा, ऊँट, भैंस आदि पशुओं का लाभ, कुलटा या वृद्धा स्त्री का संग, कुलथी, तिल, कोदो आदि कदन्न का लाभ, सभा, संगठन, गाँव या नगर पर अधिकार, लोहा आदि धातु का लाभ तथा अपने पक्ष के लोगों में मान-सम्मान तथा पद प्रतिष्ठा का सुख होता है।

7.4 वाहननाशोद्वेगस्त्वरतिः स्त्रीस्वजनविप्रयोगश्च।
युद्धेष्वपजयदोषो मद्यद्यूतोद्भवो मरूत्कोपः।।
पुण्येष्वसिद्धिकलहं बन्धनतन्द्राश्रमं तथा व्यंगम्।
भृत्यापत्यविरोधो भवति च कष्टा यदा दशा सौरेः।।

(सारावली 41:50-51)

शनि की अशुभ दशा में वाहनों का नाश, उद्वेग, वैमनस्य, स्त्री और परिजनों का वियोग, युद्ध में पराजय, मदिरा और जूए में प्रेम, वायु का प्रकोप, पुण्य की हानि, बन्धन, तन्द्रा, परिश्रम, अंग-भंग तो कभी नौकर और सन्तान से विरोध होता है।

7.5 शनेर्दशायामजगर्दभोष्ट्रवृद्धागंनापक्षिकुधान्यलाभम् ।
श्रेणीपुरग्रामजनाधिकाराद्धनं वदेन्नीचकुलाधिपत्यम्।।

(फलदीपिका)

शनि की महादशा में निम्नलिखित वस्तुओं का लाभ होता है :

बकरा, गधा, ऊँट, वृद्ध स्त्री, पक्षी और मोटा अनाज, श्रेणी, पुर, ग्राम तथा जनाधिकारियों से धन लाभ होता है। वह उत्साह तथा उत्सुकता से पूर्ण होता है तथा उसे नीच कुल का आधिपत्य प्राप्त होता है।

7.6 महर्षि पराशर के मतानुसार

1. शनि, स्वोच्च, स्वगृह, मित्रगृह, मूल त्रिकोण, भाग्यस्थान, उच्च के नवांश या स्वनवांश, तृतीय या एकादश में हो तो, मनुष्य को राजसम्मान, सुयश, धर्मलाभ, विद्यावाद-विनोद से महासुख, लक्ष्मीविलास, राज्यलाभ, घर में **अनेकविध कल्याण**, स्त्री-पुत्र-सौख्य प्राप्त होते हैं।

2. शनि 6,8,12 में, नीचराशिस्थ या अस्तगत हो तो जातक को विष-शस्त्रादि की पीड़ा, स्थानभ्रंश, महाभय, पितृभातृवियोग, स्त्रीपुत्रादि-पीड़ा, राजविरुद्धकार्य, तथा उससे अ ·ष्ट फल एवं बंधन प्राप्त होते हैं।
3. वही शनि शु· युक्त या दृष्ट हो, या योगकारक ग्रह से संयुक्त हो, केंद्र, त्रिकोण, लाभस्थान या मीन, धनु में स्थित हो तो **राज्यलाभ**, महोत्साह तथा हाथी-घोड़ा-वस्त्रादि का सुख प्राप्त होता है।

7.7 फलदीपिका के अनुसार

1. जब शनि की महादशा हो तो देश में कोई पीड़ा हो रही हो या देश पर कोई प्रहार हो रहा हो या लड़ाई हो रही हो, उसके फलस्वरूप धन प्राप्ति होती है। जैसे लड़ाई के दिनों में चोर-बाजार में कमाई होती है या दुर्भिक्ष के समय कुछ लोग अधिक पैसा कमा लेते हैं। इस प्रकार की कमाई को शनि की महादशा का फल समझें। शनि की महादशा में नौकरों की प्राप्ति हुआ करती है।
2. वृद्ध स्त्री (अर्थात् जवानी जिसकी बीत चुकी है) की प्राप्ति भी होती है। शनि की महादशा तो लाखों व्यक्तियों की होती जाती है किन्तु वृद्ध स्त्री की प्राप्ति तो सबको नहीं होती। यहां पर वृद्ध का अर्थ लेना चाहिये अधिक अवस्था वाली और जन्मकुंडली में यदि शनि ऐसा योग करता हैं जिसके कारण अन्य स्त्री से संसर्ग होने की संभावना हो तभी शनि की दशा में यह योग घटित होगा।
3. शनि की महादशा में पशु, भैंस और बैल की प्राप्ति भी होती है किन्तु जातक की स्त्री और पुत्र को पीड़ा होती है। स्वयं जातक को वातरोग (गठिया, बाय आदि), कफ रोग, गुदा रोग (बवासीर आदि) होते हैं तथा हाथ पैरों में जलन रहती है।
4. शनि की महादशा में जातक की स्त्री, पुत्र को रोग या स्वयं को भी वात आदि की पीड़ा, खेती नष्ट होती है। जातक दुष्ट वाणी बोलता है।
5. खराब स्त्री में आसक्ति, अपने परिवार के लोगों से वियोग और अकस्मात् स्वजन (अपने इष्टजन) का, भूमि, सुख तथा धन का नाश होता है। शनि की महादशा का यह फल तभी घटित होगा जब शनि जन्मकुंडली में बहुत बिगड़ा हुआ हो।

7.8 शनि की भावगत स्थिति और दशा फल

शनि की भावगत स्थिति	शनि का दशा फल
लग्नस्थ शनि	देह कष्ट, स्थान हानि, राज कोप, शिर में रोग तथा कभी विदेश वास होता है।
द्वितीय भावस्थ शनि	धन का नाश, नेत्र रोग, अन्त में अरुचि, राजा से भय तथा मन में संताप होता है।
तृतीय भाव में शनि	भाइयों से अनबन या भ्रातृवर्ग का नाश, उत्साह व साहस में कमी, मन में जड़ता या आलस्य तथा कृषि और पशुधन (वाहन) की हानि होती है।
चतुर्थ भाव में शनि	माता या मातृवर्ग का नाश, घर का नाश, पद प्रतिष्ठा की हानि तथा चोर व राजा से भय होता है।
पंचम भाव में शनि	मानसिक रोग विचार दोष, बुद्धि नाश, पुत्र सुख में कमी, स्त्री सुख व धन की हानि तथा मित्रों से विवाद होता है।
षष्ठ भाव में शनि	शत्रु, रोग, चोर तथा विष से पीड़ा होती है। कभी घर और खेती (अजीविका) की हानि होती है।
सप्तम भाव में शनि	स्त्री के कारण संताप या कष्ट, शत्रु भय, भाग्य में कमी तथा मूत्रकृच्छ सरीखा गुप्त रोग होता है।
अष्टम भाव में शनि	पत्नी पुत्र, धन तथा सेवकों की हानि होती है। कभी भूमि, पशुधन तथ राज्य (सत्ता, अधिकार) का नाश होता है।
नवम भाव में शनि	माता पिता से वियोग, परदेश गमन तथा बंधु बांधवों से पृथकता मिलती है।
दशम भाव में शनि	कर्म का नाश, असफलता, पद प्रतिष्ठा की हानि, राज दंड तो कभी देशांतर गमन होता है।
एकादश भाव में शनि	धन लाभ, मान सम्मान व प्रतिष्ठा की प्राप्ति तथा स्त्री व सेवकों का उत्तम सुख मिलता है। कृषि या आजीविका से धन लाभ, संतान सुख तथा मन की प्रसन्नता बढ़ती है।

द्वादश भाव में शनि	व्यय भाव में स्थित शनि की दशा में चोर, अग्नि और राजा से भय, परदेश गमन तथा बंधु बांधवों का वियोग होता है।

7.9 शनि की अन्तर्दशाएँ (अवधि 19 वर्ष)

1. **शनि में शनि (अवधि 3 वर्ष 3 दिन)** : जब शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो जातक बहुत दु:खी और नाना व्याधियों से संतप्त मन होता है। चित्त में ईर्ष्या होती है। अपमान से बहुत शोक और मनस्ताप पाता है। राजा और चोर से धन और धान्य का नाश होता है। मनुष्य सब का विरोध करता है। उसे राजा का कोप प्राप्त होता है। कभी मनुष्य को दूत का कार्य करना पड़ता है। उसे वृद्धा स्त्री की प्राप्ति होती है। पशुगण का ह्रास होता है। पुत्र-स्त्री आदि को पीड़ा होती है। जातक ज्वर से पीड़ित रहता है। उसे वात-कफ जनित पीड़ा और शूल रोग होते हैं।

2. **शनि में बुध (अवधि 2 वर्ष 8 मास 9 दिन)** : जब शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा होती है तो सुख, वित्त और यश की वृद्धि होती है। मनुष्य सत्कर्म करता है। आचारवान् होता है। उसे **सम्पत्ति** मिलती है। कृषि में उसकी उन्नति होती है और वह अच्छा व्यापार करता है।

   सौभाग्यसौख्यविजयप्रमोदसत्कारमानधनलाभम् ।
   सौरिदशायां सौम्यो विदधात्यन्तर्दशाप्राप्तः ।।

   (*सारावली 42:51*)

   (ii) बुध की अन्तर्दशा मे सौभाग्य, सुख, विजय, आनन्द, आदर और धन का लाभ होता है।

3. **शनि में केतु (अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन)** : जब शनि में केतु का अन्तर हो तो वात और पित्त के रोग ,नीच और दुर्जनों के साथ कलह तथा निद्रानाश होता है। जातक के मन में भय व संताप की वृद्धि होती है।

4. **शनि में शुक्र (अवधि 3 वर्ष 2 मास)** : जब शनि में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो बन्धु लोग स्नेह करते हैं, जन प्रीति होती है। विवाह होता है. या स्त्री से सुख मिलता है। धन का आगम होता है। मन प्रसन्न रहता है और नाना प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं।

   वर्धयति मित्रपक्षं भिनत्ति शोकान्यशः प्रकाशयति।
   सौरिदशायां शुक्रः पत्नीधनविजयलाभकरः।।

   (*सारावली 42:53*)

(ii) शुक्र की अन्तर्दशा में मित्रों की वृद्धि, शोक का नाश, यश का प्रकाश, स्त्रीसुख, धन प्राप्ति और विजय लाभ होता है।

5. **शनि में सूर्य (अवधि 11 मास 12 दिन)** : जब शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो स्त्री और पुत्र का नाश होता है, नृप और चोर से पीड़ा होती है।

धनपुत्रदारनाशं भयमतुलं सन्दधाति पुरूषस्य।
रविपुत्रस्य दशाया सूर्यस्यान्तर्दशा न सन्देहः।।

(*सारावली 42:48*)

(ii) रवि की अन्तर्दशा में धननाश, पुत्र और स्त्री को कष्ट और शत्रु का भय होता है।

6. **शनि में चन्द्र (अवधि 1 वर्ष 7 मास)** : जब शनि में चन्द्रमा का अन्तर हो तो गुरु या स्त्री की मृत्यु होती है, दुःख मिलता है, बन्धु द्वेष करते हैं अथवा वायु जनित रोग होते हैं किन्तु धन का आगम भी होता है।

स्त्रीमरणं हरणं वा बन्धुवियोगं पुनः पुनः कलहम्।
अन्तदर्शा दशायां शनेः शशांकस्य विदधाति।।

(*सारावली 42:49*)

(ii) चन्द्रमा की अन्तर्दशा में स्त्री का मरण अथवा अपहरण तथा बन्धुओं से वियोग और कलह होता है।

7. **शनि में मंगल (अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन)** : जब शनि में मंगल का अन्तर हो तो स्थानच्युति और महारोग की सम्भावना होती है। नाना प्रकार से मन में भय रहता है। सहोदर और मित्रों को पीड़ा होती है।

देशभ्रंशं व्याधिं दुःखानि करोत्यनेकरूपाणि।
अन्तर्दशा दशायां रविजस्य महीसुतस्य यदा।।

(*सारावली 42:50*)

मंगल की अन्तर्दशा में देशत्याग और रोगभय होता है।

8. **शनि में राहु (अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन)** : जब शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो सब अंगों में रोग होता है, सन्ताप होता है, राजा, चोर और शत्रु से पीड़ा होती है और धन का क्षय होता है।

9. **शनि में बृहस्पति (अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन)** : जब शनि में गुरु का अन्तर हो तो, देव और ब्राह्मणों की भक्ति तथा राजा की प्रीति प्राप्त होती है। महान सुख, स्थान (राज्य) का लाभ होता है और अच्छा पद मिलता

है।

अनुयति शिष्टपदवीं ग्रामादिकलत्रसौख्यसम्पन्नः।
रवितनयस्य दशायां प्रविशति जीवे सदा पुरूषः।।

(सारावली)

(ii) शनि की दशा में गुरु की अन्तर्दशा में **उच्चपद** का लाभ, ग्राम और स्त्री वर्गादि से श्रेष्ठ सुख होता है।

7.10 विशेष :

यदि शनि अपनी उच्च राशि में हो किन्तु नीच नवांश में हो तो दशा के आरम्भ में सुख दिया करता है तथा दशा के अंत में प्राणियों को प्रायः कष्ट देता है।

(ii) **यदि शनि अपनी नीच राशि में किन्तु उच्च नवांश** में हो तो दशा के अंत में सुख-फल देता है और दशा के प्रारम्भ में शत्रु, चोर से भय, दुःख और परदेश की यात्रा कराता है।

7.11 समीक्षा

1. जनमानस में शनि को लेकर निर्मूल भय व अनिष्ट आशंका व्याप्त है। शनि यदि योगकारक हो तो अपनी दशा में धन, मान, यश व सुख देता है।
2. पैरा 7.8 पर शनि की भावगत स्थिति का दशाफल पर प्रभाव पर चर्चा हुई है।
3. पैरा 7.9 पर शनि की अन्तर्दशाओं की चर्चा की गई है।
4. अगले अध्याय में 'बुध दशा फलम्' पर विचार होगा।

●●●

अध्याय-8

बुध दशा फलम

8. बुध की दशा (अवधि 17 वर्ष)

8.1 दिव्याहारविहार यानजनतापत्यार्थमानाम्बर-
श्रेणी ग्रामनवालयेन्दुवदनालाभं विशेषा दिह।
सद्भिः संगमनंग मंगमतुलं प्रोत्तुंगमातंगज सौख्यं
सन्तनुते दशा सुतयशोवृद्धिं च सिद्धिंविदः।।

(*भाव कौतुहलम् 16:11*)

बुध की दशा में जातक उत्तम भोजन, पर्यटन, धन, वाहन, संतान, वस्त्राभूषण तथा भूमि (भू संपदा) का श्रेष्ठ सुख पाता है। वह सुन्दर पत्नी का सहयोग पाकर सुखी होता है। उसे विद्वानों की संगति में प्रसन्नता का अनुभव होता है। उसके **यश, वैभव तथा संतान सुख में वृद्धि** होती है। सभी कार्यों में उसे सफलता मिलती है। वह आमोद प्रमोद तथा क्रीड़ा में सुख पाता है।

8.2 सौम्योत्कृष्टवशा करोति वसनानन्तार्थधान्योच्छ्रय-
श्रेयः सौख्यगृहस्वबन्धुविजयप्राप्तीष्टवस्त्वागमान्।
बोध्या पापदशा विदेशगमनक्रोधस्वबन्धुक्षय-
प्रज्ञाहीनवणिग्जनार्तिकलहक्षेत्रार्थनाशापदः ।

(उत्तर *कालामृत 6:9*)

1. **बुध यदि शुभ हो** तो उसकी दशा में कपड़े, अनन्त धन, धान्य, पदवी, कल्याण, सुख, गृह, बन्धु, विजय तथा इष्ट वस्तुओं को प्राप्ति होती है।
2. यदि **बुध अशुभ** हो तो विदेश-यात्रा होती है, क्रोध, बन्धु नाश, बुद्धि की हीनता, व्यापारी वर्ग से कष्ट, झगड़ा, भूमि, धन आदि का नाश तथा अन्य आपदाएँ हुआ करती हैं।
3. श्लोक में "बन्धु" शब्द आया है। बन्धु से तात्पर्य उन निकट सम्बन्धियों से है जो अपने परिवार अर्थात् माता-पिता, पत्नी तथा सन्तान और भाई-बहिनों को छोड़कर हों। ऐसे सम्बन्धियों का कारक बुध है। अब क्योंकि बन्धुओं

का विवेचन जन्म-कुण्डली में चतुर्थ भाव से किया जाता है। तो बन्धुओं का विचार चतुर्थ भाव, चतुर्थ भाव के स्वामी और सम्बन्धियों के कारक बुध से करना होगा। यदि यह तीनों निर्बल और पीड़ित हों तो बन्धुओं से कष्ट की सम्भावना अधिक होती है। उनसे किसी प्रकार की सहायता की आशा नहीं होनी चाहिए। हाँ, यदि तीनों अर्थात् चतुर्थ भाव, चतुर्थेश तथा बुध, बलवान् और शुभ दृष्ट हों तो सम्बन्धी, जहाँ स्वयं समृद्धिशाली होते हैं वहाँ वह, जातक के प्रति सहानुभूति रखने वाले सहायक भी होते हैं।

8.3 **सौम्यदशायां पुत्रान् मित्रादाढ्याद्धनस्य सम्प्राप्तिः।**
दीक्षितनृपतेर्धूताद्वणिग्जनाच्चापि सम्भवति।।
वेसरमहीसुवर्ण शुक्तिद्रव्यं यशः प्रशंसा च।
दौत्यं सौख्यमतुल्यं सौभाग्यं मतिचयख्यातिः।।
धर्मक्रियासु सिद्धिर्हास्यरतिः शत्रुसंक्षयो भवति।
गणितालेख्यालिपीनां कौतुकभागी सदा पुरुषः।।

(सारावली 41:37-39)

बुध की शुभ दशा में पुत्र, मित्र, धनी, राजा और व्यापारी इन से धन लाभ होता है। घोड़ा, भूमि, सुवर्ण, मोती, सुयश, प्रशंसा, राजदूतत्व, अधिक सुख व सौभाग्य प्राप्त होता है। बुद्धि की वृद्धि, प्रतिष्ठा, धर्मकार्यों से सिद्धि, हास्य में प्रेम तथा शत्रुओं का नाश होता है। उसकी गणित, चित्र-लेखन क्रिया या कौतुक में विशेष रूचि होती है।

8.4 **पीडां धातुत्रितयात्पारुष्यं बन्धनं तथोद्वेगम्।**
मानसशोक वाऽपि बुधस्य कष्टा दशा कुरूते।।

(सारावली 41:40)

बुध की अशुभ दशा में त्रिदोष से पीड़ा, रूक्षता, बन्धन, उद्वेग और मानसिक चिन्ता होती है।

8.5 **स्वकीयदाये गुरुबन्धुमित्रैरर्थार्जनं कीर्तिसुखं करोति।**
दौत्यं च सत्कर्महिरण्यपुण्यैर्धनायतिं वातरुजं कुमारः ।।

(जातक परिजात)

बुध अपने दशाकाल में निम्नलिखित वस्तुओं से लाभ कराता है :

गुरु, मित्र, बन्धु-इन सबसे धन प्राप्ति होती है। मनुष्य की कीर्ति बढ़ती है और वह सुखपूर्वक समय व्यतीत करता है। इस महादशा में मनुष्य दूत का कार्य

करता है। अगर अच्छी जन्मकुण्डली हुई तो विदेश मंत्रालय में राजदूत होता है। यदि साधारण कुण्डली हुई तो दो मनुष्यों के बीच का कार्य करता है यथा कमीशन ऐजेन्ट। इस दशा में सत्कर्म होते हैं। कभी स्वर्णाभूषण के रोजगार से लाभ होता है परन्तु बहुधा जातक वात रोग से पीड़ित होता है।

8.6 महर्षि पराशर के अनुसार

1. अपने उच्च, स्वगृह, केंद्र, त्रिकोण या लाभस्थान अथवा मित्रगृह में बुध हो तो उसकी दशा में महासुख, **धनधान्यसमृद्धि,** सुयश, ज्ञानाधिक्य, राजप्रीति, सत्कार्य तथा सद्गुण की वृद्धि, पुत्र-स्त्री-सौख्य, स्वास्थ्य, पायस-भोजन संबंधी सुख और व्यापार से धनलाभ सरीखे फल प्राप्त होते हैं।
2. बुध शुभग्रहदृष्ट, या भाग्यस्थान में अथवा राज्येश हो तो उसकी दशा संपूर्णफलदायी होती है।
3. बुध यदि पापग्रहयुक्त या दृष्ट हो तो राजद्वेष, मनोव्यथा, बान्धवों के साथ विरोध, विदेशयात्रा, पराधीनता तथा मूत्रकृच्छरोग से महाभय हुआ करता है। उसे जाति बंधुओं से कष्ट मिलता है।

8.7 यदि बुध (6,8,12) में हो तो लाभ, भोग एवं धन का नाश, वातपीड़ा तथा पाण्डुरोग राजा, चोर तथा अग्नि का भय, कृषि, गोधन, एवं भूमि का विनाश होता है। दशारम्भ में धनधान्यवृद्धि, विद्यालाभ, महासुख, पुत्र, कल्याणकर–संपत्ति, संमार्ग से धनागम, दशामध्य में राजसम्मान और दशा के अन्त में दुख, ये फल होते हैं।

8.8 फलदीपिका के अनुसार

1. जब बुध की महादशा होती है तब मित्रों से समागम होता है। स्वयं को सुख प्राप्त होता है, विद्वान लोग प्रशंसा करते हैं। यश प्राप्त होता है और गुरुओं की कृपा होती है।
2. बुध वात, पित्त, कफ इन तीनों का ही अधिष्ठाता है, इसलिये इन त्रिदोषों में से किसी के कुपित होने से या किन्हीं दो या तीनों ही के कारण देह में जटिल रोग होता है।
3. मनुष्य की वाणी में प्रगल्भता (अपने आशय को शक्तिपूर्ण शब्दों मे व्यक्त करने की क्षमता) होती है।
4. बुध की महादशा में मनुष्य परोपकार करता है और उसको स्वयं की स्त्री, पुत्र, मित्र संबंधी हर्ष तथा महत्व प्राप्त होता है।

5. बुध की महादशा में सदैव आचार्य सिद्धि प्राप्त होती है। आचार्य सिद्धि के दो अर्थ है, जातक को अपने गुरुओं से सिद्धि मिले या सिद्ध गुरु की प्राप्ति हो।
6. बुध की महादशा में, खेत और घोड़ों का लाभ होता है और ब्राह्मणों से धन की प्राप्ति होती है। जातक को श्रेष्ठ मनुष्यों से संपर्क का अवसर मिलता है। वह देवताओं का पूजन करता है और उसे पूर्ण धन प्राप्ति होती है।

8.9 बुध की भाव गत स्थिति और दशाफल (सर्वार्थ चिन्तामणि से)

बुध की भावगत स्थिति	बुध का दशा फल
लग्न में बुध	राजसम्मान, कृषि तथा वाहन सुख, तीर्थ यात्रा का सुख तथा देश विदेश में ख्याति होती है।
द्वितीय भाव में बुध	विद्या प्राप्ति, यश प्रशंसा, राजा से ऐश्वर्य तथा राजदरबार में सम्मान की प्राप्ति होती है।
तृतीय भाव में बुध	जड़ता, आलस्य, गुल्म रोग तथा अन्न दोष से जातक कष्ट पाता है। कभी गायन क्षेत्र में सफलता से सम्मानपूर्ण आजीविका होती है।
चतुर्थ भाव में बुध	माता को कष्ट, मानसिक क्लेश, उद्यम भंग, पद प्रतिष्ठा की हानि तथा पारिवारिक सुख में कमी होती है।
पंचम भाव में बुध	क्रूर या कुटिल बुद्धि से कष्ट बढ़ता है। कभी निंद्य कर्म से आजीविका होती है। कोई जातक सरकारी नौकरी से कठिनाई पूर्वक धन संपत्ति प्राप्त करता है।
षष्ठ भाव में बुध	राजा, अग्नि व चोर से भय, देह में दुर्बलता व सुख की कमी होती है। त्वचा संबंधी जटिल रोग बहुत कष्ट दिया करते हैं।
सप्तम भाव में बुध	स्त्री पुत्र, विद्या, धन तथ वस्त्रादि का उत्तम सुख मिलता है। राजा की कृपा से उपाधि और सम्मान मिलता है।
अष्टम भाव में बुध	राजा, चोर व अग्नि का भय होता है। कभी जटिल रोग या विपत्ति से देह सुख हानि या मृत्यु होती है।

नवम भाव में बुध	तीर्थस्नान, जप, यज्ञ, हवन व दान आदि से धन, मान, अधिकार व सत्ता सुख प्राप्त होता है।
दशम भाव	जातक राजा या राजा सरीखा धनी, मानी, प्रतापी और प्रतिष्ठत होता है। उसे स्त्री पुत्र तथा धन लाभ का सुख मिलता है।
एकादश भाव में बुध	देवता और ब्राह्मण पूजन में सहज रुचि होती है। धन, मान, अधिकार व सत्ता सुख प्राप्त होता है।
द्वादश भाव में बुध	देह में दुर्बलता, अंग वैकल्य, राजकीय कोप अथवा जटिल रोग से हानि होती है। व्ययस्थ बुध पर शुभ प्रभाव कृषि, व्यापार तथा राजा की कृपा से धन लाभ देता है।

8.10 बुध की अन्तर्दशाएँ (बुध दशा अवधि 17 वर्ष)

1. **बुध में बुध (अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन)** : बुध महादशा में जब बुध की अन्तर्दशा हो तो सुन्दर घर प्राप्त होता है। मूल में विचित्र लिखा है जिसका अर्थ सुन्दर किया गया है। उसे धन की प्राप्ति होती है। जातक के सब कार्य सफल होते हैं अर्थात् वह जो उद्योग करता है वे पूर्ण होते हैं।

2. **बुध में केतु (अवधि 11 मास 27 दिन)** : जब बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा होती है तो बन्धु पीड़ा, मनस्ताप और सुख की हानि होती है तथा सभी कार्यों में असफलता मिलती है।

3. **बुध में शुक्र (अवधि 2 वर्ष 10 मास)** : जब बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा होती है तो मनुष्य ब्राह्मणों को द्रव्य तथा अन्न पदार्थ देता है। गुरुओं से भेंट करता है। देवताओं को भेंट चढ़ाता है। अग्नि में भेंट चढ़ाता है अर्थात् हवन करता है। बहुत दान करता है। धार्मिक कार्य करता है। तपस्या करता है। जातक को स्वयं वस्त्र और भूषण की प्राप्ति होती है। बुध में शुक्र की अन्तर्दशा का फल बहुत अच्छा कहा गया है।

गुरुविबुधातिथिभक्तो वस्त्रालंकारपुष्पगन्धरूचिः।
इन्दुसुतस्य दशायां शुक्रस्यान्तर्दशा यदा भवति।।

(सारावली)

(ii) बुधदशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो गुरु, देव और अतिथियों में भक्ति तथा वस्त्र-भूषणादि की प्राप्ति होती है।

4. **बुध में सूर्य (अवधि 10 मास 6 दिन)** : जब बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा होती है तो वस्त्र, भूषण और धन की प्राप्ति होती है। राजा की कृपा होती है। जातक को महान् सुख होता है। उसे धार्मिक कथा, पुराण इत्यादि सुनने का मौका मिलता है।

इन्दुसुतस्य दशायां प्रविशति सूर्यो यदा तदा चिह्नम्।
कनकाश्वविद्रुमगजान् विदधाति श्रियमकस्माच्च।।

(सारावली 42:30)

बुध की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो अनायास सुवर्ण, मूँगा आदि रत्न और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

5. **बुध में चन्द्र (अवधि 1 वर्ष 5 मास)** : जब बुध की महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा होती है तो सब लोग द्वेष करते हैं। रोग होते हैं। शत्रुओं से पीड़ा होती है। धन का नाश होता है। सब कार्यों में असफलता मिलती है। कभी चौपाये से चोट लगने का भय होता है।

प्रविशन्ती चन्द्रदशा बुधस्य कण्डूं करोति कुष्ठं च।
क्षयरोगमंगभंग गजाद्भयं वाहनविनाशम्।।

(सारावली 42:31)

(ii) चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो दाद, खुजली, कुष्ठ, क्षयरोग, अंगभंग, हाथियों से भय अथवा वाहनों का नाश होता है।

6. **बुध में मंगल (अवधि 11 मास 27 दिन)** : जब बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा होती है तब **रोग और शत्रु** भय का **नाश** होता है अर्थात् रोग दूर हो जाते हैं और शत्रुओं से भय नहीं रहता, पुण्य का फल मिलता है। यश प्राप्त होता है। राजा की प्रीति होती है।

मस्तकशूलनिरोधैर्नानाक्लेशैश्च युज्येते जन्तुः।
इन्दुसुतस्य दशायां भौमस्यान्तर्दशा यदा भवति।।

(सारावली 42:32)

(ii) बुध की दशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तो शिरोरोग आदि अनेक कष्ट होते हैं।

7. **बुध में राहु (अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन)** : जब बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा होती है तो मित्रों की प्राप्ति होती है। बन्धुओं से सुख मिलता है। धन मिलता है। मित्र और बन्धुओं से धन की प्राप्ति होती है। सुख, विद्या और भूषण प्राप्त होते हैं तथा राजा की प्रीति होती है।

8. **बुध में बृहस्पति (अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन) :** जब बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा होती है तो जातक का, मित्रों से द्वेष होता है। गुरुजनों और बन्धुओं से उसका वैमनस्य होता है, किन्तु गुरु धन लाभ कराता है। कभी पुत्र लाभ या पुत्रों से हर्ष होता है। मतान्तर से रोगादि से भय होता है।

रिपुरोगपापमुक्तः पुण्यानि करोति भूपतेर्मन्त्री।
जीवे चरति दशायां बुधस्य पुरुषो भावेन्नियतम्।।

(सारावली 42:33)

(ii) गुरु की अन्तर्दशा हो तो जातक शत्रु, रोग और पाप से मुक्त होकर धर्माचरण करता है और राजा का सलाहकार होता है।

9. **बुध में शनि (अवधि 2 वर्ष 8 मास 9 दिन) :** जब बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा होती है तब जातक धर्म और सत्कर्म करता है। उसे धन की प्राप्ति होती है। छोटे आदमी या श्रमिक नेताओं से सुख मिलता है। मतान्तर से जातक को खेती-बाड़ी का नुकसान होता है।

षण्डमुखकामसेवी विलुप्तधर्मार्थभोगसुतवित्तः।
भवति नरोऽत्र दशायां बुधस्य मन्दो यदा चरति।।

(सारावली 42:35)

(ii) शनि की अन्तर्दशा में हो तो वृषवत कामोपभोग करता है और धर्म, अर्थ और सन्तान की हानि होती है।

8.11 विशेष :

(i) **यदि बुध अपनी उच्च राशि में हो किन्तु नीच नवांश** में हो तो कर्म में विकलता पैदा करता है अर्थात् जातक के कार्य सफल नहीं होते तथा अधूरे छूट जाते हैं।

(ii) अगर **बुध नीच राशि का हो किन्तु अपने उच्च नवांश** का हो तो दशा के आरम्भ में सब काम विफल होते हैं और दशा के अंत में सब कार्यों में सुख व सफलता मिलती है।

●●●

अध्याय-9

केतु दशा फलम

9. केतु की दशा (अवधि 7 वर्ष)

9.1 **मनस्तापं तापं निजजन विवादं खलकृतं**
सदाचन्द्राराते रुदरभवरोगं वितनुते।
दशापुंसामारादनु गतिमपायं निजमतेः
कृशत्वं वित्तानामवनिपति कोपेन परितः।।

(*भावकौतुहलम 16:12*)

केतु की दशा में जातक देह ताप (ज्वर), मानसिक संताप, स्वजन से निरर्थक विवाद तथा दुष्ट शत्रुओं से संघर्ष के कारण कष्ट पाता है। कभी व्यर्थ की भटकन, निरर्थक यात्राएं, उदर पीड़ा, देह की दुर्बलता तथा अपनी ही मूर्खता से धन का नाश भी व्यग्रता देता है। किसी जातक को राजा के कोप से जुर्माना देना पड़ता है तथा धन की हानि होती है।

9.2 **केतूत्कृष्टदशा करोति विजयक्रूरक्रियार्थागम-**
म्लेच्छक्ष्मापतिलब्धभाग्यकवनप्रारम्भशत्रुक्षयान् ।।
केतोः पापदशाऽतिकष्टविफलानर्थक्रियोद्योगहृ-
च्छूलास्थिज्वरकम्पनद्विजजनद्वेषातिमूर्खक्रिया ।

(उत्तर *कालामृत 6:14*)

यदि केतु शुभ हो तो अपनी दशा में विजय देता है। क्रूर कार्यो से धन लाभ देता है। कभी अन्य देश के राजा द्वारा भाग्य वृद्धि देता है। पद्यरचना का आरम्भ कराता है तथा शत्रु-नाश देता है।

यदि केतु अशुभ हो तो महान् कष्ट, असफलता, हानि, उद्यम का नाश, हृदय में पीड़ा, टी० बी०, कम्पन आदि नसों के रोग, ब्राह्मण वर्ग से द्वेष तथा महान् मूर्खता के कार्य से संताप देता है।

9.3 **लग्नात्कोणगतौ च वित्तमदनस्थानेश्वराभ्यां तमः**
खेटौ संयुतवीक्षितौ निजदशाकाले हि मृत्युपदौ।

केतु दशा फलम्–85

नेत्रघ्यूनगतौ त्रिकोणपतियुग्दृष्टौ धनायुःप्रदौ
तद्भावेश्वरयुक्तपापखचरो मृत्युं विधत्ते नृणाम्।

(उत्तर *कालामृत 6:15*)

(1) यदि राहु अथवा केतु पंचम अथवा नवम भाव में स्थित हों और द्वितीयेश अथवा सप्तमेश (मारकेश) से युक्त अथवा दृष्ट हों तो अपनी दशा में मृत्यु देते हैं।

(2) यदि वे द्वितीय अथवा सप्तम स्थान में स्थित हों और उससे त्रिकोण (5, 9) भाव के स्वामी की युति अथवा दृष्टि हो (अर्थात् षष्ठेश, दशमेश या लाभेश, तृतीयेश की दृष्टि-युति) तो धन तथा आयु की वृद्धि देने वाले होते हैं।

(3) यदि राहु अथवा केतु द्वितीय अथवा सप्तम भाव में हों और द्वितीयेश अथवा सप्तमेश पापी ग्रह (तृतीय, षष्ठ तथा लाभ भाव के स्वामी) से युक्त हो तो वह पापी ग्रह भी मृत्यु करता है।

9.4 **दीनो नरों भवति बुद्धिविवेकनष्टो नानाऽऽमयाकुलविवर्द्धितदेहतापः।**
पापादिवृद्धिरतिकष्टचरित्रयुक्त : किञ्चित्सुखी च शिखिनः परिपाककाले।।

(*जातक पारिजात*)

जब केतु की महादशा होती है तो मनुष्य की बुद्धि और विवेक नष्ट हो जाते है और वह दीन हो जाता है। नाना प्रकार के रोगों से पीड़ित होने से उसके शरीर में ताप बढ़ता है। पाप की वृद्धि होती है अर्थात् वह पाप कर्म करता है। अति कष्ट होता है। उसका चरित्र जघन्य व दोषयुक्त होता है। उसे सुख बहुत थोड़ी मात्रा में प्राप्त होता है।

9.5 महर्षि पराशर के मतानुसार केतु दशा

1. केतु केन्द्र, त्रिकोण, शुभग्रह की राशि में हो, शुभग्रह की उस पर दृष्टि रहे, या स्वोच्च अथवा शुभवर्ग में हो तो मनुष्य को अभिलषित राजप्रीति, देशग्रामाधिपत्य, पुत्रकृतवाहन, देशान्तर-भ्रमण, तथा अत्याधिक सुख देता है। ऐसे व्यक्ति को पुत्रस्त्रीसौख्य एवं पशुओं का लाभ होता है।
2. केतु तृतीय, षष्ठ या एकादश में हो तो भी अपनी दशा में सुख प्रदान करने वाला होता है। वह सन्मित्र, गज, अश्व आदि से संपन्न राज्य देता है। दशारम्भ में राज्यप्रद, दशामध्य में भयप्रद, एवं दशान्त में दूराटन कराने वाला होता है।
3. धनस्थान, अष्टमस्थान तथा व्ययस्थानस्थ केतु पापग्रह से युक्त हो तो जेल,

बंधुओं का विनाश, स्थानभ्रंश, मनोव्यथा या शूद्रादि के संग से लाभ तथा रोगोत्पत्ति होती है।

9.6 फलदीपिका के अनुसार केतु दशा

1. केतु की महादशा में बड़ा अनिष्ट फल होता है। स्त्रियों के कारण बहुत शोक और मोह होता है। हृदय में बहुत दुःख का नाम शोक है। बुद्धि में विभ्रम होने का नाम मोह है।
2. स्त्रियों तथा धनिकों के कारण जातक को पीड़ा होती है या उसके अफ़सरों या मालिकों से उसे पीड़ा पहुँचती हैं।
3. जातक से अपराध होता है और उसके धन का नाश होता है। अपना देश छोड़ना पड़ता है। कभी कफ जनित रोगों के कारण पीड़ा और पैर तथा दांत में रोग होता है।

9.7 केतु की भावगत स्थिति और दशा फल

केतु की भावगत स्थिति	केतु का दशा फल
लग्न में	ज्वर, अतिसार, प्रेमह, फोड़ा या सूजन आदि से देह सुख की हानि होती है। जातक कष्ट पाता है।
द्वितीय भाव में	वाणी में कठोरता, निंद्य अन्त का भोजन, धन की हानि तथा कुटम्ब सुख में कमी से मन में क्लेश होता है।
तृतीय भाव में	भाइयों से मत भेद, वैर विरोध तथा मन में विकलता से क्लेश होता है। कोई जातक राजा के अनुग्रह से बहुत सुख पाता है।
चतुर्थ भाव में	घर परिवार से दूर रहने से मन में क्लेश होता है। कभी आजीविका में सफलता व सम्मान मिलने से जातक हर्षित होता है।
पंचम भाव में	बुद्धि भ्रम, मित्रों से मतभेद, राज कोप तथा धन का संताप देता है।
षष्ठ भाव में	चोर, अग्नि और विष का भय, महान विपत्ति तथा आर्थिक आभाव पीड़ा देता है।
सप्तम भाव में	स्त्री पुत्र तथ धन संबंधी सुख का हानि, मूत्र कृच्छ रोग तथा मानसिक अवसाद होता है।

अष्टम भाव में	श्वांस रोग, संग्रहणी अथवा क्षय रोग से देह कष्ट होता है। कभी बड़ी विपत्ति या पिता की मृत्यु की संभावना बढ़ती है।
नवम भाव में	पिता तथा गुरुजन को विपत्ति देता है। धर्म व शुभ कर्म का नाश होने से जातक दुःखी होता है।
दशम भाव में	जातक अपने कार्य क्षेत्र में सुख, सफलता व संतोष पाता है। कभी अशुभ प्रभाव के कारण मन में जड़ता, अवसाद कष्ट तथा अपयश होता है।
एकादश भाव में	लाभस्थ केतु अपनी दशा में सुख, सम्मान तथा धन लाभ की वृद्धि करता है। जातक यज्ञ, दान व पुण्य करता है। उसे भाइयों से स्नेह और सम्मान मिलता है।
द्वादश भाव में	व्यय भाव में स्थित केतु की दशा में स्थान हानि, परदेश वास, नेत्र रोग तथा राज दंड का भय हुआ करता है।

9.8 केतु की अन्तर्दशाएँ (अवधि 7 वर्ष)

1. **केतु में केतु (अवधि 4 मास 27 दिन)** : जब केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा होती है तो स्त्री और पुत्र का मरण होता है। सुख और धन का नाश होता है। शत्रु का भय सदैव बना रहता है।
2. **केतु में शुक्र (अवधि 1 वर्ष 2 मास)** : जब केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा होती है तो अपनी स्त्री और पुत्र को रोग होता है। जातक व्यर्थ की कलह करता है। बन्धुओं और मित्रों का वियोग या नाश होता है। कभी ज्वर और अतिसार सरीखे रोग होते हैं।
3. **केतु में सूर्य (अवधि 4 मास 6 दिन)** : जब केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो मनोभंग होता है अर्थात् चित्त में धैर्य नहीं रहता और मन उदास या अवसाद युक्त रहता है। शरीर में कष्ट होता है अर्थात् रोग होते हैं। कभी विदेश गमन होता है। चित्त में भय होता है। जातक जो भी कार्य करता है उसमें प्रायः विघ्न बाधा पड़ती है।
4. **केतु में चन्द्र (अवधि 7 मास)** : जब केतु की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा होती है तो स्त्री और पुत्रजनों में आलस्य होता है। धन नाश होता है। धान्य नष्ट हो जाता है तथा मन में सन्ताप बढ़ता है।
5. **केतु में मंगल (अवधि 4 मास 27 दिन)** : जब केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा होती है तो पुत्र से, स्त्री से और छोटे भाई से वैर होता है।

रोग, शत्रु और राजा से पीड़ा होती है। बन्धु नाश होता है। इस प्रकार केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा कष्टप्रद है।

6. **केतु में राहु (अवधि 1 वर्ष 18 दिन)** : जब केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा होती है तो राजा और चोर से भय होता है। अनेक दुःख मिलते हैं। सब कार्यों का नाश होता है। दुष्ट मनुष्यों से पाला पड़ता है अर्थात् दुष्टों से विवाद या झगड़ा होता है।
7. **केतु में बृहस्पति (अवधि 11 मास 6 दिन)** : जब केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा होती है तो देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुजनों से प्रीति बढ़ती है। राजा की कृपा प्राप्त होती है। शरीर निरोग रहता है। भूमि की प्राप्ति होती है। पुत्र लाभ होता है। सुख सुमृद्धि व सुयश की वृद्धि होती है।
8. **केतु में शनि (अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन)** : जब केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा होती है तब मन दुःखी रहता है और सदैव भय बना रहता है। कभी मनुष्य को अपना देश छोड़ना पड़ता है।
9. **केतु में बुध (अवधि 11 मास 27 दिन)** : जब केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा होती है तब बन्धुओं और मित्रों से संयोग होता है। मनुष्य का विवाह होता है या विवाहित हो तो स्त्री से सुख मिलता है। पुत्र लाभ हो या पुत्र से सुख हो। विद्या की प्राप्ति हो। इस प्रकार केतु में बुध का भुक्ति काल बहुधा अच्छा जाता है।

9.9 विशेष :

1. यदि केतु शुभ-ग्रह से युक्त हो तो जातक बहुत सुख पाता है। यदि शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो केतु बहुत धन का लाभ कराता है।
2. **यदि केतु पाप ग्रह के साथ हो** तो अपनी महादशा में दुष्ट मनुष्यों से भय उत्पन्न करता है। धन नाश करता है और कृत्रिम रोगों से शरीर को पीड़ा देता है। कोई जातक व्यसन करने से अपने ही धन व यश की हानि करता है।
3. केतु की दशा को तीन भागों में बांटा गया है। **आरम्भ** में गुरुजन तथा बंधुओं को पीड़ा होती है। **मध्य** में धन की प्राप्ति होती है। **अन्त के तृतीयांश** में जातक को सुख मिलता है।
4. मतान्तर से केतु की दशा **धर्म या अध्यात्म के क्षेत्र में बहुत उन्नति** देती है। कारण केतु का संबंध धर्म, नीति व न्याय के अधिष्ठाता गुरु के साथ है। कुछ विद्वानों का मत है कि धनु राशि में केतु उच्चस्थ तो मीन राशि में स्वक्षेत्री होता है।

●●●

अध्याय-10

शुक्र दशा फलम

10. शुक्र की दशा (अवधि 20 वर्ष)

10.1 **तुल्यत्वं धरणीधवेन महता मित्राज्जयो जन्मिनाम्**
मारोल्लास विकास एव कमलालावण्युक्तं गृहम्।
दिव्याराम सुधाम सामबहुला व्याख्यानगानध्वनिः
प्रज्ञासौख्यमतीव पाक समये शाला विशाला कवेः।।

(*भाव कौतुहलाम् 16: 13*)

शुक्र की दशा में मनुष्य, मित्रों के सहयोग से सुख व सफलता पाता है। वह धन धान्य तथा सुख वैभव संपन्न, विशाल उपवनों से युक्त भवन में, अपनी सुन्दर मनोरम पत्नी के साथ, सुखपूर्वक निवास करता है। उसके घर में मानो स्वयं धन वैभव की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी का ही वास होता है। शास्त्र व धर्म ग्रन्थों के अनुशीलन से वह सुख पाता है। उसकी बुद्धि तीक्ष्ण तथा वाणी मधुर एवं सार गर्भित होती है। शुक्र की दशा में जातक अनेक भवन व वाहन का सुख पाता है।

10.2 **शौक्री श्रेष्ठदशा करोति सुखसौभाग्योच्छ्रयान्दोलिका-**
ष्टैश्वर्यायतधर्मबुद्धिकनकारामाश्वगीतोत्सवान् ।।

(*उत्तर कालामृत 6:11*)

1. **शुक्र यदि शुभ हो** तो उसकी दशा में सुख, सौभाग्य, उच्च पदवी, वाहन से सुख, हर प्रकार का ऐश्वर्य, महान् धार्मिक प्रवृत्ति, स्वर्ण, बाग, घोड़े, संगीत तथा खुशी के उत्सव प्राप्त होते हैं।

10.3 **शौक्री पापदशा कलत्रभयकृन्नोचार्थहानिप्रदा-**
त्यन्नस्तेयमहाप्रदोषविपुलस्त्रीवर्गरोगोद्भवान् ।।

(*उत्तर कालामृत*)

1. **शुक्र यदि अशुभ हो** तो अपनी दशा में स्त्री को कष्ट, नीचता तथा धन हानि, घर में बड़ी चोरी या बहुत दोषयुक्त जीवन दिया करता है। कभी जातक को, बहुत स्त्रियों के साथ सम्भोग से उत्पन्न होने वाले, रोग कष्ट दिया करते हैं।

10.4 **शुक्रदशायां विजयः क्ष्माभवनविलासशयनपत्नीनाम्।**
माल्याच्छादनभोजनयशःप्रमोदो निधिप्राप्तिः
गेयरतिः स्त्रीसंगो नृपतेः कृषितो धनस्य सम्प्राप्तिः।
ज्ञानेष्टसौख्यसुहृदां मन्मथयोग्योपकरणानाम्।
(सारावली 41:45-46)

शुक्र की शुभ दशा में विजय, भूमि, गृह, शय्या, स्त्री, माला, वस्त्र, सुभोजन, यश, हर्ष और निधि की प्राप्ति होती है। गान में प्रेम, स्त्री का संग, राजा और खेती से धनलाभ तो कभी ज्ञान, अभीष्ट सुख, मित्र तथा रतिक्रीड़ोपयोगी वस्तुओं का लाभ होता है।

10.5 **कुलगुणवृद्धैर्वादो यानासनसम्भवानि कष्टानि।**
स्त्रीनृपन्यक्कृतवश्यं लोकविरुद्धैः सह प्रीतिः।।
(सारावली 41:47)

शुक्र की अशुभ दशा में कुल और गुण में श्रेष्ठ जनों से विवाद, वाहन-आसन से कष्ट, स्त्री और राजा से कष्ट तथा समाजविरोधियों से प्रेम होता है।

10.6 **स्त्रीपुत्रवित्ताप्तिमतीव सौख्यं सुगन्धमाल्याम्बरभूषणाप्तिम्।**
यानादिभाग्यं नरपालतुल्यं यशः स्वपाके भृगुजः करोति।।
(जातक परिजात)

जब शुक्र की महादशा होती है तो स्त्री पुत्र की प्राप्ति होती है। यदि ये पहले से हों तो उनसे और अधिक सुख मिलता है। सुगन्धित पदार्थ, माल्य, आभूषण तथा सुन्दर वस्त्र प्राप्त होते हैं। श्रेष्ठ वाहन या सवारी का सुख होता है। भाग्य बढ़ता है। उसके यश तथा प्रतिष्ठा का विस्तार होता है। जातक राजा के सदृश वैभव से रहता है।

10.7 महर्षि पराशर के मतानुसार

1. **शुक्र** परमोच्च या स्वोच्चराशि, **स्वक्षेत्र, या केंद्र में** हो तो मनुष्य को राजतिलक, वाहन, वस्त्र, अलंकार की प्राप्ति, हाथी, घोड़ा तथा अन्य पशुओं से लाभ, नित्य मिष्ठान्नभोजन,चक्रवर्ती राजा के द्वारा सम्मान, मृदंगादि वाद्यों का निर्घोष तथा लक्ष्मीविलास युक्त घर प्राप्त होते हैं।
2. वही **शुक्र त्रिकोणस्थान** या मीन में हो तो राज्य, धन, घर तथा अन्य संपत्ति, घर में विवाहोत्सवकार्य, पुत्रकल्याण, सेनाधिपत्य, तथा स्वमित्र-बान्धवों का शुभागम, नष्टराज्य से धनप्राप्ति, तथा गोधनसंग्रह, ये सभी सहज प्राप्त होते हैं।

3. **शुक्र 6, 8, 12** में या नीच राशि में स्थित हो, पापग्रह का संयोग या दृष्टि उस पर हो, तो आत्मीयजनों से द्वेष, स्त्रीवर्गादि में पीड़ा, व्यवसाय में हानि, पशुधन का विनाश, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा अथवा आत्मीय बंधुओं से वियोग हुआ करता है।
4. **शुक्र यदि भाग्येश या राज्येश** होकर लग्न, या चतुर्थस्थानगत हों तो अपनी दशा में देश ग्राम, के अधिपत्य तथा सुख देनेवाला होता है। उस व्यक्ति को देवालय, तडागखनन आदिक पुण्यकार्यो में तथा अन्नदान में बड़ा सुख प्राप्त होता है। नित्य उसे मिष्ठान्न-भोजन, उत्साह, यश, स्त्री, पुत्र, धन तथा सम्पत्तियों का लाभ होता है।

10.8 फलदीपिका के अनुसार

1. शुक्र की महादशा में जातक को क्रीड़ा और सुख के साधन, उत्तम सवारी, गौ, रत्न, भूषण, निधि (द्रव्य) स्त्रियों से आन्नद, ज्ञान क्रिया (जिन बातों से ज्ञान वृद्धि हो), जल यात्रा तथा राजा या सरकार से सम्मान प्राप्त होता है। शुक्र की महादशा में घर में शुभ कार्य होते हैं।
2. शुक्र की महादशा में स्त्री, रत्न, वस्त्र, कान्ति, निधि (गड़ा हुआ द्रव्य), धन, आभूषण, घोड़ा (वाहन) शय्या और आसन की प्राप्ति होती है। माल खरीदने से, खेती से या पानी के जहाज से आने जाने वाली चीजों अथवा विदेशी वस्तुओं से धन का लाभ होता है। शुक्र की महादशा के यह सब शुभ फल बताये हैं किन्तु शुक्र की महादशा में किसी गुरुजन का (माता-पिता आदि का) वियोग भी होता है। कभी मन में चिंता रहती है और बन्धुओं को कष्ट हुआ करता है।

10.9 शुक्र की भाव गत स्थिति और दशा फल (सर्वार्थ चिन्तामणि से)

शुक्र की भाव गत स्थिति	शुक्र का दशा फल
लग्न में शुक्र	वस्त्राभूषण वाहन तथा सत्ता सुख मिलता है। धन और भूमि का लाभ होता है। देह की कांति बढ़ती है। अनिष्ट प्रभाव होने पर वनवास होता है।
द्वितीय भाव	वाणी विलास, भोजन सुख, परोपकार तथा राज सम्मान से यश निलता है। पहले धन हानि तथा बाद में धन संपदा की वृद्धि होती है।

तृतीय भाव	मन में उत्साह व धैर्य बढ़ता है। जातक प्रतापी व पराक्रमी होता है। भाइयों के धन वैभव की वृद्धि से वह सुख व सम्मान पाता है।
चतुर्थ भाव	कृषि कार्य से लाभ होता है। सत्ता, वाहन, संतान और बंधु बाधंवों का सुख मिलता है। जातक प्रतापी और यशस्वी होता है।
पंचम भाव	जातक बुद्धिमान, यशस्वी तथा तथा राजसम्मान पाने वाला होता है। उसे संतान का श्रेष्ठ सुख मिलता है।
षष्ठ भाव	अन्न धन, पुत्र तथा भाइयों की ओर से चिन्ता होती है। कभी शत्रु के कारण कार्य की हानि होती है। राजा, अग्नि या चोर से भय होता है।
सप्तम भाव	शरीर में रोग व पीड़ा होती है। कभी पत्नी से अनबन या अलगाव अथवा विदेश गमन होता है। धन, पुत्र बंधु और राज्य (पद, प्रतिष्ठा) की ओर से चिन्ता होती है।
अष्टम भाव	शस्त्र, अग्नि या चोर से भय होता है। विघ्न बाधा या चोट के कारण पीड़ा होती है। कभी शुभ प्रभाव से धन, प्रताप यश व सम्मान की वृद्धि होती है।
नवम भाव	राज कृपा, पिता का सुख तथा यज्ञ कर्म से यश प्राप्त होता है। जातक के भाग्य और सुख वैभव की वृद्धि होती है।
दशम भाव	विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। राजकृपा से मान सम्मान, यश तथा तथा धन वैभव बढ़ता है।
एकादश भाव	जातक पुत्र तथा धन का सुख पाता है। उसे सुगंध, पुष्प, वस्त्राभूषण तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।
द्वादश भाव	अन्न, धन, वैभव तथा राज सम्मान मिलता है। मन में उत्साह व उल्लास बढ़ता है। कभी अनिष्ट प्रभाव के कारण स्थान हानि, परदेश गमन अथवा माता का वियोग होता है।

10.10 शुक्र की अन्तर्दशाएँ (शुक्र दशा अवधि 20 वर्ष)

1. **शुक्र में शुक्र (अवधि 3 वर्ष 4 मास) :** जब शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा होती है तो मनुष्य को शय्या, स्त्री, धन तथा वस्त्र की प्राप्ति होती

है। धनागम होता है। धर्म आदि सुख सम्पत्ति प्राप्त होती है। शत्रुओं का नाश होता है तथा यश और लाभ का विस्तार होता है।

2. **शुक्र में सूर्य (अवधि 1 वर्ष) :** जब शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा होती है तो सिर में, पेट में और आंखों में रोग होता है। खेती-बाड़ी में नुकसान होता है तो कभी जातक पर राजा का कोप होता है।

गण्डोदराक्षिरोगैः क्षितिपतितो बन्धनादिभिस्तप्तः।
शुक्रदशायां सूर्ये विचरति नूनं भवेत्पुरुषः।

(*सारावली 42:42*)

(ii) शुक्र की दशा-रवि की अन्तर्दशा में गाल, उदर और आंख में रोग अथवा राजदण्ड से जातक दुःखी होता है।

3. **शुक्र में चन्द्रमा (अवधि 1 वर्ष 8 मास) :** जब शुक्र की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा होती है तो सिर में गर्मी का रोग होता है। सन्ताप होता है। काम चेष्टा बढ़ जाती है। शत्रुओं से पीड़ा बढ़ जाती है और कभी थोड़ा सुख भी प्राप्त होता है।

अन्तर्दशा दशायां सितस्य शशिनो यदा भवति चिन्ह्न।
नखदशनशिरोरोगैः सह भवति च कामिलारोगः।।

(*सारावली 42:43*)

(ii) चन्द्रमा की अन्तर्दशा में नाखून, दांत और मस्तक में रोग एवं कामला (आंख में पीलापन) रोग होता है।

4. **शुक्र में मंगल (अवधि 1 वर्ष 2 मास) :** जब शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा होती है तो पित्त या रक्त विकार के कारण आंखों में रोग होता है। चित्त में उत्साह रहता है। धनागम होता है। उसे स्त्री तथा भूमि का लाभ प्राप्त होता है।

पित्तासृक्कृतरोगो भूलाभः संश्रयो नृपतितश्च।
शुक्रदशायां भौमे मन्दोत्साहः पुमान्भवति।।

(*सारावली 42:44*)

(ii) शुक्र की दशा व मंगल की अन्तर्दशा में, पित्त और शोणित विकार के रोग, भूमि का लाभ, राजा से आश्रय और बहुत उत्साह होता है।

5. **शुक्र में राहु (अवधि 3 वर्ष) :** जब शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा होती है तो नीली वस्तु की प्राप्ति होती है। धनागम होता है। बन्धुओं से द्वेष बढ़ता है। मित्रों से भय रहता है। कभी अग्नि बाधा होती है अर्थात् मकान

आदि जलने का भय होता है।

6. **शुक्र में बृहस्पति (अवधि 2 वर्ष 8 मास)** : जब शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा होती है तो धन, वस्त्र और भूषण प्राप्त होते है। मनुष्य का आचरण धार्मिक होता है। उसे सुख प्राप्त होता है किन्तु स्त्री और पुत्र को कष्ट होता है। मतान्तर से लोगों से उसकी अनबन होती है।

अन्तर्दशा दशायां भृगोर्गुरोर्धर्मशीलसम्पत्तिम्।
विदधाति विषयराज्यं पुंसां धनरत्नमतिसौख्यम्।।

(*सारावली 42:46*)

(ii) शुक्र की दशा-गुरु की अन्तर्दशा में धर्म, शील और सम्पत्ति की वृद्धि, राज्य तथा धनलाभ और सुख होता है।

7. **शुक्र में शनि (अवधि 3 वर्ष 2 मास)** : जब शुक्र की महादशा में शनि का अन्तर्दशा होती है तो जातक अपनी उम्र से अधिक अर्थात् बड़ी स्त्री से संभोग करता है। घर और खेतों में वृद्धि होती है। शत्रु का नाश होता है।

वृद्धस्त्रीभिः क्रीडां पुरनगरगणाधिपत्यमरिनाशम्।
शुक्रदशायां सौरिः करोति बहुमित्रसंयोगम्।।

(*सारावली 42:47*)

(ii) शनि की अन्तर्दशा में वृद्ध स्त्री का संग, गांव और नगर का आधिपत्य, शत्रु का नाश और मित्रों का सहयोग होता है।

8. **शुक्र में बुध (अवधि 2 वर्ष 10 मास)** : जब शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा होती है तो पुत्र, मित्र और सुख की प्राप्ति होती है। धनागम होता है। राजा की कृपा होती है। बहुत सुख मिलता है। शरीर निरोग रहता है और सभी शुभ काम होते हैं।

शुक्रदशायां पुंसां बुधस्य चान्तर्दशा यदा भवति।
युवतिकृतं धनलाभं सौख्यं च मनोरथं लभते।।

(*सारावली*)

बुध की अन्तर्दशा में स्त्री के द्वारा धन, सुख व सम्मान मिलता है और मनोरथ सिद्ध होता है।

9. **शुक्र में केतु (अवधि 1 वर्ष 2 मास)** : जब शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा होती है तो कलह और बन्धुनाश होता है। शत्रु से पीड़ा होती है। मन में भय बना रहता है तो कभी धननाश होता है।

10.11 विशेष :

1. **यदि शुक्र उच्च राशि में हो किन्तु नवांश में नीच हो तो** उसकी दिशा में धननाश और पदच्युति होती है।
2. **यदि शुक्र नीच राशि में हो किन्तु नवांश में उच्च हो** तो उसकी दशा में खेती-बाड़ी बढ़ती है। वाणिज्य का विस्तार होता है और धन लाभ होता है।
3. **उत्तर कालामृत** ने एक विचित्र योग बताया है। उसके अनुसार
   (क) यदि **शुक्र तथा शनि** दोनों ही उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या वर्गोत्तम होने से बली व शुभ जान पड़े तो शुक्र शनि की परस्पर दशा मे जातक निर्धन, दुःखी तो कभी वैरागी संत हो जाता है।
   (ख) किन्तु यदि शुक्र तथा शनि में एक ग्रह बली और दूसरा हीन बली या पाप पीड़ित हो तो बली ग्रह निश्चय ही अपने कारकत्व संबंधी शुभ फल दिया करता है।
   (ग) पुनः ये दोनों ग्रह त्रिक भाव से संबंध करे तो निश्चय ही परस्पर दशा भुक्ति में **बहुत सुख** वैभव दिया करते हैं।
4. कुछ अन्य विद्वान शुक्र-शनि या शनि-शुक्र की दशा को अशुभ व अनिष्ट प्रद मानते हैं। कारण शुक्र सुख वैभव की वृद्धि देता है तो शनि लौकिक सुख को अनिष्टप्रद मानकर जातक को उनसे पृथक करता है। इंदिरा जी के कर्क लग्न में स्थिति शनि की महादशा में शुक्र (षष्ठ भाव में राहु से युक्त) की भुक्ति दिसंबर '76 में शुरू हुई। इस अवधि में उन्हें सत्ता सुख से वंचित होकर, पराजय तथा अपमान का दुःख झेलना पड़ा।

●●●

अध्याय–11

ग्रह दशा विशिष्ट फलम्

<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<

11. ग्रह दशा का विशेष फल

उच्चराशिस्थ ग्रह की दशा का फल

ग्रह	उच्च राशि और अंश	ग्रह	उच्चराशि और अंश
सूर्य	मेष 10°	शनि	तुला 20°
चंद्रमा	वृष 3°	राहु	वृष 15°
मंगल	मकर 28°	केतु	वृश्चिक 15°
बुध	कन्या 15°	अरुण (हर्शल)	वृश्चिक
गुरु	कर्क 5°	वरुण (नेपच्यून)	कर्क
शुक्र	मीन 27°	यम (प्लूटो)	सिंह

11.1 **उच्च राशिस्थ ग्रह** की दशा में जातक के **धन, वैभव तथा यश की वृद्धि** होती है। उसे नये रत्नाभूषण, वस्त्र तथा वाहन की प्राप्ति होती है। उच्च अधिकार तथा **पद प्रतिष्ठा** प्राप्त होती है। जातक राजा सरीखा प्रतापी व प्रभावशाली होता है। उसके शत्रु दुर्बल होने से जातक की अधीनता स्वीकार कर लेते हैं। उच्चस्थ ग्रह की दशा में जातक भूमि भवन का लाभ, राजसम्मान तथा समाज में यश प्रतिष्ठा व संपत्ति पाता है। वह धैर्यशाली, चतुर, दानी, नीति–निपुण व यशस्वी होता है।

(1) **उच्चस्थ सूर्य** धनी सेनापति या नगर प्रमुख बनाकर सत्तासुख, **मान तथा प्रतिष्ठा** देता है। इस दशा में धन धान्य की वृद्धि, वाहन सुख, वैभव प्राप्ति, संगीत तथा हास विलास का सुख होता है।

(2) **उच्चस्थ चंद्रमा** स्त्री पुत्र धन तथा वस्त्राभूषण का सुख देता है। जातक तीर्थाटन, **पर्यटन या विदेश यात्रा** करता है।

(3) **उच्चस्थ मंगल** से जातक को राजा से **पद प्रतिष्ठा** व धन की प्राप्ति होती है। स्त्री पुत्र, बंधु तथा वाहन का सुख होता है। कोई जातक परदेश में सुखी होता है।

(4) **उच्चस्थ बुध** से जातक धन धान्य तथा वाहन सुख पाता है। वह आजीविका के क्षेत्र में उन्नति कर **मान सम्मान** पाता है। उसको मित्र, पुत्र तथा बंधु बांधव का उत्तम सुख मिलता है।

(5) **उच्चस्थ गुरु** के कारण जातक को **धन, मान** पद तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। वह विदेश यात्रा करता है किंतु कभी मन में खिन्नता या अवसाद की अनुभूति भी होती है। कारण सात्विक तथा धर्मप्रिय गुरु, लौकिक सुख को निस्सार मानता है।

(6) **उच्चस्थ शुक्र** कामाधिक्य व स्त्री संग से धन नाश, धर्म विरूद्ध कामों में रूचि तथा सिर में पीड़ा देता है। कभी पिता को भय होता है। मतान्तर से जातक स्त्री, पुत्र, **रत्नाभूषण वस्त्र** तथा भोजन का उत्तम सुख पाता है। भोग विलास में उसकी रूचि होती है।

(7) उच्चस्थ **शनि** अपनी दशा में सभा संगठन, ग्राम या प्रदेश की अध्यक्षता व **सत्ता लाभ** का सुख देता है। कभी पिता की मृत्यु तथा बंधुओं से विरोध की आशंका बढ़ती है।

(8) **उच्चस्थ राहु** से जातक की राज्य के उच्च अधिकारियों से मैत्री होती है तथा उसे **धन व सुख की प्राप्ति** होती है।

(9) **उच्चस्थ केतु** राजा से धन व मान दिलाता है। चित्त में सुख शान्ति व दृढ़ता बढ़ती है। परिवार में सुख शान्ति बढती है। जातक का मन **धर्म व सत्कर्म** में लगता है।

11.2 स्वगृही ग्रह का दशा फल

दशा निजागार गतस्य यस्य नवाम्बरागाविहार सौख्यम
नवीनयोषा बहुभूमिभूषा यशा विशेषादरिवर्गहानिः।।

(*भाव कौतुहलम 16:15*)

जो ग्रह अपनी ही राशि में स्थित हो तो उसकी दशा में व्यक्ति को नवीन सुन्दर वस्त्र, नये मकान तथा सैर सपाटे का सुख होता है। उसे नयी पत्नी (प्रेयसी) भूमि, रत्नाभूषण तथा प्रशंसा व प्रतिष्ठा मिलती है। उसके शत्रुओं की हानि होती है अर्थात् वे पराजित हो जाते हैं।

ग्रह	*स्वराशि	ग्रह	स्वराशि
सूर्य	5 सिंह	शनि	10 मकर–कुंभ 11
चंद्र	4 कर्क	राहु	6 कन्या
मंगल	1 मेष–वृश्चिक 8	केतु	12 मीन
बुध	3 मिथुन कन्या 6	अरुण	11 कुम्भ
गुरु	9 धनु–मीन 12	वरुण	12 मीन
शुक्र	2 वृष–तुला 7	यम	8 वृश्चिक

* अंकों को राशि क्रमांक जानें।

11.2.1 स्वगृही ग्रहों का दशा फल

(1) **सूर्य**–जातक उत्तम विद्या, यश, कुटुम्बियों से सुख, धन, वैभव तथा मान वृद्धि पाता है।

(2) **चंद्रमा**–जातक कृषि से धन लाभ, राजसम्मान, बंधुजन तथा नित्रों का सुख पाता है।

(3) **मंगल**–जातक भू संपदा, धन, धान्य, उच्च अधिकार तथा मान व प्रतिष्ठा पाता है।

(4) **बुध**–जातक धन, धान्य, वाणिज्य, भूमि, रत्नाभूषण तथा वस्त्रादि से सुख पाता है। उसे पत्नी, पुत्र और मित्रों का सुख तथा उत्तम भोजन की प्राप्ति होती है।

(5) **गुरु**–जातक भूमि, वस्त्र, उत्तम भोजन, वाहन तथा सत्तालाभ का श्रेष्ठ सुख पाता है।

(6) **शुक्र**–जातक को परोपकारी, गौरवशाली, सुख वैभव संपन्न तथा स्त्री पुत्र व मित्रों से सुखी बनाता है।

(7) **शनि**–जातक के बल, पौरुष व यश की वृद्धि होती है। वह राज्याश्रय पाता है। कोई जातक भूमि, भवन तथा वस्त्राभूषण का सुख पाता है। वह अपने गुणों के कारण मान सम्मान पाता है।

(8) **राहु**–जातक स्त्री तथा वाहन का सुख पाता है। कोई जातक ग्राम या नगर का अधिपत्य पाता है।

(9) **केतु**–जातक को धन व सुख देता है। उसका साहस, बल व आत्म विश्वास

बढ़ता है। धर्म व अध्यात्म में उसकी सहज रूचि होती है।

11.3 मित्र क्षेत्री ग्रह का दशाफल

कलत्र पुत्रैरपि मित्रपुत्रैरतीव सौख्यं हितराशिगस्य
दशा विपाके वसनं नृपालाद्विशेषतो मानविवर्द्धनं स्यात्।

(*भाव कौतुहलम 16:16*)

मित्र ग्रह की राशि में स्थित ग्रह की दशा में जातक पत्नी, पुत्र, मित्र तथा उनके पुत्रों से भी सुख पाता है। उसे राजा की कृपा से सुन्दर वस्त्र तथा सम्मान प्राप्त होता है। इस दशा अवधि में उसके **यश व सम्मान की विशेष वृद्धि** होती है। अपने मित्र की राशि में स्थित ग्रह की दशा-भुक्ति में **मित्रों के सहयोग से कार्यसिद्धि** होती है। इस अवधि में नये मित्र प्राप्त होते हैं। स्त्री, पुत्र व स्वजन की अनुकूलता मिलती है। उसे धन, धान्य का उत्तम सुख मिलता है।

ग्रह	मित्र ग्रह	ग्रह	मित्र ग्रह
सूर्य	चंद्रमा, मंगल गुरु	शनि	बुध, शुक्र
चंद्रमा	सूर्य, बुध	राहु	बुध, शुक्र, शनि
मंगल	सूर्य, चंद्रमा गुरु	केतु	बुध, शुक्र, शनि
बुध	सूर्य, शुक्र	अरुण	सूर्य, बुध, गुरु, राहु, यम
गुरु	सूर्य, चंद्रमा, मंगल	वरुण	चंद्रमा, मंगल, गुरु, केतु, यम
शुक्र	बुध, शनि	यम	सूर्य, मंगल, राहु, अरुण

11.3.1 मित्र क्षेत्री ग्रहों का दशा फल

(1) **सूर्य**–जातक को पुत्र तथा मित्र से सुख एवम् जाति बंधुओं द्वारा मान **सम्मान** मिलता है। वह भू संपदा, वस्त्राभूषण तथा **वाहन** सुख पाता है।

(2) **चंद्रमा**–राजा से मैत्री, धन लाभ, प्रयासों में सफलता, जल उत्पाद से लाभ तथा **रत्नाभूषण व वस्त्रों का सुख** मिलता है। वह चतुर तथा मधुर भाषी होता है।

(3) **मंगल**–शत्रुओं से संधि समझौता, धन, भूमि तथा वस्त्र का लाभ तो कभी चोर या अग्नि से भय होता है। मित्रों के सहयोग से पुरुषार्थ व **पराक्रम** बढ़ता है।

(4) **बुध**–जातक को धन, यश तथा सुख की प्राप्ति होती है। उसे शिल्प, व्यापार या **लेखन कार्य में सफलता** मिलती है।

(5) **गुरु**–जातक राजा से मैत्री, यश, धन धान्य तथा वस्त्रादि का सुख पाता है। शास्त्रार्थ में विजय पाने से **मान प्रतिष्ठा में वृद्धि** होती है।

(6) **शुक्र**–कलाप्रेमी, परोपकारी, गुणी तथा सत्कर्मी बनाकर **धन व यश** दिया करता है।

(7) **शनि**–जातक शिल्पादि विद्या का ज्ञाता, गुणी, बली और प्रतापी होता है। ऐसा जातक **परिश्रमी व कर्तव्यनिष्ठ** होता है।

(8) **राहु**–जातक को पशुधन, विद्या, **राज सम्मान, धन वैभव** तथा पत्नी सुख की प्राप्ति होती है।

(9) **केतु**–जातक **धन व सुख** पाता है।

11.4 शत्रु क्षेत्री ग्रह का दशा फल

मनोजवेगो रिपुवर्गभीतिः कृशत्वमर्थ क्षतिराप्ति बाधा
दशा यदारतिगृहस्थितस्य तदा नरस्य प्रकृतिश्चला स्यात्।

(*भाव कौतुहलम् 16:17*)

1. शत्रु ग्रह की राशि में बैठे ग्रह की दशा में, मनुष्य की कामेच्छा बहुत अधिक बढ़ने से, चित्त क्षुब्ध (उद्विग्न) होता है। वह शत्रु का भय, देह की निर्बलता, धन की हानि तथा आजीविका में बाधा, पाता है। उसके मन में व्यग्रता बनी रहती है तथा किसी भी काम में उसका मन नही लगता।

2. शत्रु गृही दशा में शत्रु जन्य पीड़ा, देह तथा मन का कष्ट एवम् भय की वृद्धि हुआ करती है। परिवार, पड़ौस तथा कार्य स्थल पर मतभेद, या विरोध वैमनस्य बढ़ने से मानसिक क्लेश, धनहानि तथा अवनति होती है।

ग्रह	शत्रु ग्रह	ग्रह	शत्रु ग्रह
सूर्य	शुक्र, शनि, राहु	शनि	सूर्य, चंद्रमा, मंगल
चंद्रमा	राहु, केतु	राहु	सूर्य, चंद्रमा, मंगल
मंगल	बुध राहु	केतु	सूर्य, चंद्रमा, मंगल
बुध	चंद्रमा	अरुण	चंद्रमा, शनि
गुरु	बुध, शुक्र	वरुण	सूर्य, बुध
शुक्र	सूर्य, चंद्रमा	यम	बुध, शनि, केतु

(1) **सूर्य**–पत्नी तथा धन की हानि, **स्त्री से झगड़ा**, राजा, अग्नि, चोर व मुकद्दमेबाजी से भय होता है।

(2) **चंद्रमा**–वस्त्राभूषण में कमी होती है। कभी नीचजन की सेवा, प्रवास संबंधी कष्ट या **परदेश वास** से क्लेश मिलता है।

(3) **मंगल**–शत्रुओं के साथ संघर्ष से शोक बढ़ता है। कभी देह रोग, राजा, **अग्नि या विष से भय** होता है।

(4) **बुध**–दुख और विपत्ति मिलती है। शुभ कर्मों का नाश, उत्सवादि में विघ्न बाधा तथा उद्योग में कमी होती है। कभी **स्वजनों से वैर** विरोध के कारण मन में उद्विग्नता बढ़ती है।

(5) **गुरु**–की दशा में जातक धन भूमि, वस्त्र तथा राज सम्मान पाता है। स्त्री, पुत्र, भाई-बंधु तथा सेवकों से **विवाद** (मतभेद) व क्लेश होता है।

(6) **शुक्र**–स्त्री पुत्र की मृत्यु, धन हानि तथा राज भय देता है। कोई जातक पाप कर्म में लिप्त होकर स्वयं को बहुत सुखी मानता है। भेद खुलने पर अपमान व **अपयश** से मन में खिन्नता बढ़ती है।

(7) **शनि**–जातक पदच्युति, फसल की हानि, देह तथा मन की निर्बलता व **भूसंपदा या धन की हानि** पाता है।

(8) **राहु**–जातक को धर्म विमुख तथा रोगी बनाता है। कभी अग्नि तथा राजा से भय होता हैं। वह पदभंग, **मानहानि**, शत्रुभय या स्थानान्तरण से बहुत क्लेश पाता है।

(9) **केतु**–दुष्टजनों से क्लेश तो कभी अपने ही हाथों अर्थात् अपनी भूल या असावधानी से **धन का नाश** होता है।

11.5 षष्ठेश का दशा फल

रोगाधीश दशऽबला जनकलिं रोगागमं जन्मिना-
माधि व्याधिमरिव्रज व्रण गणांतक कलंक खलात्।
मानध्वंस मतिक्षयं कलयति ज्ञानार्थनाशं तथा
चित्त व्याकुलता च पापवशतो धातुक्षयं प्रायशः।।

(*भाव कौतुहलम् 16: 18*)

रोगाधीश (षष्ठेश) यदि निर्बल हो तो उसकी दशा में स्वजन तथा बांधवों से कलह क्लेश होता है। मनुष्य देह तथा मन के रोगों से पीड़ित होता है। शत्रुओं की वृद्धि, कभी चोट से बना घाव, कलंक, अपमान, बुद्धि बल का ह्रास अथवा विवेक तथा ज्ञान नष्ट होने से चित्त में व्याकुलता बढ़ती है। पाप कर्म के प्रभाव

या पापबुद्धि होने से जातक की धातु का क्षय (वीर्य नाश) होता है तथा वह दुर्बलता पाता है।

टिप्पणी–षष्ठेश की दशा में बुद्धि भ्रान्त होने, गलत विचार, गलत काम तथा आपस की गलतफहमी से परेशानियां बढ़ती हैं। कभी उधार वापस मिलने में भी कठिनाई होती है। सावधानी तथा विनम्रता से संकट टालना सहज होता है। धैर्य व धर्म का आश्रय प्रायः सुख देता है।

11.6 अष्टमेश का दशाफल

निधनभाव पतेरवनीपते रतिभयं गदजालभयं दशा
कलयति स्वजनस्य विनाशनं निधनतामपि वा भविनामिह।।

(*भाव कौतुहलम् 16:19*)

अष्टमेश की दशा में जातक को राजा या प्रशासन से भय, विषम रोग तथा स्वजन की मृत्यु (वियोग-विद्रोह) तथा कभी स्वयं अपनी मृत्यु का भय हुआ करता है।

टिप्पणी–विद्वानों का मत है अष्टमेश की दशा में मनुष्य विचित्र प्रकार के गुप्त भय पाता है। कभी तो उसके भय कल्पित व निर्मूल होते हैं। कभी संशय संदेह या अनिष्ट आशंका भी उसको कष्ट व संताप देती है। यदि ऐसा जातक किसी व्यसन में फंस जाए तो अनिष्ट प्रभाव बढ़ने की अधिक संभावना होती है। *धर्म ग्रंथों का अनुशीलन या पुराण श्रवण भय से मुक्ति देता है।*

11.7 द्वादशेश का दशाफल

वित्तक्षतिरवनीशादाधिव्याधिर्व्ययेश परिपाके।
कष्टं मृत्यु समानं भवति कु यानं संयोगः।।

(*भाव कौतुहलम् 16:20*)

द्वादश भावाधिपति अथवा व्ययेश की दशा में राजा के कारण (सरकारी जुर्माना भरने से) धन की हानि होती है। ऐसी व्यक्ति देह पीड़ा, मानसिक चिंता, स्वजन की मृत्यु, दुष्ट जन की संगति तथा पुरानी (खटारा) गाड़ी के कारण भी बहुत कष्ट पाता है।

टिप्पणी–विद्वानों की मान्यता है कि इस दशा अवधि में खर्चे अचानक बढ़कर अनियंत्रित हो जाते हैं। व्ययभार से उसकी आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। कभी तो सभी संचित पूंजी भी सहज नष्ट हो जाती है तथा जातक निर्धन हो जाता है। विदेश यात्रा या विदेश व्यापार के लिए ये दशा अनुकूल होती है।

11.8 सप्तमेश का दशा फल

जायापति परिपाके रोग ज्वाला हृदि स्थिता भवति
रिपुजन जनिता बाधा वित्त विनाशो नरेश भीतिश्च

(*भाव कौतुहलम् 16:21*)

सप्तमेश ग्रह की दशा में मनुष्य हृदय रोग के आक्रमण से संतप्त रहता है। कभी तो वह सामान्य सी बीमारी को भयंकर रोग मान कर भयत्रस्त होता है। इस दशा अवधि में शत्रुजन्य बाधा, धनहानि तथा राजा से (सरकार कारण) भय हुआ करता है।

टिप्पणी–विद्वानों का कथन है कि सप्तमेश की दशा विवाह, दांपत्य सुख तथा साझेदारी में लाभ दिया करती है। यदि सप्तमेश त्रिक भावस्थ (6, 8, 12वें भाव में) हो तो निश्चय ही ऊपर बताए अनिष्ट फल की प्राप्ति होना सहज संभव है।

11.9 अस्तंगत ग्रह का दशा फल

1. जो ग्रह सूर्य के अति समीपी हो वह आकाश में दिखायी न पड़ने से अस्त ग्रह कहलाता है। अस्त ग्रह की दशा में स्त्री, पुत्र धन तथा सुख की हानि होती है। कभी व्यर्थ की कलह, मिथ्या कंलक, पराजय व अपमान भी जातक को व्यथित किया करते हैं।

ग्रह	सूर्य से अंशात्मक दूरी		ग्रह	सूर्य से अंशात्मक दूरी	
	मार्गी	वक्री		मार्गी	वक्री
चंद्रमा	12°	–	गुरु	11°	11°
मंगल	17°	8°	शुक्र	10°	08°
बुध	14°	12°	शनि	16°	16°

2. अस्तंगत ग्रह की दशा में जातक का वैर विरोध बलवान शत्रु से होता है। कभी जटिल रोग, देह व मन को जर्जरित करता है। सरकार के उच्च अधिकारियों से मतभेद या वैमनस्य, आय के स्रोत को बंद करता है। जातक समाज में अपमान व अपयश पाता है। इस दशा अवधि में जातक दीन हीन, निर्बल तथा व्याकुल चित्त होता है।

11.10 दशा प्रवेश के समय चंद्रमा के बल से शुभता

दशाप्रवेशे सबलः शशांको दशाफलं शस्तमतीवजन्तोः।
अतोऽन्यथा चेद्विपरीतमाय्यैरूदीरितं चन्द्रबलानुमानात्।।

(*भाव कौतुहलम् 16:23*)

दशा प्रवेश के समय यदि चंद्रमा बली हो (उच्चस्थ, स्वगृही, मित्रक्षेत्री अथवा केन्द्र या त्रिकोण में हो) तो ऐसी दशा बहुत शुभ फल देती है। यदि दशा प्रवेश के समय चंद्रमा बलहीन या पाप प्रभाव में हो तो दशा अशुभ व अनिष्टप्रद होती है। विज्ञ ज्योतिषी ग्रह दशा के फल का विचार, दशा प्रवेश के समय चंद्रमा के बल व शुभत्व के अनुसार करते हैं।

11.11 बली व निर्बल ग्रह का दशा फल

बलवन्तो दशाधीशा दिशन्ति सकलं फलम्।
निर्बला नैव कुर्वन्ति मध्यं मध्यबला नृणाम्।।

(भाव कौतुहलम् 16:24)

दशा का स्वामी ग्रह बलवान होने पर शुभ फल पूर्ण रूप से देता है। इसके विपरीत निर्बल ग्रह अपनी दशा में शुभ फल दे पाने में असमर्थ होता है। जिस ग्रह को मध्यम बल मिले उसकी दशा में जातक मध्यम फल प्राप्त करता है।

भावाधिपो बलयुतो निज गेह गामी
तुंग त्रिकोण शुभ वर्ग गतोपि पूर्णम्।
जन्तोः फलं किल करोति यदारिनीच स्थान-
स्थितोऽशुभफलं बिबलो विशेषात्।।

(भाव कौतुहलम् 16:27)

यदि किसी भाव का स्वामी उच्चराशिस्थ, मूलत्रिकोण राशि या स्वराशि में स्थित हो अथवा वर्गों में बली हो तो ऐसे ग्रह की दशा **पूर्ण शुभ फल** देती है। इस के विपरीत जो ग्रह शत्रु क्षेत्री, नीच राशिस्थ या वर्गों में हीन बली हो तो उसकी दशा में अशुभ व अनिष्ट फल प्राप्त होते हैं।

11.12 भावेश दशा फल

11.12.1 भाव कौतुहलम् से

(1) **लग्नेश** की दशा धन वैभव तथा सुख देती है।
(2) **द्वितीयेश** की दशा में कष्ट व पीड़ा मिलती है।
(3) **तृतीयेश** की दशा अशुभ फल देती है।
(4) **चतुर्थेश** की दशा भूमि भवन का सुख देती है।
(5) **पंचमेश** की दशा में विद्या प्राप्ति होती है।
(6) **षष्ठेश** की दशा रोग व शत्रु भय देती है।

(7) **सप्तमेश** की दशा में दुख मिलता है।

(8) **अष्टमेश** की दशा विपत्ति या मृत्यु देती है।

(9) **नवमेश** की दशा शुभ व धार्मिक कृत्य सफल करती है।

(10) **दशमेश** की दशा में सत्ता सुख व धन मिलता है।

(11) **एकादशेश** की दशा में लाभ मिलता है।

(12) **द्वादशेश** की दशा में धन हानि तथा पीड़ा होती है।

इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र के प्राचीन विद्वानों ने द्वादश भाव के स्वामियों की दशा का फल सूत्र रूप में बताया है। विज्ञजन ग्रह के बल व शुभता के अनुसार फल कथन करते हैं।

11.12.2 महर्षि पराशर के अनुसार

भावेशदशाफल

लग्नाधिपदशायां स्या त्तनौ सौख्यं च सद्यशः।
वित्तपस्य दशायां तु कष्टं चापि मृतेर्भयम्।। 2।।
तृतीयेशदशायां तु जातकस्याशुभं फलम्।
चतुर्थेशदशायां वै गेहीभूसम्भवं सुखम्।। 3।।
पंचमेशदशायां तु विद्यात्मसुखं महत्।
षष्ठेशस्य दशामध्ये शत्रुभीश्च तनौ रुजा।। 4।।
जायेशस्य दशाकाले जायाकष्टं मृतेर्भयम।
रन्ध्रेशस्य दशामध्ये वित्तनाशो मतेश्च भीः।। 5।।
भाग्येशस्य दशाकाले कीर्त्तिधर्मार्थसंग्रहः।
कर्माधिपदशायां तु राजसम्मानसम्भवः।। 6।।
लाभधिपदशाकाले लाभो विघ्नोऽथ रोगभीः।
रिष्फेशस्य दशामध्ये कष्टं नानाविधं भवेत्।। 7।।
शुभभावस्थखेटस्य दशारम्भे शुभं फलम्।
शुभस्याप्यशुभस्थान-स्थितस्याशुभदं फलम्।। 8।।

(*बृहत्पाराशर होराशास्त्र 49:2–8*)

लग्नेश की दशा में शरीर सुख, सुयश, **धनेश** की दशा में कष्ट तथा मरणभय, **तृतीयेश** की दशा में अशुभ, **चतुर्थेश** की दशा में गृह तथा भूमिसुख, **पंचमेश** की दशा में विद्या तथा पुत्र का सुख, **षष्ठेश** की दशा में शत्रुभय, शरीर की पीड़ा, **सप्तमेश** की दशा में स्त्रीकष्ट तथा मरणभय, **अष्टमेश** की दशा में धननाश तथा

मृत्युभय, **भाग्येश** की दशा में यश, धर्म तथा धन की समृद्धि, **राज्येश** की दशा में राजसम्मान, **लाभेश** की दशा में लाभ, विघ्न तथा रोगभय एवं **द्वादशेश** की दशा में अनेकविध कष्ट होते है। दशारम्भ में ग्रह शुभस्थान (त्रिकोणादि) में हों तो शुभ फल और अशुभ स्थान (त्रिक आदि) में हों तो अशुभ फल होते हैं। अतः जन्म एवं दशारम्भकाल दोनों की स्थिति से फलादेश करना चाहिए।

11.12.3 जातक तत्वम् के अनुसार भावेश दशा फल

(1) **लग्नेश दशा बल धनदा**

लग्नेश ग्रह की दशा बल और धन दोनों देती है।

(2) **धनेशदशा कष्टार्थदा।**

द्वितीयेश की दशा धन के साथ साथ कष्ट भी देती है।

(3) **सोत्थप पाके प्रायेण नेष्ट फलम्।**

तृतीयेश की दशा में शुभ फल नहीं होता अपितु अनचाहा अशुभ फल होता है।

(4) **सुखेश पाके गृहदि सुखम्।**

चतुर्थेश की दशा में घर परिवार तथा वाहन सुख मिलता है।

(5) **सुतेशदशा विद्या अर्थ दा।**

पंचमेश की दशा में विद्या, धन तथा संतान का सुख प्राप्त होता है।

(6) **षष्ठेशदशा रिपु भयदा।**

षष्ठेश की दशा, ऋण, रोग तथा शत्रु का भय देती है।

(7) **जायेश दशा शोकदा।**

सप्तमेश की दशा शोक दिया करती है। जातक, रोग, विपत्ति या इष्टजन के वियोग से शोकाकुल होता है।

(8) **मृत्युदशायां मृत्युः।**

अष्टमेश की दशा में मनुष्य की मृत्यु (या मृत्यु तुल्य पीड़ा) होती है।

(9) **धर्मेशदशायां धर्म क्रिया।**

नवमेश की दशा में मनुष्य धर्म कार्यो में रुचि लेता है।

(10) **खगेशदशा नृप आश्रय अर्थदा।**

दशमेश की दशा में राजा से आश्रय (सरकारी नौकरी या पद) और धन मिलता है।

(11) **लाभेशदशा लाभदा।**

लाभेश की दशा में मनुष्य को सभी प्रकार का लाभ मिलता है। उसकी उन्नति होती है। वह मान, सम्मान, पद, गौरव व यश पाता है

(12) **व्ययेश दशा अर्थहीन कष्टदा।**

द्वादशेश (व्ययेश) की दशा में धन ही हानि, कष्ट व पीड़ा होती है।

11.13 दशाफल में विशेषता

(1) **सम्यग्बलिनः स्वतुंगभागे सम्पूर्ण बलवर्जितस्य रिक्ता।**
नीचांशगतस्य शत्रुभागे ज्ञेयाऽनिष्टफला दशा प्रसूतौ।।

(i) जो ग्रह जन्म कुण्डली में अच्छी प्रकार से बली होते हैं और अपने उच्च अंश में होते है। उनकी दशा **सम्पूर्ण** कहलाती है। ऐसी दशायें पूर्ण शुभ होती हैं और सुख समृद्धि दिया करती हैं।

(ii) जो ग्रह बलहीन हों वह दशा **रिक्ता** कहलाती हैं। उसमें धनहानि और रोगभय होता है। जो नीच राशि या नीच अंश में हो और शत्रु घर में हो तो उसकी दशा अतीव कष्टकारक तथा अनिष्ट फल देने वाली होती है।

(2) **ततद्भावार्थकामेशदशास्वन्तर्दशासु च।**
तत्तद्भावविनाशाः स्यात् तद्यु तेक्षितकारकैः।।

(i) किसी भी भाव से गिनने पर दूसरे और सातवें भाव के मालिक अर्थात् **मारकेश** की दशा हो तो उस भाव का विनाश होता है।

(ii) इस श्लोक का यह भी अर्थ हो सकता है किसी भी भाव से धनेश और सप्तमेश की दशा और अन्तर्दशा में या उससे युक्त दृष्ट कारकों से, उस भाव विशेष का नाश होता है।

(3) **त्रिकोणाधनलाभस्था बलिनो यदि शोभनाः।**
स्वदशान्तर्दशाकाले कुर्वन्ति विपुलं सुखम्।।

(भाव कौतुहलम्)

त्रिकोण, धन और लाभ स्थान में स्थित शुभग्रह बली हों तो अपनी दशा अन्तर्दशा में बहुत धन देते हैं और सुख प्रदान करते हैं।

(4) सुतेश या भाग्येश युक्त **कर्मेश** की दशा शुभप्रद होती है। पंचमेश युक्त किसी भी ग्रह की दशा शुभद और कर्मेशयुक्त ग्रह की दशा परमशुभ होती है। सुखेश-सहित धर्मेश की दशा या पंचमस्थ ग्रह की दशा शुभद होती हैं। केंद्रेश

कोणस्थ हों या त्रिकोणेश केंद्रस्थ हो तो उन (केंद्रेश तथा त्रिकोणेश) की दशा **परमशुभ** होती है।

(5) त्रिकेश यदि त्रिकोणेश के साथ हो तो **त्रिकेश की दशा** (षष्ठेश, अष्टमेश व्ययेश) भी शुभप्रद होती हैं। केंद्रेश त्रिकोणेश के साथ बैठे ग्रह या उनसे देखे जाने वाले ग्रह की दशा शुभ होती है।

(6) **लग्नेश** भाग्यस्थ और **भाग्येश** लग्नस्थ हो तो उनके दशा-काल में मनुष्य को **धन तथा सौख्य** का उदय कहें। दशमेश लग्नगत एवं लग्नेश कर्मगत हों तो उनके दशाकाल में निःसंदेह **राज्यप्राप्ति** होवे।

(7) 3, 6, 11 स्थानों में गत या **त्रिषडायधीशों से युक्त शुभग्रहों** की दशा अशुभ होती है। द्वितीय तथा सप्तम में मारकेश से युक्त या मृत्युस्थान-स्थित ग्रहों की **दशा अशुभप्रद** होती है।

टिप्पणी–ध्यान रहे त्रिषडाय तथा कर्म अर्थात 3,6,10,11 **उपचय भाव** में बैठे क्रूर ग्रह अपनी दशा में निश्चय ही थोड़ी बाधा या व्यवधान के बाद **सफलता व सुख** को सुनिश्चित करते हैं।

11.14 शुभाशुभ भावस्थ

लग्नगृहगस्य हि दशा मण्डललाभं तथोच्चगस्यापि।
केन्द्रस्थितस्य कुरुते धनवाहनदेशसम्प्राप्तिम्।।

1. लग्नगत और उच्चस्थ ग्रह की दशा में प्रान्तों का आधिपत्य तथा अन्य केन्द्रस्थित ग्रह की दशा में धन–वाहनादिकों का लाभ होता है।

षष्ठदशा व्यसनकरी मरणं च करोति नैधनस्थदशा।
अस्तमितग्रहपाको बन्धनमात्रेण पीडयति।।

2. **षष्ठ स्थान** स्थित ग्रह की दशा में व्यसन, **अष्टमस्थ** की दशा में मरण, **अस्तग्रह** (द्वादशस्थ) की दशा में **बन्धन** होता है।

11.15 वक्री ग्रह की दशा

वक्रोपगस्य हि दशा भ्रमयति च कुलालचक्रवत्पुरुषम्।
व्यसनानि रिपुविरोधं करोति पापस्य न शुभस्य।।

(सारावली)

1. **वक्रीग्रह की दशा** में नित्य देशाटन, व्यसन तथा शत्रुओं का विरोध होता है। पापग्रहों की दशा में ही पाप फल का भोग होता है किन्तु शुभ ग्रह यदि वक्री हो तो उसका शुभफल नहीं होता है।

11.15.1 वक्री ग्रह की दशा :

(i) जन्मांग में जो ग्रह वक्री पड़ा हो वह अपनी दशा अन्तरदशा में अद्भुत प्रभावशाली फल दिया करता है। वक्री ग्रह अपने से बारहवें भाव पर भी प्रभावी होने से दो भावों से संबंधित हो जाता हैं। अतः नवमस्थ ग्रह वक्री होने पर अष्टम भाव संबंधी फल भी देता ही है।

(ii) वक्री ग्रह की दशा में **स्थानच्युति, धन व सुख की कमी** व विदेश/परदेश गमन होता है। वक्री ग्रह यदि शुभ भावोन्मुख हो (केंद्र, त्रिकोण, लाभ व धन भाव) तो सम्मान सुख धन व यश क़ी वृद्धि करता है। ध्यान रहे मार्गी ग्रह त्रिक भाव में स्थित हो तो अपनी दशा अन्तरदशा में अभीष्ट सिद्धि में बाधा व्यवधान व कठिनाई देता है। प्रत्येक ग्रह की एक निश्चित सामान्य चाल है पर कभी ये चाल अनिश्चित हो जाती है ऐसा प्रतीत होता है मानो ग्रह की गति धीमी पड़ गयी है। वह स्तंभित (स्थिर) सा जान पडता फिर वह ग्रह वक्री हो जाता है। पाप ग्रह (मंगल, शनि) वक्री होने पर अधिक पापी हो जाते हैं तो शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) भी वक्री होने पर अपनी शुभता में कमी महसूस करते हैं। सूर्य व चंद्र सदा ही मार्गी रहते हैं वे कभी वक्री नहीं होते राहु केतु सदा वक्री रहते हैं वे कभी भी मार्गी नहीं होते ।

(iii) उदाहरण के लिये यदि किसी जन्मांग से गुरु व शनि वक्री होकर लग्न में स्थित हों तो, वक्री गुरु की पांचवी दृष्टि कभी चौथे तो कभी कभी पंचम भाव का फल देगी। इसी प्रकार वक्री शनि की तीसरी दृष्टि द्वितीय भाव पर पड़ने से वाद विवाद परनिंदा में रुचि तो कभी तो कभी आलस्य अर्कमण्यता व श्रम विमुखता दे देगी।

11.15.2 विभन्न वक्री ग्रहों का प्रभाव

वक्री मंगल :

(i) उत्साह, साहस, परिश्रम, पराक्रम व संघर्ष शक्ति का दाता है। वक्री मंगल जातक को असहिष्णु, अति क्रोधी तथा आतंकवादी बना सकता है।

(ii) जातक की कार्यक्षमता सृजनात्मक न होकर, विनाशकारी हो जाती है। ऐसा लगता है मानो विधाता ने भूल से विकास की बजाए ललाट पर विनाश ही लिख दिया हो।

(iii) अपनी दशा अन्तरदशा में वक्री मंगल वैर विरोध तथा आपसी मतभेद बढ़ाकर, शत्रुता व मुकद्दमे बाजी भो दे सकत

(iv) ऐसा वक्री मंगल यदि जन्मांग में दुस्थान (त्रिक भाव 6,8,12) में हो तो जातक, हठी जिद्दी व अड़ियाल प्रकृति का होता है। भूमि भवन व शौर्य पराक्रम संबंधी उसके कार्य प्रायः आधे अधूरे छूट जाते हैं।

(v) जातक किसी से भी सहयोग करना अपना अपमान समझता है। वह देह बल का अपव्यय कर मानों आत्मपीड़न में सुख पाता है।

(vi) मंगल एक उग्र ग्रह है जो जातक को स्वार्थी व पशुवत् बना सकता है। ऐसा जातक आत्मतुष्टि व स्वार्थ सिद्धि के लिये अनुचित व अनिष्ट कार्य करने में तनिक भी संकोच नहीं करता। वक्री मंगल की दशा/अन्तरदशा में अप्रिय घटनाएं हो सकती हैं।

11.15.3 वक्री मंगल में सावधानियां :

वक्री मंगल के अनिष्ट प्रभाव से बचने के लिए निम्नलिखित सावधानियां बरतें। वक्री मंगल की दशा अन्तरदशा में–

1. अस्त्र-शस्त्र न खरीदें, न ही घर में घातक हथियार रखें।
2. वाहन व नयी संपत्ति भी न खरीदें तो अच्छा है। नये घर में गृह प्रवेश भी, वक्री मंगल की दशा में, अशुभ व अमंगलकारी माना गया है।
3. यथासंभव आपरेशन (सर्जरी) से बचें, क्योंकि ऐसी सर्जरी प्राण घातक हो सकती है।
4. नया मुकद्दमा शुरु करना भी उचित नहीं, कारण ये धन नाश व मानसिक अशान्ति देगा।
5. नया नौकर/कर्मचारी न रखें। कोई नया अनुबंध भी न करें।
6. वक्री मंगल के गोचर में विवाह से बचें।

ध्यान रहे मंगल वायदा व वचन बद्धता का प्रतीक है इसका वक्री होना बात से मुकर जाना, छल कपट या धोखे द्वारा हानि प्रद हो सकता है।

11.15.4 बुध वक्री :

(i) साधारणयता बुध, बुद्धि, वाणी, अभिव्यक्ति, शिक्षा व साहित्य के प्रति लगाव का प्रतीक है। प्रायः बुध अपनी दशा अन्तरदशा में मौलिक चिन्तन तथा सृजनात्मक शक्ति बढ़ाकर उत्कृष्ट साहित्य की रचना करता है।

(ii) बुध वक्री होने पर अपनी दशा-अन्तर्दशा में आंकड़े व तथ्यों पर आधारित लेख व पुस्तक लिखाएगा। जातक अपनी रचना में अन्तर्विरोध व परिवर्तन पर अधिक बल देगा। कभी तो वह त्रुटिपूर्ण व गलत निर्णयों को भी तर्क द्वारा उचित ठहराएगा।

(iii) वक्री बुध विचार, भावनाओं व मानसिक प्रवृत्तियों को प्रभावित कर उनमें क्रांतिकारी मोड़ (बदलाव) देने में सक्षम है। तर्क संगत विश्लेषण से प्रचलित मान्यताओं को ध्वस्त कर जातक मौलिक चिंतन को नयी दिशा दे सकता है।

11.15.5 वक्री गुरु :

साधारणतया गुरु ज्ञान, विवेक, प्रसन्नता व दैवीय ज्ञान का प्रतीक है।

(i) जन्मांग में गुरु का वक्री होना, अद्भुत दैवी शक्ति या दैवी बल का प्रतीक है। जिस कार्य को दूसरे लोग असंभव जान कर अधूरा छोड़ देते हैं वक्री गुरु वाला जातक ऐसे ही कार्यों का पूरा कर यश व प्रतिष्ठा पाता है।

(ii) अन्य शब्दों में दूसरों की असफलता को सफलता में बदल देना उसके लिए सहज संभव होता है। किसी भी योजना के गुण दोष, शक्ति व दुर्बलताएं पहचानने की उसमें अद्भुत शक्ति होती है।

(iii) चतुर्थ भावस्थ वक्री गुरु, साथियों का मनोबल बढ़ा कर, रुके या अटके हुए कार्यों को सफलतापूर्वक सिरे चढ़ाने में दक्षता देता है। जातक की दूरदृष्टि व दूरगामी प्रभावों के आकलन की शक्ति बढ़ जाती है।

(iv) वह जोखिम उठाकर भी प्रायः सफलता प्राप्त करता है। उसकी प्रबन्ध क्षमता विशेषकर संकट कालीन व्यवस्था चमत्कारी हुआ करती है।

11.15.6 वक्री शुक्र :

(i) शुक्र, मान–सम्मान, सुख–वैभव, वाहन, मनोरंजन, पत्नी या दांपत्य सुख व मैत्री पूर्ण सहयोग का प्रतीक है। साधारणयता, शुक्र यदि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो, जातक हंसमुख, हास्य-विनोद प्रिय, मिलन सार व पार्टी की जान होता है। उसको देखने भर से ही उदासी भाग जाती है व हंसी, खुशी का वातावरण सहज बन जाता है।

(ii) किन्तु शुक्र जब वक्री होता है तो जातक समाज में घुल मिल नहीं पाता वह एकाकी रहना पसंद करता है।

(iii) जातक की अलगाववादी प्रवृत्ति, अपने परिवार व परिवेश में अरुचि तथा अनासक्ति बढ़ाती है। कभी गैर पारंपरिक ढंग से भी ऐसा जातक अपना प्यार/वात्सल्य दर्शाता है।

(iv) यदि किसी जन्मांग में शुक्र वक्री होकर द्वादश भाव (भोग स्थान) में हो तो जातक में भोगों से पृथक रहने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। वह सुख वैभव से विमुख होकर संन्यासी भी बन सकता है।

11.15.7 वक्री शनि :

(i) शनि को काल पुरुष का दुख माना गया है। ये प्रायः दुख-दारिद्रय, कष्ट, रोग व मनस्ताप देता है।

(ii) वक्री शनि जातक को **नैराश्य व अवसाद की स्थिति से उबारता है।** जातक निराशा के गहन अंधकार में भी आशा की किरण खोज लेता है।

(iii) वक्री शनि अपनी दशा या अन्तर्दशा में आत्मरक्षण व अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये, जातक से सभी उचित, अनुचित कार्य करा लेता है। कभी तो जातक स्वार्थ सिद्धि के लिए निम्न स्तर तक गिर सकता है।

(iv) ऐसा व्यक्ति सभा गोष्ठी में आना जाना या लोगों से अधिक मेल जोल रखना भी पसंद नहीं करता।

(v) अपने अधिकारों के प्रति भी उदासीन रहता है। कोई व्यक्ति अपने कार्यों को गुप्त रखकर सफलता जनित सुख पाता है।

11.16 हीनबली ग्रह का दशा फल

रिक्तातिरिक्तनिम्नातिनिम्नरिप्वतिरिपुगृहदशासु।
पृथ्वीपतिरपि भूत्वा स्वभृत्यभृत्यो भवेत्पुरुषः।।

(i) **रिक्त** (निर्बल), **अति रिक्त** (शून्यबल), **नीच, परमनीच, शत्रु-अतिशत्रुगृहगत ग्रहों** की दशा में जातक, राजकुलोत्पन्न राजा होकर भी, अपने दासों का दास बनकर रहता है।

देशत्यागो व्याधिर्भ्रंशोत्थानां मुहुर्मुहुः कलहः।
बन्धनमरातिजनितं रिपुराशिगतस्य हि दशायाम्।।

(ii) **शत्रुगृहगत ग्रह की दशा** में स्थानत्याग, रोगभय, पुनः-पुनः पतन, उत्थान, शत्रु से कलह या बन्धन होता है।

महितकरिगलितमदजलसेकक्ष्मापीठवारितरजस्कः।
राजा कष्टसहायो रिक्तदशायां ध्रुवं भ्रमति।।

(iii) जिसके मत्त हाथियों के मदजल से सिक्त पृथ्वी की धूलि कीचड़ हो जाती है ऐसा राजा भी रिक्त ग्रह की दशा में कष्ट पाता है।

अंगप्रत्यंगानां भेदं विदधाति षष्ठशत्रुदशा।
कोणद्यूनारिदशा निधनारिदशा शिरश्छेदम्।।
रिपुभयविदेशगमनं बन्धनरोगादिपीडनं भवति।
नीचस्थग्रहपाके राजाभिभवो ध्रुवं पुंसाम्।।

(iv) **षष्ठस्थ ग्रह** लग्नेश का यदि शत्रु हो अथवा 5, 7, 9 भाव का स्वामा यदि षष्ठस्थ होकर शत्रुराशि में स्थित हो तो अंग और प्रत्यंग में आघात होता है। **अष्टमस्थ शत्रुगृहगत ग्रहदशा** में मस्तक में आघात, शत्रुभय, विदेशभ्रमण, बन्धन, रोग से पीड़ा होती है। **नीचस्थ ग्रह** की दशा में राजा भी पराभव को प्राप्त होता है।

चिन्ता स्वप्नानुभवैः परिणमति फलं विहीनवीर्यस्य।
पञ्चमहापुरुषोक्ताध्यायांस्तान्नियोजयेदत्र ।।

(iv) **निर्बल ग्रह की दशा में** लोग स्वप्न और चिन्ता में फलभोग करते हैं। पञ्चमहापुरुषाध्याय में जो फल कहे गये हैं वह सब ग्रहदशा में प्राप्त होता है।

आदौ दशासु फलदः शीर्षोदयराशिसंस्थितो विहगः।
उभयोदये च मध्ये स्वान्त्ये पृष्ठोदये च नीचर्क्षे।।

(vi) **शीर्षोदय** राशिगत ग्रहदशारम्भ काल ही में, **उभयोदयगत** दशा के मध्य में, **पृष्ठोदय** राशि तथा **नीच** राशिगत ग्रहदशा के अन्त में अपने फल दिया करता है। राशि क्रमांक 3, 5, 6, 7, 8, 11 शोर्षोदय;

1, 2, 4, 9,10 पृष्ठोदय तथा

12 उभयोदय राशियां हैं।

11.17 भावगत ग्रह की दशा/भुक्ति

1. **लग्न में स्थित** ग्रह की दशा में मनुष्य को देह सुख, स्वास्थ्य तथा आरोग्य का लाभ होता है। मन में उत्साह उमंग व सुख संतोष की प्राप्ति होती है। धन व वैभव मिलता है।
2. **धन भावस्थ** ग्रह की दशा में उत्तम भोजन की प्राप्ति होती है। स्त्री पुत्र व परिवार का सुख मिलता है। विद्या, वाणी की कुशलता तथा धन की वृद्धि होती है। घर में मंगल कार्य होते हैं।
3. **तृतीय भावस्थ** ग्रह में भाई का सुख, साहस, पराक्रम व मन बुद्धि में धीरज बढ़ता है। धन, वस्त्र, स्वर्णाभूषण की प्राप्ति व बड़ा सुख या सफलता मिलती है।
4. **चतुर्थ भावस्थ** ग्रह की दशा में भूमि, भवन, संपदा व वाहन सुख की प्राप्ति होती है। धन, आरोग्य, खाने पहनने का सुख, भाई बंधु व मित्रों से सुख मिलता है।

5. **पंचमस्थ ग्रह** की दशा में स्त्री पुत्र तथा मित्रों का सुख व समर्थन मिलता है। विद्या, बुद्धि, यश तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। जातक आंरोग्य व पराक्रम जनित सुख पाता है।
6. **षष्ठस्थ ग्रह** की दशा में राजा, चोर, अग्नि, विष या शस्त्र से भय होता है। रोग बढ़ने की संभावना होती है। रोग ऋण शत्रु या मुकद्दमें से चिंता परेशानी होती है।
7. **सप्तमस्थ ग्रह** की दशा में स्त्री-पुत्र का लाभ, परिवार सुख, धन वाहन व संपत्ति की वृद्धि तथा राजसम्मान व यश की प्रप्ति होती है। विवाह का योग बनता है।
8. **अष्टमस्थ ग्रह** की दशा में कार्यालय, आवास या पदवी का नाश, महान दुख, बंधु-बांधवों को कष्ट, धन नाश, दरिद्रता, अन्न में अरुचि, द्वेष भाव में वृद्धि व शत्रु से भय, अपयश, कलंक व अपमान भुगतना पड़ता है।
9. **नवमस्थ ग्रह** की दशा में पुत्र, स्त्री, धन, धान्य, भूमि तथा संपदा की वृद्धि व सुख मिलता है।
10. **दशमस्थ ग्रह** की दशा में पदोन्नति, मान प्रतिष्ठा, स्त्री पुत्र का सुख, सत्कार्य-सत्संग तथा सुख वैभव की प्राप्ति होती है।
11. **लाभस्थ ग्रह** की दशा में स्त्री पुत्र का लाभ, बंधु बाधवों का सुख, राजसम्मान, धन वस्त्र व सुख साधन की प्राप्ति होती है। संतजन की कृपा मिलती है।
12. **व्ययभावस्थ** ग्रह की दशा में अकर्मण्यता, आलस्य, शरीर, में रोग पीड़ा, दुख, दरिद्रता, हानि, अपव्यय या असफलता जनित क्लेश होता है।

टिप्पणी–6-8-12वें भाव में स्थित ग्रह की दशा प्रायः अनिष्ट फल दिया करती है।

11.18 समीक्षा

1. सभी ग्रह सामान्य फल के साथ राशि या भावगत स्थिति अथवा भावाधिपत्य के कारण कुछ विशिष्ट फल भी दिया करतें है। इस अध्याय में ग्रहों के विशष्ट फल पर विस्तार से चर्चा हुई है।
2. पैरा 11.1 में उच्चस्थ ग्रह; 11.2 में स्वगृही ग्रह तो 11.3 में मित्र क्षेत्री ग्रह के दशाफल पर विचार हुआ है।
3. शत्रुक्षेत्री ग्रह का विचार पैरा 11.4 में तो षष्ठेश, अष्टमेश और व्ययेश का दशा विचार पैरा 11.5 से 11.7 तक किया गया है।
4. सप्तमेश और अस्तंगत ग्रह की दशा पर क्रमशः पैरा 11.8 तथा में 11.9 विचार

हुआ है।

5. दशा प्रवेश के समय गोचर चंद्रमा की स्थिति का दशा पर प्रभाव पैरा 11.10 में दिया गया है।
6. पैरा में 11.11 में बली व निर्बल ग्रह की दशा पर विचार करने के बाद 11.12 में भावेश दशा फल पर **भाव कौतुहलम्, बृहत्पाराशर होरा शास्त्र तथा जातक तत्वम्** की सहायता से विचार हुआ है।
7. पैरा 11.13 में रिक्ता तथ पूर्णा दशा, मारकेश, त्रिकोण तथा धन लाभस्थ ग्रह, केन्द्र व त्रिकोण के स्वामी ग्रह, लग्नेश–भाग्येश का स्थान परिवर्तन तथा उपचय भाव में स्थित ग्रह अथवा उपचयपति के दशा संबंधी विशेष फल पर विशद चर्चा हुई है।
8. पैरा 11.14 में केन्द्रस्थ ग्रह तथ पैरा 11.15 में वक्री ग्रह की दशा पर गहन चिन्तन किया गया है।
9. हीनबली ग्रह का दशा फल पैरा 11.16 की विषय वस्तु है।
10. पैरा 11.17 में भावगत ग्रह की दशा–भुक्ति पर चर्चा की गई है।

●●●

अध्याय–12

गोचर सूर्य फलम्

12. सूर्य का गोचर फल

चंद्र राशि से 3, 6, 10, 11 वीं राशि में गोचरवश सूर्य बन्धु व पुत्रों का सुख, सभी कार्यों में सफलता, राजसम्मान, निर्मल बुद्धि, धन व यश का लाभ तथा पुण्य वृद्धि देता है। उक्त स्थान के अतिरिक्त सूर्य की गोचर स्थिति रोग, शोक, भय, व्याधि, हानि व अग्नि पीड़ा देती है।

12.1 जन्मकालीन चंद्र राशि से विभिन्न भाव गत गोचर सूर्य का फल

1. **प्रथम भाव में सूर्य :** मन में क्षोभ होता है। परिश्रम व धन का अपव्यय होता है। निरर्थक भ्रमण से क्लेश होता है। देह पीड़ा व मानसिक क्लेश बढ़ता है। प्रायः सफलता के लिए अधिक प्रयास करना होता है।
2. **द्वितीय भाव में सूर्य :** स्वभाव में हठधर्मिता बढ़ती है। सुख में कमी व स्वजन के कपट व्यवहार से क्लेश होता है। लोग धोखा देकर अपना काम निकालते हैं। कभी कृषि या व्यापार में हानि या अवनति होती है। कोई जातक जल संबंधी रोग से कष्ट पाता है।
3. **तृतीय भाव में सूर्य :** जातक का प्रयास सफल होता है, शुभ समाचार पाने का हर्ष होता है। उच्च पद, धन व मान की प्राप्ति होती है। जातक जाति बंधु, मित्र व पुत्र जनित सुख पाता है। वह स्वस्थ, सुखी व राज कृपा से धन पाने वाला होता है।
4. **चतुर्थ भाव में सूर्य :** परिवार में कलह, क्लेश, मानसिक खिन्नता व यात्रा में विघ्न व बाधा पड़ने से चिन्ता होती है। कभी रक्त विकार, अस्थिभंग, देहबल में कमी या व्यापार में बाधा पड़ने से परेशानी बढ़ती है।
5. **पंचम भाव में सूर्य :** मोह, क्षोभ, व रोग के कारण चित्त में व्याकुलता होती है। ऐसा जातक अस्थिर मन, मित्रों से द्रोह करने वाला, अपव्ययी तथा अवसाद व आलस्य युक्त होता है। कभी संतान या राजकर्मचारियों के कारण परेशानी बढ़ती है। हृदय रोग, रक्त विकार या उदर रोग की

संभावना बढ़ती है।

6. **षष्ठ भाव में सूर्य :** सभी रोग शोक का नाश कर प्रसन्नता बढ़ाता है। शत्रु पर विजय मिलती है। जातक धन धान्य संपन्न, निरोगी, प्रसन्नचित्त व सफल प्रयास होता है। समाज में मान प्रतिष्ठा मिलती है। कभी पत्नी गर्भधारण कर सकती है।

7. **सप्तम भाव में सूर्य :** अपमान, अपयश के कारण क्लेश होता है। निरर्थक यात्रा व दीनता के कारण दुख होता है। कभी बवासीर सरीखे गुदा संबंधी रोग की पीड़ा होती है। पुत्र व पत्नी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। पड़ौसियों से अनबन होती है। मन में उत्साह व उमंग का अभाव होता है। आजीविका संबंधी विवाद या वैर विरोध के कारण अप्रतिष्ठा मिलती है। देह में थकान सी बनी रहती है। सिर में दर्द होता है किसी चोट या दुर्घटना के कारण रक्त हानि होती है।

8. **अष्टम भाव में सूर्य :** राजकोप, रोग, भय, कलह क्लेश व मन में संताप होता है। अशुभ समाचार मिलने, शत्रुओं से विवाद विरोध व यात्रा में कष्ट के कारण, मन को पीड़ा होती है। कोई जातक अभागा होता है, राजकोप या दंड के कारण आर्थिक हानि होती है। व्यर्थ का विवाद चिन्ता बढ़ाता है। कभी जीवन को भय या पत्नी के कारण दुख बढ़ता है।

9. **नवम भाव में सूर्य :** प्रियजन से वियोग, दीनता, विपत्ति व उद्योग में असफलता के कारण दुख होता है। कभी मिथ्याकलंक के कारण, अपमान व अपयश का भागी हो कर, जातक आर्थिक हानि उठाता है। गुरुजन का कोप भाजन बनने से धर्म कार्य में बाधा व निराशा होती है। कभी, धन के लेन देन में, भ्रम या भ्रान्ति के कारण दुख व क्लेश मिलता है।

10. **दशम भाव में सूर्य :** जातक को अपने प्रयत्नों में सफलता मिलती है। किसी बड़े व महत्त्वपूर्ण कार्य की सिद्धि होने से यश व प्रसन्नता की वृद्धि होती है। मित्रों व राजकर्मचारियों का सहयोग मिलता है। राज दरबार में प्रतिष्ठा बढ़ती है। रोग व शत्रु का नाश होता है। भू संपदा की प्राप्ति होती है। कार्य क्षेत्र में उन्नति होती है। जातक उच्च पद व अधिकार पाता है।

11. **एकादश भाव में सूर्य :** रोग से छुटकारा, उच्च पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति, धन लाभ व निरोग देह का सुख मिलता है। घर में मंगल समारोह व शुभ प्रसंग के कारण प्रसन्नता बढ़ती है। जातक स्वर्ण आभूषण, भू संपदा व धन लाभ पाता है।

12. **द्वादश भाव में सूर्य :** धन हानि, मानसिक संताप व मित्रों से विरोध के कारण पीड़ा देता है। देह में रोग, मन में चिंता, धन का अपव्यय तथा दोष व दुर्बलता के कारण क्लेश भुगतना पड़ता है। कभी पत्नी या पुत्र के कारण धन नष्ट होता है। आर्थिक बाधा व कठिनाई से मन में भय व दुख बढ़ता है।

12.2 मतान्तर से सूर्य का गोचर

लग्न (चन्द्रमा)	स्वास्थ्य व सम्मान में कमी, प्रवास, परिश्रम, उदर रोग या धन हानि से मन में क्षोभ होता है।
द्वितीय भाव	धन सुख की हानि, नेत्र पीड़ा तथा ठगे जाने का भय होता है।
तृतीय भाव	बल पराक्रम व शौर्य में वृद्धि, धन संचय तथा स्थान लाभ अथवा शत्रु पर विजय का सुख मिलता है।
चतुर्थ भाव	भूमि भवन की चिन्ता, रोग वृद्धि, पारिवारिक सुख में कमी तथा मानसिक क्लेश होता है।
पंचम भाव	बुद्धि भ्रम, मोह की प्रबलता, विचारों की उलझन से चित्त क्षुब्ध और व्याकुल होता है।
षष्ठ भाव	विघ्न बाधा तथा रोग समाप्त होने से प्रसन्नता मिलती है। शत्रु को परास्त कर जातक सुख और सफलता पाता है।
सप्तम भाव	पत्नी से मतभेद या वैर विरोध होता है। गुप्त रोग, दीनता, मार्ग चिन्ता या अपमान और अवहेलना मिलने से मनुष्य दुःखी होता है।
अष्टम भाव	कलह, क्लेश, रोग अथवा राजमय से दुःख मिलता है।
नवम भाव	धन प्राप्ति में बाधा, आपदा, दैन्य या रोग के कारण जातक कष्ट पाता है।
दशम भाव	धन, मान, पद, प्रतिष्ठा या सत्ता लाभ पाने से सुख मिलता है।
एकादश भाव	उन्नति, ऐश्वर्य, लाभ तथा सम्मान पाने से प्रसन्नता होती है।
द्वादश भाव	व्यसन आदि पर व्यय होता है। कभी राजदंड अथवा बंधुओं का दुर्व्यवहार दुःख देता है।

टिप्पणी–सूर्य किसी भी राशि में लगभग एक मास तक रहता है तथा सभी द्वादश राशियों में मात्र एक वर्ष में भ्रमण कर लेता है। अनिष्ट फल तभी मिलतें है जब अशुभ दशा में पाप भुक्ति हो तथा सूर्य जिस राशि पर गोचर कर पाप फल दे रहा है वह राशि जन्म कुंडली तथा गोचर कुंडली में बहुत अधिक पाप पीड़ित हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि युति से वंचित हो।

12.3 नक्षत्र गोचर जन्म के समय चन्द्रमा के नक्षत्र (जन्म नक्षत्र) से गोचर सूर्य द्वारा नक्षत्रों में भ्रमण का फल निम्न प्रकार होता है।

(i) प्रथम नक्षत्र। (चेहरा) नाश।

(ii) 2, 3, 4, 5 (सिर) वैभव ऐश्वर्य।

(iii) 6, 7. 8, 9 (छाती) विजय, सफलता।

(iv) 10, 11, 12, 13 (दायां हाथ) धन लाभ।

(v) 14 से 19 (दोनों पैर) निर्धनता, अभाव दैन्य।

(vi) 20 से 23 (बायां हाथ) देह पीड़ा।

(vii) 24, 25 (दोनों नेत्र) लाभ प्राप्ति।

(viii) 26, 27 (गुप्त अंग)। मृत्यु सरीखा कष्ट।

●●●

अध्याय-13

गोचर चन्द्र फलम्

13. चन्द्रमा का गोचर फल

जन्म चन्द्र से प्रथम, तृतीय, षष्ठ, सप्तम, दशम व एकादश स्थान में गोचर का चंद्रमा होने से लाभ, स्वर्ण प्राप्ति, मित्र समागम, निर्मल बुद्धि तथा ब्राह्मण व देवताओं की भक्ति से जातक को सुख होता है। उक्त स्थान के अतिरिक्त गोचरवश चंद्रमा होने से धन हानि, वध, बन्धन, अग्नि भय, चोरभय, दुख व विद्रोह जन्य दुख होता है।

13.1 जन्म कालीन चन्द्र राशि से विभिन्न भाव गत गोचर चंद्र का फल

1. **प्रथम भाव में** गोचर चंद्रमा हो तो भाग्योदय होता है। जातक धन, वैभव सम्पन्न, सुखी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। वह कार्यदक्ष, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, धनी मानी तथा यशस्वी व्यक्ति होता है। **मंत्र उपासना के लिये ये उत्कृष्ट योग** माना जाता है।
2. **द्वितीय भाव में** गोचर चंद्रमा धन हानि, मानसिक क्लेश, अपयश, मिथ्या कलंक व रोग से कष्ट देता है। कभी निराशा, हताशा भय अथवा स्त्री पुत्र की चिन्ता भी उसे व्यथित करती है।
3. **तृतीय भाव में** गोचर चंद्रमा मन में उत्साह तथा उमंग, और महिला मित्रों से सुख सहयोग देता है। जातक न्यायपूर्ण व्यवहार, निर्भयतापूर्ण आचरण व वरिष्ठ अधिकारियों के सहयोग से सभी कार्यों में सफलता पाता है।
4. **चतुर्थ भाव में** गोचर चंद्रमा मानसिक संतुलन बिगाड़ कर राजकर्मचारियों का कोप भाजन बनाता है। जातक स्वयं ही अपना काम बिगाड़ लेता है। कभी दुष्कर्मों का भेद खुलने से बंधन का भय होता है। जातक अविनयी, कृतघ्न व क्रूरकर्मा होकर दुख व दारिद्रय पाता है।
5. **पंचम भाव** में गोचर चंद्रमा शोक की वृद्धि करता है। कभी वात व कफ जन्य पीड़ा, देह में आलस्य व प्रिय वस्तु या प्रियजन से बिछुड़ने का दुख भोगना पड़ता है। उदर पीड़ा या अपच का कष्ट होता है।

6. **षष्ठ भाव में** गोचर चंद्रमा जातक को स्वास्थ्य संबंधी सुख प्रदान करता है। ऐसा जातक आरोग्यवान, स्वस्थ, सबल, धनी, मानी, वैभव संपन्न तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। उसके चित्त में शान्ति रहती है। शत्रु भयभीत होकर संधि करने को व्याकुल रहते हैं। समाज में मान प्रतिष्ठा बढ़ती है।
7. **सप्तम भाव में** गोचर चंद्रमा, सुख व सौभाग्य की वृद्धि करता है। यश व प्रतिष्ठा की वृद्धि, धन लाभ तथा पत्नी व देह सुख की प्राप्ति से प्रसन्नता बढ़ती है। आजीविका क्षेत्र में भी लाभ होता है। नाना प्रकार के सुख वैभव जातक को सहज प्राप्त होते हैं।
8. **अष्टम भाव में** गोचर चंद्रमा अनिष्ट प्रद होता है। जातक दुर्बल, रोगी, दुखी, अजीर्ण या घुटनों के दर्द से पीड़ित होता है। उसको अच्छे भोजन का अभाव होता है। अनिष्ट या अशुभ समाचार मिलने से दुख बढ़ता है। व्यर्थ का वाद विवाद, हठधर्मिता या कभी अपनी ही भूल, से काम बिगड़ जाने का दुख हुआ करता है।
9. **नवम भाव में** गोचर चंद्रमा संतान से वैर विरोध, सुदूर देश की यात्रा, रोग, शोक अथवा विवाद के कारण कार्यनाश का दुख देता है। सभी कार्यो में विघ्न बाधा पड़ने से चिन्ता बढ़ती है। धन व प्रतिष्ठा की हानि होती है। कभी दूसरों की चाकरी भी करनी पड़ती है।
10. **दशम भाव में** गोचर चंद्रमा इष्ट सिद्धि या सफलता प्राप्ति का सूचक है। ऐसा जातक स्वस्थ देह, जाति बंधुओं का सहयोग व सुख पाने वाला सफल व्यक्ति होता है। जातक में गुण, दक्षता, श्रम व उत्साह की वृद्धि होने से समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है।
11. **एकादश भाव में** गोचर चंद्रमा जातक को धन लाभ, मानसिक सुख तथा उत्तम भोजन की प्रसन्नता देता है। मुकदमे तथा विवाद में शत्रु पर विजय मिलती है। स्त्रियों से सुख व अन्य सभी वैभव उसे सहज सुलभ होते हैं।
12. **द्वादश भाव में** गोचर चंद्रमा अपव्यय, मानसिक असुंतलन, अपमान, जाति बधुओं से वैमनस्य, आलस्य तथा अनिष्ट आशंका का भय तथा चित्त में व्यकुलता देता है। जातक चिन्तातुर, दुखी तथा व्यर्थ का वाद विवाद कर अपने कष्ट व भय को अनजाने में बढ़ाया करता है।

टिप्पणी–ज्योतिष प्रेमी अपनी चंद्र राशि को ध्यान में रख चंद्रमा के गोचर का लाभ उठाते हैं। चंद्र कुण्डली के द्वादश, अष्टम और नवम भाव में चंद्रमा का गोचर दुख व संताप बढ़ाता है। अतः सावधानीपूर्वक व्यर्थ के विवाद से बचें। मन और वाणी का संयम बनाए रखें।

13.2 चन्द्रमा का नक्षत्र गोचर

जन्म नक्षत्र से गोचर चंद्र की नक्षत्र दूरी जानें, फल निम्न प्रकार के होता हैं

नक्षत्र	अंग	परिणाम
(i) 1, 2	चेहरा	भय व क्लेश
(ii) 3 से 6 तक	सिर	स्वास्थ्य व सुख
(iii) 7, 8	पीठ	प्रतियोगिता स्वर्धा में विजय, सफलता
(iv) 9, 10	दोनों नेत्र	धन लाभ
(v) 11 से 15 तक	ह्रदय	हर्ष, उल्लास, आत्म सुख
(vi) 16 से 18 तक	बायां हाथ	झगड़ा, वैर विरोध
(vii) 19 से 24 तक	दोनों पैर	यात्रा, पर्यटन
(viii) 25 से 27 तक	दायां हाथ	धन लाभ

●●●

अध्याय–14

गोचर भौम फलम्

14. मंगल का गोचर फल

जन्म चंद्र राशि से 3, 6, 11 में गोचरवश मंगल होने से स्वर्ण, गौ, भूमि तथा वस्त्र का लाभ होता है। आरोग्य लाभ, राजकृपा शत्रुनाश तथा विविध सुखों की प्राप्ति होती है। उक्त स्थानों के अतिरिक्त मंगल की गोचर स्थिति, विदेश भ्रमण, रोग तथा मित्रजन से वैमनस्य देकर दुख बढ़ाती है।

14.1 जन्मकालीन चंद्र राशि से विभिन्न भाव गत मंगल का गोचर फल

1. **प्रथम भाव** में मंगल के गोचर से ज्वर अथवा तेज धार के हथियार से लगे घाव की पीड़ा, पत्नी व पुत्र से वैमनस्य तथा भूत प्रेत या दुष्टजनों के कारण पीड़ा होती है। कभी जातक गुप्त चिन्ता से मन में घुटन का अनुभव करता है। कभी विष, अग्नि, पित्त दोष, लड़ाई झगड़ा अथवा शत्रु जनित बाधा के कारण कष्ट व क्लेश होता है।
2. **द्वितीय भाव** में मंगल से कटु भाषण, झगड़ा, भय व धन हानि होती है। देहबल की कमी, दुख, कार्यनाश तथा दुष्टजन की संगति से कलंक व भय मिलता है। कभी कुटुंब में चिन्ता परेशानी होती है, धननाश, शस्त्रास्त्र से पीड़ा व छलकपट के कारण हानि व क्लेश मिलता है।
3. **तृतीय भाव** में मंगल से धन, सुख वैभव की प्राप्ति, मनोकामना सिद्धि, वस्त्राभूषण का लाभ तथा कार्य सिद्धि जन्य सुख मिलते हैं। कार्यक्षेत्र में उन्नति, आर्थिक विकास, शत्रुजय, सफलता तथा आनन्द की प्राप्ति होती है।
4. **चतुर्थ भाव** में मंगल से स्थान हानि (घर या नौकरी छूटे) रोग तथा बंधु वियोग का दुख मिलता है। जातक भयभीत, अभागा, क्रूर, बांधव द्वेषी, रोग व अर्थाभाव से पीड़ित होता है। दुष्टजन की संगति के कारण दंड व अपयश का भागी बनता है। अनेक प्रकार की विघ्न बाधाएं प्राप्त होती हैं। राजभय या शस्त्राघात का दुख मिलता है।
5. **पंचम भाव** में मंगल से अकारण भय व चिन्ता, संतान कष्ट, मानसिक

उद्विग्नता, स्वजन विरोध व अनैतिक या दुष्ट आचरण से पीड़ा होती है। जातक निर्बल दुखी व रोग ग्रस्त होता है। मन मस्तिष्क विचार नहीं कर पाता तो कोई जातक रति सुख लोभी होता है। कभी छलकपट या चोरी से धन नष्ट होता है।

6. **षष्ठ भाव** में मंगल शत्रुओं से कलह या वैर विरोध समाप्त कराता है। रोग शान्त होता है, धनलाभ व सभी प्रयासों में सफलता मिलती है। जातक धन, धान्य, वस्त्राभूषण, सुख वैभव तथा यश पाता है। वह उदार दाता, दास दासियों का सुख पाने वाला, स्वस्थ देह तथा निर्बाध लाभ पाने वाला होता है। कभी अनार्जित, या चोरों से भी, धन लाभ होता है।

7. **सप्तम भाव** में मंगल का गोचर नेत्र रोग, उदर रोग अथवा पत्नी से मनमुटाव देता है। जातक को स्वजन से कष्ट मिलता है। अन्न व वस्त्र का अभाव क्लेश बढ़ाता है। कटु व अशिष्ट भाषा का प्रयोग, पुत्र व भ्रातृजन से वैर विरोध बढ़ाता है। जातक भाइयों की संतान का कोपभाजन बनता है। कभी स्त्रियों के कारण अपमान व अपयश मिलता है। बहुधा वह सहज विश्वास के कारण **धोखा** खाता है। पत्नी से विवाद, नेत्र रोग, पित्त दोष या कार्यहानि का भय दुख व चिन्ता बढ़ाता है।

8. **अष्टम भाव** में मंगल से जातक खांसी या श्वांस रोग से पीड़ित हो कर व्यर्थ ही प्रवास संबंधी कष्ट झेलता है। कभी अपमान, अवमानना या पद भ्रष्ट होने से व्यथित होता है। धन संबंधी अभाव, रोग या आपदा से उसे क्लेश होता है। जातक ज्वर, चोट या घाव की पीड़ा, तथा धन या मान प्रतिष्ठा की हानि से दुख पाता है।

9. **नवम भाव** में मंगल से जातक अन्न व वस्त्र का अभाव पाता है। देह दुर्बल व पीड़ा युक्त होती है। पद प्रतिष्ठा में कमी तथा व्यर्थ का विरोध, दुख बढ़ाता है। कभी धन के लेन देन में, गड़बड़ी तथा अपमान व अपयश होता है। जातक ईर्ष्या व द्वेष की अग्नि में जलता है। अपना कार्य सुचारू रूप से कर पाने में वह अक्षम होता है। दीनता, दुर्बलता, धीमी गति, अर्थाभाव, या धातु क्षय उसके दुख के मूल कारण बनते हैं।

10. **दशम भाव** में मंगल से कार्य में विघ्न बाधा, अतिश्रम व दुश्चेष्टा के कारण कार्यनाश की संभावना बढ़ती हैं। जातक दुर्बल देह, रोग पीड़ित क्लेशयुक्त व कार्य साधन हेतु, नित्य भ्रमणशील रहकर, प्रवासजन्य दुख पाता है। कभी दुष्ट लोगों की संगति भी कपट से धन नाश का कारण बनती है।

11.. **एकादश भाव** में मंगल के गोचर वश आने पर स्वास्थ्य, सुख, धन संपदा व

वैभव प्रदान करता है। ऐसा जातक साहसी, पराक्रमी व सभी कार्यों में सिद्धि पाने वाला होता है। वह मित्रों के सहयोग से नाना प्रकार के **सुख व सफलता** पाता है। धन, आरोग्य, भू संपदा व सुख प्राप्ति के लिये यह एक श्रेष्ठ योग है।

12. **द्वादश भाव** में मंगल का गोचर रोग, चिन्ता, उद्वेग व अपव्यय से धन नाश करता है। जातक बंधु बांधवों का द्वेषी, देह कष्ट पाने वाला या व्यर्थ ही प्रवास संबंधी कष्ट झेलने वाला होता है। कभी अपव्यय व राज कर्मचारियों से वैमनस्य के कारण जातक आर्थिक हानि उठाता है। द्वादश भाव का वक्री मंगल राजदंड अथवा राजकोप का भागी बना कर दुख देता है।

14.2 मंगल का नक्षत्र गोचर

वक्त्रे द्वे मरणं करोत्य व निजः षट् पादयो र्विग्रहं
क्रोडे त्रीणि जयं चतुर्विधनत वामे करे
मस्तके द्वे लाभं, चतुरननेऽधिक भयं क्षेमं करे दक्षिणे
वाद्विर्द्वेनयने विदेशगमनं, चक्रे स्वजन्मर्क्षतः।।

(फलदीपिका गोचरफल 26:37)

मंगल गोचर वश जिस नक्षत्र में भ्रमण करता हो जन्म नक्षत्र से गोचर नक्षत्र की दूरी का फल निम्न प्रकार होता है :

	नक्षत्र	अंग	परिणाम
पहले दो	1,2	चेहरा	मृत्यु या भंयकर आपदा
फिर छह	3 से 8 तक	दोनों पैर	विग्रह, मतभेद, झगड़ा
उसके बाद तीन	9 से 11 तक	बायां हाथ निर्धनता	आर्थिक अभाव,
फिर दो	16,17	मस्तक (सिर)	लाभ और सुख
इसके बाद चार	18 से 21 तक	चेहरा	महान भय या संकट
पुनः चार	22 से 25 तक	दायां हाथ	स्वास्थ्य और सुख
इसके बाद दो	26,27	दोनों नेत्र	विदेश यात्रा

●●●

अध्याय–15

गोचर बुध फलम्

15. बुध का गोचर फल

जन्म चंद्र राशि से 2, 4, 6, 8, 10, 11 वें स्थान पर बुध की गोचर स्थिति *धन लाभ, मन में प्रसन्नता, सुख, सम्मान, सौभाग्य व लाभ वृद्धि देती है।* उक्त स्थानों को छोड़कर अन्य स्थानों में स्थित बुध रोग, शोक, देह पीड़ा, भाई बंधुओं से विरोध, मानसिक क्लेश, निन्दा व अपयश, शत्रु भय तथा धन नाश करता है।

15.1 जन्म कालीन चंद्र राशि से विभिन्न भावगत बुध का गोचर फल

1. **प्रथम भाव में बुध** का गोचर धन हानि देता है। जातक मानसिक संतुलन खोकर स्वजन से वैर विरोध करता है। दुष्ट जन की संगति, कुसमय में भोजन तथा मुकद्दमे बाजी से जातक कष्ट पाता है। ऐसा जातक पित्त दोष से पीड़ित, देह में जलन की अनुभूति पाने वाला, साहस व पराक्रम में कमी पाने वाला तथा अन्यजन का सेवक या दूत होता है। कभी जातक का कोई मित्र ही शत्रुवत व्यवहार कर दुख की वृद्धि करता है।
2. **द्वितीय भाव** में गोचर वश बुध का संचार, रत्नादि से धन लाभ देता है। जातक, स्वस्थ सुखी व सज्जनों की संगति में रहने वाला यशस्वी व सम्पन्न व्यक्ति होता है। चंद्रमा से द्वितीय भाव में गोचर वश बुध का संचार धन वैभव, सुख सुविधा व संपन्नता की वृद्धि करता है।
3. **तृतीय भाव** में बुध शत्रुओं से भय व त्रास देता है। जातक राजकोप, स्वजन विरोध, स्मृतिनाश व धन हानि से कष्ट पाता है। कभी देह में दुर्बलता, रोग, पीड़ा, व्यर्थ प्रवास, शत्रु वृद्धि, भय व पत्नी संबंधी चिन्ता से मानसिक क्लेश बढ़ता है।
4. **चतुर्थ भाव** में बुध का गोचर मन व माता को सुख देता है। जातक धन धान्य का लाभ पाता है। उसे सभी कार्यों में सफलता मिलती है। जातक स्त्री व धन संबंधी सुख पाता है। उसके वचनों को आदर मिलता है। जातक को, दोष व त्रुटियों के कारण सफलता नहीं मिल पाती या, बहुत प्रयास करने पर ही सफलता मिला करती है।

5. **पंचम भाव** में बुध का गोचर पत्नी व पुत्र से मतभेद देता है। कभी आवंछित विरोध, रोग, दोष या झगड़े के कारण जातक मानसिक संताप पाता है। ऐसा जातक दीन हीन होकर मौन व्रत धारण करता है। कभी भय, कायरता अथवा दुर्बलता के कारण दया का पात्र बनता है।
6. **षष्ठ भाव** में बुध का गोचर धन धान्य, वस्त्राभूषण, विद्या लाभ, सुख वैभव तथा विजय सुख देता है। उसका सुख निरन्तर बढ़ता है। वह विद्वान, कार्यकुशल, वैभव संपन्न, वाहन सुख पाने वाला तथा उच्च अधिकार सम्पन्न यशस्वी व्यक्ति होता है।
7. **सप्तम भाव** में बुध का गोचर नाहक वैर विरोध तथा झगड़ा कराता है। ऐसा जातक अभाव ग्रस्त, दीन दुखी, अपने स्वामी का कोप भाजन तथा अभागा व्यक्ति होता है। कभी बहुत अधिक प्रयास करने पर भी सफलता नहीं मिल पाती। पुत्र व पत्नी से नाहक मन मुटाव होता है। जातक को व्यर्थ ही अपमान व अवहेलना का कष्ट झेलना पड़ता है।
8. **अष्टम भाव** में बुध रोग शोक व चिन्ता देता है। समय पर भोजन नहीं मिलता, जातक कपट या आडंबर पूर्ण आचरण में फंसकर भयत्रस्त रहता है। मतान्तर से जातक आजीविका के क्षेत्र में उत्साह पूर्वक परिश्रम कर लाभ पाता है। जातक को विद्वानों का सहयोग मिलता है। यवनाचार्य के अनुसार, अष्टमस्थ बुध कार्य कुशलता की वृद्धि कर धन धान्य की वृद्धि तथा यश व सफलता देता है।
9. **नवम भाव** में बुध का संचार आलस्य, अपयश, कार्य हानि व परपीड़ा सरीखे दोष देता है। जातक को प्रवास में बाधा आती है। कभी, देह की दुर्बलता या रोग के कारण, कार्य हानि तथा धन व प्रतिष्ठा की क्षति होती है। ऐसा जातक विपत्तिग्रस्त, दीन हीन, स्वजन वियोगी होकर अपने प्रयत्नों में असफलता पाता है।
10. **दशम भाँव** में बुध कार्य सिद्धि व सफलता जनित सुख देता है। जातक तीर्थाटन प्रेमी, विद्वान व धन वैभव संपन्न होता है। ऐसा जातक शत्रुओं पर विजय पाने वाला, धनी, मानी व यशस्वी होता है।
11. **एकादश भाव** में बुध का गोचर पद प्रतिष्ठा व उच्च अधिकार दिलाता है। जातक रोग से मुक्त होकर स्वास्थ्य लाभ पाने वाला, सुख सुविधा सपन्न, स्वजन का स्नेह व सहयोग पाने वाला तथा सुखी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। वह उत्कृष्ट विद्वान, कार्य कुशल, प्रगतिशील परम प्रतापी व राजा सरीखा प्रतिष्ठित होता है।

12. **द्वादश भाव** में बुध का गोचर क्लेश, रोग, शोक अपव्यय व मित्रों के असहयोग के कारण पीड़ा देता है। ऐसा जातक कार्य क्षेत्र में हानि पाता है। मुकद्दमेबाजी में धन का अपव्यय होने से अर्थसंकट होता है। कभी कपट जाल में फंस कर जातक अपना धन गंवाता है; तो कभी दुष्ट स्त्रियों की संगति धन व यश को नष्ट करती है।

15.2 बुध का नक्षत्र गोचर

बुध, गुरु तथा शुक्र का नक्षत्र गोचर एक सरीखे परिणाम दिया करता है। बुध के नक्षत्र गोचर का फल कृपया 17.2 पर देखें।

●●●

अध्याय-16

गोचर गुरु फलम्

16. गुरु का गोचर फल

जन्म चन्द्र राशि से 2, 5, 7, 9, 11 वें भाव में गोचर वश गुरु का संचार मान प्रतिष्ठा की वृद्धि, बुद्धि, बल, कार्यकुशलता, सुख संपत्ति, ऐश्वर्य प्राप्ति तथा क्रय विक्रय से लाभ प्रदान करता है। उक्त स्थानों से अन्यत्र गुरु की स्थिति मित्रों से वैर विरोध, व्याधि व विदेश भ्रमण दिया करती है।

16.1 जन्मकालीन चन्द्र राशि से विभिन्न भाव गत गुरु का गोचर

1. **प्रथम भाव** में गुरु का गोचर शत्रुता, स्थान भंग तथा धन हानि करता है। कभी राजकोप से प्रतिष्ठा में कमी होती है। जातक मानसिक संतुलन खोकर भयत्रस्त रहता है। कभी अपने कार्यों से शत्रुओं की वृद्धि करता है। मतान्तर से जातक रोगग्रस्त, स्थानच्युत व अपमानित होता है। मंत्रेश्वर के अनुसार जातक देश छोड़कर बाहर जाता है व अर्थाभाव के कारण बहुत कष्ट व क्लेश पाता है।
2. **द्वितीय भाव** में गुरु का गोचर जातक की वाणी को प्रभावशाली बनाता है। उसे धन व कुटुम्ब का सुख मिलता है। वाणी से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होती है। जातक मान प्रतिष्ठा, धन सुख व सौभाग्य पाता है। कुटुम्ब में मांगलिक उत्सव होता है। जातक परोपकारी व दानी होता है।
3. **तृतीय भाव** में गुरु का गोचर मानसिक संताप, बन्धुजन से वैर विरोध, दुख दारिद्रय, देह पीड़ा, रोग, कलह व कार्यनाश जनित पीड़ा देता है। कभी अपयश, मिथ्या कलंक व निराशा से व्यथा बढ़ती है। स्थाननाश, अप्रतिष्ठा, इष्टजन वियोग, रोग व कार्य में बाधा मिलती है।
4. **चतुर्थ भाव** में गुरु का गोचर अपने बंधुओं से दुख, दीनता व चौपायों से भय दिलाता है। उसकी बुद्धि अस्थिर व चंचल होती है। धन वैभव व बल की हानि होने से दूसरों से सहायता मांगनी पड़ती है। कभी झगड़ा या अर्थाभाव के कारण दूर देश में रहने की विवशता होती है। परिवार में किसी प्रियजन का वियोग भी सहना पड़ता है। कभी माता का कोप भाजन बनकर

जातक बनवासी सरीखा रहता है।

5. **पंचम भाव** में गुरु राज कृपा, सज्जनों का स्नेहपूर्ण सहयोग व संतान सुख प्रदान करता है। जातक के प्रयास सफल होते है। वह धन लाभ, सुख वैभव व यश पाता है। स्वजन का स्नेह सुख की वृद्धि करता है। जातक विद्वान, उच्च पद प्रतिष्ठा पाने वाला, संतान सुखी, धन वैभव संपन्न व शत्रु पर विजय पाने वाला राजा का कृपापात्र होता है।

6. **षष्ठभाव** में गुरु रोग, शत्रु भय व चचेरे भाइयों से कष्ट व पीड़ा दिलाता है। पत्नी व पुत्र से मतभेद होता है। कभी बंधु बांधव से लड़ाई झगडा या मुकदमें बाजी होती है। राजकोप, अग्नि अथवा चोर से धन नाश की संभावना बढ़ती है। जातक ऋण, रोग व शत्रु के कारण कष्ट आता है। जातक के, पाप पूर्ण आचरण से, सभी कार्यों में विघ्न बाधा आती है तो कभी मन में क्लेश बढ़ता है।

7. **सप्तम भाव** में गुरु राज कृपा या उच्चाधिकरियों के सहयोग से लाभ की वृद्धि करता है। जातक स्वस्थ, उदार व चरित्रवान होता है। जातक धीर, वीर, गंभीर तथा अभीष्ट सिद्धि पाने वाला होता है। महत्त्वपूर्ण यात्रा के कारण धन लाभ व मान प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। पत्नी व पुत्र जन्य सुख बढ़ता है। सभी प्रकार के शुभ परिणाम उसे सहज मिलते हैं।

८. **अष्टम भाव** में गुरु का गोचर प्रवास संबंधी क्लेश, धन नाश तथा विविध प्रकार के कष्ट दिया करता है। ऐसा जातक अग्नि, चोर या राजकोप से धन हानि पाता है। कोई जातक क्रूर, निष्ठुर, दुस्साहसी व हठी होता है तथा राजदंड व अपयश का भागी बनता है। पिता या स्वयं जातक के लिये ये अवधि कष्टदायी होती है।

9. **नवम भाव** में गुरु का गोचर सर्वकार्य सिद्धि, सौभाग्य वृद्धि सफलता व संपन्नता देता है। ऐसा जातक कुलधर्म का पालन करने वाला सदाचार संपन्न, धनी मानी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। वह श्रेष्ठ स्त्रियों का सुख पाता है। जातक उदार, विनम्र, दयालु व परोपकारी होता है। वह राज्य के उच्च अधिकारियों व धनी मानी व्यक्तियों का स्नेह पात्र होता है।

10. **दशम भाव** में गुरु का गोचर धन धान्य व कार्य की हानि करता है। कार्य क्षेत्र में हानि व अवनति होती है। व्यर्थ के प्रवास का क्लेश व स्वजन से अपमान झेलना पड़ता है। कभी भूमि व रत्नादि का नाश व वक्षस्थल के रोग (टीबी, कास या श्वांस रोग) का भय होता है। जातक मानसिक शांति पाने के लिये तीर्थयात्रा करता है व पुण्य का भागी होता है।

11. **एकादश भाव** में गुरु का गोचर पद प्रतिष्ठा की वृद्धि कर संतान सुख देता है। सभी क्षेत्रों में जातक लाभ व सफलता पाता है। शत्रुओं का नाश होता है। जातक रत्नाभूषण, भूसंपदा व सुख सामग्री पाता है। परिवार में मंगल कार्य से प्रसन्नता बढ़ती है। जातक परोपकार में रूचि लेता है तथा संभ्रान्त व्यक्तियों के मध्य रहता है। मतान्तर से यह अवधि **पुनर्विवाह** के लिये शुभ होती है।

12. **द्वादश भाव** में गुरु का गोचर, भय-चिन्ता उद्वेग व अर्थाभाव का कष्ट देता है। जातक पद प्रतिष्ठा में कमी पाता है। पशु धन की हानि से अर्थाभाव या अर्थ संकट झेलता है। कभी दुष्ट लोगों से लेन देन में कपट के कारण हानि उठानी पड़ती है। अनायास विपदाग्रस्त होने से प्राण संकट उपस्थित होता है। मतान्तर से धन शुभ कार्यो में व्यय करने से वह पुण्य लाभ पाता है।

16.2 गुरु का नक्षत्र गोचर

बुध, गुरु, शुक्र के नक्षत्र गोचर का फल एक समान होता है। कृपया गुरु का नक्षत्र गोचर फल अध्याय 17 में शुक्र के नक्षत्र गोचर फल में देखें।

●●●

अध्याय–17

गोचर शुक्र फलम्

17. शुक्र का गोचर फल

जन्म चंद्रमा से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12वें भाव में शुक्र आने पर जातक को सज्जन व्यक्तियों से समागम व पुत्र सुख की प्राप्ति होती है। उक्त स्थान के अतिरिक्त 6, 7, 10 भाव में गोचरवश शुक्र की स्थिति रोग, शोक, असफलता, विपत्ति व महिलाओं से वैमनस्य देती है।

17.1 जन्मकालीन चंद्र राशि से विभिन्न भावों में गोचर शुक्र का फल विचार

1. **प्रथम भाव** में शुक्र का गोचर सभी प्रकार के सुख, वैभव व भोगादि की प्राप्ति कराता है। सभी कार्यों में सफलता, महिलाओं से सुख, धन लाभ, लक्ष्मी कृपा, तथा स्वर्णाभूषण की प्राप्ति से प्रसन्नता होती है। दीन दुखियों की सहायता का उसे पुण्य लाभ मिलता है।
2. **द्वितीय भाव** में शुक्र स्वास्थ्य लाभ, कुटुम्ब का सुख तथा महिलाओं से बातचीत तथा धन व वस्त्र का लाभ देता है। संगीत में जातक की सहज रूचि होती है। उसे उत्तम उपहार मिलते हैं। धन लाभ के लिये ये उत्तम योग है।
3. **तृतीय भाव** में शुक्र धन वृद्धि, वैभव सामग्री या उपकरण की प्राप्ति, मान वृद्धि, स्त्री पुत्रादि का सुख, विद्या प्राप्ति व मित्रों का सुख देता है। जातक को शुभ समाचार मिलते हैं तथा कभी मंगल उत्सव के लिये शुभ और आनन्दप्रद यात्रा होती है।
4. **चतुर्थ भाव** में शुक्र पारिवारिक सुख में वृद्धि तथा मित्रों का सहयोग देता है। जाति बंधुओं से मान प्रतिष्ठा बढ़ती है। स्त्री व पुत्र का उसे श्रेष्ठ सुख मिलता है। उत्कृष्ट विचार व बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यो से प्रशंसा व प्रसिद्धि मिलती है।
5. **पंचम भाव** में शुक्र का गोचर पुत्र प्राप्ति या संतान सुख का योग देता है। जातक धन धान्य का लाभ, सुन्दर भोजन का सुख व दासियों से लाभ पाता है। कार्यक्षेत्र में प्रगति होती है। अनेक प्रकार के सुख मिलते हैं।

6. **षष्ठ भाव** में शुक्र विपत्ति व कष्ट बढ़ाता है। जाति बंधुओं से शत्रुता, देह पीड़ा तथा पत्नी से अनबन होती है। ऐसा जातक कभी दुष्ट प्रकृति के कारण अपने कार्य की हानि कर धन संपदा गंवा बैठता है। ईर्ष्या या डाह के कारण कष्ट पाता है।
7. **सप्तम भाव** में शुक्र स्त्री के कारण पीड़ा, क्लेश देता है। ऐसा जातक उद्विग्न मन, संताप व पीड़ा युक्त होता है। कभी यौन रोग अथवा रतिज रोग की पीड़ा झेलनी पड़ती है। पत्नी या पुत्र के स्वास्थ्य की चिन्ता होती है। दुष्ट लोगों की संगति, अर्थाभाव व अपयश देती है। कभी ऋण भार से जातक कष्ट पाता है।
8. **अष्टम भाव** में शुक्र के गोचर से रोग, शोक से मुक्ति, तथा मित्र व बंधुओं के समागम की प्रसन्नता होती है। जातक राजकृपा पाता है। धन लाभ, विद्या प्राप्ति व महिलाओं के सहयोग से उसके सुख की वृद्धि होती है। जातक मान व प्रतिष्ठा पाता है।
9. **नवम भाव** में शुक्र का गोचर सुख देता है। जातक स्वस्थ, सबल, सदाचार परायण, गुरुजन का भक्त व धार्मिक प्रवृति का होता है। वह तीर्थाटन करता है। भगवत्कृपा से उसकी सभी इच्छाएं पूरी होती हैं। वह वस्त्राभूषण, स्वर्णरत्न तथा पत्नी जन्य सुख पाता है।
10. **दशम भाव** में शुक्र कलह क्लेश व पीड़ा देता है। ऐसा जातक उद्विग्न मन, अस्थिरमति, मिथ्याप्रपंची व अपव्ययी होता है। शत्रु जनित बाधा से कठिनाई बढ़ती है। पत्नी से अनबन होती है। परायी स्त्री में आसक्ति अपमान व अपयश देती है। आजीविका क्षेत्र में विशेष प्रगति नहीं हो पाती किंतु साख बढ़ती है।
11. **एकादशभाव** में शुक्र का गोचर प्रतिभा व प्रतिष्ठा है। जातक श्रेष्ठ भोजन व उत्तम मिष्ठान्न पाता है। उसे सभी प्रयासों में सफलता मिलती है। जातक बहुत अधिक धन लाभ व वैभव पाता है। सुन्दर स्त्रियों के सहवास का श्रेष्ठ सुख उसे सुलभ होता है।
12. **द्वादश भाव** में शुक्र का गोचर धन लाभ तथा सुख वैभव की वृद्धि करता है। जातक उत्तम भोग सामग्री, धन वैभव व शैय्या सुख पाता है। कोई जातक शयन संबंधी सामग्री व उपकरण के व्यापार से धन लाभ पाता है।

17.2 बुध गुरु तथा शुक्र का नक्षत्र गोचर

मर्हि न त्रीणि, मुखे त्रयं च करयोः षट पंच कुक्षौ,
लिंगे द्वे, द्वि चतुष्टयं चरणयोः प्राप्ते अमरेन्द्रर्चितः।

शोकं लाभं अनर्थ निचयं नाशं प्रतिष्ठा तथा
दद्यादात्मदिनात्तथैव भगुजस्त द्वद् बुधोऽपि क्रमात्।।

(फल दीपिका 26:38)

बुध, गुरु या शुक्र जिस नक्षत्र पर गोचर करें उसकी जन्म नक्षत्र से दूरी निम्न प्रकार फल देती है

	नक्षत्र	अंग	परिणाम
पहले तीन नक्षत्र	1 से 3 तक	सिर में	शोक, विषाद
फिर तीन नक्षत्र	4 से 6 तक	मुख (चेहरे) में	लाभ प्राप्ति
इसके बाद छह नक्षत्र	7 से 12 तक	दोनों हाथों में	अनर्थ, असफलता
पुनः पांच नक्षत्र	13 से 17 तक	कुक्षि में	अन्न और धान्य संग्रह
फिर दो नक्षत्र	18,19	गुह्य स्थान	नाश, असफलता
अन्त में आठ नक्षत्र	20 से 27 तक	दानों पैरों में चार चार चार नक्षत्र	धन, मान, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति

●●●

अध्याय-18
गोचर शनि फलम्

18. शनि का गोचर फल

जन्म के समय की चंद्र राशि से 3, 6, 11वें भाव में शनि आने पर मित्रजनों से सुख, शत्रु पर विजय, सुख संपत्ति की वृद्धि व मनोरथ सिद्धि से सुख मिलता है। यदि शनि उक्त स्थानों को छोड़कर अन्य स्थानों में हो तो स्वजन से कलह, धन नाश तथा प्रयास में असफलता देता है।

18.1 जन्म कालीन चंद्र राशि से द्वादश भावों में गोचर शनि का फल

1. **प्रथम भाव** में शनि अथवा चन्द्र राशि मे शनि रोग, पीड़ा या किसी मृत्यु का अशौच देता है। जातक बल, पराक्रम व प्रताप की कमी पाने वाला तथा दीन दुखी व्यक्ति होता है। सभी प्रकार के पाप ताप दोष व दुर्बलताएं मानों उसे घेर लेते हैं। मन में उद्विग्नता, चंचलता व चिन्ता बढ़ती है। विद्वानों ने इसे शनि की साढ़े साती का मध्य भाग या हृदय पर शनि माना है।
2. **द्वितीय भाव** में शनि का संचार दुख व क्लेश देता है। जातक नाहक वैर विरोध कर अपने कार्य का नाश करता है। कभी निरर्थक प्रवास का क्लेश पाता है। कोई जातक जाति बंधुओं से घृणा व तिरस्कार पाता है। मन में दुश्चिंता होती है। कभी धन या प्रिय वस्तु नष्ट होने से वह दुख पाता है। उच्चाधिकारियों तथा पत्नी व पुत्र से मतभेद के कारण क्लेश तथा दुख होता है। कभी परिवार व कुटुम्ब की शंति भंग होती है। धन का अपव्यय व स्वजन से व्यर्थ ही वैर विरोध के कारण जातक कष्ट पाता है। यह स्थिति संतान को कष्ट व धन संपदा की हानि दिया करती है। इसे साढ़े साती की अन्तिम ढैया या पैरों पर शनि माना गया है।
3. **तृतीय भाव** में शनि सभी प्रयासों में सफलता, मन में उत्साह, उमंग व सुख शान्ति देता है। जातक स्वस्थ सबल व भूमि भवन का लाभ पाने वाला होता है। उसे शत्रुओं पर विजय मिलती है। कभी नये काम धन्धे शुरू कर धन लाभ व सुख पाता है। संतान सुख व दांपत्य सुख के लिये ये उत्तम स्थिति है। कभी भाइयों को रोग पीड़ा अथवा स्वयं जातक को कर्ण रोग से कष्ट

होता है। बहुधा जातक स्थान लाभ, धनलाभ तथा कभी नये रोजगार का लाभ पाता है।

4. **चतुर्थ भाव** में शनि गोचर वश अशुभ फल देता है। स्त्री सुख का नाश, धन नाश, बंधुओं से मतभेद व कलह से जातक को कष्ट होता है। ऐसा जातक रोगग्रस्त, वातशूल से पीड़ित, भय व अवसाद युक्त तथा अपने स्थान की हानि पाने वाला होता है। वह पत्नी सुख तथा धन व जाति बंधुओं के स्नेह व सहयोग में कमी पाता है। कभी मूर्खता पूर्ण कार्य से अपने सुख को नष्ट कर रोग शोक पाता है। कोई जातक परिवार में किसी की मृत्यु के कारण क्लेश पाता है। इसको शनि की ढैया भी कहते हैं।
5. **पंचम भाव** में शनि का गोचर वश संचार बुद्धिनाश, मन में व्याकुलता, संतान को कष्ट तथा धन की हानि से दुख व संताप देता है। जातक स्वजन से वैर विरोध कर मुकद्दमेबाजी से कष्ट पाता है। वह मानसिक संतुलन खो कर अपने कार्य की हानि करता है। कभी दुष्ट स्त्रियों के संग अथवा श्रमिक संगठन के कारण बाधा व कठिनाई होती है। कोई जातक हठी, स्वार्थी, लोभी व मूर्खता पूर्ण कार्य करने वाला असफल व दुखी व्यक्ति होता है। कभी प्रसव हानि या गर्भपात का दुख होता है। बहुधा जातक दोष व अवगुणों से ग्रस्त हो जाता है। कुछ विद्वानों ने इसे "कंटक शनि" कहा है।
6. **षष्ठ भाव** में शनि का संचार शत्रुओं पर विजय व नाना प्रकार के सुख देता है। जातक धन धान्य की वृद्धि तथा कार्य क्षेत्र में सफलता पाता है। उसे स्वजन व संबंधियों का सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक स्वस्थ, रोग मुक्त व सुखी व्यक्ति होता है।
7. **सप्तम भाव** में शनि का संचार निरर्थक कष्ट प्रद यात्राएं, पत्नी को रोग शोक व अनेक प्रकार के भय दिया करता है। ऐसा जातक रोग, शोक, धन हानि तथा प्रवास पीड़ा से मानसिक क्लेश पाता है। कोई जातक यौनरोग से भी पीड़ित होता है। कभी अनचाहे दूरस्थ स्थानों की यात्रा करनी पड़ती है। ऐसा जातक निष्ठुर, क्रूरकर्मी तथा शत्रु अथवा द्यूत क्रीड़ा में धन नष्ट करने वाला होता है।
8. **अष्टम भाव** में शनि का गोचर वश संचार पशु, मित्र, संतान या धन के कारण कष्ट देता है। कभी शरीर में विषम रोग होने से अधिक कष्ट होता है। जातक अपने कार्य में विघ्न बाधा पाता है। धन की कमी, देह में व्याधिजन्य पीड़ा तथा असमय मृत्यु की संभावना क्लेश दिया करती है। कभी संतान या संबंधियों से पीड़ा मिलती है। जातक मिथ्या प्रपंच, कपट व कुसंगति में

फंसकर, दूसरों को ठगने के प्रयास में अपमान व अपयश पाता है। कभी निकट संबंधी की मृत्यु भी क्लेश देती है। इसे शनि की ढैय्या भी कहते हैं।

9. **नवम भाव** में शनि का गोचर धर्म कार्य में विघ्न बाधा, पिता तुल्य गुरुजन का वियोग व दुख दुर्भाग्य एवं दारिद्रय देता है। कोई जातक रोग शोक से घिर कर महान क्लेश पाता है। ऐसा जातक पुत्र व पत्नी की ओर से दुख व क्लेश पाता है। कभी, जातक, विद्रोह या वैर विरोध के कारण, अनीतिपूर्ण कुत्सित कार्यो में रूचि लेता है। बहुधा ऐसा जातक अर्थाभाव से पीड़ित एक दुखी व्यक्ति होता है।
10. **दशम भाव** में शनि का गोचर आजीविका नाश, मानभंग, अपयश व धन हानि देता है। बहुधा जातक, व्यापार में अपव्यय व आर्थिक हानि देने वाले, कार्यों को करने से अर्थसंकट में फंस जाता है। किसी दुष्कर्म से अपमान व अपयश भी पाता है। ऐसा जातक उद्विग्न मन, संतप्त हृदय व पाप कर्म करने वाला तथा व्यापार व्यवसाय में बाधा व हानि पाने वाला दुखी व्यक्ति होता है। कोई जातक, दुष्ट स्त्रियों की संगति के कारण, अपमानित व कलंकित होता है। बहुधा उसकी प्रतिष्ठा व यश को बट्टा लगने का भय हुआ करता है।
11. **एकादश भाव** में शनि आरोग्य, धन संपदा, सम्मान व सुख देता है। ऐसा जातक शुद्ध हृदय, धार्मिक प्रकृति का तथा पत्नी व पुत्र का सुख पाने वाला होता है। कोई जातक राज सम्मान पाता है। उसे स्वजन व जाति बंधुओं से स्नेह पूर्ण सहयोग मिलता है। पुरानी शत्रुता समाप्त होती है। परिवार में सुख शान्ति बढ़ती है। कोई जातक परायी स्त्रियों का संभोग सुख पाता है। सुख संपदा तथा वैभव व प्रतिष्ठा के लिये विद्वानों ने इसे उत्तम योग माना है।
12. **द्वादश भाव** में शनि का गोचर सभी प्रयासों में प्रायः असफलता अपव्यय, शत्रु या रोग के कारण धन नाश तथा स्त्री पुत्रों को रोग व पीड़ा देता है। विद्वानों ने जन्म चंद्रमा से द्वादश भाव में गोचर के शनि के संचार को साढ़े साती का आरंभ माना है। इसे मस्तक शनि भी कहा जाता है। ऐसा शनि व्यापार व्यवसाय में बाधा, मानहानि, रोग, अपव्यय व क्लेश देता है। कोई जातक अर्थसंकट से घिर कर दुख पाता है। विध्न बाधाएं तथा हानि व क्लेश बढ़ने से दुख होता है। सोचने रागझने की शक्ति नष्ट हो जाती है।

18.2 शनि की साढ़े साती व ढैय्या

1. जन्म चंद्र राशि से गोचर शनि

(i) द्वादश में हो तो **'सिर'** में,

(ii) जन्म राशि में शनि हो तो **'हृदय'** में और

(iii) द्वितीय भाव में शनि हो तो **'पाद'** में होता है। यही शनि की साढ़े साती है। उक्त स्थानों में स्थित शनि पशु तथा पुत्र का नाश, रोग तथा धनहानि व भय प्रदान करता है।

2. **ढैय्या** : गोचर वश शनि चंद्र राशि से

(i) **चतुर्थ भाव में आने पर** मन में चिन्ता, परिवार में क्लेश व द्रव्य नाश करता है।

(ii) इसी प्रकार **अष्टमस्थ** शनि अपयश, आपदा व मृत्यु सरीखा कष्ट देता है। पंडितजन **चतुर्थ या अष्टम भावस्थ शनि को ढैय्या** कहते हैं। इस अवधि में बंधु जन का वियोग स्त्री की मृत्यु, धन नाश, मन में चिन्ता, क्लेश व विदेश भ्रमण से कष्ट होता है।

3. **साढ़े साती**

(i) शनि गोचर वश एक राशि में लगभग 2.5 वर्ष तक रहता है। जन्म कालीन चंद्रमा से द्वादश भाव में शनि का आगमन साढ़े साती का आरंभ माना जाता है। ऐसा शनि द्वितीय भाव को अपनी तीसरी दृष्टि से व भाग्य भाव को दशम दृष्टि से देखने के कारण व्यय बढ़ाता है, रोग व शत्रु का भय देता है, भाग्य में कमी तथा धन संपदा व कुटुम्ब सुख की हानि करता है।

(ii) इसी प्रकार शनि गोचरवश चंद्रमा पर संचार करते हुए रोग क्लेश व चिन्ता देता है। साहस पराक्रम व उत्साह की कमी करता है। दांपत्य जीवन में तनाव या अनबन तथा कार्य क्षेत्र में भी विघ्न बाधा व कठिनाई देकर, दुख व संताप को बढ़ाता है।

(iii) चंद्रमा से द्वितीय भाव में शनि का संचार कुटुम्ब में मतभेद मनोमालिन्य, पारिवारिक सुख में कमी, मन में चिन्ता उद्विग्नता व असंतोष, अपमान अपयश अथवा स्थानभंग तथा लाभ या आय में कमी देकर, अर्थाभाव का संकट देता है।

4. **विशेष** :

ध्यान रहे साढ़े साती की समूची अवधि एक सरीखा पाप फल नहीं दिया करती। जन्म कुंडली में शनि यदि बली व शुभ स्थान में हो तो साढ़े साती शुभ फल दिया करती है।

विद्वानों के अनुसार साढ़े साती के विभिन्न चरणों के फल

चरण	समाप्ति समय	फल
1.	प्रथम 3 माह 10 दिन	आर्थिक क्षति
2.	1 वर्ष 4 माह 20 दिन	समस्याओं को सुलझाने की शक्ति
3.	3 वर्ष 20 दिन	यात्रा प्रवास व परिवर्तन
4.	4 वर्ष 4 माह 20 दिन	धन व सुख की प्राप्ति
5.	5 वर्ष 6 माह	दुख, कष्ट व पीड़ा
6.	6 वर्ष 4 माह	उन्नति व लाभ
7.	6 वर्ष 10 माह 20 दिन	सुख, सुविधा धन व वैभव की प्राप्ति
8.	7 वर्ष 6 माह	दुर्बलता, रोग व शोक होता है।

18.3 शनि संबंधी अन्य फल

1. शनि की महादशा में जन्म चंद्रमा पर शनि का गोचर महान अनिष्ट प्रद व दुखदायी माना गया है।
2. यदि जन्म कालीन चंद्रमा वृष में उच्चस्थ हो या फिर तुला (शनि की उच्चराशि) मकर या कुंभ (शनि की अपनी राशि) में स्थित हो तो शनि की साढ़े साती धन वैभव देने वाली होती है।
3. यदि गोचर वश राहु, मंगल या केतु से युति करे तो शनि का पापत्व बढ़ जाता है।
4. यदि गोचर वश, शनि व गुरु दृष्टि युति करें तो अशुभ परिणाम नष्ट हो जाते हैं व पाप फल में कमी होती है।
5. गोचर वश शनि वक्री होने पर परिणामों में परिवर्तन करता है– शुभ हो तो अशुभ व अनिष्ट प्रद होने पर शुभ फल देने लगता है।
6. चंद्रमा या अष्टमेश अष्टमस्थ होने से गोचर वश अष्टम भाव का शनि महान विपत्ति व कष्ट देता है।
7. दशमेश की नवांश राशि में गोचर शनि का संचार, कार्य क्षेत्र में हानि व कठिनाई देता है।
8. षष्ठेश अथवा अष्टमेश से गोचर शनि की युति बाधा व कठिनाई दिया करती है।
9. व्ययेश की नवांश राशि में गोचर वश शनि का संचार संतान सबंधी क्लेश

देता है।

10. सप्तमेश की नवांश राशि में शनि के गोचर का आगमन माता या पत्नी को कष्टप्रद होता है।
11. सूर्य अथवा चंद्रमा के द्वादशांश में गोचर शनि का संचार पिता या माता के लिये अनिष्टप्रद होता है।
12. राहु की नवांश राशि में गोचर शनि का संचार, दादा के लिये तथा केतु के नवांश पर शनि का संचार, नाना के लिये घातक हो सकता है।
13. जन्म कुंडली में गुलिक यदि चतुर्थ अथवा दशम भाव में स्थित हो तो ऐसे गुलिक पर शनि का गोचर वश संचार माता के लिये घातक सिद्ध हो सकता है।
14. मंगल या गुरु की द्रेष्काण राशि पर गोचर शनि का आगमन भाईयों को कष्टप्रद होता है।
15. अनेक विद्वानों का मत है कि जातक के जीवन में (i) *प्रथम साढ़े साती* कष्ट प्रद, (ii) *द्वितीय साढ़े साती* धन प्रदायक किन्तु कुटुम्ब में किसी की मृत्यु करने वाली तथा (iii) *तीसरी साढ़े साती* स्वयं जातक के लिये प्राण घातक होती है। ध्यान रहे ये साढ़े साती लगभग 30 वर्ष के अन्तराल के बाद आती है।
16. **हृदय पर शनि** (चंद्र राशि पर शनि का संचार) परिवार में दुख व क्लेश बढ़ाता है। कभी आजीविका पर भी संकट आता है। मन में दुख तथा चिन्ता का अंधकार बढ़ता है। जातक स्वयं ही अपने कार्य की हानि कर बैठता है। कभी परिवार की कोई महिला सदस्य गर्भधारण या प्रसव में बाधा पाती है।

18.4 शनि का नक्षत्र गोचर

शनि, राहु तथा केतु का नक्षत्र गोचर फल एक सरीखा होता है। कृपया इसे 19.2 पर देखें।

●●●

अध्याय-19
गोचर राहु फलम्

19. राहु का गोचर फल

जन्म चंद्रमा से 1, 3, 6, 11 वें भाव में राहु आने पर जातक स्त्री, पुत्र, स्वर्ण व धन प्राप्ति का सुख पाता है।

उक्त स्थानों के अतिरिक्त 2, 4, 5, 7, 8, 9, 10, 12वें भाव में राहु भय, हानि, अपयश अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट देता है।

19.1 जन्मकालीन चंद्रमा से द्वादश भावों में गोचर राहु का फल

1. **चंद्र राशि में राहु** का गोचर रोग, दुर्बलता व भय देता है। जातक अवांछित विवाद में घिर कर धन की हानि उठाता है। कभी व्यर्थ ही भटकना पड़ता है तथा पत्नी से अनबन होती है।
2. **द्वितीय भाव में राहु** धन संपदा की हानि कर विवाद जन्य क्लेश देता है। कभी स्वयं जातक अथवा उसकी पत्नी को विष का भय होता है। कटु भाषण या आलोचना से विवाद और क्लेश बढ़ता है। जातक धोखा खाता है तो कभी दंत रोग की पीड़ा होती है।
3. **तृतीय भाव में राहु** सुख सौभाग्य की वृद्धि करता है। जातक रोग व भय से मुक्त होकर सुख सफलता पाता है। सभी प्रयासों में उसे सफलता मिलती है। यह दांपत्य जीवन में सुख व सफलता का योग होता है।
4. **चतुर्थ भाव में राहु** दुख व अपमान देता है। जातक उदर या नेत्र रोग से कष्ट पाता है। माता को देह पीड़ा होती है। कभी मन में अशान्ति व उद्विग्नता रहती है।
5. **पंचम भाव में राहु** धन की हानि व बुद्धि को नष्ट करता है। जातक अपने स्वामी का विश्वास खोकर नौकरी में अपमान पाता है। कभी दांपत्य जीवन में भी कठिनाई होती है।
6. **षष्ठ स्थान में राहु** का संचार, सुख संपन्नता बढ़ाता है। जातक धन लाभ पाता है। रोग व ऋण से मुक्ति मिलती है। जातक नया काम शुरू कर उन्नति

करता है। पश्चिम दिशा में विशेष लाभ व सुख मिलता है।

7. **सप्तम भाव में राहु** राजभय व रोग शोक देता है। पत्नी से व्यर्थ ही मतभेद, कभी महिलाओं से मन मुटाव तथा अनचाहे परिवर्तन अथवा विकट परिस्थितियों से मन को क्लेश होता है।
8. **अष्टम भाव में राहु** आर्थिक क्षति व मृत्यु तुल्य कष्ट देता है। जातक अपमान अपयश तथा मृत्युभय पाता है। कभी मित्र, पत्नी या पुत्र को भी जीवन संकट होता है। कोई जातक कुसंगतिवश कुपथगामी होता है। वह गुणी जन से वैर विरोध कर अपना धन नष्ट करता है। कभी विषैले जन्तु, संक्रामक रोग या विष प्रभाव के कारण उसे कष्ट मिलता है।
9. **नवम भाव में राहु** धन की हानि तथा विपत्ति देता है। भाई बहन से मतभेद होता है। कभी जातक कपट या अनीतिपूर्ण आचरण से कार्य क्षेत्र में लाभ भी पाता है। कोई जातक दीर्घावधि के रोग से पीड़ा पाता है।
10. **दशम भाव में राहु** लड़ाई झगड़ा कराके लाभ देता है। ऐसा जातक आजीविका के क्षेत्र में अवनति पाता है। वह तीर्थाटन करता है। कभी कुसंगति के कारण मानसिक क्लेश होता है।
11. **एकादशभाव में राहु** सुख सौभाग्य बढ़ाता है–जातक बहुत अधिक धन लाभ पाता है। वह विदेश यात्रा व स्त्रियों से सुख पाता है। उसे नाना प्रकार के सुख मिलते हैं। कोई जातक रत्नाभूषण में पूंजी लगा कर लाभ पाता है।
12. **द्वादश भाव में राहु** का गोचर चोर भय, हानि व व्यय बढ़ाता है। जातक कभी स्थान परिवर्तन से क्लेश पाता है। उसकी देह रोगग्रस्त व रक्तविकार से पीड़ा पाती है। दुष्टजन से त्रास तथा अर्थाभाव के कारण बहुधा दुख मिलता है।

19.2 शनि, राहु तथा केतु का नक्षत्र गोचर

नक्षत्र पुरुष के विवध अंगों पर गोचर वश शनि, राहु तथा केतु का फल जानने के लिए, जन्म नक्षत्र से **शनि, राहु या केतु** के गोचर नक्षत्र की दूरी जानें। नक्षत्र दूरी के अनुसार फल निम्न प्रकार होता है:–

गोचर नक्षत्र की जन्म नक्षत्र से दूरी	नक्षत्र पुरुष का अंग	नक्षत्र में गोचर का परिणाम
1	चेहरे पर संचार	दुःख, विषाद, अवसाद

2 से 5 तक	दाएं हाथ में	सुख सुविधा और वैभव की प्राप्ति
6 से 11 तक	दायां पैर	यात्रा, पर्यटन
12 से 15 तक	बायां पैर	नाश, असफलता
16 से 20 तक	बायां हाथ	धन लाभ
21 से 23 तक	कुक्षि	सुख भोग
24,25	नेत्र	सौख्य, हर्षोल्लास
26,27	पीठ	मृत्यु, विपत्ति

टिप्पणी–ध्यान रहे गोचर वश राहु का संचार जन्मकालीन चंद्रमा, मंगल, बुध या गुरु पर होने से, राहु का पापत्व बढ़ जाता है। उस समय अधिक अनिष्ट फल मिला करते हैं। जन्म कालीन सूर्य पर राहु का संचार पिता को कष्ट देता है तथा चंद्रमा पर राहु का संचार माता के लिये घातक माना जाता है। ये संचार किसी भी राशि में लगभग 18 मास का होता है। *अतः दुर्गा पूजन, तीर्थ यात्रा या शिवजी के पंचाक्षरी मंत्र **ॐ नमः शिवाय** का सवालाख जप कराना उत्तम है।*

●●●

अध्याय-20
गोचर केतु फलम्

20. केतु का गोचर फल

20.1 *जन्म चन्द्रमा से 3, 6,11 वें भाव पर केतु का गोचर वश संचार, बल पराक्रम की वृद्धि, स्पर्धा या प्रतियोगिता में सफलता, तीर्थाटन, धन लाभ तथा मान सम्मान व यश दिया करता है। इन स्थानों के अतिरिक्त शेष सभी भावों में गोचर शत्रुभय, हानि, कंलक, अपयश भटकाव अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट देता है।*

1. **जन्म कालीन चंद्रमा पर केतु** का गोचर वश संचार रोग व देह कष्ट देता है। जातक व्यर्थ के प्रवास का दुख पाता है। कोई जातक ढोंगी साधु बन कर लोगों को ठगता है।
2. **द्वितीय भाव में केतु** शत्रुओं की वृद्धि करता है। कभी ऐसा जातक पत्नी व संतान को छोड़ देता है। उसे शीघ्र क्रोध आता है। व्यर्थ के वाद विवाद में उलझ कर वह विद्वता का आडंबर करता है। वह हठी होता है तथा कुत्सित वेश अपनाता है।
3. **तृतीय भाव में केतु** प्रसन्नता देता है। जातक कार्य क्षेत्र में उन्नति व लाभ पाता है। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है तथा तीर्थाटन में उसकी सहज रुचि होती है।
4. **चतुर्थ भाव में केतु** भय देता है। स्थान परिवर्तन से अपमान, अपयश व माता को कष्ट होता है। विद्या के क्षेत्र में लाभ मिलता है। कोई जातक जुआ, लाटरी में लोगों को ठगता है।
5. **पंचम भाव में केतु** सदाचारी बनाता है। जातक उदर रोग या पीलिया से कष्ट पाता है। कोई जातक मिर्गी के दौरे से पीड़ित होता है। वह अधर्मी हो कर, सज्जनों का विरोध करता है उन्हें मिथ्या दोष देता है।
6. **षष्ठ भाव में केतु** जातक को सभी कामों से आर्थिक लाभ होता है। कभी दुर्घटना, चोट, या ऊंचाई से गिरने अथवा अधिक रक्तस्राव के कारण, मृत्यु भय होता है।
7. **सप्तम भाव में केतु** रति सुख बढ़ाता है। कभी मस्तिष्क रोग से स्मृति नाश

या स्मृति भ्रंश का योग बनता है। दांपत्य जीवन में दुख व तनाव बढ़ता है। व्यर्थ के प्रवास से परेशानी बढ़ती है। कोई जातक अपमान व अपयश पाता है।

8. **अष्टम भाव में केतु** पापकर्म कराता है। जातक अपने पिता, पुत्र या मित्रों से वैमनस्य व शत्रुता रखता है। कभी विष, सींग वाले जानवर या शल्य क्रिया के कारण प्राण संकट होता है। कोई जातक धन नाश, अल्सर, खुजली अथवा अचेतनता के कारण कष्ट पाता है।
9. **नवम भाव में केतु** होने से दुख व दुर्भाग्य बढ़ाता है। पिता को कष्ट व मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं। मामा को कष्ट होता है। जातक तीर्थाटन व देवपूजन में रूचि लेता है। कभी वह, विद्या अर्जन करने पर भी, मूर्खता पूर्ण आचरण करता है। भाइयों को धन की हानि से कष्ट होता है।
10. **केतु दशम भाव में** आने पर झगड़ा कराता है। जातंक नाहक ही लोगों से उलझ बैठता है। एक स्थान पर लगकर काम कर पाना उसके लिये बहुत कठिन होता है। अपने दोष व दुर्बलताओं के कारण कभी नौकरी छूटती है या अनचाहा परिवर्तन मिलता है। कभी निकट–संबंधी की मृत्यु का कष्ट–क्लेश भोगना पड़ता है।
11. **केतु एकादश भाव** में रोग शोक बढ़ाता है। मतान्तर से जातक दूर देश की यात्रा कर लाभ कमाता है। वह धार्मिक प्रवृति का होकर तीर्थयात्रा करता है। शास्त्र व पुराणों के अध्ययन में उसकी रूचि होती है। वह दान, धर्म व परोपकार के कार्य करता है।
12. **केतु द्वादश भाव** में आने पर शत्रुता वृद्धि व धन नाश देता है। जातक आजीविका के लिये निरन्तर भटकता रहता है। कभी चिन्ता व परेशानी के कारण जीवन के प्रति आशा व उत्साह नष्ट हो जाता है। जातक उद्विग्न मन व दुखी होता है।

20.2 टिप्पणी

1. ध्यान रहे गोचरवश केतु का जन्मकालीन चंद्रमा, मंगल या गुरु पर संचार बहुधा शुभ परिणाम देता है।
2. सूर्य अथवा शुक्र पर केतु का संचार विघ्न बाधा व अवनति देता है।
3. जन्म बुध पर गोचर केतु का संचार मानसिक परेशानी, स्नायुविक दुर्बलता या चेतनहीनता (लकवा) दे सकता है।
4. शनि व मंगल सरीखे ही केतु भी 3, 6, 11 वें भाव में शुभ फल देता है।

इनके वेध स्थान क्रमश : 12, 9, 5 वां भाव है। सूर्य व शनि को परस्पर वेध (पिता पुत्र होने के कारण) नहीं होता किंतु राहु केतु को सभी ग्रहों का वेध होता है।

20.3 समीक्षा

1. अध्याय 12 से अध्याय 20 तक क्रमशः सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु के गोचर फल पर विचार हुआ है।
2. गोचर विचार जन्म राशि व जन्म नक्षत्र पर आधारित है।
3. अगले अध्याय में गोचर ग्रह वेध तथा भाव सिद्धि काल पर चर्चा होगी।

●●●

अध्याय-21

गोचर ग्रह वेध फलम्

21. पापग्रह समुदाय फल

जन्म चंद्र राशि से प्रथम, द्वितीय, त्रिकोण, चतुर्थ, अष्टम, सप्तम, या द्वादश भाव में जब मंगल, शनि, सूर्य और राहु चारों ग्रह गोचर करते हैं। तो प्राण, धन, धान्य व स्वर्ण नाश की संभावना बढ़ती है।

पाप ग्रह सूर्य मंगल शनि राहु की गोचर स्थिति अनिष्ट प्रद होती है।

21.1 गोचर वश चन्द्रमा का फल

चंद्र कुंडली के विविध भावों पर गोचर चंद्रमा का प्रभाव निम्न प्रकार होता है–

लग्न – धन संपदा की वृद्धि	सप्तम भाव – राज सम्मान
द्वितीय भाव– चित्त में संतोष व सुख	अष्टम भाव – मृत्यु व आपदा
तृतीय भाव – धन संपत्ति का लाभ	नवम भाव – पुण्य लाभ
चतुर्थ भाव – पारिवारिक कलह	दशम भाव – कार्य सिद्धि, सफलता
पंचम भाव – ज्ञान वृद्धि	एकादश भाव – धन व मान वृद्धि
षष्ठ भाव – उत्तम संपत्ति का लाभ	द्वादश भाव – धन हानि

इसका उपयोग 'आज का दिन कैसा है' जानने के लिए किया जाता है। यह मास कैसा है इसके लिए सूर्य तथा वर्ष फल जानने कि लिए गुरु का गोचर महत्त्वपूर्ण होता है।

21.2 शुभ गोचर वेध तालिका

जन्मकालीन चंद्र राशि से ग्रहों का गोचर निम्न भावों में शुभ व कल्याण प्रद माना गया है। किन्तु गोचर वश यदि शुभ प्रभावी ग्रह पर किसी अन्य ग्रह का वेध हो तो गोचर ग्रह शुभ प्रभाव देने में असमर्थ रहता है। वेध को बाधा स्थान भी कहा जा सकता है।

वेध तालिका

(1) सूर्य	शुभ स्थान	3	6	10	11					
	वेध स्थान	9	12	4	5					
(2) चंद्रमा	शुभ स्थान	1	3	6	7	10	11			
	वेध स्थान	5	9	12	2	4	8			
(3) मंगल	शुभ स्थान	3	6	11						
	वेध स्थान	12	9	5						
(4) बुध	शुभ स्थान	2	4	6	8	10	11			
	वेध स्थान	5	3	9	1	8	12			
(5) गुरु	शुभ स्थान	2	5	7	9	11				
	वेध स्थान	12	4	3	10	8				
(6) शुक्र	शुभ स्थान	1	2	3	4	5	8	9	11	12
	वेध स्थान	8	7	1	10	9	5	11	3	6
(7) शनि	शुभ स्थान	3	6	11						
	वेध स्थान	12	9	5						
(8-9) राहु केतु	शुभ स्थान	3	6	11						
	वेध स्थान	12	9	5						

21.3 1. उदाहरण के लिये गोचर सूर्य यदि जन्म कालीन चन्द्र राशि से 3, 6, 10 या 11 वें भाव में हो तो शुभ फल देता है, किन्तु यदि सूर्य तीसरे भाव में तथा गोचर वश (शनि के अतिरिक्त) कोई अन्य ग्रह नवें भाव में हो तो सूर्य का शुभ फल नहीं मिलेगा।

2. इसी प्रकार छठे भाव में सूर्य शुभ फल तब ही दे पायेगा यदि उस समय गोचर वश जन्म चंद्रमा से द्वादश भाव में अन्य कोई भी ग्रह न हो इसी भांति सभी ग्रहों की ऊपर की पंक्ति शुभ स्थान व नीचे वाली पंक्ति वेध स्थान दर्शाती है।

3. ध्यान रहे **पिता व पुत्र में परस्पर वेध नहीं होता** सूर्य को शनि का तथा शनि को सूर्य का वेध नहीं होता क्योंकि सूर्य व शनि परस्पर पिता व पुत्र हैं। इसी प्रकार चंद्रमा तथा बुध का भी परस्पर वेध नहीं हुआ करता।

21.4 विपरीत वेध तालिका (अशुभ फल निरस्त करे)

(1) सूर्य	$\frac{9}{3}$	$\frac{12}{6}$	$\frac{4}{10}$	$\frac{5}{11}$					
(2) चंद्रमा	$\frac{5}{1}$	$\frac{9}{3}$	$\frac{12}{6}$	$\frac{2}{7}$	$\frac{4}{10}$	$\frac{8}{11}$			
(3) मंगल	$\frac{12}{3}$	$\frac{9}{6}$	$\frac{5}{11}$						
(4) बुध	$\frac{5}{2}$	$\frac{3}{4}$	$\frac{9}{6}$	$\frac{1}{8}$	$\frac{8}{10}$	$\frac{12}{11}$			
(5) गुरु	$\frac{12}{2}$	$\frac{4}{5}$	$\frac{3}{7}$	$\frac{10}{9}$	$\frac{8}{11}$				
(6) शुक्र	$\frac{8}{1}$	$\frac{7}{2}$	$\frac{1}{3}$	$\frac{10}{4}$	$\frac{9}{5}$	$\frac{5}{8}$	$\frac{11}{9}$	$\frac{3}{11}$	$\frac{6}{12}$
(7) शनि	$\frac{12}{3}$	$\frac{9}{6}$	$\frac{5}{11}$						
(8) राहु	$\frac{12}{3}$	$\frac{9}{6}$	$\frac{5}{11}$						
(9) केतु	$\frac{12}{3}$	$\frac{9}{6}$	$\frac{5}{11}$						

टिप्पणी : ऊपर की पंक्ति में दर्शाये गये भाव में गोचर वश ग्रह की स्थिति अनिष्ट प्रद है, किन्तु उस समय यदि गोचर वश नीचे दर्शाये भाव में कोई अन्य ग्रह अनिष्ट ग्रह का वेधन करे तो अशुभ फल कट जाता है व शुभ फल प्राप्त होता है। यही विपरीत वेध का रहस्य है।

21.5 नक्षत्र गोचर

नक्षत्र वेध तालिका		
ग्रह का जन्म कालीन नक्षत्र	**वेध करने वाला ग्रह**	**वेध ग्रह का गोचर नक्षत्र संचार**
सूर्य	राहु	नवम नक्षत्र

सूर्य	केतु	15वां नक्षत्र
चंद्रमा	मंगल	7वां नक्षत्र
चंद्रमा	सूर्य	12वां नक्षत्र
मंगल	बुध	4था नक्षत्र
मंगल	चंद्रमा	12वां नक्षत्र
बुध	गुरु	5वां नक्षत्र
बुध	शनि	17वां नक्षत्र
गुरु	शुक्र	6ठा नक्षत्र
गुरु	राहु	12वां नक्षत्र
शुक्र	बुध	18वां नक्षत्र
शुक्र	शनि	8वां नक्षत्र
शनि	सूर्य	9वां नक्षत्र
शनि	गुरु	12वां नक्षत्र
राहु/केतु	चंद्रमा	9वां नक्षत्र
राहु/केतु	मंगल	13वां नक्षत्र

मानों जन्म कालीन सूर्य अश्विनी नक्षत्र में है तो गोचर वश राहु केतु के नवम नक्षत्र अश्लेषा में आने पर सूर्य के शुभ प्रभाव नष्ट हो जाएंगे तथा जातक मात्र पाप फल पाएगा। इसी प्रकार जन्म कालीन बुध जिस नक्षत्र में हो उससे 5 वें नक्षत्र में गुरु अथवा 17 वें नक्षत्र में गोचर शनि आने पर बुध के शुभ फल नष्ट हो जाएंगे।

21.6 अशुभ स्थान के लिए वेध तालिका

चंद्र कुंडली भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	1	2	□	3	6	□	7	8	10	□	□	11
चंद्रमा	□	1	□	3	6	□	□	7	10	□	□	11
मंगल	1	2	□	3	4	□	6	7	8	10	□	11
बुध	2	□	4	□	7	□	6	□	8	□	□	11
गुरु	1	□	2	5	□	6	□	7	□	9	□	11
शुक्र	□	□	□	□	□	12	2	□	□	4	□	□
शनि	1	2	□	3	4	□	6	7	8	10	□	11

टिप्पणी चंद्रमा से □ भावों में ग्रह की स्थिति शुभ फल देती है। राहु केतु भी शनि सरीखा फल देतें है।

उदाहरण के लिए जन्म कालीन चंद्रमा से गोचर वश सूर्य पंचम भाव में होने पर अनिष्ट प्रद होता है। किन्तु यदि उस समय गोचर वश कोई अन्य ग्रह (शनि को छोड़कर) षष्ठ भाव में हो तो सूर्य का अनिष्ट फल नहीं मिलेगा। इसी प्रकार द्वादश भाव में गोचर सूर्य का अनिष्ट प्रभाव एकादश भाव के गोचर ग्रह से नष्ट हो जाएगा।

21.7 वेध का महत्त्व

(1) देव ऋषि नारद ने गोचर फल विचार में वेध को महत्त्वपूर्ण माना है उनका विचार है

न ददाति शुभं किचिद् गोचरे वेध संस्थित :
तस्माद्वेधं विचार्याथ कथ्यते तच्छुभाशुभम्।।
अज्ञात्वा विविधान् वेधान् यो ग्रहज्ञ : फलं वदेत्।
सः मृषावचनभाषी हास्यं याति नरैः सदा।।

कोई भी ग्रह वेधग्रस्त होने पर गोचर वश अपना तनिक भी शुभ फल नहीं दे पाता। अतः फल कथन से पूर्व शुभ या अशुभ परिणाम का विचार करते हुए वेध का विचार करना आवश्यक है। जो दैवज्ञ बिना वेध का विचार किये गोचर फल बताता है वह मिथ्याभाषी होने से उपहास का पात्र बनता है। अतः वेध का विचार अवश्य करें।

2. यदि वेधकर्ता ग्रह स्वयं दुर्बल हो तो वेध निष्प्रभावी हो जाता है।

तद्ग्रहे बलहीने च निष्फलं ग्रहवेधकम्।

निष्प्रभावी वेध में ग्रह का अशुभ या शुभ गोचर फल, निर्बाध रूप से जातक को मिलता है। ध्यान रहे जो ग्रह वेध युक्त हो वह गोचर वश अपना अच्छा बुरा परिणाम दे पाने में असमर्थ रहता है, किन्तु वेध करने वाला ग्रह यदि स्वयं ही गोचर में हीन बली हो तो वेध निष्प्रभावी हो जाता है।

जातक परिजात की वेध तालिका (अध्याय 13 श्लोक संख्या 60)

भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
सूर्य	1	2	9	3	6	12	7	8	10	4	5	11
चंद्र	5	1	9	3	6	12	2	7	10	4	8	11
मंगल	1	2	12	3	4	9	6	7	8	10	5	11

भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
बुध	2	5	4	3	7	9	6	1	8	10	12	11
गुरु	1	2	2	5	4	6	3	7	10	9	8	11
शुक्र	8	7	1	10	9	12	2	5	11	4	3	6
शनि राहु केतु	1	2	12	3	4	9	6	7	8	10	5	11

21.8 शनि की साढ़े साती में वेध का उपयोग

1. जन्म कालीन चंद्रमा से द्वादश भाव, लग्न व द्वितीय भाव पर गोचर वश शनि का संचार ही शनि की साढ़े साती है। जब गोचर शनि चंद्रमा से द्वादश, लग्न या द्वितीय भाव में हो उसी अवधि में यदि जन्म चंद्रमा से एकादश, लग्न या द्वितीय भाव पर सूर्य या राहु के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह गोचर वश संचार करे तो **शनि का दुष्प्रभाव नष्ट हो जाता है।**
2. जन्म कालीन चंद्रमा से दशम भाव में गोचर वश गुरु का संचार कार्य क्षेत्र के लिये अशुभ माना गया है, किन्तु यदि इसी समय नवम भाव में कोई अन्य ग्रह गोचर वश संचार करे तो गुरु का पापत्व नष्ट हो जाता है।
3. संक्षेप में साढ़े साती का शनि यदि किसी अन्य ग्रह से युति करे तो उसका पापत्व नष्ट हो जाता है तथा जातक शनि के पाप प्रभाव से सहज ही बच जाता है।
4. राशि में प्रवेश के समय शनि यदि जन्म चन्द्रमा से 1, 6, 11वें भाव में हो तो ऐसा शनि स्वर्ण मूर्ति कहलाएगा।

ग्रह राशि प्रवेश के समय गोचर शनि जन्म चंद्रमा से	ग्रह की संज्ञा	फल विचार
यदि 1, 6, 11वें भाव में हो	स्वर्ण मूर्ति	शुभ कल्याणप्रद
यदि 2, 5, 9वें भाव में हो	रजत मूर्ति	शुभ हर्षदायक
यदि 3, 7, 10वें भाव में हो	ताम्र मूर्ति	बाधा या कठिनाई
यदि 4, 8, 12वें भाव में हो	लौह मूर्ति	अशुभ व दुखदायी

5. जन्म नक्षत्र से नवम, 18 वां तथा 27वां नक्षत्र **परम मैत्री** नक्षत्र कहलाते है। जन्म के समय जो ग्रह इन नक्षत्रों में स्थित हों उनका गोचर कभी अनिष्ट

प्रद नहीं होता क्योंकि ऐसे ग्रह जातक के परम मित्र होते है। मतान्तर से गोचर वश कोई भी ग्रह परम मैत्री नक्षत्र में आने पर शुभ व कल्याण प्रद हो जाता है तथा अनिष्ट फल नहीं दिया करता।

6. जन्म नक्षत्र से 2, 11, 20वां नक्षत्र **संपत** होने से धन संपदा बढ़ाता है। जन्म नक्षत्र से 4, 13, 22वां नक्षत्र क्षेत्र 6, 15, 24वां नक्षत्र **साधक** तथा जन्म नक्षत्र से 8, 17, 26वां नक्षत्र **मित्र** कहलाता है। इन नक्षत्रों में शनि का गोचर विशेष अनिष्ट नहीं करता। मतान्तर से साधक नक्षत्र पर किसी भी ग्रह का संचार कार्यसिद्ध करता है तो मित्र नक्षत्र का गोचर मित्रों से स्नेहपूर्ण सहयोग दिलाकर धन व यश बढ़ाता है।

21.9 समीक्षा

1. इस अध्याय में शुभ गोचर वेध तालिका पैरा 21.2 पर तथा विपरीत वेध तालिका पैरा 21.4 पर दी गई है।
2. नक्षत्र वेध में किसी ग्रह को मात्र एक ग्रह का नक्षत्र विशेष में गोचर ही वेध होता है। इसकी चर्चा पैरा 21.5 में की गई है।
3. पैरा 21.7 में वेध का महत्त्व बतला कर ग्रहों के विभिन्न भावों में गोचर का अन्य ग्रहों द्वारा वेध दर्शाया गया है।
4. शनि की साढ़े साती या ढैया में, वेध अशुभ फल को नष्ट कर देता है।
5. अगले अध्याय में 'महत्त्वपूर्ण ग्रहों का गोचर' पर चर्चा होगी।

●●●

अध्याय-22

महत्त्वपूर्ण ग्रहों का गोचर

22. दशमेश ग्रह का गोचर फल

ज्योतिष के विद्वानों ने दशमेश ग्रह के गोचर को सर्वाधिक शुभ व कल्याण प्रद माना है। यदि कोई ग्रह गोचर वश अशुभ या अनिष्ट प्रद हो तो उसका गोचर वश, दशमेश से दृष्टि-युति संबंध, **अशुभ फल को नष्ट** कर देता है। यदि किसी जातक का दशमेश गुरु या शनि हो, तब तो किसी भी, अनिष्ट प्रभाव से दीर्घ काल तक रक्षा होती है।

22.1 गोचर ग्रहों का प्रभाव

1. पापी ग्रह, यदि गोचर वश शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो, शुभ फल दिया करते है।
2. नैसर्गिक शुभ ग्रह, गोचर वश पाप ग्रहों से दृष्ट होने पर, अशुभ फल दे दिया करते हैं।
3. गोचर वश कोई ग्रह, यदि शत्रु राशि में हो, नीचराशिस्थ अथवा अस्तंगत हो तो हीन बली होने के कारण शुभ या अशुभ फल दे पाने में असमर्थ होता है। ऐसा ग्रह वेध नहीं कर पाता।
4. मतान्तर से पाप ग्रह शत्रु क्षेत्री अथवा नीच राशिस्थ होने पर जातक को दुख नहीं दे पाते। इसी भांति शुभ ग्रह भी हीन बली होने से सुख सुविधा दे पाने में असमर्थ रहते हैं।

22.2 गोचर ग्रहों का प्रभाव कब

रशोरादिगतौ शुभाशुभ फलान्यर्क सृजौ कुर्वन्ते
मध्यस्थौ गुरु भार्गवौ शशि शनिप्रान्ते बुधस्सर्वदा।।

1. **सूर्य तथा मंगल** गोचर वश अपना शुभ या अशुभ प्रभाव राशि के **प्रथम दस अंश** में दिया करते है। राशि के शेष भाग में प्रभाव स्वल्प होता है।
2. **गुरु व शुक्र** राशि के मध्य भाग अर्थात् **दस से बीस अंश के बीच** गोचर का शुभाशुभ प्रभाव देते हैं।

3. **चंद्रमा व शनि** राशि के **अन्तिम दस अंशो में** अपना गोचर प्रभाव देते है।
4. **बुध समूची राशि में** गोचर प्रभाव दिया करता है।

उदाहरण के लिये जन्म कालीन चंद्रमा से सप्तम भाव में गुरु का गोचर, विशेष शुभ व पतिसुख प्रदायक माना गया है। ऊपर बताए नियम के अनुसार गुरु राशि के मध्य भाग अर्थात 10 अंश से 20 अंश के बीच ही प्रभावी होगा उससे पहले या बाद में नहीं।

22.3 गन्तव्य राशि का गोचर फल

(1) सूर्य गन्तव्य राशि में आने से 5 दिन पूर्व

(2) चंद्रमा 3 घटी (1 घंटा 12 मिनट) पूर्व

(3) मंगल 8 दिन पूर्व,

(4) बुध 7 दिन पूर्व

(5) गुरु 2 मास पूर्व,

(6) शुक्र 7 दिन पूर्व,

(7) शनि 6 मास पूर्व

(8) तथा राहु 3 मास पूर्व गोचर फल दिया करते है।

(9) केतु भी राहु सरीखा प्रभाव दिया करता है

22.4 ग्रहों का राशि भोग काल मान

सूर्य 30 दिन; चंद्रमा 2.5 दिन, मंगल 45 दिन, बुध 21 दिन, गुरु 390 दिन, शुक्र 27 दिन, शनि 900 दिन राहु 540 दिन में एक राशि का भोग करता है। ऐसा प्राचीन आचार्यों का मत है।

22.5 शनि पद परिज्ञान

1. जन्म चंद्रमा से 1, 6, 11वीं राशि में गोचर वश शनि हो तो **स्वर्णपाद** कहलाता है। ऐसा शनि सुख संपदा की वृद्धि करता है।
2. जन्म चंद्रराशि से 2, 5, 9वीं राशि का शनि **रजत पाद** या चांदी का पाया कहलाता है। ऐसा शनि सुख, सौभाग्य की वृद्धि करता है।
3. जन्म चंद्र राशि से 3,7,10वीं राशि का गोचर शनि **ताम्र पाद** कहलाता है। ऐसा शनि मध्यम या मिश्रित फल देता है।
4. जन्म चंद्र राशि से 4, 8, 12वीं राशि का गोचर शनि **लौह पाद** कहलाता

है। ऐसा शनि चिन्ता, क्लेश व धन हानि देता है।

22.6 कारक ग्रह से गोचर वश कारक ग्रह फल

1. जन्म कुंडली के मंगल से चतुर्थ भाव में गोचर वश वक्री मंगल का संचार भूमि भवन का सुख दिया करता है।
2. जन्म कुंडली के गुरु से पंचम भाव में गोचर गुरु की स्थिति *संतान सुख* बढ़ाती है।
3. जन्म कुंडली के बुध से चतुर्थ भाव में गोचर बुध की स्थिति *सुख संपत्ति* बढ़ाती है।
4. जन्म कुंडली के शुक्र से सप्तम भाव में गोचर वश शुक्र का संचार *दांपत्य सुख* को बढ़ाता है।
5. जन्म कुंडली के शनि से नवम भाव में गोचर शनि का संचार *भाग्योदय में सहायक* होता है।
6. जन्म चंद्रमा से गोचर वश चंद्रमा जब कभी द्वितीय भाव में आवे तो *धन प्रदायक* होता है।

विज्ञजन को ये फल बलाबल के अनुसार कहना चाहिए।

22.7 गोचर सूर्य विशेष फलम्

1. जन्म कालीन चंद्रमा की राशि में गोचर सूर्य का संचार जातक को चंचलता उद्विग्नता व अस्थिरता देता है। जातक नाहक ही इधर उधर भटकता है व देह में थकान व दुर्बलता का अनुभव करता है। कभी जातक रक्तचाप, हृदय रोग या नेत्र विकार से पीड़ा पाता है।
2. जन्म कालीन चन्द्रमा के नक्षत्र (जन्म नक्षत्र) पर सूर्य का गोचर वश संचार स्वास्थ्य, सम्मान व सुख की कमी करता है। कभी जातक के कार्यों में बाधा पड़ती है।
3. जन्म नक्षत्र में गोचर सूर्य यदि शनि या राहु से युक्त हो तो जातक दुष्ट जन या चोरों से सताया जाता है। कभी उसे अपमान व अपयश भी मिलता है। कोई जातक स्वयं अथवा पत्नी या ससुराल पर विपत्ति पड़ने से दुखी हुआ करता है।
4. जन्म नक्षत्र में गोचर सूर्य यदि मंगल से युक्त हो तो मित्रों के साथ व्यर्थ ही अलमकर प्रवास करता है। कभी पित्त दोष से कष्ट पाता है।
5. जन्म नक्षत्र में गोचर सूर्य यदि गुरु से युति करे तो जातक कोई अत्याधिक

महत्वपूर्ण यात्रा कर लाभ पाता है।

22.8 गोचर से भाव सिद्धि काल निर्णय

बहुधा विद्वान ज्योतिषी से संतान, विवाह या व्यापार के संबंध में प्रश्न पूछा जाता है। संतान का संबंध पंचमेश से, विवाह विचार सप्तमेश से तथा व्यापार दशमेश से देखा जाता है।

22.9 भाव फल के समय संबंधी सूत्र

1. भावेश जिस राशि में हो, उससे त्रिकोण में गोचर वश लग्नेश का आगमन भावसिद्धि दर्शाता है।
2. लग्नेश जिस राशि और अंश में हो गोचर वश उससे त्रिकोण में भावेश का संचार भाव सिद्धि का समय दर्शाता है।
3. जब लग्नेश तथा भावेश गोचर वश परस्पर दृष्टि-युति संबंध करें तो यह भाव सिद्धि का समय होता है।
4. जब भाव कारक ग्रह गोचर वश जन्म लग्नेश या चंद्र लग्नेश पर संचार करे तो यह भाव सिद्धि का समय होता है।
5. जब लग्नेश गोचर वश विचाराधीन भाव की राशि पर संचार करे तो यह भाव सिद्धि काल होता है।
6. भावेश से त्रिकोण में गोचर गुरु का संचार भी भाव संबंधी श्रेष्ठ फल देता है।
7. गोचरवश लग्नेश जब किसी भावेश से योग (दृष्टि-युति-राशि परिवर्तन) करे तो उस भाव संबंधी फल की प्राप्ति होती है। भावेश का बलवान होना कार्यसिद्धि को सुनिश्चित करता है।
8. यदि भावाधिपति गोचर में बली व शुभ युक्त हो कर गुरु अथवा लग्नेश से दृष्टि-युति संबंध करे तो यह भाव सिद्धि का समय होता है।

22.10 ग्रहों की निष्फलता का ज्ञान

1. जन्म के समय जो ग्रह, अनिष्ट स्थान में अथवा अशुभ ग्रहों से युक्त होने के कारण, अनिष्ट प्रद हों, किन्तु शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो वह अशुभ फल नहीं दे पाता बल्कि निष्फल हो जाता है।
2. जो ग्रह, शुभ स्थान अथवा शुभ ग्रहों की युति के कारण, शुभ हो किन्तु पाप ग्रह से दृष्ट हो वह भी शुभ नहीं रह पाता बल्कि निष्फल हो जाता है।

3. ऐसे निष्फल ग्रह अपना राशि तथा स्थान संबंधी फल दे पाने में असमर्थ रहते हैं वे मात्र दृष्टिफल दिया करते है।
4. जो ग्रह नीच राशिस्थ, शत्रु क्षेत्री, अस्तंगत अथवा शत्रु से दृष्टि-युति करते हो वे भी निष्फल हो जाते हैं तथा राशि या भाव जन्य फल नहीं दे पाते।
5. शुभ स्थान (केन्द्र/त्रिकोण भाव) में स्थित ग्रह, पाप ग्रह से दृष्ट होने पर, निष्फल हो जाते हैं।
6. अशुभ स्थान (6, 8, 12वें भाव) में स्थित शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट होने पर निष्फल होने से ग्रह भाव संबंधी शुभाशुभ फल देने में असमर्थ होते हैं।
7. अन्य स्थान में स्थित ग्रह यदि शुभ व पाप ग्रह दोनों के प्रभाव में हो तो मध्यम फल दिया करता है।

22.11 समीक्षा

1. गोचर फल विचार के अन्तर्गत सूर्य से केतु पर्यन्त सभी नौ ग्रहों की, जन्म कालीन चन्द्रमा से विभिन्न भावों में, गोचर स्थिति के फल पर विस्तार से विचार हुआ है। (देखें अध्याय 12 से 20 तक।)
2. अध्याय 21 में वेध का महत्व तालिकाओं से समझाया गया है। किसी ग्रह की अशुभ स्थिति भी अशुभ फल नहीं देती, यदि उस अशुभ ग्रह पर बली ग्रह का वेध हो।
3. इस के विपरीत वेध करने वाला ग्रह यदि स्वयं दुर्बल या हीनबली है तो वह शुभ गोचर के मंगलकारी प्रभाव को रोकने में असमर्थ होता है। उस स्थिति में वेध निष्प्रभावी हो जाता है और जातक शुभ परिणाम पाता है।
4. भावेश का लग्न या लग्नेश से संबंध अथवा गोचर वश गुरु का भाव या भावेश से दुष्टि-युति संबंध फल प्राप्ति का समय दर्शाता है।
5. विद्वानों का मत है कि जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति से बने अच्छे बुरे योग, बहुधा इन ग्रहों की दशा या भुक्ति में, सही गोचर मिलने पर ही फलीभूत होते हैं।
6. विद्वानों ने गोचर को डाकिया, हरकारा या delivery boy कहा है। दशा और भुक्ति, सुख दुख की पोटली या पैकेट तैयार करती है तो गोचर उस पोटली को पहुंचाने का दायित्व संभालता है।

●●●

अध्याय-23

अष्टक वर्ग का उपयोग

23. अष्टक वर्ग का महत्त्व

अनेक ज्योतिष प्रेमी अष्टक वर्ग के व्यवहारिक उपयोग से अनभिज्ञ होने के कारण उसके शुभ प्रभावों से वंचित रह जाते हैं। नीचे जातकादेशमार्ग से कुछ अनुभूत प्रयोग दिये जा रहे हैं

23.1 सूर्याष्टक वर्ग

सूर्य से	1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11	गुरु से	5,6,9,11
चंद्रमा से	3, 6, 10, 11	शुक्र से	6, 7, 12
मंगल	1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11	शनि से	1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11
बुध से	3,5, 6, 9, 10,11,12	लग्न से	3, 4, 6, 10, 11, 12

ध्यान रहे सात ग्रह तथा एक लग्न होने से ये अष्टक वर्ग कहलाता है। ये शुभ बिंदुओं के स्थान हैं। जिस राशि में अधिक शुभ बिंदु हों वहां सूर्य का गोचर उत्तम फल देता है।

1. **शुभ राशि** : सूर्याष्टक वर्ग में जिस राशि को अधिक शुभ बिंदु प्राप्त हों उस राशि में गोचर सूर्य के आने पर, किए गए कार्य **सुख व सफलता** देते हैं। उस मास में विवाह, विदेश यात्रा, धार्मिक कार्य या व्यापारिक समझौते विशेष सफलता व सुख बढ़ाने वाले होते हैं। सूर्याष्टक वर्ग में जिस राशि को स्वल्प शुभ बिंदु मिलें, उस राशि में सूर्य के आने पर कार्य में प्रायः बाधा या असफलता मिलती है।

2. **शुभ दिशा** : विद्वानों ने मेष, सिंह, धनु (अग्नि तत्व राशियों) की पूर्व दिशा; वृष, कन्या, मकर (भू तत्व राशियों) की दक्षिण दिशा; मिथुन, तुला, कुंभ (वायु तत्व राशियों) की पश्चिम दिशा तथा कर्क वृश्चिक मीन (जल तत्त्व राशियों) की उत्तर दिशा स्वीकार की है। सूर्याष्टक वर्ग में, जिस दिशा को अधिक शुभ बिन्दु मिलें (अपने घर से) उस दिशा के शिव मंदिर में शिव की आराधना करें अथवा उस दिशा में स्थित **फैक्ट्री या प्रतिष्ठान** में काम करने से जातक

को **विशेष लाभ** होता है।

3. शुभ समय (दिन त्रिभाग) :

(i) जन्म कुडंली में सूर्य जिस राशि में स्थित हो उससे प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ राशियों के शुभ बिंदुओं को जोड़े इसे दिन का प्रथम खंड (त्रिभाग) जानें।

(ii) तत्पश्चात सूर्य से पंचम, षष्ठ, सप्तम व अष्टम राशि के बिंदुओं का योग करें। उसे दिन का दूसरा त्रिभाग जानें।

(iii) अन्त में सूर्य से नवम, दशम, एकादश तथा द्वादश राशियों में पड़े शुभ बिन्दुओं का योग करें। उसे दिन का तीसरा त्रिभाग कहें।

जिस खंड में अधिक शुभ बिंदु हो उस त्रिभाग में शुभ या **महत्त्वपूर्ण कार्य करना सुख व सफलता** देता है। **ध्यान रहे,** इसका प्रयोग मात्र बहुत विशिष्ट व महत्त्वपूर्ण कार्या के लिए करें, नित्य प्रति कार्यों के लिए नहीं। उदाहरण के लिए यदि सूर्योदय प्रातः 5 बजे तथा सूर्यास्त सांय 7 बजे है तो कुल दिनमान 14 घंटे के तीन भाग करें। प्रत्येक त्रिभाग 4 घंटे 40 मिनट का होगा। उस दिन 9-40 तक प्रथम खंड, 2-20 दोपहर तक दूसरा खंड; तथा 2-20 से सांय 7 बजे तक तीसरा खंड होगा। अब यदि जन्म कुंडली के सूर्य से नवम, दशम, एकादश, द्वादश राशि में अधिक शुभ बिंदु हों तो सभी महत्त्वपूर्ण काम दिन के अंतिम त्रिभाग में करना उत्तम है।

23.2 चंद्राष्टक वर्ग

सूर्य से	3, 6, 7, 8, 10, 11	गुरु से	1, 4, 7, 8, 10, 11, 12
चंद्रमा से	1, 3, 6, 7, 10, 11	शुक्र से	3, 4, 5, 7, 9, 10, 11
मंगल से	2, 3, 5, 6, 9, 10, 11	शनि से	3, 5, 6, 11
बुध से	1, 3, 4, 5, 7, 8, 10, 11	लग्न से	3, 6, 10, 11

1. **चंद्रमा की शुभ राशि :** चंद्राष्टक वर्ग में जिस राशि को अधिक शुभ बिंदु प्राप्त हों उस राशि में गोचर का चंद्रमा, शुभ व कल्याणकारी होता है। महत्त्वपूर्ण अथवा शुभ कार्य (मुंडन, यज्ञोपवीत, सगाई आदि) गोचर चंद्रमा के इस अधिक शुभ बिंदु वाली राशि में होने पर करना उचित है।
2. **दांपत्य सुख के लिए वर वधू का चयन** : चन्द्राष्टक वर्ग में जिस राशि को **अधिक शुभ बिंदु मिले हों यदि वर** (या वधू) **की वही चंद्र राशि** हो, **तो दांपत्य सुख** व धन लाभ **उत्तम** होता है। अन्य विद्वानों ने स्वामी, राजा,

सेवक, गुरु या मित्र के चयन में भी इस सूत्र को उपयोगी बताया है। चंद्राष्टक वर्ग में जो राशि सर्वाधिक शुभ बिंदु पाए, उस चंद्र राशि वाले व्यक्ति का मुख दर्शन दिन को शुभ बनाता है। उसको दिया गया दान, मान भी विशेष फलदायी होता है। अतः ऐसे व्यक्ति का साथ या सामीप्य, सुख व संपन्नता की विशेष वृद्धि करता है।

3. **अशुभ समय :** चंद्राष्टक वर्ग में जिस राशि को शून्य या स्वल्प शुभ बिंदु मिलें उस राशि में गोचर चंद्रमा का आगमन अनिष्ट प्रद हो सकता हैं। कभी तो असफलता या अपमान का भी भय होता है। विवेकी जन इस समय कोई महत्त्वपूर्ण कार्य न करें। जिस स्वामी या मित्र की यह जन्म राशि हो, उससे संपर्क न रखने में ही कुशलता है अन्यथा कठिनाई बढ़ती है।
4. **शुभ दिशा :** राशि संख्या 1, 5, 9 =पूर्व; 2, 6, 10 =दक्षिण; 3, 7, 11 =पश्चिम, 4, 8, 12 =उत्तर दिशा होती है। चंद्राष्टक वर्ग में **जिस दिशा में अधिक शुभ बिंदु हों** उस दिशा में स्थित नदी, तालाब, कुआँ आदि के जल से स्नान करना शुभ होता है। मतान्तर से **उस दिशा में मुख कर** का स्नान व **जल ग्रहण करना अनिष्ट निवारण का सरल** व अचूक **उपाय** है।
5. अधिक शुभ बिंदु वाली दिशा में जो दुर्गा मंदिर हो उसमें आराधना, पूजन, दान करना शुभ फल देता है। उस दिशा में रहने वाली रानी, धनी व समर्थ महिला से भेंट करना लाभ प्रद होता है। अन्य विद्वानों की मान्यता है कि चंद्रमा से संबंधित सभी कारकों के लिए वह दिशा श्रेष्ठ है।

23.3 मंगल का अष्टक वर्ग

सूर्य से 3, 5, 6, 10, 11	गुरु से 6, 10, 11, 12
चंद्रमा से 3, 6, 11	शुक्र से 6, 8, 11, 12
मंगल से 1, 2, 4, 7, 8, 10, 11	शनि से 1, 4, 7, 8, 9, 10, 11
बुध से 3, 5, 6, 11	लग्न से 1,3,6,10,11

1. **मंगल की शुभ राशि :** मंगल के अष्टक वर्ग में जिस राशि को **अधिक शुभ बिंदु** प्राप्त हों उस **राशि** में गोचर वश मंगल का संचार शुभ फल देता है। उस समय **जमीन जायदाद की खरीद** या कब्जा लेने, सोने की खरीद, स्वर्णाभूषण पहनना (खरीदना) **कल्याण प्रद** होता है।
2. **मंगल की शुभ दिशा :** मंगल के अष्टक वर्ग में (मेष सिंह धनु पूर्व; वृष, कन्या, मकर_ दक्षिण; मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिम; कर्क वृश्चिक मीन_उत्तर)

जिस किसी दिशा को अधिक शुभ बिंदु मिलें उस दिशा को मंगल संबंधी कार्यों के लिए शुभ जानें। उस दिशा में कृषि, भूसंपदा लेना या सेनापति, भूमि पति से भेंट करना श्रेयस्कर होता है। **इस दिशा में हनुमान मंदिर में आराधना करना मनवांछित फल प्रदान करता हैं।** अपने घर में इस दिशा वाले कक्ष में हवन करना या भोजन आदि पकाना (अग्निकार्य) सुख प्रद होता है।

3. **सचिव, अंगररक्षक या रसोइये का चयन :** मंगल के अष्टकवर्ग में जिस राशि को अधिक शुभ बिंदु मिलें यदि सचिव या अंगरक्षक की जन्म कुंडली में मंगल उसी राशि में स्थित हो तो निश्चय ही ऐसा सहायक जातक के साहस, पराक्रम की वृद्धि कर सफलता दिलाने वाला होता है।

4. **अशुभ समय :** मंगल के अष्टक वर्ग में न्यूनतम शुभ बिंदु पाने वाली राशि में, गोचर वश मंगल का आगमन शत्रु भय, पराक्रम में कमी, भाईयों से मतभेद या प्रबंध कार्य में कठिनाई दे सकता है। इस समय सावधानी आवश्यक है तथा जोखिम पूर्ण कार्य करने से बचें। मतान्तर में मंगल ग्रह संबंधी (भूमि या अग्निपरक) कार्य करने से अनिष्ट हो सकता है।

23.4 बुध का अष्टक वर्ग

सूर्य से	5, 6, 9, 11, 12	गुरु से	6, 8, 11, 12
चंद्रमा से	2, 4, 6, 8, 10, 11	शुक्र से	1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11
मंगल से	1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11	शनि से	1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11
बुध से	1, 3, 5, 6, 9, 10, 11, 12	लग्न से	1, 2, 4, 6, 8, 10, 11

1. **सुंदर व सारगर्भित वक्तव्य :** विद्वानों ने बुध को वाणी, बुद्धि तथा विद्या को कारक माना है। जन्म कुंडली में लग्न से द्वितीय भाव वाणी स्थान कहलाता हैं। बुधाष्टक वर्ग में लग्न से **द्वितीय भाव**, (मतान्तर से बुध से द्वितीय भाव) में **अधिक शुभ बिंदुओं** का होना, जातक को **विद्वान** व **प्रभावशाली वक्ता** बनाता है। कभी पाप ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिंदु, वाणी को धृष्ट व दंभयुक्त बनाते हैं। किन्तु शुभ ग्रहों द्वारा दिए बिंदु, वाणी को सारगर्भित, मधुर व धर्म सम्मत बनाते हैं।

2. **शुभ समय :** बुध के अष्टक वर्ग में जिस राशि को अधिक शुभ बिंदु प्राप्त हो उस में गोचर वश बुध का संचार, पठन–पाठन या **विद्या संबंधी कार्यो में यश** व सफलता देता है।

3. **शुभ दिशा :** विज्ञ पाठक जानते हैं कि चार दिशाओं को तीन-तीन राशियों

मिली हैं। बुधाष्टक वर्ग में जिस दिशा में अधिक शुभ बिंदु हों उस दिशा में बुध संबंधी कार्य लाभप्रद होते हैं। मतांन्तर से घर की उस दिशा के कक्ष में या फिर उस ओर मुख करके पठन पाठन करना यश व सफलता देता है। छात्रों के लिए बुधाष्टक वर्ग की शुभ दिशा में **परीक्षा की तैयारी** करना **सफलता** को सुनिश्चित करता है।

4. **अशुभ वाणी** : बुध से दूसरी राशि (मतान्तर से लग्न से द्वितीय भाव) में राहु की स्थिति जातक की वाणी को भ्रष्ट व दूषित करती है। वह असभ्य व अश्लील भाषा बोलता है। वाणी भाव का बुध के अष्टक वर्ग में स्वल्प शुभ बिंदु पाना जातक को दुर्बुद्धि व मूक सरीखा बनाता है।

23.5 गुरु का अष्टक वर्ग

सूर्य से 1, 2, 3, 4, 7, 8, 9, 10, 11	गुरु से 1, 2, 3, 4, 7, 8, 10, 11
चंद्रमा से 2, 5, 7, 9, 11	शुक्र से 2, 5, 6, 9, 10, 11
मंगल से 1, 2, 4, 7, 8, 10, 11	शनि से 3, 5, 6, 12
बुध से 1, 2, 4, 5, 6, 9, 10, 11	लग्न से 1, 2, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11

1. **गुरुः की शुभ राशि** : गुरु के अष्टक वर्ग में जिस राशि को सर्वाधिक शुभ बिंदु प्राप्त हों, उस राशि में गोचर गुरु का संचार धन, मान, **यश व प्रतिष्ठा** देता है। **ध्यान रहे,** गुरु लगभग 12 वर्ष में भचक्र की परिक्रमा करता है, तथा एक राशि में लगभग वर्ष पर्यन्त रहता है। विद्वानों को मत है कि गुरु की शुभ राशि पर गोचर या गुरु की दृष्टि भी आधा शुभ फल देती है। उस समय मंत्र का पुरश्चरण, वेदाभ्यास, यज्ञ, धार्मिक ग्रंथों का श्रवण या पाठ करना, बैंक खाता खोलना, धर्मशाला बनवाना, फलदार वृक्ष लगाना, तथा तीर्थयात्रा आदि कार्य विशेष लाभ प्रद होते हैं।
2. **शुभ दिशा** : गुरू के अष्टक वर्ग में जिस दिशा को सर्वाधिक शुभ बिंदु प्राप्त हो उस दिशा में स्थित बैंक से लेन देन करना **कल्याणकारी** होता है। ऊपर वर्णित गुरु की शुभ राशि में जिस व्यक्ति का गुरु स्थित हो उससे व्यापार (रूपये पैसे का लेन देन) करना निश्चय ही **सुख समृद्धि** बढ़ाता है।
3. **अशुभ व्यक्ति** : गुरु के अष्टकवर्ग में जो राशि शून्य या न्यूनतम शुभ बिंदु प्राप्त करे उस राशि में गुरु की गोचर या जन्मकालिक स्थिति गुरु के कारकत्व (धन व यश) के लिए अशुभ मानी गयी है। ऐसे व्यक्ति को कोषाध्यक्ष नहीं बनाना चाहिए अन्यथा लाभ प्राप्ति में बाधा पड़ती है।

23.6 शुक्र का अष्टक वर्ग

सूर्य से 8, 11, 12	गुरु से 5, 8, 9, 10, 11
चंद्रमा से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12	शुक्र से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 10, 11
मंगल से 3, 5, 6, 9, 11, 12	शनि से 3, 4, 5, 8, 9, 10, 11
बुध से 3, 5, 6, 9, 11	लग्न से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9,11

1. **शुक्र की शुभ राशि :** शुक्र के अष्टक वर्ग में जिस राशि को सर्वाधिक शुभ बिंदु मिले, उसे शुक्र की शुभ राशि जानें। गोचर वश शुक्र का इस राशि में संचार **विवाह**, काम सुख अथवा सुख वैभव के साधन जुटाने, संगीत तथा वस्त्राभूषण या **वाहन** की खरीद **के लिए उत्तम** समय होता है।
2. **शुभ समय :** शुक्र के अष्टक वर्ग में सर्वाधिक शुभ बिंदु पाने वाली राशि में शुक्र का आगमन चित्र प्रदर्शनी, नृत्य, सिनेमा या माडलिंग सरीखे कार्यो से **धन लाभ व यश** दिलाता है।
3. **शुभ व्यक्ति :** शुक्र की शुभ राशि (ऊपर वर्णित) में जिस व्यक्ति का शुक्र स्थित हो वह निश्चय ही **सुख वैभव की वृद्धि** में सहायक होता है। अनेक विद्वान उसे आदर्श जीवनसाथी मानते हैं तो कुछ उसे काम तुष्टि प्रदान करने वाला 'कान्त' कहते हैं।
4. **शुभ दिशा :** शुक्र के अष्टक वर्ग में जिस दिशा को अधिक शुभ बिंदु मिलें उस दिशा से सुख वैभव की सामग्री (फ्रिज, कार, एयर कन्डीशनर, वस्त्राभूषण, कंप्यूटर) खरीदना सुख बढ़ाता है। घर में शुक्र की शुभ दिशा में शयन करना विशेष सुख व संतुष्टि देता है। इस **शुभ दिशा में कंप्यूटर व टी. वी. रखना** भी सुख संतोष को बढ़ाता है। इस दिशा में ससुराल होने पर वैवाहिक जीवन सुखी होता है।
5. **अशुभ व्यक्ति :** शुक्र के अष्टक वर्ग में न्यूनतम शुभ बिंदु पाने वाली राशि में, शुक्र का गोचर सुख वैभव में कमी या कष्ट को दर्शाता है। जिस व्यक्ति का शुक्र न्यूनतम शुभ बिंदु वाली राशि में हो ऐसा व्यक्ति सुख प्राप्ति में अशुभ या अनिष्ट प्रद होता है।

23.7 शनि का अष्टक वर्ग

सूर्य से 1, 2, 4, 7, 8, 10, 11	गुरु से 5, 6, 11, 12
चंद्रमा से 3, 6, 11	शुक्र से 6, 11, 12

मंगल से 3, 5, 6, 10, 11, 12	शनि से 3, 5, 6, 11
बुध से 6, 8, 9, 10, 11, 12	लग्न से 1, 3, 4, 6, 10, 11

1. **शनि की शुभ राशि :** शनि के अष्टक वर्ग में जिस राशि को सर्वाधिक शुभ बिंदु मिलें उसमें गोचरवश शनि का संचार नौकरी में तरक्की या विशेष सुख देता है। मतान्तर से इस अवधि में जातक सेवकों तथा **भूमि संबंधी कार्य** (कृषि, भवन, सेतु या पथ निर्माण) से **धन लाभ** व यश पाता है।
2. **शुभ दिशा :** शनि के अष्टक वर्ग में जिस दिशा की राशियों में शुभ बिंदुओं का योग सर्वाधिक हो, उस दिशा में खेती बाड़ी करना, नौकरों के मकान बनवाना, गोबर या ईंधन रखना, शौचालय या कूड़ा कबाड़ रखने की कोठरी बनवाना लाभप्रद होता है।
3. **अशुभ समय :** शनि के अष्टक वर्ग में जो राशि न्यूनतम शुभ बिंदु प्राप्त करे उस राशि में गोचर वश शनि का आगमन जातक की नौकरी में बाधा देता है। कोई जातक सेवकों के कारण सुख सुविधा व धन लाभ में कमी या कष्ट कठिनाई पाता है।
4. **अशुभ व्यक्ति :** शनि के अष्टक वर्ग में जो राशि न्यूनतम शुभ बिंदु पाए उसी राशि में सेवक की कुंडली में शनि की स्थिति हानि प्रद है। ऐसा सेवक जातक को सुख दे पाने में असमर्थ होता है। इसके विपरीत पैरा 7.1 में वर्णित शनि की शुभ राशि में शनि की स्थिति व्यक्ति को उत्तम सेवक बनाती है।

23.8 सर्वाष्टक वर्ग

विद्वानों ने सर्वाष्टक वर्ग में 30 या अधिक बिंदु पाने वाली राशि को **उत्तम;** 25 या उससे अधिक किंतु 30 से कम बिंदु पाने वाली राशि को **मध्यम** तथा 25 से कम शुभ बिंदु पाने वाली राशि को **अधम** माना है।

1. **सुख व संपन्नता का योग :** यदि किसी जातक की जन्म कुंडली में **चंद्रमा** सर्वाष्टक वर्ग में **30 या अधिक शुभ बिंदु** प्राप्त करे तो जातक जीवन में **सुख व समृद्धि** पाता है। यदि जन्म कुंडली में चंद्रमा को सर्वाष्टक वर्ग में 25 से कम बिंदु मिलें तथा चंद्रमा के अष्टकवर्ग में भी इसे शून्य बिंदु प्राप्त हो तो ऐसा जातक दीन हीन जीवन पाता है।
2. **सर्वाष्टक की शुभ राशि :** सर्वाष्टक वर्ग में जिस राशि को सर्वाधिक शुभ बिंदु मिलें उसे सर्वाष्टक की शुभ राशि जानें। इसमें गोचर चंद्रमा का संचार

सुख, समृद्धि, यश तथा वैभव देता है। ये समय शुभ व महत्त्वपूर्ण कार्यो में सफलता देता है। **कुछ विद्वान विवाह, व्यापार, या नौकरी** पर जाने **के लिए इस राशि में चंद्रमा की स्थिति** को बहुत **शुभ** मानते हैं।

3. जन्म कुंडली में भाव आश्रित वर्ग :

(i) विद्वानों ने लग्न, पंचम तथा नवम भाव को **धर्म त्रिकोण** कहा है। धर्म ही जीव का परम बंधु हैं यदि इन भावों में शुभ बिंदुओं का योग अधिक हो तो ऐसा जातक धार्मिक, उदार, व सत्कर्मी तथा श्रेष्ठ बंधुओं का सुख पाने वाला होता है।

(ii) द्वितीय, षष्ठ तथा दशम भाव को **अर्थ त्रिकोण** कहते है। कुछ विद्वानों ने इसे सेवक संबंधी सुख का कारक माना है। इन भावों में सर्वाष्टक वर्ग में अधिक शुभ बिंदु होना सेवकों से सुख दिलाता है।

(iii) तृतीय, सप्तम तथा एकादश भाव **काम त्रिकोण** (पोषक) कहलाते हैं। काम त्रिकोण में अधिक शुभ बिंदुओं का होना धन वैभव को दर्शाता है।

(iv) चतुर्थ, अष्टम व द्वादश भाव **मोक्ष त्रिकोण** कहलाता है। सर्वाष्टक वर्ग में इन भावों को प्राप्त शुभ बिंदुओं का योग अधिक होने पर जातक धन संपति से विमुख वैरागी होता है। कुछ विद्वानों ने इसे लौकिक सुख के लिए घातक माना है।

(v) यदि लग्न से 3, 7, 11 भाव में सर्वाष्टक में अधिक शुभ बिंदु हो तथा 4, 8, 12वें भाव में शुभ बिंदु कम हों तो ऐसा जातक **धनी, मानी व प्रतिष्ठित** व्यक्ति होता है।

4. **जीवन का उत्तम भाग** : विद्वानों ने सर्वाष्टक वर्ग को सब प्रकार के सुख दर्शाने वाला माना है।

(1) मीन + मेष + वृष + मिथुन = जीवन का प्रथम भाग (20-25 वर्ष)

(2) कर्क + सिंह + कन्या + तुला = जीवन का मध्य भाग (40 या 50 वर्ष तक)

(3) वृश्चिक + धनु + मकर + कुंभ = जीवन का अंतिम त्रिभाग (60 से 80 वर्ष तक)

जीवन के जिस खंड में अधिक शुभ बिंदु हों तो उसे श्रेष्ठ तथा अल्प बिंदु वाले भाग को हीन जानें। विद्वान ज्योतिषी सर्वाष्टक वर्ग में इस गणना से जीवन का उत्तम भाग सहज जान सकते हैं।

5. **सर्वाष्टक वर्ग से स्वभाव जानना** : अनेक विद्वान जातक का अन्तःकरण

जानने के लिए सर्वाष्टक का प्रयोग करते हैं। यदि केन्द्र या त्रिकोण भाव (शुभ वर्ग) में अधिक शुभ बिन्दु हों तो जातक विद्वान, उदार, गुणी, सदाचारी, धनी व परोपकारी व्यक्ति होता है। इसके विपरीत केन्द्र व त्रिकोण भाव से अन्यत्र (अशुभ भाव वर्ग में) सर्वाष्टक में अधिक बिंदु होना जातक को दंभी, पाखंडी, लोभी व कृपण बनाता है ऐसा जातक राजसिक या तामसिक गुणों वाला होता है।

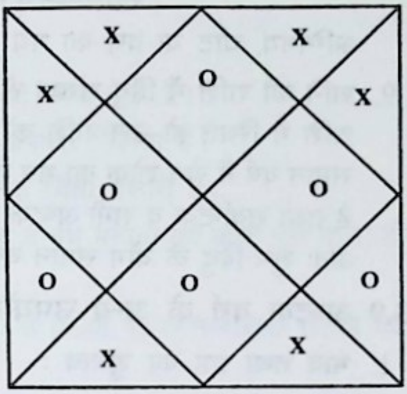

(**O** शुभ भाव; **X** अशुभ भाव)

6. **अरिष्ट काल :**

(i) सर्वाष्टक वर्ग में लग्न से शनि तक सभी राशियों के शुभ बिंदु जोड़ें। इस योग को 7 से गुणा कर 27 से भाग दें। जो शेष बचे उस वर्ष में रोग, पीड़ा व शोक सरीखे अनिष्ट फल जातक पाता है।

(ii) इसी भांति शनि से लग्न तक की सभी राशियों के शुभ बिन्दुओं का योग कर उसे 7 से गुणा करें तथा 27 से भाग दें। जो शेष बचे उस वर्ष शनि जन्य पीड़ा व क्लेश सरीखा अनिष्ट फल जानें। **ध्यान रहे**, दोनों ही परिस्थिति में लग्न तथा अधीष्ठित राशि के बिंदु जोड़ने हैं।

(iii) अन्य विद्वान शनि की ही भांति लग्न से मंगल तक की राशियों के बिंदुओं के योग को 7 से गुणा व 27 से भाग देने पर प्राप्त शेष वर्ष को अशुभ मानते हैं।मंगल से लग्न से शनि पर्यन्त राशियों के बिंदुओं का योग 7 से गुणा व 27 से भाग करने पर जो शेष मिले उस वर्ष को अनिष्ट फल देने वाला मानते हैं।

7. **राहु से विष भय** : सर्वाष्टक वर्ग में राहु अधीष्ठित राशि को जितने शुभ बिंदु मिलें उतनी संख्या के वर्ष में विष संक्रमण infection या विष भक्षण food poisoning का भय होता है। कभी ऐसा जातक गुप्त पीड़ा या शत्रु से त्रास पाता है।

8. **मंगल से दुर्घटना** : सर्वाष्टक वर्ग में मंगल जिस राशि में हो उसे जितने शुभ बिंदु मिलें उस के समान वर्ष संख्या की आयु में जातक को दुर्घटना,

अग्निभय, चोट या व्रण का भय होता है।

9. **शनि की राशि में बिंदु संख्या से रोग ज्ञान :** जन्म कुंडली में शनि जिस राशि में स्थित हो उस राशि को सर्वाष्टक वर्ग में प्राप्त शुभ बिंदु संख्या समान वर्ष में रोग शोक का भय होता है। कारण शनि काल पुरुष का दुख है तथा सर्वाष्टक व सभी अष्टक वर्गों का सम्मिलित प्रभाव दिखलाता है। अतः शुभ बिंदु के योग समान वर्ष में शनि का कष्ट देना तर्क संगत है।

23.9 अष्टक वर्ग के अन्य उपयोग

1. **भाव तथा ग्रह का शुभत्व :**

(i) जन्म कुंडली में जो ग्रह उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्र राशिस्थ हो वह गोचर वश अपने वर्ग में अधिक शुभ बिंदु पाने वाली राशि पर संचार करते हुए निश्चय ही से शुभ फल देगा।

(ii) सर्वाष्टक वर्ग मे जो भाव अधिक बिंदु पाता है वह शुभ तथा बली होता है। गोचर वश शुभ ग्रह या लग्नेश का उस राशि पर संचार शुभ फल दिया करता है।

2. **लाभ तथा सुख कब :** अष्टक वर्ग का स्वामी जिस भाव को अधिक शुभ बिंदु देता है जातक उस भाव से संबंधित विशेष सुख पाता है। उदाहरण के लिए मकर लग्न जातक का गुरु यदि मीन राशि में हो तथा गुरु के अष्टक वर्ग में मकर राशि को 6 शुभ बिंदु प्राप्त हो तो गुरु का मकर राशि में गोचर जातक को धन लाभ देगा। कारण मीन राशिस्थ गुरु के लिए मकर लाभ स्थान है। इसी प्रकार गुरु का मिथुन राशि में गोचर पारिवारिक व मानसिक सुख बढ़ाएगा।

3. **शुभ व कल्याणकारी वर्ष :** सर्वाष्टक वर्ग के जिस भाव में सर्वाधिक शुभ बिंदु हों उस भाव समान संख्या का वर्ष जीवन में सुख व संतोष की वृद्धि करता है। यदि किसी जातक के पंचम भाव में सर्वाष्टक वर्ग में सर्वाधिक 39 बिंदु हो तो उस जातक के जीवन में 5, 17, 29, 41, 53, 65, 77वां वर्ष बहुत उत्तम व श्रेष्ठ फल देने वाला होगा।

4. **सर्वाष्टवर्ग में विन्दुओं का फल**

(i) सर्वाष्टक वर्ग में जिस राशि को मात्र **14 बिंदु** मिलें उसे मृत्यु सरीखा कष्टदायी जानें उस पर अनिष्ट ग्रह या राहु का संचार मृत्यु भय या महान कष्ट देता है। इसी प्रकार

(ii) किसी राशि में **15 बिन्दु** तथा क्रूर ग्रह की स्थिति होने पर महान विपत्ति

होती है।

(iii) जिस राशि में **16 बिंदु** हो वह देह कष्ट देती है।

(iv) **17 बिंदु** होने पर सुख नाश व अपयश मिलता है।

(v) **18 बिंदु** धन की हानि व मानसिक चिंता दर्शाते हैं।

(vi) **19 बिंदु** होने से जातक दुष्ट बुद्धि व बंधु बांधवों को कष्ट देने वाला होता है।

(vii) **20 बिंदु** होने से मित्र व संबंधियों से कलह क्लेश मानसिक संताप बढ़ता है।

(viii) **21 बिंदु** जिस राशि को मिले वहां भी चंद्रमा या लग्नेश का गोचर मानसिक दुख व अवसाद को बढ़ाता है।

(ix) **22 बिंदु** होने से जातक कुमति, दीनता व पराभव पाता है।

(x) **23 बिंदु** होने से धर्म, अर्थ, काम की हानि तथा चित्त में उद्विग्नता व्यग्रता होती है।

(xi) **24 बिंदु** होने से राजदंड, रोग या दुर्घटना के कारण धन व्यय होने से चिन्ता होती है।

(xii) **25 या अधिक बिंदु** प्राप्त राशि अनिष्ट प्रद नहीं होती। ऐसा भाव अपने कारकत्व के फल अल्पाधिक मात्रा में अवश्य दिया करता है।

23.10 विभिन्न अष्टम वर्ग में बिंदु फल विचार

1. सूर्य का बिुदु फल

बिंदु	फल
0	अपमान, अपयश
1	रोग और चिंता
2	पाप कर्म, अपमान
3	यात्रा में कष्ट, और संताप
4	आय व्यय, सुख दुःख बराबर रहें
5	विद्या लाभ, सत्संग से सुख
6	कार्य में सफलता और यश प्राप्ति
7	मान, सम्मान, पद प्रतिष्ठा
8	राजा सरीखा सुख वैभव

2. चंद्रमा का बिंदु फल

बिंदु	फल
0	महान क्लेश, दुःख पीड़ा
1	कष्ट तथा भय
2	धन हानि, पत्नी से कलह
3	सामान्य जन से वैर विरोध
4	उदासीनता सुख दुख का मिश्रण
5	सुख, शान्ति उत्साह व उल्लास
6	मनचाहे व्यक्ति से मिलन, सुख सामग्री की प्राप्ति
7	उत्तम भोजन, सुखी जीवन
8	लोकप्रियता, यश, कीर्ति सभी प्रकार का सुख

3. मंगल का बिंदु फल

बिंदु	फल
0	नेत्रों को कष्ट
1	शस्त्राघात या ज्वर पीड़ा
2	धन संपदा का विवाद
3	दुर्बलता, विपत्ति, भटकन
4	सुख दुःख समान रहें
5	तर्क व न्याय पूर्ण व्यवहार
6	राज्य, धन व सम्मान मिले
7	भाइयों का उत्कर्ष और उनसे स्नेह सहयोग की प्राप्ति
8	शत्रु पर विजय, भूमि लाभ

4. बुध का बिंदु फल

बिंदु	फल
0	महान हानि कष्ट
1	शत्रुजन्य बाधा व पीड़ा
2	रोग और संताप
3	मनोव्यथा, अवसाद

4	उदासीनता
5	मित्र तथा संबंधियों से सुख व सहयोग
6	बुद्धि व प्रतिभा से सम्मान प्राप्ति
7	तीव्र बुद्धि, विद्या तथा धन लाभ
8	सत्ता सुख, स्नेह सम्मान और यश

5. गुरु का बिंदु फल

बिंदु	फल
0	निर्धनता, कष्ट, दुर्बुद्धि
1	धन हानि
2	राजकोप, बच्चों को कष्ट
3	धन तथा देह सुख की कमी
4	आर्थिक स्थिति यथावत्
5	सभी कार्यो में प्रगति और सफलता
6	सुख वैभव की वृद्धि
7	धन तथा संतान का श्रेष्ठ सुख
8	पद प्रतिष्ठा व यश की प्राप्ति

6. शुक्र का बिुदु फल

बिंदु	फल
0	दुःख, विपत्ति
1	पत्नी को पीड़ा व रोग भय
2	दांपत्य सुख में कमी
3	मित्रों से वैर विरोध
4	मिश्रित फल
5	लोक प्रियता तथा विलास वृद्धि
6	प्रेमी या प्रेमिका से मिलन सुख
7	रत्नाभूषण तथा वैभव की प्राप्ति
8	विविध भोग सामग्री, धन वैभव तथा यश की प्राप्ति

7. शनि का बिुदु फल

बिंदु	फल
0	सर्वनाश, महान दुःख, क्लेश
1	रोग, अपमान व दरिद्रता
2	रोग, क्लेश बंधन पीड़ा
3	धन हानि, बंधुओं से वियोग दुःख, स्त्रीकष्ट।
4	साधारण सुख दुःख
5	धन धान्य का लाभ
6	निम्न आय वर्ग से सम्मान व यश की प्राप्ति
7	दास दासी का उत्तम सुख तथा राज्य लाभ।
8	राजा सरीखा सुख वैभव

8. ध्यान रहे

1. विभिन्न अष्टक वर्ग में 4 से अधिक शुभ बिंदु पाने वाली राशि शुभ होती है।
2. शनि के अष्टक वर्ग में जिस राशि को 6 बिंदु मिलें उस पर शनि का गोचर जातक को निम्न आय वर्ग के लागों से **स्नेह व सम्मान** दिलाएगा। जातक उनका नेतृत्व कर धन, वैभव व सफलता पाएगा।
3. इसी प्रकार गुरु के अष्टक वर्ग में 6 बिंदु पाने वाली राशि पर गोचर वश गुरु का संचार, निश्चय ही **सुख समृद्धि** तथा धन वैभव प्रदान करेगा।
4. यह नियम अन्य ग्रहों के लिए भी जानें। संक्षेप में कोई भी ग्रह, अपने अष्टक वर्ग की शुभ (अधिक बिंदु पाने वाली) राशि पर गोचर करते हुए शुभ परिणाम देता है।
5. स्वल्प बिंदु पाने वाली राशि पर ग्रह का गोचर संचार अशुभ परिणाम दिया करता है।

23.11 समीक्षा

1. इस अध्याय में विभिन्न अष्टक वर्गों में अधिक शुभ बिन्दु पाने वाली राशि अष्टक वर्ग के स्वामी के लिए महत्वपूर्ण होती है।
2. इसी प्रकार अष्टक वर्ग में जो राशि अधिक शुभ बिंदु पाए वह दिशा संबंधित कारकत्व के लिए शुभ होती है।
3. जब कोई ग्रह अपने अष्टक वर्ग में अधिक बिंदु पाने वाली राशि पर गोचर

करता है तब वह दशा भुक्ति के अनिष्ट प्रभाव में कमी कर शुभ परिणाम देता है।

4. इसी प्रकार अष्टक वर्ग का स्वामी यदि अपने अष्टक वर्ग में शून्य या स्वल्प शुभ बिंदु पाने वाली राशि पर गोचर वश संचार करे, तो अनिष्ट परिणाम मिलते हैं।

5. विद्वानों ने अग्नितत्व राशि 1,5,9 को पूर्व; भूतत्व राशि 3,7,11 को दक्षिण; वायुतत्व राशि 2,6,10 को पश्चिम तथा जलतत्व राशि 4,8,12 को उत्तर माना है।

किसी भी अष्टक वर्ग में जो दिशा अधिक शुभ बिंदु प्राप्त करे वह दिशा अष्टक वर्ग स्वामी के कारकत्व के लिए शुभ होती है।

6. (i) सूर्याष्टक वर्ग की शुभ दिशा में व्यापार, व्यवसाय या नौकरी लाभ प्रद है।

(ii) चंद्रमा की शुभ दिशा में मुख कर स्नान करना अनिष्ट निवारण करता है।

(iii) मंगल की दिशा में भूसंपदा लेना लाभप्रद है।

(iv) बुध की दिशा में अध्ययन करना सफलता देता है।

(v) गुरु की शुभ दिशा में स्थित बैंक से लेन देन कल्याणकारी होता है।

(vi) शुक्र की शुभ दिशा में सुसराल होना, टी.वी कंप्यूटर रखना उस दिशा में सिर रख कर सोना सुख संतोष बढ़ाता है।

(vii) शनि की शुभ दिशा में नौकरों के मकान बनाना, शौचालय या कबाड़ घर बनाना लाभ प्रद होता है।

7. सर्वाष्टक वर्ग में राशि संख्या 12,1,2,3 जीवन का प्रथम भाग लगभग 25 वर्ष की आयु; राशि 4,5,6,7 जीवन का मध्य वर्ग 50 वर्ष तक की आयु, राशि क्रमांक 8,9,11, जीवन का अन्तिम भाग 80 वर्ष तक माना जाता है। जिस भाग में अधिक शुभ बिंदु हो उस अवस्था में जातक विशेष सुख पाता है।

●●●

अध्याय-24
योगिनी दशा

योगिनी दशा की कुल अवधि 36 वर्ष है जबकि विंशोत्तरी में दशा की अवधि 120 वर्ष है। अन्य शब्दों में यदि मनुष्य की पूर्ण आयु 120 वर्ष मानें तो योगिनी दशा के तीन चक्र पूरे हो जाएंगे और चौथे चक्र की दशाएं जीवन के अंत समय में चल रही होंगी।

24.1 योगिनी दशाओं के नाम और फल निम्न प्रकार हैं:

1. **मंगला (चन्द्रमा) अवधि 1 वर्ष :** इस दशा में मन पवित्र होता है तथा धार्मिक कार्यों में सहज रुचि होती है। देव पूजन, सत्संग, धर्म चर्चा व पुराण कथाओं में सम्मिलित होने से सुख, वैभव और संपन्नता बढ़ती है। इस अवधि में सुख, सुविधा, यश एवं रत्नाभूषण की प्राप्ति होती है। घर परिवार में मंगल उत्सव होते हैं। विद्या, विनय, वैभव के साथ मित्र व संबंधियों का स्नेह व सहयोग भी मन की प्रसन्नता को बढ़ाता है। अन्य विद्वानों के अनुसार मंगल, मांगल्य, मंगला का अर्थ शुभ श्रेष्ठ व कल्याणकारी है। निष्ठावान पत्नी, सुशील, आज्ञाकारी और भाग्यशाली संतान, धन वैभव, शुभता, पूजा अर्चना प्रार्थना द्वारा अरिष्ट निवारण, स्वस्थ, श्रेष्ठ व कल्याणकारी आयोजन, पद, प्रतिष्ठा, प्रताप, पराक्रम व विशेष सफलता, मंगला की दशा या भुक्ति में सहज मिलती है।
2. **पिंगला (सूर्य) अवधि 2 वर्ष :** विद्वानों ने सूर्य को क्रूर ग्रह माना है। अतः इस दशा में मनोव्यथा, देह कष्ट, हृदय रोग तथा मिथ्या मनोरथ से उपजा दुःख अथवा अनैतिक आचरण, या कुसंगति के कारण धन व यश की हानि, तो कभी पित्त रोग, ज्वर या रक्त विकार से कष्ट होता है। इस अवधि में संतान, सेवक तथा संबंधी भी कष्ट पाते हैं जिस कारण मन दुःखी रहता है। कुछ विद्वान पिंगला का संबंध, अग्नि-दुर्घटना या ऊष्णता; वरिष्ठ जन के सहयोग से कार्य सिद्धि, उल्लू जैसी सजगतः, कुबेर का खजाना, पर्यटन प्रेम, व्यापार कुशलता, पीला या सुनहरी रंग जो प्रसन्नता का वातावरण बनाए, कष्ट-क्लेश से मुक्ति, किसी प्रभावशाली महिला का सहयोग व

समर्थन तथा शुभ कृत्य, उदारता, परोपकार और अधिकार या सत्ता सुख से जोड़ते है। ध्यान रहे पिंगला एक सरल हृदया और धार्मिक विचार वाली राजनर्तकी थी, जो अपने तोते को राम नाम सिखाते हुए मृत्यु पाकर मुक्त हो गई।

3. **धान्या (गुरु) अवधि 3 वर्ष :** धान्या दशा का संबंध गुरु, उन्नति, प्रगति, विकास, धन-मान की वृद्धि तथा सुख संपन्नता से माना जाता है। इस अवधि में विद्या, शिक्षा और योग्यता बढ़ती है तथा शत्रु नष्ट होते हैं। गुरु धर्म और अध्यात्म का कारक होने से, धान्या दशा में, जातक देवार्चन करता है तथा उपासना व तीर्थाटन से कार्यसिद्धि व सुख पाता है। कभी राजा के अनुग्रह से धन, मान और पद प्रतिष्ठा मिलती है। अन्य विद्वान धान्या को धन धान्य की वृद्धि करने वाली दशा मानते हैं। ये दशा स्वास्थ्य, सम्मान, सद्गुण, स्नेह व परस्पर सहयोग को बढ़ाकर सुखी बनाती है। यों तो प्राचीन ग्रंथों में धान्या को मधुर, शीतल, स्वादिष्ट, स्वास्थ्य वर्धक तथा उत्तम भोजन माना है किंतु मतान्तर से कहीं धान्या को अर्थ कसैला, कड़वा अथवा प्यास बढ़ाने वाला, तिक्त तथा मूत्र रोग का कारक भी माना गया है।

4. **भ्रामरी (मंगल) अवधि 4 वर्ष :** ये दशा, पर्यटन, भ्रमण तो कभी घर परिवार से दूर निरर्थक भटकाव दिया करती है। मंगल अग्नि तत्व, क्रूर ग्रह होने से कभी, पदभंग, मानहानि या स्थानान्तरण संबंधी क्लेश देता है। कोई जातक साहस, पराक्रम तथा परिश्रम से, अपनी प्रतिष्ठा बचाने या सफलता और सम्मान पाने से सुखी होता है। अन्य विद्वानों के अनुसार भ्रामरी दशा घर परिवार के सुख में तो कमी करती है किंतु परिश्रम व पर्यटन द्वारा जातक, राजा सरीखे धनी मानी व्यक्तियों की कृपा से, लाभ पाता है। यदि जातक, मानसिक संतुलन और धैर्य बनाए रखे तो जैसे देवी ने भ्रमरों द्वारा दैत्य समुदाय का नाश किया था, वैसे ही सारी बुराइयां इस दशा में स्वतः मिट जाती हैं।

5. **भद्रिका (बुध) अवधि 5 वर्ष :** ये दशा परिवार में स्नेह, सौहार्द तथा सहयोग बढ़ाती है। नए व लाभकर मैत्री संबंध बनते है। जातक संत, महात्मा, धनी मानी तथा राजा या उच्च अधिकारियों की कृपा से धन, मान व सुख पाता है। घर में मंगल समारोह का आयोजन होता है। व्यापारिक दक्षता तथा सुख सुविधा की वृद्धि होती है। मित्रों के साथ आमोद-प्रमोद में समय बीतता है। भ्रद या भद्रिका का अर्थ शुभ और कल्याणप्रद होता है। जातक मानो शुभता का आगार बन जाता है। सिद्ध महात्मा और धनी मानी व्यक्तियों

के आशीर्वाद से उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। वह स्वस्थ, गुणी, उदार, परोपकारी तथा दूसरों की सेवा सहायता को तत्पर रहने से, स्नेह, सम्मान व प्रतिष्ठा पाता है।

6. **उल्का (शनि) अवधि 6 वर्ष :** किसी अग्नि पिंड का आकाश से गिरना उल्कापात कहलाता है। इसकी तुलना निर्धारित लक्ष्य पर मार करने वाले संहारक प्रक्षेपास्त्र से की जा सकती है। ये दशा धन, यश तथा वाहन सुख को नष्ट करती है। संतान तथा सेवक से मानसिक कष्ट क्लेश मिलता है। कभी राजा के कोप से धन और प्रतिष्ठा की हानि होती है। परिवार में मतभेद या वैर विरोध बढ़ने से, घर मानो युद्ध भूमि अथवा शत्रु दुर्ग सरीखा जान पड़ता है। हृदय, उदर, दांत, कान या पांव की पीड़ा भी दुःख दिया करती है। अन्य विद्वानों के मत से उल्का दशा, नगर या बस्ती में उपद्रव या उत्पाद (दंगों) से कष्ट देती है। कभी अग्नि या दुर्घटना का भय होता है। शायद ये अवधि व्यक्ति, परिवार, समाज तथा देश (स्थान) के लिए अशुभ और अनिष्टप्रद है। कोई जातक ज्योतिष या व्याकरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट सफलता भी पाता है।

7. **सिद्धा (शुक्र) अवधि 7 वर्ष :** इस दशा को विद्वानों ने धन, विद्या सफलता व संपन्नता देने वाली दशा माना है। जातक सुख, सौभाग्य, सम्मान तथा पद-प्रतिष्ठा व यश पाता है। उसे धन, वस्त्र, रत्नाभूषण तथा वाहन सुख की प्राप्ति होती है। कभी बच्चों का विवाह होने से सुख व संतोष मिलता है। अन्य विद्वानों के अनुसार इस दशा में जातक की सभी इच्छाएं पूरी होती हैं। उसे मनवांछित लाभ और सफलता मिलती है। वह उच्च पद, अधिकार व सत्ता सुख पाता है। कभी सिद्ध महात्माओं की कृपा से, दैवीय गुण और शक्तियों का विकास होता है। वह निर्णय कुशल, सभी के झगड़े निपटाने वाला तथा चमत्कारिक व्यक्तित्व का धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

8. **संकटा (राहु) अवधि 8 वर्ष :** यह दशा धन, मान, यश तथा पद प्रतिष्ठा की हानि करती है। कभी चोरी, अग्निभय या उपद्रव के कारण धन संपदा का नाश होता है। मिथ्या मनोरथ, देह की दुर्बलता, परिवार से वियोग या स्वर्ण की हानि भी क्लेश देती है। यदि आयुष्य समाप्त प्रायः हो तो, जातक की मृत्यु होना भी संभव है। मतान्तर से जातक, मनमानी करने की प्रवृत्ति, हठी स्वभाव, कुसंगति व स्वार्थपूर्ण आचरण के कारण, अपनी परेशानी स्वयं ही बढ़ाता है। लोभ और स्वार्थ के वशीभूत होकर वह, नीति विरुद्ध कार्य कर ,अपयश और कलंक का भागी बनता है। कभी संकीर्ण व संकुचित

मनोवृत्ति भी मनोव्यथा का कारण बनती है। बनारस की संकटा देवी की उपासना करने से संकट मिटते हैं तथा सुख की प्राप्ति होती है।

24.2 मंगला की दशा में विभिन्न अन्तर्दशाएं (कुल अवधि 1 वर्ष)

1. **मंगला-मंगला (चंद्रमा-चंद्रमा) : अवधि 10 दिन/कुल अवधि 10 दिन समाप्त :** मित्र मंडल का विस्तार, स्वास्थ्य व संतान के सुख की वृद्धि, पत्नी से मधुर संबंध, परिवार में स्नेह सौहार्द की वृद्धि तो कभी घर में मंगल उत्सव, से मन को प्रसन्नता मिलती है।
2. **मंगला-पिंगला (चंद्रमा-सूर्य) : अवधि 20 दिन कुल अवधि 1 मास समाप्त** : संबंधियों से मतभेद होता है या आपसी मन मुटाव से मन में अशान्ति बढ़ती है। विविध प्रकार के दुःख व क्लेश अनायास मिलने से व्यग्रता होती है। देह और मन का सुख नष्ट होता है तथा कष्ट क्लेश बढ़ता है।
3. **मंगला-धान्या (चंद्रमा-गुरु) : अवधि 1 मास/कुल अवधि 2 मास समाप्त** : जातक को वाहन सुख, संतान तथा मित्रों से लाभ तथा सभी प्रकार की सुख सुविधाएं और वैभव मिलता है। इस दशा में बच्चों के श्रेष्ठ व प्रशंसनीय कार्यों से जातक सम्मान व सुख पाता है। कारण चंद्रमा तथा गुरु दोनों ही शुभ ग्रह हैं तथा गुरु विद्या व संतान का कारक भी है। अतः बच्चे, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता पाकर, माता-पिता को यश दिलाते हैं।
4. **मंगला-भ्रामरी (चंद्रमा-मंगल) : अवधि 1 मास 10 दिन/ कुल अवधि 3 मास 10 दिन समाप्त :** घर परिवार तथा बंधुओं से दूर विदेश में वास होता है। धन हानि तो कभी किसी महिला से मतभेद या वैर विरोध से कठिनाई बढ़ती है। प्रतिष्ठित, सत्ताधारी नेता या उच्च पदाधिकारी से मेल मिलाप, जातक को लाभप्रद सिद्ध होता है।
5. **मंगला-भद्रिका (चंद्रमा-बुध) : अवधि 1 मास 20 दिन/कुल अवधि 5 मास समाप्त :** धन-धान्य की वृद्धि, परिवार में स्नेह सहयोग का वातावरण, पत्नी से मधुर संबंध, देव पूजन में रुचि तथा मित्रों के साथ आमोद-प्रमोद इस दशा अवधि के मुख्य फल हैं। जातक सभी का स्नेह, सम्मान, सहयोग व समर्थन पाने से स्वयं को बहुत भाग्यशाली और सुखी मानता है।
6. **मंगला-उल्का (चंद्रमा-शनि) : अवधि 2 मास/कुल अवधि 7 मास समाप्त** : इस दशा में जातक धन हानि या राजदंड की पीड़ा पाता है। कभी पुत्र, पत्नी तथा मित्र भी उसके कष्ट, क्लेश और कठिनाइयों को अनजाने में बढ़ाया करते हैं।

7. **मंगला-सिद्धा (चंद्रमा-शुक्र) : अवधि 2 मास 10 दिन/कुल अवधि 9 मास 10 दिन समाप्त :** जातक को पत्नी तथा पुत्र से सुख मिलता है। धन लाभ, सुख वैभव की वृद्धि, मित्र तथा बंधुओं के साथ आमोद प्रमोद के कारण जातक सुखी होता है।
8. **मंगला-संकटा (चंद्रमा-राहु) : अवधि 2 मास 20 दिन/कुल अवधि 1 वर्ष समाप्त :** जातक को अग्नि, चोर, राजदंड, जल में डूबने या बाढ़ के कारण हानि से क्लेश होता है। कोई जातक इस अवधि में अपमान, अपयश, मनोव्यथा या जटिल रोग के कारण मृत्यु तुल्य कष्ट पाता है।

24.3 पिंगला की दशा में विभिन्न अन्तर्दशाएं (अवधि 2 वर्ष)

1. **पिंगला-पिंगला (सूर्य-सूर्य) : अवधि 1 मास 10 दिन/कुल अवधि 1 मास 10 दिन समाप्तः** जातक मानसिक संताप, निराशा, रोग, पीड़ा या अवसाद पाता है। कभी दुर्व्यसन, कुसंगति अथवा दुराचार से भी कष्ट क्लेश में वृद्धि होती है। वह रोग, निराशा तथा मानसिक तनाव से उद्विग्न बना रहता है।
2. **पिंगला-धान्या (सूर्य-गुरु) : अवधि 2 मास/ कुल अवधि 3 मास 10 दिन समाप्त :** जातक धन-धान्य का लाभ, सुख सुविधा और वैभव, संतान सुख तथा स्त्री सुख पाता है। ये दशा जातक को सुख, सम्मान, संपन्नता और समृद्धि दिया करती है।
3. **पिंगला-भ्रामरी (सूर्य-मंगल) : अवधि 2 मास 20 दिन/कुल अवधि 6 मास समाप्त :** घर से दूर जातक विदेश या परदेश रहकर कष्ट पाता है। कभी धन संपदा या वैभव में कमी होती है। घर परिवार में मतभेद तथा मित्र व बंधुओं से विरोध के कारण, धन की हानि उठानी पड़ती है और चित्त को क्लेश भी होता है।
4. **पिंगला-भद्रिका (सूर्य-बुध) : अवधि 3 मास 10 दिन/ कुल अवधि 9 मास 10 दिन समाप्त :** जातक संतान की ओर से प्रसन्नता और लाभ पाता है। उसके धन, वैभव और यश की वृद्धि होती है। कभी स्थान परिवर्तन से धन, मान तथा पद प्रतिष्ठा वृद्धि का सुख मिलता है।
5. **पिंगला-उल्का (सूर्य-शनि) : अवधि 4 मास/कुल अवधि 1 वर्ष 1 मास 10 दिन समाप्त :** मित्र तथा संबंधियों से मतभेद या कटुता के कारण जातक कष्ट पाता है। कभी राजदंड या चोरी से भी धन संपदा की हानि होती है। कोई जातक, आचरणहीन व्यक्तियों से संपर्क के कारण, अपमान और अपयश का भागी बनता है।

6. **पिंगला-सिद्धा (सूर्य-शुक्र) : अवधि 4 मास 20 दिन/कुल अवधि 1 वर्ष 6 मास समाप्त :** इस दशा में जातक, यंत्र मंत्र का प्रयोग कर, धन धान्य तथा सुख वैभव में वृद्धि पाता है। कोई जातक श्वांस रोग या मधुमेह से कष्ट पाता है।
7. **पिंगला-संकटा (सूर्य-राहु) : अवधि 5 मास 10 दिन/ कुल अवधि 1 वर्ष 11 मास 10 दिन समाप्त :** जातक आर्थिक क्षति, रोग व शत्रु भय अथवा राजकोप (राजदंड) से कष्ट व संताप पाता है।
8. **पिंगला-मंगला (सूर्य-चंद्र) : अवधि 20 दिन/कुल अवधि 2 वर्ष समाप्त :** जातक रोग, पीड़ा, क्लेश तथा आयुष्य की हानि पाता है। कभी मोह या आसक्ति के कारण उसकी कठिनाई और पीड़ा बढ़ा करती है।

24.4 धान्या में विभिन्न अन्तर्दशाएं (अवधि 3 वर्ष)

1. **धान्या-धान्या (गुरु-गुरु) : अवधि 3 मास/कुल अवधि 3 मास समाप्त :** जातक को भूमि, भवन और संपदा से लाभ होता है। धन धान्य की वृद्धि तो कभी राजा के अनुग्रह से पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति हुआ करती है। इस अवधि में जातक पुत्र और पत्नी की अनुकूलता से परिवार का श्रेष्ठ सुख पाता है।
2. **धान्या-भ्रामरी (गुरु-मंगल) : अवधि 4 मास/ कुल अवधि 7 मास समाप्त :** जातक धन हानि, व्यर्थ की भटकन तथा मित्रों से मतभेद के कारण कष्ट व क्लेश पाता है। कभी अपने देश को छोड़कर परदेश में जाना पड़ता है। स्थान भंग से सम्मान, संपदा और सुख की हानि होती है।
3. **धान्या-भद्रिका (गुरु-बुध) : अवधि 5 मास/कुल अवधि 1 वर्ष समाप्त :** जातक के सुख, सौभाग्य व पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। वह धन धान्य तथा संपदा की वृद्धि, स्वर्णाभूषण, सत्ता लाभ, वाहन सुख तथा मान सम्मान पाता है।
4. **धान्या-उल्का (गुरु-शनि) : अवधि 6 मास/कुल अवधि 1 वर्ष 6 मास समाप्त :** इस दशा में जातक हृदय तथा कटि प्रदेश की पीड़ा तथा देह दुर्बलता से कष्ट पाता है। वह अनेक प्रकार की विघ्न बाधाओं से स्वयं को घिरा हुआ पाता है। कभी धन संपदा की क्षति भी दुःख को बढ़ाती है।
5. **धान्या-सिद्धा (गुरु-शुक्र) : अवधि 7 मास/कुल अवधि 2 वर्ष 1 मास समाप्त :** जातक को संतान सुख मिलता है। मित्र समागम से चित्त में प्रसन्नता

बढ़ती है। विभिन्न प्रकार की सुविधाओं और वैभव सामग्री से देह सुख होता है तथा समाज में प्रतिष्ठा मिलती है।

6. **धान्या-संकटा (गुरु-राहु) : अवधि 8 मास/कुल अवधि 2 वर्ष 9 मास समाप्त :** जातक का काम काज में मन नहीं लगता। कभी चित्त उचाट होता है तो कभी भय या विषाद ग्रस्त। कोई जातक बंधन या कारावास का जीवन जीने को विवश और अकर्मण्य होता है। ध्यान रहे राहु का विष मन में विषाद पैदा कर चित्त को उचाट करता है।
7. **धान्या-मंगला (गुरु-मंगल) : अवधि 1 मास/कुल अवधि 2 वर्ष 10 मास समाप्त :** घर में मंगल उत्सव होने से प्रसन्नता होती है। जातक धर्म व परोपकार के कामों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है। उसकी धन संपदा, तथा रत्नाभूषण की वृद्धि होती है। परिवार में स्नेह व सौहार्द बढ़ने से जातक पुत्र तथा पत्नी से सुख पाता है।
8. **धान्या-पिंगला (गुरु-सूर्य) : अवधि 2 मास/कुल अवधि 3 वर्ष समाप्तः** धन संपदा की हानि से जातक कष्ट व क्लेश पाता है। कभी मन में निराशा और विषाद भी कष्ट देता है। कोई जातक शिरो रोग या सरकार से भय व कष्ट पाता है।

24.5 भ्रामरी में विभिन्न अन्तर्दशाएं (अवधि 4 वर्ष)

1. **भ्रामरी-भ्रामरी (मंगल-मंगल) : अवधि 5 मास 10 दिन/कुल अवधि 5 मास 10 दिन समाप्त :** जातक भय, कष्ट तथा बाधा या कठिनाई पाता है। उसे बंधु बांधवों तथा शत्रुओं से मात्र कष्ट व क्लेश मिलता है। कभी विष या संक्रमण की पीड़ा तो कभी मोहासक्ति के कारण जातक को दुःख और क्लेश प्राप्त होता है।
2. **भ्रामरी-भद्रिका (मंगल-बुध) : अवधि 6 मास 20 दिन/कुल अवधि 1 वर्ष समाप्त :** जातक को विद्या लाभ, मित्रों का सुख, राज सम्मान तो कभी विदेश यात्रा का लाभ मिलता है। वह अपने प्रयासों तथा मित्रों के सहयोग से सफलता पाता है।
3. **भ्रामरी-उल्का (मंगल-शनि) : अवधि 8 मास/कुल अवधि 1 वर्ष 8 मास समाप्त :** जातक ज्वर, वेदना, रक्त विकार या जलने अथवा कटने से बने घाव से कष्ट पाता है। कभी धन संपदा की हानि तो कभी पुत्र या पत्नी के स्वास्थ्य के विषय में भी चिंता हुआ करती है।
4. **भ्रामरी-सिद्धा (मंगल-शुक्र) : अवधि 9 मास 10 दिन/कुल अवधि 2 वर्ष**

5 मास 10 दिन समाप्त : जातक विद्या और बुद्धि का लाभ तथा धन व यश पाता है। उसकी मनोकामना पूर्ण होती है। रोग, भय व कष्ट क्लेश से मुक्ति मिलती है। वह निर्भय और निरोग होता है।

5. **भ्रामरी-संकटा (मंगल-राहु) : अवधि 10 मास 20 दिन/कुल अवधि 3 वर्ष 4 मास समाप्त :** कोई जातक मोह और आसक्ति के कारण कष्ट व क्लेश या मानसिक संताप पाता है। व्यर्थ की भटकन, थकान देती है। देह की दुर्बलता रोग व पीड़ा का कारण बनती है। कभी चोरी का मिथ्या कलंक लगने से अपमान व अपयश मिलता है।
6. **भ्रामरी-मंगला (मंगल-चंद्रमा) : अवधि 1 मास 10 दिन/कुल अवधि 3 वर्ष 5 मास 10 दिन समाप्त :** सुख सुविधा, धन वैभव तथा यश प्रतिष्ठा मिलने से जातक प्रसन्न रहता है। कभी राजा की सेवा या सहायता करने से बहुत लाभ होता है। कोई जातक, साहस व शौर्य के कार्यों से, पद प्रतिष्ठा व पुरस्कार पाता है।
7. **भ्रामरी-पिंगला (मंगल-सूर्य) : अवधि 2 मास 20दिन/कुल अवधि 3 वर्ष 8 मास समाप्त :** इस दशा में जातक को रोग या राजदंड का भय होता है। कोई जातक मुख, पांव या गुदा संबंधी रोग से कष्ट पाता है।
8. **भ्रामरी-धान्या (मंगल-गुरु) : अवधि 4 मास/कुल अवधि 4 वर्ष समाप्त :** जातक की धन संपदा, सुख सुविधा, वैभव सामग्री तथा वाहन सुख में वृद्धि होती है। उसके शत्रु पराजित होते हैं। मित्र बंधुवर्ग तथा राजा से स्नेह पूर्ण सहयोग मिलने से सुख व सम्मान मिलता है।

24.6 भद्रिका की अन्तर्दशाएं (अवधि 5 वर्ष)

1. **भद्रिका-भद्रिका (बुध-बुध) : अवधि 8 मास 10 दिन/कुल अवधि 8 मास 10 दिन समाप्त :** जातक प्रशंसा, प्रसिद्धि तथा यश और प्रतिष्ठा पाता है। उसके धन वैभव तथा संपदा की वृद्धि होती है। कभी पाप तथा पीड़ा से बचाव होता है। अध्यात्म क्षेत्र में प्रगति होने की संभावना बढ़ती है। जातक की बुद्धि धर्म ओर परोपकार में लगती है।
2. **भद्रिका -उल्का (बुध-शनि) : अवधि 10 मास/कुल अवधि 1 वर्ष 6 मास 10 दिन समाप्त :** जातक, जन विरोध, रोग या धन संपदा की क्षति से कष्ट व क्लेश पाता है। कभी घर में चोरी, डकैती से बहुत हानि होती है। इस दशा में देह तथा मानसिक सुख की हानि होती है तथा वैर विरोध और वैमनस्य से संताप होता है।

3. **भद्रिका-सिद्धा (बुध-शुक्र) : अवधि 11 मास 20 दिन/कुल अवधि 2 वर्ष 6 मास समाप्त :** जातक देव पूजन, सत्संग, साधु सेवा तथा तीर्थयात्रा से सुख पाता है। घर में मंगल उत्सव होने से चित्त में प्रसन्नता बढ़ती है। बंधु वर्ग, मित्र मंडल तथा घर परिवार में स्नेह सौहार्द बढ़ने से सुख संतोष मिलता है।
4. **भद्रिका-संकटा (बुध-राहु) : अवधि 1 वर्ष 1 मास 10 दिन/कुल अवधि 3 वर्ष 7 मास 10 दिन समाप्त :** इस दशा में जातक विघ्न, बाधा, कठिनाई तथा कष्ट-क्लेश पाता है। उसके मन में उलझन बनी रहती है। वह मतिभ्रम, तनाव या मनोव्यथा से पीड़ित होता है। कभी दूर देश, परदेश अथवा विदेश यात्रा से दुख और विषाद बढ़ा करता है।
5. **भद्रिका-मंगला (बुध-चंद्रमा) : अवधि 1 मास 20 दिन/कुल दशा 3 वर्ष 9 मास समाप्त :** जातक धन, मान और प्रतिष्ठा पाता है। उसे भूमि, भवन तथा व्यापार से धन लाभ होता है। घर में नए शिशु के आगमन या संतान की सफलता और उपलब्धि से प्रसन्नता होती है। विद्वानों ने इस दशा को, धन लाभ और मान वृद्धि के कारण, शुभ व कल्याणप्रद माना है।
6. **भद्रिका-पिंगला (बुध-सूर्य) : अवधि 3 मास 10 दिन/कुल अवधि दशा 4 वर्ष 10 दिन समाप्त :** जातक भूसंपदा तथा कृषि कार्य से धन लाभ पाता है। कभी गुरुजन की सलाह, सुझाव या सीख मानने से अप्रत्याशित लाभ होता है। कोई जातक पित्त संबंधी कष्ट-क्लेश से दुःखी होता है।
7. **भद्रिका-धान्या (बुध-गुरु) : अवधि 5 मास/कुल अवधि दशा 4 वर्ष 5 मास 10 दिन समाप्त :** जातक पुत्र, पत्नी तथा मित्रों के स्नेहपूर्ण सहयोग व समर्थन से सुख पाता है। उसका समय आमोद प्रमोद उत्सव व विनोद गोष्ठियों में बीतता है। मंगल उत्सव जातक के हर्ष और उल्लास को बढ़ाते हैं।
8. **भद्रिका-भ्रामरी (बुध-मंगल) : अवधि 6 मास 20 दिन/कुल अवधि 5 वर्ष समाप्त :** जातक को आग या बिजली से आर्थिक क्षति का भय होता है। कभी भूसंपदा की हानि, रक्त दोष, दुर्घटना या मृत्यु भय से कष्ट होता है। बंधु वर्ग की अनुकूलता तथा उनका स्नेह व सौहार्द जातक को सुख देता है।

24.7 उल्का में विभिन्न अन्तर्दशाएं (अवधि 6 वर्ष)

1. **उल्का-उल्का (शनि-शनि) : अवधि 1 वर्ष/कुल महादशा अवधि 1 वर्ष**

समाप्त: जातक अचानक शत्रु भय, हानि, दुःख तथा अप्रतिष्ठा से क्लेश व संताप पाता है। कभी पद भंग, स्थान हानि या अवनति के कारण, मनोव्यथा बढ़ती है। विद्वानों ने इस दशा को संतापदायिनी दशा माना है।

2. **उल्का-सिद्धा (शनि-शुक्र) : अवधि 1 वर्ष 2 मास/कुल अवधि 2 वर्ष 2 मास समाप्त :** जातक अप्रत्याशित ढंग से धन संपदा की हानि, शत्रुत्रास, अवनति या सत्ताच्युति से कष्ट और क्लेश पाता है। कभी विदेश यात्रा का अवसर मिश्रित प्रभाव दिया करता है।
3. **उल्का-संकटा (शनि-राहु) : अवधि 1 वर्ष 4 मास/कुल अवधि 3 वर्ष 6 मास समाप्त :** मृत्युभय, पुत्र तथा पत्नी को रोग व पीड़ा, मित्र तथा संबंधियों से विवाद तो कभी सेवकों के कारण जातक परेशान होता है। कभी परिवार के किसी सदस्य पर विपत्ति पड़ने या प्राण संकट होने से मनोव्यथा बढ़ती है।
4. **उल्का-मंगला (शनि-चंद्रमा) : अवधि 2 मास/ कुल अवधि 3 वर्ष 8 मास समाप्त :** जातक घर परिवार तथा मित्रों का श्रेष्ठ सुख पाता है। उस की विद्या तथा बुद्धि बढ़ती है। उसे धन संपदा का लाभ होता है तथा रोग और शोक से मुक्ति मिलती है।
5. **उल्का-पिंगला (शनि-सूर्य) : अवधि 4 मास/कुल अवधि 4 वर्ष समाप्त:** जातक निरर्थक भ्रमण या पर्यटन से प्रवास संबंधी क्लेश पाता है। कभी शिरोरोग, सिरदर्द, चर्मरोग या त्वचा संबंधी विकार से पीड़ा होती है। बहुधा जातक चिंताग्रस्त रहता है।
6. **उल्का-धान्या (शनि-गुरु) : अवधि 6 मास/कुल अवधि 4 वर्ष 6 मास समाप्त :** यह दशा प्रायः लाभ और हानि का संतुलन बनाए रखती है। यदि लाभ नहीं मिलता तो शायद हानि से भी बचाव हो जाता है। कोई जातक खांसी, श्वांस रोग या वात व्याधि से कष्ट पाता है। कभी परिवार तथा मित्रों से मतभेद भी, चित्त में उद्विग्नता व क्षोभ दिया करता है।
7. **उल्का-भ्रामरी (शनि-मंगल) : अवधि 8 मास/कुल अवधि दशा 5 वर्ष 2 मास समाप्त :** जातक भ्रान्त धारणा, मतिभ्रम, उलझन तथा बैचेनी से क्लेश और संताप पाता है। कभी मित्रों से मतभेद, वैर विरोध, शत्रुत्रास तथा मानसिक अवसाद भी कष्ट कठिनाई की वृद्धि करता है।
8. **उल्का-भद्रिका (शनि-बुध) : अवधि 10 मास/कुल अवधि दशा 6 वर्ष समाप्त :** जातक को धन संपदा का लाभ किन्तु वस्त्र तथा आभूषण की हानि होती है। परिवार, बंधु वर्ग तथा मित्रों के स्नेहपूर्ण सहयोग से उसके

सुख व प्रसन्नता की वृद्धि होती है।

24.8 सिद्धा में विभिन्न अन्तर्दशाएं (अवधि 7 वर्ष)

1. **सिद्धा-सिद्धा (शुक्र-शुक्र) : अवधि 1 वर्ष 4 मास/कुल अवधि 1 वर्ष 4 मास 10 दिन समाप्त** : जातक के सभी काम सिरे चढ़ते हैं। उसको अपने प्रयत्न प्रयासों में सफलता मिलने से प्रसन्नता होती है। परिवार में स्नेह सौहार्द बढ़ता है तथा बच्चों के कारण खुशी मिलती है।
2. **सिद्धा-संकटा (शुक्र-राहु) : अवधि 1 वर्ष 6 मास 20 दिन/कुल अवधि दशा 2 वर्ष 11 मास समाप्त** : इस अन्तर्दशा में चोरी का भय, धन संपदा की हानि तो कभी राजदंड या बंधन की संभावना होती है। जातक बाधा व कठिनाईयों के बढ़ने से चिंताग्रस्त रहता है।
3. **सिद्धा-मंगला (शुक्र-चंद्रमा) अवधि 2 मास 10 दिन/ कुल अवधि 3 वर्ष 1 मास 10 दिन समाप्त** : जातक के सुख, वैभव, धन व यश में वृद्धि होती है। उसे बंधु वर्ग तथा मित्रों से स्नेह, सहयोग व सुख मिलता है। कभी राजा की कृपा से मनवांछित कार्यों में सफलता मिलती है। जातक की मनोकामना पूर्ण होती है।
4. **सिद्धा-पिंगला (शुक्र-सूर्य) : अवधि 4 मास 20 दिन/कुल अवधि 3 वर्ष 6 मास समाप्त** : जातक हठी व अड़ियल रुख अपनाता है। वह स्वयं को श्रेष्ठ मानने से मित्र व बंधुओं का विरोध करता है। उसकी दूसरों का धन हड़पने की प्रवृत्ति होती है। कभी अग्नि या चोरी का भय होता है। कोई जातक अन्याय व अनीति से धन कमाता है।
5. **सिद्ध-धान्या (शुक्र-गुरु) : अवधि 7 मास/कुल अवधि 4 वर्ष 1 मास समाप्त** : इस दशा में जातक अपने पिछले जन्मों के सत्कर्मों का फल पाता। उसके कार्य सहज सफल होते हैं। मन की सभी इच्छाएं पूरी होती हैं। चित्त प्रसन्न रहता है। उसे समाज में स्नेह, सम्मान व यश मिलता है।
6. **सिद्धा-भ्रामरी (शुक्र-मंगल) : अवधि 9 मास 10 दिन/कुल अवधि 4 वर्ष 10 मास 10 दिन समाप्त** : इस अवधि में जातक का स्थानान्तरण transfer होता है या आवास स्थान बदलता है। कभी भ्रमण या पर्यटन में कष्ट मिलता है। कोई जातक दुर्व्यसन में फंसने से धन व यश की हानि पाता है। कभी राजदंड का भय हुआ करता है।
7. **सिद्धा-भद्रिका (शुक्र-बुध) : अवधि 11 मास 20 दिन/कुल अवधि 5 वर्ष 10 मास समाप्त** : विद्वानों ने इस अवधि को बहुत शुभ व कल्याणप्रद

माना है। जातक की सुख, सुविधा तथा वैभव सामग्री बढ़ती है। घर में मंगल उत्सव होने से चित्त प्रसन्न रहता है। विद्या और बुद्धि का विकास होता है। अच्छे आचार विचार, सुख व सफलता को सुनिश्चित करते हैं। जातक की सभी इच्छाएं पूरी होती है।

8. **सिद्धा-उल्का (शुक्र-शनि) : अवधि 1 वर्ष 2 मास/कुल अवधि 7 वर्ष समाप्तः** जातक धन, संपदा तथा वैभव की क्षति से क्लेश पाता है। कभी रोग और पीड़ा भी मनोव्यथा बढ़ाती है। असफलता, दुःख, बंधु वर्ग में सौमनस्य की कमी तथा बाधाएं जातक को उद्विग्न व चिंताग्रस्त बनाती हैं।

24.9 संकटा में विभिन्न अन्तर्दशाएं (अवधि 8 वर्ष)

1. **संकटा-संकटा (राहु-राहु) : अवधि 1 वर्ष 9 मास 10 दिन/कुल अवधि 1 वर्ष 9 मास 10 दिन समाप्त :** ये दशा धन वैभव की हानि, राजदंड का भय, परिवार तथा मित्रों से अलगाव तो कभी बनवास या मृत्युभय दिया करती है। कोई जातक, किसी अपराध में व्यर्थ फंस जाने से, भयग्रस्त होकर अज्ञातवास करता है।
2. **संकटा-मंगला (राहु-चंद्रमा) : अवधि 2 मास 20 दिन/कुल अवधि 2 वर्ष समाप्त :** जातक दुर्बलता, शिरोरोग या देहपीड़ा से कष्ट पाता है। कभी पत्नी को कष्ट होता है, तो कोई जातक दुर्व्यसन या दुराचरण के कारण, धन व यश की हानि के साथ, रोग व पीड़ा भी पाता है।
3. **संकटा-पिंगला (राहु-सूर्य) : अवधि 5 मास 10 दिन/कुल अवधि 2 वर्ष 5 मास 10 दिन समाप्त :** अचानक आर्थिक हानि, संतान संबंधी कष्ट या शत्रु भय से जातक दुःखी होता है। कभी कार्यों में विघ्न बाधा पड़ती है तो कभी परिश्रम करने पर भी सफलता न मिलने से क्लेश होता है।
4. **संकटा-धान्या (राहु-गुरु) अवधि 8 मास/कुल अवधि 3 वर्ष 1 मास 10 दिन समाप्त :** जातक संतान संबंधी सुख, सभी कार्यों में सफलता तथा सुयश पाता है। वह देश विदेश में सम्मान और प्रशंसा पाता है। कोई जातक उदर पीड़ा से भी परेशान रहता है।
5. **संकटा-भ्रामरी (राहु-मंगल) अवधि 10 मास 20 दिन/कुल अवधि 4 वर्ष समाप्त :** जातक विभिन्न स्थानों की यात्रा करता है। कभी घर में चोरी या टूट फूट से हानि होती है। कोई जातक गांव या नगर में हुए उपद्रव या दंगे फसाद से कष्ट व हानि पाता है। प्रायः शत्रु भी कार्यों में बाधा डालकर कठिनाइयां बढ़ाते हैं।

6. **संकटा-भद्रिका (राहु-बुध) : अवधि 1 वर्ष 1 मास 10 दिन/कुल अवधि 5 वर्ष 1 मास 10 दिन समाप्त :** जातक की विद्या और बुद्धि का विकास होता है। वह आभूषण तथा सुंदर वस्त्र पाता है। उसके मान सम्मान में वृद्धि होती है। शत्रुओं पर जातक को विजय मिलती है।
7. **संकटा-उल्का (राहु-शनि) : अवधि 1 वर्ष 4 मास/कुल अवधि 6 वर्ष 5 मास 10 दिन समाप्त :** जातक के संचित धन का नाश या उसकी पूंजी का ह्रास होता है। कभी वाहन संबंधी कष्ट क्लेश बढ़ता है। कोई जातक मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट पाता है।
8. **संकटा-सिद्धा (राहु-शुक्र) : अवधि 1 वर्ष 6 मास 20 दिन/कुल अवधि 8 वर्ष समाप्त :** इस दशा अवधि मे जातक का मनोबल और उत्साह निरंतर बढ़ता है। संतान की ओर से प्रसन्नता मिलती है। मन में सुख संतोष बना रहता है। शान्त चित्त होने से, जातक सभी ओर शुभता व कल्याण का अनुभव करता है।

24.10 योगिनी दशा जानने के नियम

1. जिस प्रकार जन्म के समय चंद्रमा की नक्षत्र गत स्थिति विंशोत्तरी दशा का बोध कराती है, ठीक उसी प्रकार जन्म के समय चंद्रमा किस राशि या किस नक्षत्र में है उस से योगिनी भोग्य दशा का ज्ञान होता है।
2. **उदाहरण :** यदि किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली में वृश्चिक राशि में 3 डिग्री 20 मिनट पर हो तो चंद्रमा क्रमांक 17 के अनुराधा नक्षत्र में होने से जातक जन्म के समय 4 वर्ष की भ्रामरी भोग्य दशा पाएगा। कौन नक्षत्र किस राशि में कहां से कहां तक है तथा किस योगिनी दशा को दर्शाता है इसे तालिका 2 में देखें।

तालिका 1 : योगिनी का नैसार्गिक क्रम और अवधि

योगिनी दशा	अवधि	मंगला में अन्तर्दशाएं		भद्रिका में अर्न्तदशाएं 5 से गुणा करने पर	
			वर्ष मास दिन		वर्ष मास दिन
मंगला	1 वर्ष	10 दिन	00-00-10	50 दिन	00-01-20
पिंगला	2 वर्ष	20 दिन	00-00-20	100 दिन	00-03-10
धान्या	3 वर्ष	30 दिन	00-01-00	150 दिन	00-05-00
भ्रामरी	4 वर्ष	40 दिन	00-01-10	200 दिन	00-06-20

भद्रिका	5 वर्ष	50 दिन	00-01-20	250 दिन	00-08-10
उल्का	6 वर्ष	60 दिन	00-02-00	300 दिन	00-10–00
सिद्धा	7 वर्ष	70 दिन	00-02-10	350 दिन	00-11-20
संकटा	8 वर्ष	80 दिन	00-02-20	400 दिन	01-01-10

4. **योगिनी दशा में अवधि जानने का नियम** उदाहरण के लिए यदि संकटा (8 वर्ष) में सिद्धा (7 वर्ष) की अन्तर्दशा अवधि ज्ञात करनी हो तो 8 ×7 × 10 दिन या 560 दिन अवधि होगी। इसे 30 से भाग देने पर 18 मास 20 दिन या 1 वर्ष 6 मास 20 दिन की अवधि प्राप्त होगी। दूसरा उदाहरण उल्का (6 वर्ष) में भद्रिका (5 वर्ष) की अन्तर्दशा जानने के लिए उल्का गुणा भद्रिका गुण 10 =अन्तर्दशा दिनों में अर्थात

$$6 \times 5 \times 10 = 300 \text{ दिन या } 300 \div 30 = 10 \text{ मास}$$

योगिनी दशा अवधि तथा मंगल और भद्रिका में अन्तदर्शाएं ऊपर तालिका 1 में देखें।

5. किसी भी योगिनी दशा में पहली अन्तर्दशा उस योगिनी की अपनी ही अन्तर्दशा होती है। उसके बाद अन्तर्दशा क्रमानुसार आगे बढ़ती है। उदाहरण के लिए धान्या में अन्तर्दशा अवधि का क्रम आगे दी गई तालिका के अनुसार होगा।

अर्न्तदशाएं	धान्या-धान्या	धान्या-भ्रामरी	धान्या-भद्रिका	धान्या-उल्का	धान्या-सिद्धा	धान्या-संकटा	धान्या-मंगला	धान्या-पिंगला
दिन	3×3×10 = 90	3×4×10 = 120	3×5×10 = 150	3×6×10 = 180	3×7×10 = 210	3×8×10 = 240	3×1×10 = 30	3×2×10 = 60
मास	3	4	5	6	7	8	1	2
कुल अवधि समाप्त	वर्ष मास दिन 0-3-0	0-7-0	1-0-0	1-6-0	2-1-0	2-9-0	2-10-0	3-0-0

6. ध्यान रहे दशा गणना में सभी मास 30 दिन के तथा वर्ष 360 दिन के होते हैं। वस्तुतः इन्हें सौर दिवस या सूर्य द्वारा 1 अंश दूरी तय करने में लगे समय को दिन तथा 30 अंश की दूरी पूरी करने में लगा समय 1 मास कहलाता है।

तालिका-2 : नक्षत्र की राशि में स्थिति और विस्तार

क्र.	नक्षत्र	योगिनी (वर्ष)	नक्षत्र आरम्भ	योगिनी दशापति
1.	अश्विनी	भ्रामरी (4)	$0^{s}00^{\circ}0'$	मंगल
2.	भरणी	भद्रिका (5)	$0^{s}13^{\circ}20'$	बुध
3.	कृतिका	उल्का (6)	$0^{s}26^{\circ}40'$	शनि
4.	रोहिणी	सिद्धा (7)	$1^{s}10^{\circ}00'$	शुक्र
5.	मृगशिरा	संकटा (8)	$1^{s}23^{\circ}20'$	राहु
6.	आर्द्रा	मंगला (1)	$2^{s}06^{\circ}40'$	चंद्रमा
7.	पुनर्वसु	पिंगला (2)	$2^{s}20^{\circ}00'$	सूर्य
8.	पुष्य	धान्या (3)	$3^{s}03^{\circ}20'$	गुरु
9.	अश्लेषा	भ्रामरी (4)	$3^{s}16^{\circ}40'$	मंगल
10.	मघा	भद्रिका (5)	$4^{s}00^{\circ}00'$	बुध
11.	पूर्व फाल्गुनी	उल्का (6)	$4^{s}13^{\circ}20'$	शनि
12.	उत्तरा फाल्गुनी	सिद्धा (7)	$4^{s}26^{\circ}40'$	शुक्र
13.	हस्त	संकटा (8)	$5^{s}10^{\circ}00'$	रांहु
14.	चित्रा	मंगला (1)	$5^{s}23^{\circ}20'$	चंद्रमा
15.	स्वाती	पिंगला (2)	$6^{s}06^{\circ}40'$	सूर्य
16.	विशाखा	धान्या (3)	$6^{s}20^{\circ}00'$	गुरु
17.	अनुराधा	भ्रमरी (4)	$7^{s}03^{\circ}20'$	मंगल
18.	ज्येष्ठा	भद्रिका (5)	$7^{s}16^{\circ}40'$	बुध
19.	मूल	उल्का (6)	$8^{s}00^{\circ}00'$	शनि
20.	पूर्वाषाढ़ा	सिद्धा (7)	$8^{s}13^{\circ}20'$	शुक्र
21.	उतराषाढ़ा	संकटा (8)	$8^{s}26^{\circ}40'$	राहु
22.	श्रवण	मंगला (1)	$9^{s}10^{\circ}00'$	चंद्रमा
23.	घनिष्ठा	पिंगला (2)	$9^{s}23^{\circ}20'$	सूर्य
24.	शतभिषा	धान्या (3)	$10^{s}06^{\circ}40'$	गुरु
25.	पूर्व भाद्रपद	भ्रामरी (4)	$11^{s}03^{\circ}20'$	मंगल
26.	उतरा भाद्रपद	भद्रिका (5)	$11^{s}03^{\circ}20'$	बुध
27.	रेवती	उल्का (6)	$11^{s}16^{\circ}40'$	शनि

तालिका-3 : नक्षत्र संख्या से योगिनी दशा का ज्ञान

टिप्पणी (स्वामी ग्रह)	मंगला (चंद्रमा)	पिंगला (सूर्य)	धान्या (गुरु)	भ्रामरी (मंगल)	भद्रिका (बुध)	उल्का (शनि)	सिद्धा (शुक्र)	संकटा (राहु)
अवधि (वर्ष)	(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
नक्षत्र	6	7	8	9	10	11	12	13
क्रमांक	14	15	16	17	18	19	20	21
	22	23	24	25	26	27	04	5
				01	02	03		

2 पिंगला (सूर्य)	1 मंगला (चंद्र)	8 संकटा (राहु)
7 पुनर्वसु 15 स्वाति 23 घनिष्ठा	6 आर्द्रा 14 चित्रा 22 श्रवण	5 मृगशिरा 13 हस्त 21 उत्तराषाढ़
3 धान्या (गुरु)	**योगिनी दशा व नक्षत्र ज्ञान चक्र**	**7 सिद्धा (शुक्र)**
8 पुष्य 16 विशाखा 24 शतभिषा		4 रोहिणी 12 उत्तर फाल्गुनी 20 पूर्वाषाढ़ा
4 भ्रामरी (मंगल)	**5 भद्रिका (बुध)**	**6 उल्का (शनि)**
9 अश्लेषा 17 अनुराधा 25 पू. भाद्रपद 01 अश्विनी	10 मघा 18 ज्येष्ठा 26 उत्तर भाद्रपद 02 भरणी	11 पूर्व फाल्गुनी 19 मूल 27 रेवती 03 कृतिका

(नक्षत्रों के आगे उनका क्रमांक दिया गया है)

24.11 समीक्षा

1. इस अध्याय में योगिनी दशा के महत्त्व और परिणाम पर विशद चर्चा 24.2 से 24.9 तक की गई है।
2. योगिनी दशा की अवधि जानने के लिए सूत्र व तालिकाओं का 24 10 पर उपयोग हुआ है।
3. अगले अध्याय में योगिनी दशा के प्रयोग पर चर्चा होगी।

तालिका 3 : नक्षत्र समानुपाती योगिनी दशा शेष

नक्षत्र का अंश	मगला			पिगल			धान्या			भ्रामरी				भद्रिका			उल्का				सिद्धा			सकटा		
	दिन	घंटा	मिनट	दिन	घंटा	मिनट	दिन	घंटा	मिनट	मास	दिन	घंटा	मिनट	दिन	घंटा	मिनट	मास	दिन	घंटा	मिनट	माह	दिन	घंटा	माह	दिन	घंटा
1'	0	10	48	0	21	36	1	8	24	0	1	19	12	0	2	6	0	2	16	48	0	3	4	0	3	14
2'	0	21	36	1	19	12	2	16	48	0	3	14	24	0	4	12	0	5	9	36	0	6	7	0	7	5
3'	1	8	24	2	16	48	4	1	12	0	5	9	36	0	6	18	0	8	2	24	0	9	11	0	10	19
4'	1	19	12	3	14	24	5	9	36	0	7	4	48	0	9	0	0	10	19	12	0	12	14	0	14	10
5'	2	6	0	4	12	0	6	18	0	0	9	0	0	0	11	6	0	13	12	0	0	15	18	0	18	0
6'	2	16	48	5	9	36	8	2	24	0	10	19	12	0	13	12	0	16	4	48	0	18	22	0	21	14
7'	3	3	36	6	7	12	9	10	48	0	12	14	24	0	15	18	0	18	21	36	0	22	1	0	25	5
8'	3	14	24	7	4	48	10	19	12	0	14	9	36	0	18	0	0	21	14	24	0	25	5	0	28	19
9'	4	1	12	8	2	24	12	3	36	0	16	4	48	0	20	6	0	24	7	12	0	28	8	1	2	10
10'	4	12	0	9	0	0	13	12	0	0	18	0	0	0	22	12	0	27	0	0	1	1	12	1	6	0
11'	4	22	48	9	21	36	14	20	24	0	19	19	12	0	24	18	0	29	16	48	1	4	16	1	9	14
12'	5	9	36	10	19	12	16	4	48	0	21	14	24	0	27	0	1	2	9	36	1	7	19	1	13	5
13'	5	20	24	11	16	48	17	13	12	0	23	9	36	0	29	6	1	5	2	24	1	10	23	1	16	19
14'	6	7	12	12	14	24	18	21	36	0	25	4	48	1	1	12	1	7	19	12	1	14	2	1	20	10
15'	6	18	0	13	12	0	20	6	0	0	27	0	0	1	3	18	1	10	12	0	1	17	6	1	24	0
16'	7	4	48	14	9	36	21	14	24	0	28	19	12	1	6	0	1	13	4	48	1	20	10	1	27	14
17'	7	15	36	15	7	12	22	22	48	1	0	14	24	1	8	6	1	15	21	36	1	23	13	2	1	5
18'	8	2	24	16	4	48	24	7	12	1	2	9	36	1	10	12	1	18	14	24	1	26	17	2	4	19
19'	8	13	12	17	2	24	25	15	36	1	4	4	48	1	12	18	1	21	7	12	1	29	20	2	8	10
20'	9	0	0	18	0	0	27	0	0	1	6	0	0	1	15	0	1	24	0	0	2	3	0	2	12	0

तालिका 4 : योगिनी दशा में अन्तर्दशाओं की अवधि

योगिनी/ग्रह वर्ष	(मंगला चंद्रमा)		पिंगला (सूर्य)		धान्या (गुरु)		भ्रामरी (मंगल)		भद्रिका (बुध)		उल्का (शनि)		सिद्धा (शुक्र)		संकटा (राहु)	
भुक्ति	S.P. y-m-d	Total y-m-d	S.P. y-m-d	Total y-m-d	S.P. y-m-d	Total y-m-d	S.P. y-m-d	Total y-m-d	S.P. y-m-d	Total y-m-d	S.P. y-m-d	Total y-m-d	S.P. y-m-d	Total y-m-d	S.P. y-m-d	Total y-m-d
मंगला	0-0-10	0-0-10	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
पिंगला	0-0-20	0-1-00	0-1-10	0-1-10	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
धान्या	0-1-00	0-2-00	0-2-00	0-3-10	0-3-0	0-3-0	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
भ्रामरी	0-1-10	0-3-10	0-2-20	0-6-0	0-4-0	0-7-0	0-5-10	0-5-10	-	-	-	-	-	-	-	-
भद्रिका	0-1-20	0-5-00	0-3-10	0-9-10	0-5-0	1-0-0	0-6-20	1-0-0	0-8-10	0-8-10	-	-	-	-	-	-
उल्का	0-2-00	0-7-00	0-4-00	1-1-10	0-6-0	1-6-0	0-8-00	1-8-0	0-10-00	1-6-10	1-0-0	1-0-0	-	-	-	-
सिद्धा	0-2-10	0-9-10	0-4-20	1-6-0	0-7-0	2-1-0	0-9-10	2-5-10	0-11-20	2-6-0	1-2-0	2-2-0	1-4-10	1-4-10	-	-
संकटा	0-2-20	1-0-00	0-5-10	1-11-10	0-8-0	2-9-0	0-10-20	3-4-0	1-1-10	3-7-10	1-4-0	3-6-0	1-6-20	2-11-0	1-9-10	1-9-10
मंगला	-	-	0-2-0	2-0-0	0-1-0	2-10-0	0-1-10	3-5-10	0-1-20	3-9-0	0-2-0	3-8-0	0-2-10	3-1-10	0-2-20	2-0-0
पिंगला	-	-	-	-	0-2-0	3-0-0	0-2-20	3-8-0	0-3-10	4-0-10	0-4-0	4-0-0	0-4-20	3-6-0	0-5-10	2-5-10
धान्या	-	-	-	-	-	-	0-4-00	4-0-0	0-5-00	4-5-10	0-6-0	4-6-0	0-7-0	4-1-0	0-8-0	3-1-10
भ्रामरी	-	-	-	-	-	-	-	-	0-6-20	5-0-0	0-8-0	5-2-0	0-9-10	4-10-10	0-10-20	4-0-0
भद्रिका	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	0-10-0	6-0-0	0-11-20	5-10-0	1-1-10	5-1-10
उल्का	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1-2-00	7-0-0	1-4-0	6-5-10
सिद्धा	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1-6-20	8-0-0

S.P. = भुक्ति
y-m-d = वर्ष मास दिन
Total = दशा समाप्त

अध्याय-25

योगिनी दशा का प्रयोग

विद्वानों का मत है कि कुंडली विश्लेषण कर फलादेश करते समय विभिन्न दशाओं का प्रयोग बहुधा अधिक सटीक परिणाम देता है। विंशोत्तरी दशा के साथ, चर दशा, जैमिनी सूत्र, वर्ष कुंडली, वर्ग कुंडलियों, षडबल, अष्टकवर्ग तथा योगिनी दशा का प्रयोग, संभावित घटनाओं को अधिक स्पष्ट ढंग से दर्शाता है।

नीचे कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं जिसमें योगिनी दशा के प्रयोग से संभावित घटना की पुष्टि के संकेत देखे जा सकते हैं।

25.1 उदाहरण 1 :

संकटा-उल्का में प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर अमेरिका में डाक्टरी पढ़ने का अवसर मिला–ये लड़की अमरीका में डाक्टरी की पढ़ाई करना चाहती थी। उस समय संकटा-उल्का (राहु-शनि) की दशा चल रही थी। राहु दशम भाव में अपने नियंत्रक दशमेश बुध, भाग्येश शुक्र तथा विदेश भाव के स्वामी सूर्य के साथ है। शनि भी पंचमेश होकर पंचम भाव में स्वगृही है। दशम भाव को उच्च शिक्षा या शिक्षा क्षेत्र में विशेष उपलब्धि का भाव माना गया है। पंचमेश शनि का बली होकर गुरु से दृष्टि संबंध करना तथा लाभेश चंद्रमा और लाभ स्थान को देखना, सफलता का संकेतक है।

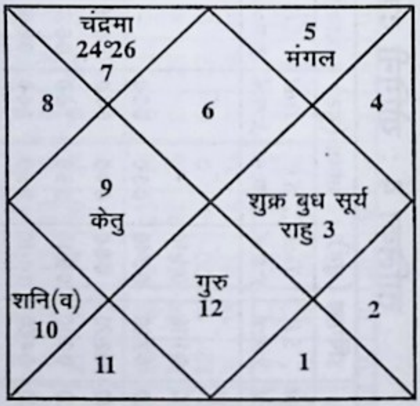

निष्कर्ष : इस लड़की ने अमरीका में डाक्टरी की शिक्षा पूरी की।

25.2 उदाहरण 2 :

धान्या-धान्या (गुरु-गुरु) में महिला का विवाह–द्वितीय (कुटुम्ब) भाव में गुरु, भाग्येश तथा पति कारक होकर, द्वितीयेश सूर्य से युति कर रहा है। सप्तमेश शनि की धान्या दशानाथ गुरु पर दृष्टि है। ध्यान रहे कारक शुक्र से सप्तमेश गुरु

अपने भाव (धनु) को देख रहा है। अनेक विद्वानों ने बली मंगल को वैवाहिक जीवन के लिए उपयोगी कहा है। यहां मंगल दशमेश-पंचमेश होने से योग कारक है। सप्तमेश शनि मंगल की राशि में तो मंगल भी शनि की राशि में है। योगकारक मंगल का धान्या नाथ गुरु से दृष्टि संबंध विवाह की पुष्टि करता है।

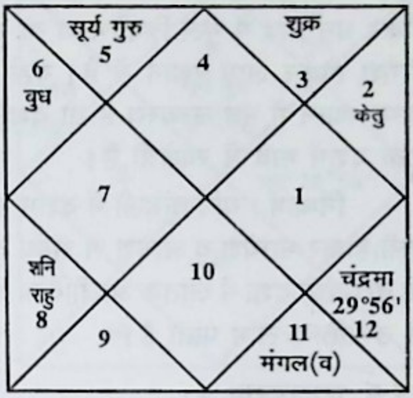

निष्कर्ष : इस महिला को धान्या-धान्या में मन वांछित पति मिला।

25.3 उदाहरण 3 :

मंगला-संकटा (चंद्रमा-राहु) की दशा में माता की मृत्यु–चंद्रमा (मंगला दशानाथ) माता का नैसार्गिक कारक है तो संकटापति राहु जन्म कुंडली में चंद्रमा से सप्तम अर्थात् मारक स्थान में है। चंद्रमा नीचस्थ होकर चतुर्थेश (माता का भावेश) मंगल के साथ है। **चंद्र कुंडली** में शनि का, चतुर्थेश होकर चतुर्थ भाव में, स्वगृही होना भले ही शुभ जान पड़े किन्तु द्वितीयेश (मारकेश) गुरु का अष्टम भाव से चतुर्थेश तथा चतुर्थ भाव को देखना तथा षष्ठेश मंगल का, चंद्रमा से युति कर, चतुर्थेश को देखना माता के सुख की कमी दर्शाता है।

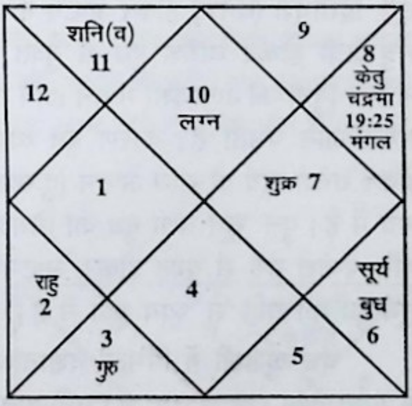

निष्कर्ष : चंद्र षष्ठेश की दृष्टि चतुर्थ भावस्थ शनि पर होने से माता कैंसर रोग से पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त हुई।

25.4 उदाहरण 4 :

उल्का-धान्या में (शनि-गुरु) की दशा में प्रोन्नति व लाभ–उल्का पति शनि, भाग्येश होकर भाग्य स्थान में अपनी मूल त्रिकोण राशि में होने से, बहुत बली है और धान्यापति गुरु दशमेश होकर दशम से भाग्य स्थान (लग्न से षष्ठ) में शनि से दृष्ट है। धान्या दशा का स्वामी गुरु, अपने नियंत्रक तथा लाभेश मंगल से दृष्ट होकर **दशम भाव** को देख रहा है।

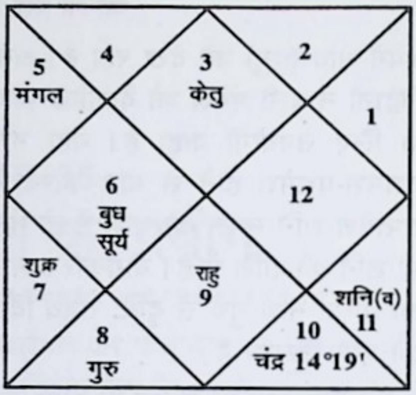

चंद्र कुंडली में उल्कानाथ शनि लग्नेश होकर धन भाव में मूल त्रिकोणस्थ तो गुरु भोगेश होकर लाभ स्थान में है। यहां भी भाग्य स्थान में बुध उच्चस्थ है तो दशमेश शुक्र दशम भाव में स्वक्षेत्री है।

निष्कर्ष : यदि कुंडली में दशम भाव बली होकर भाग्येश व लाभेश से संबंध करे तो तत्संबंधी दशा में जातक आजीविका क्षेत्र में उन्नति व लाभ पाता है।

25.5 उदाहरण 5 :

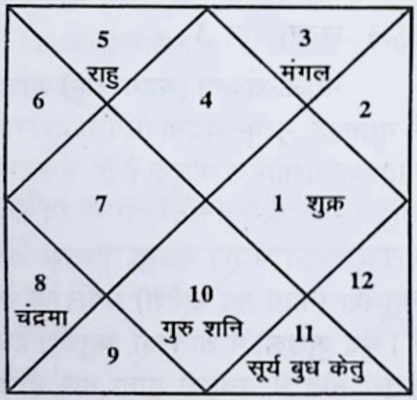

पिंगला-भद्रिका (सूर्य-बुध) की दशा में कार्यालय में चोरी–पिंगला दशा का स्वामी सूर्य, द्वितीयेश (धनेश) होकर अष्टम भाव में शत्रु क्षेत्री होकर व्ययेश बुध से युक्त है। भद्रिका (बुध) की अन्तर्दशा में धन हानि तर्क संगत जान पड़ती है। कारण बुध व्ययेश होकर धनेश सूर्य के साथ अष्टम (दुःस्थान) भाव में है। पुनः सूर्य तथा बुध का नियंत्रक शनि, षष्ठेश गुरु से युक्त होकर, अष्टमस्थ सूर्य-बुध की युति से, व्यय भाव में है।

चंद्र कुंडली में पिंगला दशानाथ सूर्य दशमेश होकर अष्टमेश-लाभेश बुध से युक्त तथा राहु से दृष्ट है। पुनः षष्ठेश मंगल का अष्टम भाव में बुध की मिथुन राशि में बैठकर लाभ स्थान की कन्या राशि, धन भाव में धनु तथा मकर में गुरु (धनेश) तथा शनि (पिंगला-भद्रिका नियंत्रक) को देखना कार्यालय में चोरी की पुष्टि करता है।

निष्कर्ष : इस दशा अवधि में जातक के कार्यालय से कुछ कम्प्यूटर चोरी हुए, जो पुलिस की सहायता से भी नहीं प्राप्त हो सके। विद्वानों ने शुक्र को कम्प्यूटर का कारक माना है। कुछ अन्य विद्वान इसका संबंध बुध से मानते हैं। इस कुंडली में शुक्र दशमस्थ है तो दशमेश मंगल (कार्यालय) द्वादश भाव में बुध क्षेत्री है।

25.6 उदाहरण 6 :

उल्का-संकटा (शनि-राहु) की दशा में नौकरी से लाभ–उल्का पति शनि,

अष्टम भाव में वक्री होकर, अपने नियंत्रक तथा पंचमेश (त्रिकोणेश) गुरु (उच्चस्थ) से दृष्ट है। शनि का दृष्टि संबंध दशमस्थ चंद्रमा से हुआ है। यहां चंद्रमा व्ययेश होने से विच्छेदक ग्रह हो गया है। अतः नौकरी छोड़ना तो अवश्यंभावी है। संकटा (राहु) की अर्न्तदशा का फल जानने के लिए राहु का नवमस्थ होकर नवमेश मंगल की दृष्टि पाना तथा भाग्येश मंगल का दशम भाव को देखना भावी शुभ परिणाम की सूचना दे रहे हैं।

निष्कर्ष : जातक ने ज्योतिषीय परामर्श को मानकर नौकरी बदली तथा सुख पाया।

ध्यान रहे षष्ठेश-सप्तमेश शनि (उल्का स्वामी) का अष्टमस्थ होकर दशम भाव को देखना नौकरी में बाधा या अलगाव की स्थिति देता है। राहु (संकटानाथ) भाग्य स्थान में भाग्येश मंगल से दृष्ट है। अतः लाभ पाने के लिए उस भुक्ति की प्रतीक्षा करना उचित था।

25.7 उदाहरण 7 :

सिद्धा-भद्रिका (शुक्र-बुध) की दशा में विदेश यात्रा तथा लेखन क्षेत्र में सफलता–ये एक विद्वान प्रतिष्ठित ज्योतिषी की कुंडली है। ये 18-23 नवंबर 1993 को अमरीका में वैदिक ज्योतिष पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किए गए। उस समय सिद्धा-भद्रिका की दशा चल रही थी।

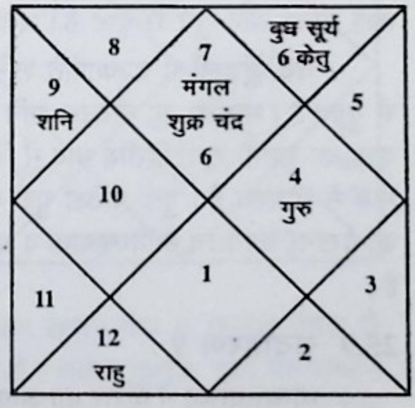

जन्म कुंडली में सिद्धा दशा का स्वामी शुक्र, लग्नेश-अष्टमेश होकर लग्न में, दशमेश चंद्रमा से युक्त है। लग्नेश तथा दशमेश की लग्न या दशम भाव में युति बहुधा कार्यक्षेत्र में सम्मान व यश दिया करती है। भद्रिका का स्वामी बुध भाग्येश होकर द्वादश (विदेश) भाव में उच्चस्थ है और लाभेश सूर्य से युति कर रहा है। पुनः बुध योग कारक शनि से दृष्ट है।

भाग्येश बुध के विदेश भाव में उच्चस्थ होने से भद्रिका योगिनी दशा में जातक ने विदेश में सम्मान व यश पाया।

25.8 उदाहरण 8 :

उल्का पिंगला (शनि-सूर्य) की दशा में आत्महत्या–ये कुंडली संगीत कलाकार की है। जातक जीवन संघर्ष के दबाव झेलने में असमर्थ रहा तथा निराशा एवं अवसाद के क्षणों में आत्महत्या कर बैठा। इस कुंडली में लग्नेश सूर्य का, नीचस्थ होकर षष्ठेश-सप्तमेश, शनि से दृष्ट होना कभी आत्मबल की कमी से अनिष्ट परिणाम का संकेत देता है।

जन्म कुंडली में योगिनी महादशा उल्का का स्वामी शनि, षष्ठेश सप्तमेश (रोग और मारक भाव का स्वामी होकर) पंचमेश गुरु के साथ भाग्य स्थान में नीचस्थ है। उल्का दशा में जातक विघ्न बाधाओं से परेशान रहा तथा हताशा व अवसाद से जूझता रहा। कारण गुरु पंचमेश होने के साथ अष्टमेश भी तो है। आशा थी कि लग्नेश सूर्य की भुक्ति (पिंगला योगिनी दशा) कुछ राहत देगी। कारण सूर्य का नियंत्रक शुक्र लग्नस्थ है। कदाचित अति उत्साह में एक चूक हो गई। गुरु अष्टमेश होकर शनि (षष्ठेश-सप्तमेश) से युक्त तथा मंगल और सूर्य से दृष्ट है। अतः आयुष्य की हानि दर्शाता है।

चंद्र कुंडली में उल्कापति शनि, दशम भाव में नीचस्थ होकर भाग्येश गुरु से युक्त है। भाग्येश का नीचस्थ शनि से संबंध भाग्य हानि को दर्शाता है। पिंगला दशा का स्वामी सूर्य, द्वितीय भाव में स्थित लाभेश शुक्र का नियंत्रक होकर, चतुर्थ भाव में नीचस्थ है। पुनः षष्ठेश गुरु का दशमस्थ होकर सुख स्थान में बैठे सूर्य को देखना, कार्यक्षेत्र में विघ्न बाधा व असफलता से मानसिक क्लेश की पुष्टि करता है।

25.9 उदाहरण 9 :

धान्या-धान्या में कैंसर का आपरेशन व स्वास्थ्य लाभ–ज्योतिष प्रेमी जातक ने जिज्ञासावश प्रश्न किया उसे भला क्यों कर कैंसर रोग तथा आपरेशन की शारीरिक व मानसिक पीड़ा से गुजरना पड़ा। ये कुंडली थोड़ी असामान्य व रोचक है। सभी नौ ग्रह द्वितीय से अष्टम भाव तक सिमट गए हैं। धान्या दशापति गुरु

सप्तमेश होने से मारक प्रभाव देने में सक्षम है। सप्तमेश गुरु पर षष्ठेश (रोग अधिपति) मंगल तथा अष्टमेश शनि की दृष्टि, रोग और कष्ट का संकेत देती है।

चंद्र कुंडली में गुरु लग्नेश होकर एकादश भाव में है। विद्वानों ने एकादश भाव स्थित ग्रह को षष्ठ से षष्ठस्थ होने के कारण रोग देने वाला माना है। पुनः व्ययेश मंगल का अष्टमस्थ होकर लग्नेश गुरु को देखना भी देह सुख की हानि दर्शाता है। **जन्म कुंडली** में लग्नेश बुध का केन्द्र स्थान (चतुर्थ) में चतुर्थस्थ होकर सूर्य (आत्मा का नैसार्गिक कारक) से युति करना, आरोग्य प्रदान करने में सफल हुआ। ध्यान रहे सूर्य का संबंध आरोग्य और औषधि से है तो बुध लग्नेश होने से देह की स्थिति व सुख का प्रतीक है। उच्चस्थ लग्नेश की सूर्य से युति प्राण रक्षा तथा आरोग्यलाभ में सहायक बनी।

25.10 उदाहरण 10

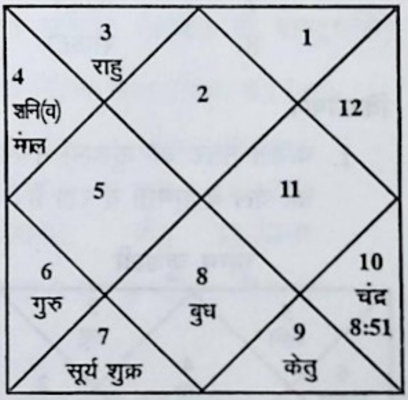

सिद्धा उल्का में (शुक्र-शनि) में संतान सुख–सिद्धा दशा का स्वामी शुक्र लग्नेश होकर सुखेश सूर्य के साथ षष्ठ भाव में स्वगृही होने से बली है। भुक्ति दशा उल्का का स्वामी शनि, योगकारक होकर, पंचमस्थ गुरु तथा भाग्यस्थान में बैठे अपने नियंत्रक चंद्रमा को देख रहा है। दशानाथ शुक्र से पंचमेश शनि की उल्का दशा संतान सुख की पुष्टि कर रही है।

चंद्र कुंडली में शुक्र पंचमेश होकर दशम भाव में स्वगृही है तो शनि, लग्नेश होकर सप्तम भाव में, सुखेश मंगल से युति तथा चंद्रमा से राशि परिवर्तन कर रहा है। संतान कारक गुरु, भाग्यस्थान में भुक्तिनाथ शनि से दृष्ट है। इसी प्रकार शनि के साथ बैठा मंगल, दशानाथ शुक्र को देख रहा है।

निष्कर्ष : जातक ने शुक्र-शनि (सिद्धा-उल्का) की दशा में संतान जन्म का

सुख पाया।

25.11 उदाहरण 11 : पंडित जवाहर लाल नेहरु

जन्म 14 नवंबर 1889 समय : रात्रि 23.14 स्थान : इलाहबाद

लग्न स्पष्ट	03:21:49	सूर्य	07:00:15	चंद्रमा	03:17:52
मंगल	05:09:59	बुध	06:17:08	गुरु	08:15:10
शुक्र	06:07:21	शनि	04:10:50	राहु	02:11:13
केतु	08:11:13				

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा

भ्रामरी दशा 3 वर्ष 7 मास 13 दिन शेष

योगिनी दशाक्रम		वर्ष मास तारीख
1889 –11-14	जन्म	1919-06-27 से मंगला प्रारंभ
+ 3 – 7-13	भ्रामरी	1947-06-27 सिद्धा समाप्त
5	भद्रिका	
6	उल्का	15 अगस्त 1947 को
7	सिद्धा	संकटा-संकटा में प्रधानमंत्री बने
8	संकटा	

विश्लेषण

1. पंडित नेहरु की कुंडली में लग्नेश चंद्रमा लग्न में स्वगृही होने से कुंडली को बल व शुभता दे रहा है। चतुर्थ भाव जनता का भाव है। चतुर्थेश शुक्र

जन्म कुंडली

नवांश कुंडली

का चतुर्थ भाव में स्वगृही होना उन्हें लोकप्रियता देने वाला बना। दशम भाव पर दशमेश मंगल तथा नवमेश गुरु की दृष्टि ने उन्हें स्वतंत्र भारत का प्रथम प्रधानमंत्री बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. **संकटा-संकटा में सत्ता लाभ :** संकटा का स्वामी राहु भाग्येश गुरु से दृष्ट होने के कारण भाग्यवृद्धि का संकेत देता है। राहु नियंत्रक बुध की सुखेश-लाभेश शुक्र के साथ युति तथा दशम भाव पर दृष्टि है। राहु का अपने नियंत्रक बुध, सुखेश शुक्र तथा भाग्येश गुरु को देखना संकटा पति को शुभ व बली बना रहा है।
3. **नवांश कुंडली में :** संकटा-संकटा का स्वामी (राहु-राहु) लग्नस्थ होकर लग्नेश शनि तथा सूर्य (सत्ता) से दृष्ट है। लग्नेश शनि तथा भाग्येश बुध की दृष्टि भाग्य स्थान पर हैं। भाग्येश की लाभेश से युति तथा भाग्यस्थान पर दृष्टि जातक को प्रभावशाली बनाती है।

निष्कर्ष: संकटा-संकटा में श्री नेहरु भारत के प्रधानमंत्री बने। संकटा का स्वामी राहु चतुर्थ (जनता) भाव में चतुर्थेश-लाभेश शुक्र के साथ बैठे अपने नियंत्रक बुध तथा भाग्येश गुरु को देख रहा है। गुरु बुध शुक्र तथा मंगल की दशम भाव पर दृष्टि ने जातक को सत्ता लाभ प्रदान किया।

25.12 उदाहरण 12 : डा० राजेन्द्र प्रसाद (भारत के राष्ट्रपति)

1. 3 दिसंबर 1884 प्रातः 8:14 छपरा बिहार लग्न स्पष्टः 8:17:40

सूर्य	07:19:09	चंद्र	01:23:52	मंगल	08:05:56
बुध	08:04:26	गुरु	04:13:04	शुक्र	06:12:56
शनि(व)	01:29:15	राहु	05:20:01	केतु	11:20:01

जन्म के समय योगिनी दशा संकटा 7 वर्ष 8 मास 5 दिन शेष

2. घटनाएं

1. उल्का-धान्या (शनि-शुक्र) में खाद्य मंत्री बने (1948 में)
2. सिद्धा-सिद्धा (शुक्र-शुक्र) में राष्ट्रपति बने (जनवरी 1950)

3. विश्लेषण

1. **उल्का धान्या में खाद्य मंत्री :** जन्म कुंडली में उल्का नाथ शनि की चंद्रमा से युति पर भाग्येश सूर्य की दृष्टि है तो धान्या पति गुरु भाग्यस्थ होकर दशमेश बुध को देख रहा है।

चंद्र कुंडली में शनि नवमेश दशमेश होकर लग्न में चंद्रमा में युति कर दशम भाव को देख रहा है तो गुरु का दृष्टि संबंध भी दशम भाव से है। दशम भाव पर शनि तथा गुरु की दृष्टि ने जातक को मंत्री पद दिया।

2. **सिद्धा-सिद्धा (शुक्र-शुक्र) की दशा में राष्ट्रपति :** जन्म कुंडली में शुक्र एकादशेश होकर लाभ स्थान में स्वगृही है। यही शुक्र चंद्र कुंडली में लग्नेश भी है।

जन्म कुंडली

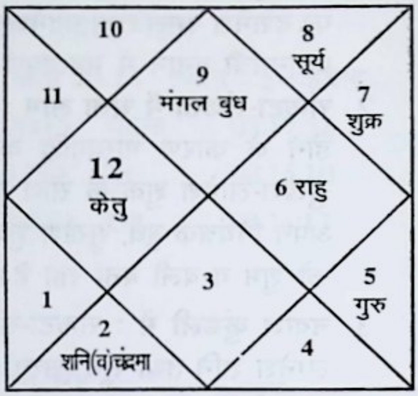

नवांश कुंडली में शुक्र भाग्येश होकर त्रिकोण (पंचम) भाव उच्चस्थ गुरु (जन्म लग्नेश) से दृष्ट है। शुक्र नियंत्रक शनि लग्न से दशम को देख रहा है।

दशांश कुंडली में शुक्र लग्नेश होकर दशमस्थ है तो दशमेश शनि भी उच्चस्थ होकर लग्नेश गुरु से दृष्टि संबंध कर रहा है।

नवांश कुंडली

दशांश कुंडली

निष्कर्ष : जो ग्रह जन्म कुंडली में बली हों वे अपनी दशा भुक्ति में शुभ परिणाम यथा पद प्रतिष्ठा तथा सत्ता सुख दिया करते है। *उल्का–धान्या (शनि–गुरु) में खाद्य मंत्री बने।* शनि नवांश कुंडली में लग्नस्थ होकर दशम भाव को देखता है तो दशांश कुंडली में दशमेश होकर दशम भाव के भाग्यस्थान में उच्चस्थ है। गुरु जन्म कुंडली में लग्नेश होकर भाग्यस्थ है तो नवांश कुंडली के लाभ स्थान

में उच्चस्थ है। इसी प्रकार दशांश कुंडली में लाभेश होकर दशमेश शनि से दृष्ट है। दशम भाव या दशमेश से संबंध सत्ता लाभ देने वाला बना। इसी प्रकार **सिद्धा-सिद्धा की दशा** में शुक्र जन्म कुंडली में लाभेश होकर लाभ स्थान में स्वगृही है तो नवांश कुंडली में भाग्येश होकर पंचमस्थ है। दशांश कुडली में तो शुक्र लग्नेश होकर दशम भाव मे स्थित है। अतः आजीविका क्षेत्र में उत्कृष्ट सम्मान देने वाला बना।

25.13 समीक्षा

उदा. सं.	योगिनी दशा (संबंधित ग्रह)	भाव संबंध	घटना
1.	संकटा-उल्का (राहु-शनि)	राहु की दशमेश तथा द्वादशेश के साथ दशम भाव में युति है तो शनि पंचमेश होकर पंचम भाव में स्वगृही है।	अमरीका के विश्वविद्यालय में प्रवेश पाया।
2.	धान्या-धान्या (गुरु-गुरु)	गुरु भाग्येश और पति कारक होकर कुटुम्ब भाव में द्वितीयेश सूर्य के साथ है तथा पंचमेश मंगल और सप्तमेश शनि से दृष्ट भी है।	महिला का विवाह हुआ।
3.	मंगला-संकटा (चंद्रमा-राहु)	चंद्रमा चतुर्थेश मंगल के साथ चतुर्थ से अष्टम भाव में नीचस्थ होकर राहु तथां शनि से दृष्ट है। राहु पचंम अर्थात माता के द्वितीय या मारक भाव में बैठकर चंद्रमा तथा चतुर्थेश मंगल को देख रहा है।	माता की कैंसर से मृत्यु हुई।
4.	उल्का-धान्या (शनि-गुरु)	शनि-भाग्येश होकर भाग्य स्थान में स्वगृही है तथा गुरु- दशमेश होकर दशम भाव को देखता है।	आजीविका क्षेत्र में उन्नति व लाभ मिला।
5.	पिंगला-भद्रिका (सूर्य-बुध)	सूर्य द्वितीयेश होकर अष्टम भाव में व्ययेश बुध के साथ है। दशमेश मंगल बुध की राशि में है तो सूर्य क्षेत्री राहु भी दशम भाव को देख रहा है।	कार्यालय में चोरी से हानि उठानी पड़ी।

उदा. सं.	योगिनी दशा (संबंधित ग्रह)	भाव संबंध	घटना
6.	उल्का-संकटा (शनि-राहु)	शनि-अष्टमस्थ तथा राहु भाग्यस्थान में है, तो राहु नियंत्रक की दृष्टि नवम और दशम भाव पर है।	नौकरी बदलने से लाभ हुआ।
7.	सिद्धा-भद्रिका (शुक्र-बुध)	शुक्र-लग्नेश होकर लग्न में दशमेश चंद्रमा से युक्त है। बुध-भाग्येश होकर विदेश (द्वादश) भाव में उच्चस्थ है तथा पंचमेश शनि से दृष्ट है।	विदेश में वैदिक ज्योतिष पर व्याख्यान दिया और विद्वानों से प्रशंसा पाई।
8.	उल्का-पिंगला (शनि-सूर्य)	शनि-षष्ठेश सप्तमेश होकर नीचस्थ है। सूर्य-लग्नेश होकर नीचस्थ है तथा शनि से समसप्तक है।	जातक ने निराशा के कारण आत्म- हत्या की।
9.	धान्या-धान्या (गुरु-गुरु)	गुरु सप्तमेश होकर पंचम भाव में बैठ लग्न को देखता है तथा स्वयं षष्ठेश मंगल व अष्टमस्थ शनि से दृष्ट है।	जातक का कैंसर का आपरेशन हुआ।
10.	सिद्धा-उल्का (शुक्र-शनि)	शुक्र, चंद्रमा से पंचमेश है शनि-भाग्येश होकर पंचम भाव को देखता है।	जातक ने संतान जन्म का सुख पाया।
11.	संकटा-संकटा (राहु-राहु)	जन्म कुंडली में राहु भोग स्थान में भाग्येश से दृष्ट है तो राहु नियंत्रक बुध लाभेश के साथ बैठकर दशम भाव को देख रहा हैं। नवांश कुंडली में राहु लग्नस्थ होकर लग्नेश से दृष्ट है।	श्री नेहरू प्रधान मंत्री बने

उदा. सं.	योगिनी दशा (संबंधित ग्रह)	भाव संबंध	घटना
12.	उल्का-धान्या (शनि-गुरु)	शनि-षष्ठ स्थान में चंद्रमा से युक्त तथा भाग्येश सूर्य से दृष्ट है। गुरु-लग्नेश होकर लाभस्थ है।	जातक स्वतंत्र भारत में खाद्य मंत्री बना
	सिद्धा-सिद्धा (शुक्र-शुक्र)	शुक्र लाभेश होकर लाभ स्थान में स्वगृही है। नवांश कुंडली में नवमेश शुक्र पंचम भाव में है। दशांश कुंडली में शुक्र लग्नेश होकर दशम भाव में है।	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद गणतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने

25.14 विश्लेषण के सूत्र

- योगिनी दशा तथा उनके स्वामियों की पहचान करें।
- योगिनी दशा के स्वामी किस भाव में किस ग्रह से दृष्टि युति संबंध कर रहे हं तथा स्वयं वे किस भाव के अधिपति हैं।
- इन ग्रहों तथा भावों के संबंध व उनके परिणामों का आकलन करें।
- इन्हें परस्पर जोड़ कर घटना के स्वरूप पर विचार करें।

●●●

अध्याय-26

घटना की पुष्टि में योगिनी और विंशोत्तरी का प्रयोग

प्राच्य ऋषियों की, मानवमात्र को दैव विद्या ज्योतिष की देन, सचमुच बहुत अद्भुत और चमत्कारिक देन है। इसमें विभिन्न दशा प्रणालियां भले ही परस्पर विरोधी या भिन्न जान पड़े किंतु इनका सम्मिलित प्रयोग किसी घटना की पुष्टि के लिए सरल व सहज ही नहीं अपितु सटीक व सार्थक भी है। इस अध्याय में उदाहरणों द्वारा इस विषय पर चर्चा की गई है।

26.1 उच्च शिक्षा के लिए विदेश में छात्रवृत्ति

1. **जीवन तथ्य** : ये महिला बी. टेक. (इंजीनियर) है। ब्राह्मण कन्या होकर इसने विजातीय पुरुष से विवाह और, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अधीन छात्रवृति प्राप्त कर, विदेश में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

2. **कुंडली विश्लेषण : गुरु-राहु की दशा में घटना घटी**

(i) **दशानाथ गुरु** पंचमेश होकर अष्टम (शोध कार्य, गहन अध्ययन) भाव में स्वगृही है तथा द्वादश (विदेश) भाव में अपनी उच्चराशि को देख रहा है। भुक्तिनाथ राहु लाभ स्थान से, विदेश भाव के स्वामी चंद्रमा तथा पंचम भाव को देख रहा है। राहु का नियंत्रक बुध भी धनेश-लाभेश तथा शिक्षा का नैसर्गिक कारक होकर पंचमस्थ है। अतः बुद्धि और विद्या द्वारा धन व यश प्राप्ति का योग बना है।

(ii) कुछ विद्वान प्रतियोगिता में सफलता के लिए षष्ठ भाव पर विचार करते हैं। इस कुंडली में भाग्येश मंगल, उच्चस्थ होकर लग्नेश सूर्य के साथ, षष्ठ भाव

में है तो षष्ठेश शनि, मूल त्रिकोण राशि का होकर, दशमेश शुक्र के साथ सप्तमस्थ है। भाग्येश मंगल, तथा भाग्येश नियंत्रक शनि, की नवम भाव पर दृष्टि, महिला को भाग्यशाली बना रही है। **चंद्र कुंडली** में भी लग्नेश शुक्र की पंचमेश शनि के साथ पंचम भाव में युति उच्च विद्या योग बना रही है।

3. **संकटा-संकटा (राहु-राहु) की योगिनी दशा :**

(i) **राहु** लाभ स्थान में बैठ कर पंचम भाव तथा द्वादशेश चंद्रमा को देख रहा है तथा राहु नियंत्रकं बुध पंचम भाव में स्थित है। ये बात दुबारा दोहराने की जरूरत नहीं है।

(ii) **चंद्र कुंडली** में नवमस्थ राहु पर नवमेश बुध की दृष्टि, राहु की दशा-भुक्ति को भाग्यशाली बनाती है। ध्यान रहे चंद्र कुंडली में बुध भाग्येश होने के साथ विदेश (द्वादश) भाव का भी स्वामी है। अतः राहु की दशा में विदेश संबंध से भाग्य वृद्धि हुई।

4. **निष्कर्ष :** त्रिषडाय भाव में क्रूर ग्रह विशेष शुभ फल दिया करते हैं। एकादश भाव का राहु (संकटा-संकटा दशा में) लाभ प्रद सिद्ध हुआ। पुनः सप्तम भाव में, सप्तमेश शनि की शुक्र के साथ युति पर, राहु की दृष्टि ने विजातीय पुरुष से विवाह कराया। विद्वानों ने दशानाथ गुरु को पति प्रदाता तथा स्त्री जातक के विवाह में उपयोगी पाया है। भुक्तिनाथ राहु की सप्तम भाव और सप्तमेश शनि से युक्त शुक्र पर दृष्टि विवाह कराने वाली बनी।

26.2 जलयान इंजीनियरिंग में चयन

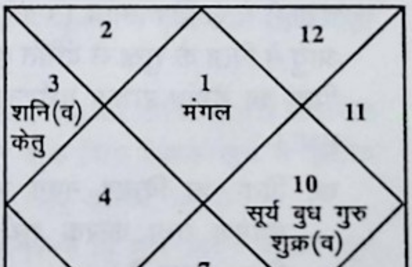

1. **विश्लेषण :** इस कुंडली में दशम भाव, पंचमेश सूर्य, षष्ठेश बुध (दशम भाव का भाग्येश), भाग्येश गुरु तथा द्वितीयेश शुक्र की युति के कारण बली है। लग्नेश मंगल का लग्न में स्वगृही होना भी यश व प्रतिष्ठा दिया करता है।
2. **गुरु-सूर्य की दशा में चयन : दशानाथ गुरु** नवमेश-द्वादशेश होकर जलाश्रयी राशि मकर में दशमस्थ है। दशमेश शनि की भी विदेश (द्वादश) भाव पर दशम दृष्टि है। ऐसा जातक घर से दूर विदेश में कार्य करता है। भुक्तिनाथ सूर्य पंचमेश होकर, षष्ठेश (स्पर्धाप्रतियोगिता के स्वामी) बुध तथा भाग्येश और दशानाथ गुरु

के साथ दशमस्थ है। अतः कार्य क्षेत्र संबंधी फल देगा। **चदंकुण्डली** में दशानाथ गुरु षष्ठेश स्पर्धापति होकर दशम आजीविका तथा द्वादश विदेश भाव को देख रहा है। लाभेश सूर्य की भाग्येश बुध के साथ सुख स्थान में युति तथा दशम़ भाव पर दृष्टि है।

टिप्पणी : पंचमेश सूर्य की नवमेश गुरु के साथ दशम भाव में युति राजयोग बनाती है। सूर्य भी दशम भाव में दिग्बली होने से कार्यक्षेत्र में सफलता दिया करता है।

3. **उल्का-भद्रिका (शनि-बुध) की योगिनी दशा :** उल्का पति दशानाथ शनि, दशमेश होकर पराक्रम भाव में तकनीकी शिक्षा के कारक केतु के साथ बैठ कर, पंचम (विद्या), नवम (भाग्य) तथा द्वादश (विदेश) भाव से दृष्टि संबंध कर रहा है। दशानाथ की मीन राशि पर दृष्टि, नौसेना में प्रवेश से आजीविका देने वाली बनी।

भद्रिका स्वामी बुध दशानाथ शनि का नियंत्रक होकर दशमस्थ है। बुध षष्ठेश होने से प्रतियोगिता में सफलता दिलाने वाला बना। ध्यान रहे चंद्र कुंडली में भी शनि, चतुर्थेश पंचमेश होकर, भाग्य स्थान में है तो भाग्येश बुध सुख स्थान में है। अतः सुखेश-भाग्येश का राशि परिवर्तन तथा इनकी दशा भुक्ति भाग्य व सुख बढ़ाने वाली बनी।

26.3 पिता की वाहन दुर्घटना में मृत्यु

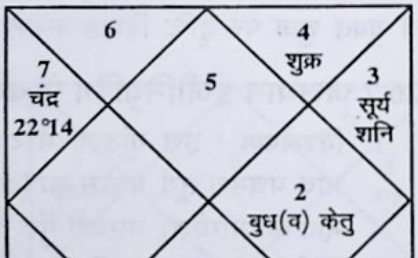

1. **जीवन तथ्य :** गुरु-राहु की विंशोत्तरी दशा में ये जातिका मात्र 13 वर्ष की आयु में पिता के सुख से वंचित हुई। पिता का देहांत सड़क दुर्घटना में हुआ।

   क. पिता का विचार नवम भाव, नवमेश तथा कारक सूर्य से किया जाता है।

   ख. नवम भाव पर नीचाभिलाषी व्ययेश चंद्रमा की दृष्टि है तो नवमेश मंगल की, अष्टमेश गुरु के साथ अष्टम भाव में युति पर, षष्ठेश- सप्तमेश (मारकेश) शनि की दृष्टि है। यहां कारक सूर्य भी शनि की युति तथा अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि से पापी हो गया है।

   ग. **चंद्र कुंडली** में भी नवम भाव, सूर्य तथा शनि दो क्रूर ग्रहों की युति

तथा सप्तमेश मंगल की दृष्टि के कारण, पीड़ित हो गया है। नवमेश बुध अष्टम भाव में राहु-केतु अक्ष में फंसा है। पिता कारक सूर्य पर मारकेश (द्वितीयेश–सप्तमेश) मंगल की दृष्टि अनिष्टप्रद है।

घ. **सूर्य कुंडली** में अष्टमेश-नवमेश शनि, की पिता कारक सूर्य के साथ युति, पर षष्ठेश तथा राहु नियंत्रक मंगल की दृष्टि है। मंगल यूं भी दुर्घटना का कारक है, यदि ये षष्ठेश भी हो तब तो दुर्घटना को अधिक सुनिश्चित करता है।

2. **विंशोत्तरी दशा गुरु-राहु : दशानाथ गुरु** अष्टमेश होकर, अष्टम भाव में, नवमेश (मंगल) के साथ है। ये योग पिता के देह सुख की हानि व दुर्घटना का संकेतक है। कारण नवम भाव से अष्टमस्थ होने के कारण, **राहु** अपनी दशा भुक्ति में पिता की मृत्यु दे सकता है। पुनः राहु नियंत्रक मंगल नवमेश होकर राहु से दृष्ट है। अन्य शब्दों में पिता के लग्न अर्थात् जन्मांग के नवम भाव से, अष्टमस्थ राहु पिता के लग्नेश मंगल को देख रहा है।

टिप्पणी : चतुर्थेश मंगल वाहन कारक हो गया है उस पर षष्ठेश (दुर्घटना) शनि की दृष्टि दुर्घटना की पुष्टि करती हैं।

3. **योगिनी दशा उल्का-सिद्धा (शनि-शुक्र)** : उल्का दशानाथ शनि षष्ठेश सप्तमेश होने से दुर्घटना तथा मारक प्रभाव देने वाला बना है। इसकी लग्नेश तथा पिता के नैसर्गिक कारक सूर्य के साथ युति पर राहु नियंत्रक अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि पिता और बालिका दोनों के जीवन को प्रभावित कर रही है। दशानाथ शनि का नवमेश मंगल से मृत्युभाव में दृष्टि परिवर्तन पिता की मृत्यु दे सकता है।

(ii) **सिद्धा** अन्तर्दशा का स्वामी शुक्र (नवम भाव का द्वितीयेश और सप्तमेश होने से) पिता का मारकेश है। पुनः शुक्र पिता कारक सूर्य से द्वितीय या मारक भाव में है अतः पिता के लिए अनिष्ट प्रद है।

(iii) **सूर्य कुंडली** में दशानाथ शनि अष्टमेश है तो शुक्र व्ययेश होकर सूर्य से द्वितीय (मारक) भाव में बैठा है। अतः शनि शुक्र (उल्का-सिद्धा) की दशा पिता के लिए मारक प्रभाव देगी।

26.4 पिता की मृत्यु (शनि-शुक्र की दशा में)

1.(i) पिता का विचार नवम भाव से होता है यदि नवम भाव को लग्न मानकर कुंडली में विभिन्न ग्रहों की स्थिति का आकलन करें तो शायद बात समझना अधिक सरल होगा।

(ii) **दशानाथ शनि** : नवम भाव से षष्ठस्थ होकर षष्ठेश बुध से दृष्ट है।

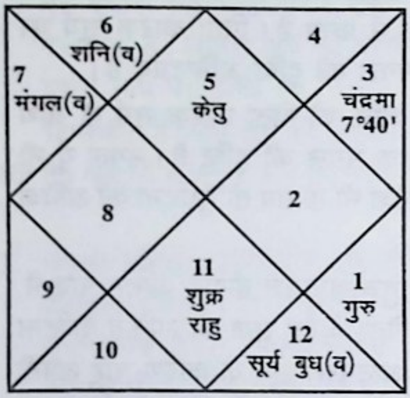

नवम भाव को लग्न मान कर बनी कुंडली

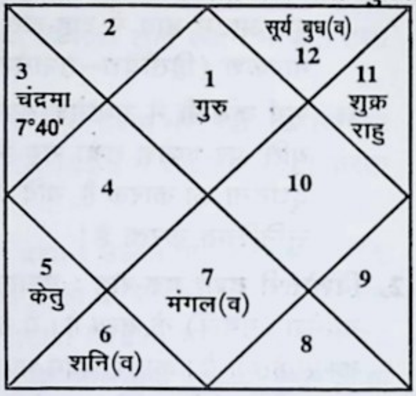

शनि की दृष्टि अष्टम भाव तथा अष्टमेश मंगल पर है। कारण वक्री शनि एक भाव पीछे सिंह राशि से भी प्रभावी माना जाता है।

2. **भुक्तिनाथ शुक्र** : नवम भाव से द्वितीयेश-सप्तमेश होने के कारण मारकेश हो गया है। शुक्र नियंत्रक शनि, दशानाथ व राहु नियंत्रक होकर, शुक्र से अष्टम या मृत्यु भाव में है। पिता के कारक सूर्य से द्वादश भाव में शुक्र तथा अष्टम भाव में शनि होने से भी, शनि-शुक्र की दशा अनिष्टप्रद सिद्ध हुई।
3. **योगिनी दशा धान्या भद्रिका (गुरु-बुध)** : नवम भाव के लिए गुरु द्वादशेश होकर लग्न में है तथा अष्टमेश मंगल से दृष्ट है। अतः गुरु की दशा मृत्यु देने में समर्थ है। बुध षष्ठेश होकर षष्ठस्थ शनि से दृष्ट है। भुक्तिनाथ बुध का दशानाथ से व्ययस्थ होना देह पात का कारण बना। कारक सूर्य से, गुरु द्वितीय (मारक) स्थान में है तो बुध (सप्तमेश) मारकेश है। अतः यह दशा भुक्ति पिता की मृत्यु का प्रबल. संकेत दे रही है।

26.5 उच्चशिक्षा के लिए विदेश गमन (बुध-शनि की दशा में)

1. **बुध-शनि की दशा** : बुध पंचमेश (विद्या भाव का स्वामी) होकर दशम भाव में दिग्बली सूर्य के साथ बैठा है। बुध नियंत्रक मंगल द्वादश भाव में उच्चस्थ है। भुक्तिनाथ शनि लग्नेश होकर षष्ठेश चंद्रमा के साथ बैठा है। लग्नेश-षष्ठेश की युति प्रतियोगिता

या स्पर्धा में सफलता देती है। वक्री शनि की दृष्टि (कुंभ राशि से) पंचमेश बुध पर है तो बुध से शनि पंचमस्थ है।

टिप्पणी : 'कारकात् भावम्' के अनुसार विद्या कारक बुध से पंचम भाव में स्थित ग्रह की दशा भुक्ति उच्च शिक्षा प्राप्ति में सहायक होती है। दशानाथ से भुक्तिनाथ का पंचमस्थ होना भी विद्या के क्षेत्र में सफलता देता है। अतः बुध शनि में उच्च शिक्षा का अवसर मिला।

2. **योगिनी दशा पिंगला-भद्रिका (सूर्य-बुध) :**

(i) पिंगलानाथ **सूर्य** भद्रिकानाथ **बुध** के साथ दशम भाव (शिक्षा-क्षेत्र में सफलता) में है। बुध पंचमेश (त्रिकोणपति) तो सूर्य सप्तमेश (केंद्राधिपति) होकर दशम भाव में होने से विशेष शुभता वाली दशा का संकेत देते हैं।

(ii) **चंद्र कुंडली** में सूर्य षष्ठेश तो बुध सुखेश होकर भाग्य भवन में है। यह भी भाग्य वृद्धि दर्शाता है।

(iii) पंचम भाव से षष्ठ अर्थात् दशम भाव में पराक्रमेश सूर्य के साथ लग्नेश बुध की युति है तो पंचम (लग्न से नवम) भाव अपने स्वामी से युक्त है। ऐसा जातक यदि उच्च शिक्षा के लिए विदेश में चला गया तो आश्चर्य कैसा!

26.6 महिला का विवाह (बुध-शनि की दशा में)

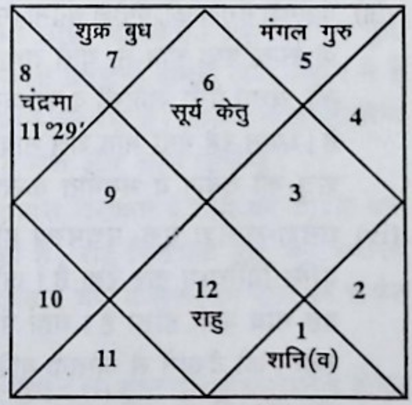

1. (क) **दशानाथ बुध** : लग्नेश होकर द्वितीय (कुटुब) भाव में भाग्येश शुक्र के साथ बैठा है।

चंद्र कुंडली में बुध लाभेश होकर सप्तमेश तथा विवाह कारक शुक्र के साथ द्वादश (शयन सुख) भाव में बैठा है।

(ख) **भुक्तिनाथ शनि** पर सप्तमेश गुरु की दृष्टि है तो शनि नियंत्रक मंगल भी सप्तमेश के साथ (द्वादश) शयन सुख भाव में है।

चंद्र कुंडली में षष्ठस्थ शनि, नीचस्थ होकर, सप्तमेश शुक्र से दृष्टि विनिमय कर रहा है। कुटुम्ब भाव के स्वामी की शनि पर दृष्टि है।

(ग) **विशेष** : षष्ठेश का नीचस्थ होना या षष्ठ भाव में नीचराशिस्थ ग्रह की स्थिति दुख व परेशानी मिटाने में सहायक होती है।

2. **योगिनी दशा सिद्धा-संकटा (शुक्र-राहु)** : शुक्र, दांपत्य सुख का नैसर्गिक

कारक तथा भाग्येश होकर, कुंटुब भाव में स्वगृही है तथा लग्नेश-दशमेश बुध से युति व पंचमेश शनि से दृष्टि संबंध कर रहा है। **संकटा पति राहु** सप्तमस्थ होने से विवाह कराने में सक्षम है। राहु नियंत्रक गुरु द्वादश भाव में है। संकटापति राहु, कारक शुक्र से सप्तमेश मंगल, द्वारा दृष्ट है। अतः शुक्र-राहु की योगिनी दशा विवाह कराने वाली बनी। ध्यान रहे दशा निर्णय में "कारकात् भावम्" की विशेष भूमिका हुआ करती है।

26.7 तेरह वर्षीय बालक कमांडो प्रशिक्षक बना

1. विश्लेषण

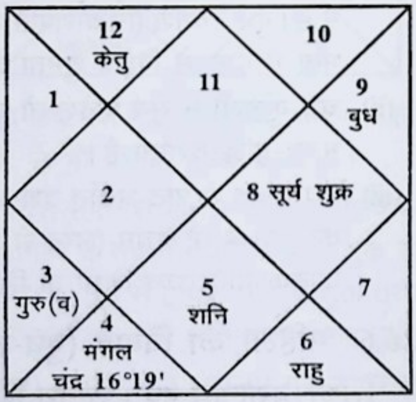

जन्म कुंडली (i) लग्नेश शनि, सूर्य की राशि में बैठ कर भाग्य स्थान में अपनी उच्चराशि एवं लग्न तथा सुख स्थान को देख रहा है। शनि नियंत्रक सूर्य, सुखेश-भाग्येश शुक्र के साथ दशमस्थ है।

(ii) दशम भाव में दिग्बली सूर्य की योगकारक शुक्र से युति उत्कृष्ट कर्म को दर्शाती है।

(iii) दशमेश मंगल की, षष्ठेश चंद्रमा (मन) के साथ षष्ठ भाव में, युति तथा भाग्य, भोग एवम् लग्न पर दृष्टि जातक को, संघर्ष प्रेमी, साहसी व पराक्रमी बना कर, भाग्य वृद्धि व यश दिया करती है। ध्यान रहे षष्ठ भाव शत्रु भाव है; उसमें किसी भी ग्रह का नीचस्थ होना शत्रु को दुर्बल व भयभीत करता है।

(iv) धनेश-लाभेश गुरु, पंचमस्थ होकर लाभ स्थान में बैठे पंचमेश, बुध से दृष्टि विनिमय कर रहा है। जो भाव अपने स्वामी से दृष्ट या युक्त हो वह भाव बली होता है। यहां पंचमेश का पंचम को तो लाभेश का लाभ स्थान को देखने से जातक बुद्धि व धन लाभ में श्रेष्ठता पाने वाला हुआ।

(v) **चंद्र कुंडली** के तृतीय भाव में स्थित राहु जातक को साहसी व पराक्रमी बनाता है तो पंचमेश मंगल का लग्नस्थ होना जातक को बुद्धि बल व चातुर्य प्रदान करता है।

(vi) लग्न में लग्नेश चंद्रमा के साथ दशमेश मंगल की युति आजीविका क्षेत्र में उत्कृष्ट सफलता देती है।

(vii) पराक्रमेश बुध, राहु नियंत्रक होकर षष्ठस्थ है तथा द्वादश भाव में स्थित

षष्ठेश गुरु से दृष्टि विनिमय कर रहा है। निश्चय ही ऐसा जातक साहसी तथा शत्रु का मान मर्दन करने वाला शूर वीर होता है।

(viii) पंचम भाव में धनेश सूर्य की लाभेश शुक्र से युति बुद्धि बल या प्रशिक्षण के द्वारा लाभ प्राप्ति का योग देती है।

टिप्पणी : (i) तृतीय भाव पराक्रम, षष्ठ भाव स्पर्धा प्रतियोगिता तो दशम भाव कर्म भाव है। इनका परस्पर संबंध प्रायः, अपने ही प्रयास और परिश्रम से जातक को प्रतियोगिता में सफलता प्रदान कर, कार्यक्षेत्र में यश दिया करता है। कभी अच्छे एथलीट या खिलाड़ियों की कुंडली में भी ये योग देखा गया है।

2. **बुध-राहु की दशा में जातक पुलिस प्रशिक्षक बना** : इस जातक ने बचपन में बुध की महादशा पायी। बुध पंचमेश-अष्टमेश तथा राहु का नियंत्रक होकर लाभ स्थान में है तो दशानाथ बुध का नियंत्रक गुरु, पंचमस्थ होकर भाग्य, लाभ व लग्न से दृष्टि संबंध कर रहा है। इस दशा ने जातक को विदेश की सैर कराई तथा खतरों से खेलने में रुचि बढ़ायी।

चंद्र कुंडली में दशानाथ बुध द्वादशेश-तृतीयेश (पराक्रमेश) होकर षष्ठ (स्पर्धा, संघर्ष) भाव में स्थित है। इस अवधि में जातक ने विदेश में शत्रु को धाराशायी करने की सैन्य कला (जूडो, कराटे) का प्रदर्शन कर धन व यश प्राप्त किया।

(ii) **भुक्तिनाथ राहु** अष्टमस्थ हो विदेश (द्वादश) भाव, धन (द्वितीय) भाव तथा सुख (चतुर्थ) भाव से दृष्टि संबंध कर रहा है। ऐसा जातक विदेश जाकर धन व सुख पाए ये संकेत स्पष्ट दिखते हैं। राहु नियंत्रक बुध, पंचमेश (अभिरुचि, मनोरंजन, कला प्रदर्शन) होकर लाभ स्थान में है तथा लाभेश गुरु से स्थान परिवर्तन कर रहा है। जातक ने अपनी सैन्य कला का प्रदर्शन कर विदेश में यश और लाभ कमाया।

(iii) **चंद्र कुंडली** में तृतीयस्थ राहु साहस, पराक्रम व शौर्य का कारक बना है ये बात पहले कही जा चुकी है। राहु नियंत्रक बुध, का षष्ठस्थ होना, संघर्ष व स्पर्धा शक्ति बढ़ाकर, यश व सफलता पाने का संकेत देता है।

3. **योगिनी दशा उल्का-भद्रिका (शनि-बुध)** : (i) शनि द्वादशेश-लग्नेश होकर सप्तमस्थ है तथा लग्न के साथ भाग्य और सुख स्थान को भी देख रहा है। उल्का दशा के स्वामी शनि ने जातक की विदेश में भाग्य तथा सुख की वृद्धि की।

(ii) **भद्रिकापति बुध** की भुक्ति सैन्य कला के प्रदर्शन से धन व यश देने

वाली बनी। बुध पंचमेश होकर लाभस्थ है तो लाभेश गुरु पंचम भाव में है। इस प्रकार दोनों ग्रहों का स्थान परिवर्तन हुआ है। पंचम भाव बुद्धि, विद्या तथा शिक्षा के साथ मनोरंजन या कला प्रदर्शन का भी भाव है। पंचमेश का लाभस्थ होना जातक को सैन्य कला के विदेशों में प्रदर्शन द्वारा, धन व यश देने वाला बना।

टिप्पणी : (i) **चंद्र कुंडली** में गुरु तथा बुध के, क्रमशः षष्ठ व द्वादश भाव के स्वामी होकर, स्थान परिवर्तन करने के कारण ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों से उबर कर बहुधा सफलता व सम्मान पाता है।

(ii) तृतीयेश का षष्ठस्थ होना जातक को साहसी व शूरवीर बनाता है। ध्यान रहे तृतीय, षष्ठ व एकादश भाव में क्रूर ग्रह बहुधा शुभ परिणाम दिया करते हैं।

(iii) एकादश भाव में स्थित कोई भी ग्रह धन तथा मान सम्मान देने वाला होता है।

26.8 जातक उच्चशिक्षा के लिए अमरीका गया (शुक्र-चंद्र विंशोत्तरी दशा)

1. विश्लेषण

जन्म 27-12-1968

(i) लग्नेश सूर्य की लाभेश- धनेश बुध के साथ पंचम भाव में युति है तो लाभ स्थान अपने स्वामी तथा लग्नेश से दृष्ट होने के कारण बली हो गया है।

(ii) अधिकांश ग्रह द्विस्वभाव राशि या चर राशि में है। ऐसा जातक प्रायः पर्यटन प्रेमी होता है।

(iii) भाग्येश-सुखेश मंगल का दृष्टि संबंध दशमेश शुक्र, भाग्य स्थान तथा दशम भाव से है तो दशमेश शुक्र की दृष्टि विदेश (द्वादश) भाव पर है। ये योग विदेश में आजीविका या व्यापार का अवसर दिया करता है।

(iv) दशमेश नियंत्रक शनि की द्वादशेश चंद्रमा की साथ अष्टम भाव में युति पर पंचमेश गुरु की दृष्टि है। इसी प्रकार पंचमेश गुरु, दशमेश शुक्र

तथा दशम भाव को भी देख रहा है।

(v) *ध्यान रहे पंचमेश दशमेश तथा द्वादशेश का परस्पर संबंध विदेश में शिक्षा तथा आजीविका पाने का योग दिया करता हैं।*

2. **शुक्र-चंद्रमा की दशा में विदेश गमन :** दशानाथ शुक्र पर पंचमेश गुरु तथा भाग्येश मंगल की दृष्टि, इसे बल व शुभता प्रदान कर रही है। शुक्र भाग्येश नियंत्रक तथा दशमेश होकर विदेश भाव को देख रहा है तो शुक्र नियंत्रक शनि, द्वादशेश चंद्रमा के साथ बैठ कर पंचम तथा दशम भाव से संबंध कर रहा है। चंद्र कुंडली में शुक्र लाभस्थ है तो लाभेश की युति पंचमेश के साथ है।

भुक्तिनाथ चंद्रमा द्वादश भाव का स्वामी होकर पंचमेश गुरु से दृष्ट है। विदेश भाव के स्वामी चंद्रमा का पंचमेश गुरु की दृष्टि पाना इस भुक्ति में उच्च शिक्षा हेतु विदेश यात्रा का योग देने वाला बना।

3. **योगिनी दशा उल्का धान्या (शनि-गुरु) :** उल्कापति शनि, दशमेश शुक्र का नियंत्रक होकर विदेश भाव के स्वामी चंद्रमा के साथ अष्टम भाव में है। श्री जगन्नाथ भसीन ने अष्टम भाव को समुद्र पार की यात्रा का भाव माना है। दशानाथ शनि की अष्टम भाव में द्वादशेश (विदेश भाव के स्वामी) चंद्रमा के साथ युति विदेश यात्रा की पुष्टि करती है। धान्या का स्वामी गुरु, पंचमेश होकर दशम भाव, दशमेश शुक्र उल्कापति शनि तथा विदेश भावेश चंद्रमा से दृष्टि विनिमय कर रहा है तो गुरु नियंत्रक बुध भी शनि से दृष्ट हुआ है।

26.9 जातक ने राहु-बुध की दशा में विदेश यात्रा की

जन्म 19 नवंबर 1947

अपराह्न 15.45 जलंधर (पंजाब)

जन्म कुंडली

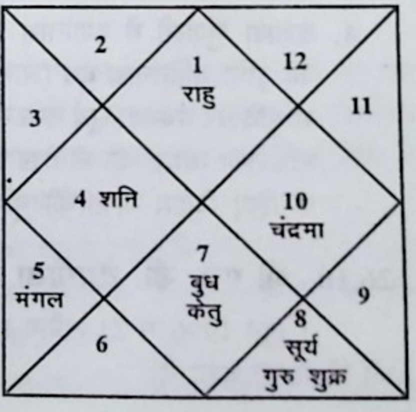

2. **विश्लेषण (जन्म कुंडली)**

(i) **दशानाथ राहु** लग्नस्थ होकर लग्नेश मंगल, षष्ठेश बुध तथा नवम (लंबी यात्रा) भाव को देख रहा है। राहु नियंत्रक मंगल पंचमस्थ होकर विदेश भाव के स्वामी गुरु, पंचमेश सूर्य तथा द्वितीयेश-सप्तमेश शुक्र, लाभ

स्थान तथा विदेश भाव को देख रहा है। राहु नियंत्रक मंगल का द्वादश भाव व उसके स्वामी (द्वादशेश) गुरु से दृष्टि संबंध विदेश यात्रा का संकेत दे रहा है।

(ii) **भुक्तिनाथ बुध** सप्तम भाव की चर राशि में स्थित होकर दशानाथ राहु से दृष्ट है। बुध नियंत्रक शुक्र की पंचमेश सूर्य तथा द्वादशेश गुरु से युति, उच्च शिक्षा के लिए जातक की, विदेश यात्रा की पुष्टि कर रही है।

नवांश कुंडली

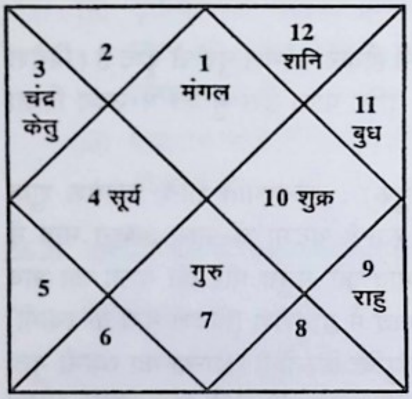

दशांश कुंडली

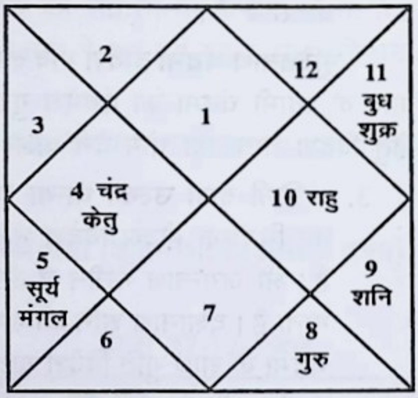

3. **नवांश कुंडली** में नवमस्थ राहु पर विदेश (द्वादश) भाव में स्थित दशमेश-लाभेश शनि की दृष्टि है तो राहु नियंत्रक गुरु, विदेश भावधिपति होकर, लग्न व लग्नेश को देख रहा है। भुक्तिनाथ बुध पर व्ययेश गुरु की दृष्टि है तो बुध भी पंचम भाव को देख रहा है। ये योग उच्च शिक्षा के लिए विदेश यात्रा देता है।

4. **दशांश कुंडली में** दशानाथ राहु दशम भाव में है तो राहु नियंत्रक शनि की दृष्टि भुक्तिनाथ बुध (लाभस्थ) पर है। बुध की द्वितीयेश-सप्तमेश शुक्र से युति पर पंचमेश सूर्य तथा लग्नेश मंगल की दृष्टि है। लग्नेश मंगल, व्यय भाव तथा व्ययेश को भी देख रहा है। अतः यह योग भी आजीविका व शिक्षा के लिए विदेश यात्रा की पुष्टि कर रहा है।

26.10 श्री एच. डी. देवगौड़ा शुक्र-राहु की दशा में प्रधानमंत्री रहे

1 जून 1996 से 21 अप्रैल 1997 तक भारत के प्रधानमंत्री रहे (शुक्र-राहु की विंशोत्तरी दशा में)

जन्म तिथि : 18 मई 1933 प्रातः 10.09 स्थान हसन

जन्म लग्न : 3:01:39

जन्म दशा शेष : 11 वर्ष 4 मास 10 दिन शेष।

1. **ग्रह स्पष्ट (राशिः अंशः कला)**

सूर्य	01:03:51	चंद्र	10:23:52	मंगल	04:14:37
बुध	00:21:39	गुरु	04:20:27	शुक्र	01:10:52
शनि	09:23:23	राहु	10:11:05	केतु	04:11:05

2. **विश्लेषण : दशानाथ शुक्र**

जन्म कुंडली

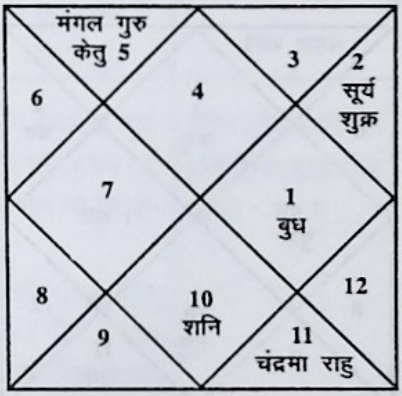

(i) **शुक्र जन्म कुंडली में** लाभेश होकर लाभ स्थान में सत्ताकारक धनेश सूर्य से युक्त है।

(ii) **नवांश कुंडली** में लाभेश शुक्र, दशमस्थ होकर भाग्येश गुरु से दृष्ट है।

(iii) **दशांश कुंडली** में दशानाथ शुक्र की लाभेश शनि के साथ धन भाव में युति है।

टिप्पणी : जन्म कुंडली में दशानाथ शुक्र का लाभेश होकर धनेश सूर्य से युति संबंध तथा नवमेश दशमेश की युति, सूर्य के क्षेत्र में होने से, शुक्र की दशा, जातक को प्रधानमंत्री पद देने वाली बनी।

3. **भुक्तिनाथ राहु**

(i) दशम भाव में मंगल क्षेत्री हो कर, मंगल से युति करने वाले, भाग्येश गुरु की दृष्टि पा रहा है। लग्नेश के साथ राहु की युति और दशानाथ शुक्र से भुक्तिनाथ राहु का दशमस्थ होना भी, आजीविका क्षेत्र में उत्कृष्ट सफलता का संकेत देता है।

(ii) **नवांश कुंडली** राहु की लाभस्थ चंद्रमा पर दृष्टि है तो राहु नियंत्रक शनि की दशमेश मंगल के साथ युति तथा सत्ता कारक सूर्य, भाग्येश गुरु और लग्नेश चंद्रमा पर दृष्टि है।

(iii) **दशांश कुंडली** में राहु भाग्य स्थान तथा लाभस्थ सूर्य को देख रहा

है। अतः राहु की भुक्ति भाग्य वृद्धि और सत्ता लाभ देने वाली बनी।

4. **योगिनी दशा भ्रामरी-उल्का (मंगल-शनि)**

(i) **भ्रामरी दशा** का स्वामी मंगल जन्म कुंडली में दशमेश होकर भाग्येश गुरु के साथ स्थित है तथा लग्नेश चंद्र और भाग्य स्थान को देख रहा है। इसी प्रकार शनि, लग्नेश चंद्रमा का नियंत्रक होकर, लग्न, सुख तथा भाग्य भाव को देख रहा है।

नवांश कुंडली

दशांश कुंडली

(ii) **नवांश कुंडली** में मंगल की शनि के साथ धन भाव में युति तो भाग्यस्थान व सत्ता कारक सूर्य पर दृष्टि है। उल्कापति शनि का भी दृष्टि संबंध, भाग्येश गुरु तथा लाभ स्थान में बैठे, लग्नेश चंद्रमा से हुआ है।

(iii) **दशांश कुंडली** में भ्रामरी पति मंगल भाग्येश होकर दशमस्थ है तो उल्का नाथ शनि, सूर्य नियंत्रक तथा लाभेश होकर लाभस्थ सूर्य (सत्ता कारक) को देख रहा है।

5. **निष्कर्ष :** श्री एच० डी० देवगौड़ा बड़े अप्रत्याशित ढंग से करीब 11 मास के लिए भारत के प्रधानमंत्री बने। लाभस्थ ग्रह या लाभेश की दशा बहुधा अप्रत्याशित लाभ दिया करती है।

26.11 समीक्षा

कुंडली	दशा	संबंध	घटना
26.1	(क) विंशोत्तरी दशा गुरु-राहु (ख) योगिनी दशा संकटा-संकटा (राहु-राहु)	पंचमेश गुरु की दृष्टि विदेश भाव पर है तो राहु लाभस्थ होकर विदेश भाव के स्वामी चंद्रमा तथापंचम भाव को देख रहा है। राहु लाभ स्थान से पंचम भाव को देख रहा है तो राहु नियंत्रक बुध पंचमस्थ होकर लाभ स्थान में अपनी राशि को देख रहा है।	संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की छात्रवृति पर उच्च शिक्षा विदेश में हुई।
26.2	(क) विंशोत्तरी दशा गुरु-सूर्य (ख) योगिनी दशा उल्का-भद्रिका (शनि-बुध)	भाग्येश गुरु की पंचमेश सूर्य तथा षष्ठेश बुध के साथ दशम भाव में युति और षष्ठ भाव पर दृष्ट है। दशमेश शनि की पंचम भाव, भाग्य स्थान तथा विदेश भाव पर दृष्टि है। बुध षष्ठेश होकर पंचमेश सूर्य तथा नवमेश गुरु के साथ दशम भाव में है।	मैरिन इंजिनियरिंग में प्रतियोगिता द्वारा प्रवेश मिला।
26.3	(क) विंशोत्तरी दशा गुरु-राहु (ख) योगिनी दशा उल्का-सिद्धा (शनि-शुक्र)	अष्टमेश गुरु की नवमेश मंगल के साथ अष्टम भाव में युति है तो राहु पिता कारक सूर्य से षष्ठस्थ होकर, दशानाथ गुरु को देख रहा है। षष्ठेश शनि की सूर्य से युति और नवमेश मंगल पर दृष्टि है। शुक्र नवम भाव के लिए सप्तमेश-द्वितीयेश (मारकेश) होकर पिता कारक सूर्य से द्वितीय (मारक) भाव में है।	पिता की सड़क दुर्घटना में मृत्यु

कुंडली		दशा	संबंध	घटना
26.4	(क)	विंशोत्तरी दशा शनि-शुक्र	दशानाथ शनि, जन्मांग में षष्ठेश-सप्तमेश होकर पिता कारक सूर्य से सप्तम (मारक) भाव में है तो शुक्र भी सूर्य से अष्टम भाव का स्वामी होने से मृत्यु की पुष्टि करता है। नवम भाव को लग्न मान कर बनी पिता की कुंडली में शनि षष्ठ भाव में है तो शुक्र मारकेश होकर शनि की राशि में राहु से युक्त है।	पिता की मृत्यु
	(ख)	योगिनी दशा धान्या-भद्रिका (गुरु–बुध)	अष्टमेश गुरु नवम भाव में बैठकर नवमेश मंगल से दृष्ट है तो बुध, पिता कारक सूर्य से सप्तमेश मारकेश होकर सूर्य के साथ अष्टम भाव में स्थित है।	
26.5	(क)	विंशोत्तरी दशा बुध-शनि	बुध पंचमेश होकर दशम भाव में दिग्बली सूर्य के साथ है तो भुक्तिनाथ शनि द्वादशेश होकर दशानाथ बुध से पंचम भाव में है। वक्री शनि का बुध से दृष्टि संबंध भी है।	उच्च शिक्षा के लिए विदेश गमन
	(ख)	योगिनी दशा पिंगला-भद्रिका (सूर्य-बुध)	सूर्य की पंचमेश बुध के साथ दशम भाव में युति है। विदेश भाव का स्वामी शनि वक्री होकर दशम भाव को देख रहा है।	
26.6	(क)	विंशोत्तरी दशा बुध-शनि	बुध लग्नेश होकर विवाह कारक शुक्र के साथ कुटुंब भाव में है तो शनि पर सप्तमेश गुरु एवं बुध, शुक्र की दृष्टि है।	महिला जातक का विवाह हुआ
	(ख)	योगिनी दशा सिद्धा-संकटा (शुक्र-राहु)	शुक्र, विवाह का नैसर्गिक कारक होकर, लग्नेश बुध से युक्त है तो राहु सप्तमस्थ हो गया है।	

कुंडली	दशा		संबंध	घटना
26.7	(क)	विंशोत्तरी दशा बुध-राहु	बुध पंचमेश होकर लाभेश से स्थान परिवर्तन कर रहा है तो राहु अष्टम भाव में चंद्रमा से तृतीयस्थ है। अतः बल पराक्रम की वृद्धि करता है।	जातक ने 13 वर्ष की आयुमेंसैन्यक्रीड़ाप्रदर्शन द्वारा विदेश मेंधन व यश पाया।
	(ख)	योगिनी दशा उल्का-भद्रिका (शनि-बुध)	द्वादशेश शनि की नवम भाव पर दृष्टि है तो बुध, चंद्र कुंडली में, पराक्रम तथा विदेश भाव का स्वामी हो गया है।	
26.8	(क)	विंशोत्तरी दशा शुक्र-चंद्रमा	शुक्र पर पंचमेश गुरु तथा नवमेश मंगल की दृष्टि है तो चंद्रमा विदेश भाव का स्वामी होकर पंचमेश गुरु से दृष्ट है।	उच्चशिक्षा के लिए जातक अमरीका गया।
	(ख)	योगिनी दशा उल्का-धान्या (शनि-गुरु)	शनि की द्वादशेश चंद्रमा के साथ युति पर शनि नियंत्रक तथा पंचमेश गुरु की दृष्टि है। ये दोनों ग्रह दशम भाव को भी देख रहे हैं।	
26.9	(क)	विंशोत्तरी दशा राहु-बुध	राहु लग्नस्थ है तो राहु नियंत्रक मंगल पंचम भाव से लाभ और विदेश भाव को देख रहा है। भुक्तिनाथ बुध चंद्र कुंडली में नवमेश होकर दशमस्थ है।	जातक विदेश गया।
	(ख)	योगिनी दशा भ्रामरी-उल्का (मंगल-शनि)	लग्नेश मंगल का दृष्टि संबंध विदेश तथा लाभ स्थान से है तो शनि भी मंगल से द्वादशस्थ होकर सुखेश चंद्रमा से राशि परिवर्तन कर रहा है और भाग्येश गुरु से दृष्ट है।	

कुंडली	दशा	संबंध	घटना
26.10	(क) विंशोत्तरी दशा शुक्र-राहु	लाभेश शुक्र लाभ स्थान में सत्ता प्रदाता सूर्य से युति कर रहा है तो राहु की लग्नेश चंद्रमा से युति पर नवमेश गुरु तथा दशमेश मंगल की दृष्टि है।	श्री एच. डी. देवगौड़ा 1 जून 96 को भारत के प्रधानमंत्री बने।
	(ख) योगिनी दशा भ्रामरी-उल्का (मंगल-शनि)	मंगल दशमेश होकर भाग्येश गुरु से युक्त है तथा लग्नेश चंद्रमा और भाग्य स्थान को देख रहा है। शनि, लग्नेश नियंत्रक होकर लग्न तथा भाग्य को देख रहा है।	

●●●

अध्याय-27

वर्ग कुण्डली में दशा विचार

27.1 पत्नी संसद सदस्य बनी (शनि-राहु की दशा में)

1. **विश्लेषण (जन्म कुंडली व कारक शुक्र)**

(i) **दशानाथ शनि :** लाभ स्थान में स्वगृही लाभेश शनि पर भाग्येश मंगल तथा दशमेश गुरु की दृष्टि, शनि की दशा को शुभता प्रदान करती है। पत्नी कारक शुक्र, स्वगृही होकर भाग्येश, मंगल से युक्त तथा दशानाथ से दृष्ट है। अतः इस अवधि में पत्नी को कार्यक्षेत्र (दशम भाव) में विशेष सफलता मिलने की संभावना है। पुनः दशानाथ शनि का सप्तम भाव (पत्नी के लग्न) में बैठे गुरु द्वारा दृष्टि पाना तथा सप्तमेश–सुखेश (पत्नी के लग्नेश–दशमेश) का भुक्तिनाथ राहु से दृष्टि संबंध भी पत्नी को सफलता देता है।

जन्म कुंडली

(ii) **भुक्तिनाथ राहु** द्वादश भाव में स्थित होकर सूर्य (सत्ता सुख) तथा सप्तमेश बुध से दृष्ट है। कारक शुक्र से राहु पंचमस्थ होकर लाभेश सूर्य तथा भाग्येश बुध से दृष्ट है तो राहु नियंत्रक शनि का दृष्टि संबंध भी शुक्र से हो गया है।

चंद्र कुंडली में शनि भाग्येश होकर सप्तमेश मंगल और लग्नेश शुक्र की युति को देख रहा है। भुक्तिनाथ राहु दशमस्थ होकर वक्री दशमेश से दृष्ट है। कारण शनि एक राशि पीछे से प्रभावी हो गया है।

2. **अनेक विद्वान पत्नी का विचार नवांश कुंडली से करते हैं।**

नवांश कुंडली में लग्नेश सूर्य की धनेश-लाभेश बुध के साथ सुख स्थान में युति तथा दशम भाव पर दृष्टि है। दशमेश शुक्र की दृष्टि भाग्यस्थान पर है

तो भाग्येश मंगल, लाभस्थ शनि तथा दशमेश शुक्र को देख रहा है।

दशानाथ शनि लाभ स्थान में बैठकर चतुर्थेश (जनता) मंगल से दृष्टि विनिमय कर रहा है। **भुक्तिनाथ राहु** चतुर्थ भाव में, शनि नियंत्रक लाभेश बुध तथा लग्नेश सूर्य से युति कर, दशम भाव को देख रहा है। राहु नियंत्रक मंगल का भाग्येश होकर पंचमेश गुरु से युक्त होना, राहु की भुक्ति को शुभ व कल्याणप्रद बनाती हैं।

नवांश कुंडली

3. **भद्रिका-संकटा (बुध-राहु) योगिनी दशा**

(i) **जन्म कुंडली** में भद्रिकापति बुध सप्तमेश होकर सूर्य के साथ बैठा है। कारक शुक्र से, बुध भाग्येश होकर लाभ स्थान में लाभेश सूर्य से युति कर रहा है।

(ii) **नवांश कुंडली** में लाभेश बुध की लग्नेश सूर्य के साथ युति तथा दशम भाव पर दृष्टि है। संकटानाथ राहु की चर्चा पहले भुक्तिनाथ राहु के अंतर्गत की जा चुकी है। राहु बुध की युति तथा दशम भाव पर दृष्टि पत्नी को सांसद बनाने में सफल हुई।

27.2 बड़े भाई के साथ दुर्घटना हुई (चंद्र-मंगल की विंशोत्तरी दशा में)

1. **जन्म कुंडली में : दशानाथ चंद्रमा** तृतीयेश होकर एकादश भाव में स्थित है तो चंद्रमा का नियंत्रक एकादशेश गुरु, षष्ठ भाव में बैठकर भुक्तिनाथ मंगल से दृष्ट है। एकादश भाव बड़े भाई का कारक है। *दशा या भुक्तिनाथ का एकादश भाव से संबंध, बड़े भाई के लिए अनिष्टप्रद हो सकता है।* कारण एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव से अष्टमस्थ होकर मारकेश मंगल (एकादश भाव का द्वितीयेश) से दृष्ट है।

जन्म कुंडली

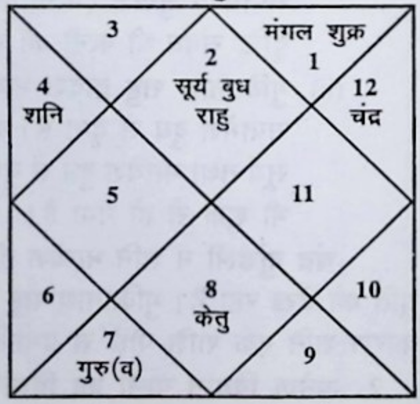

(ii) **भुक्तिनाथ मंगल** व्ययेश और सप्तमेश होकर व्यय भाव में, षष्ठेश शुक्र से युक्त तथा अष्टमेश और एकादशेश गुरु से दृष्ट है। दशानाथ चंद्रमा

द्रेष्काण कुंडली

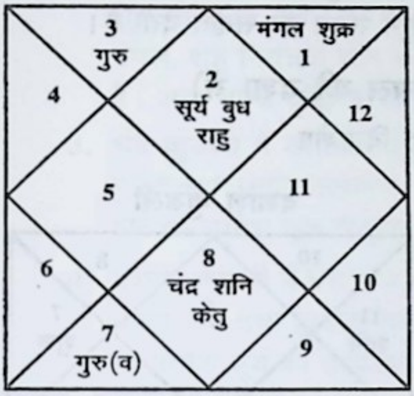

गुरु को लग्न मान कर बनी बड़े भाई की कुंडली

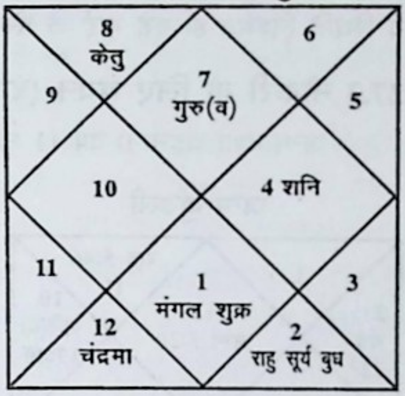

से भुक्तिनाथ मंगल का द्वितीयस्थ होना मारक प्रभाव देता है।

(iii) बड़े भाई का नैसार्गिक **कारक गुरु से** दशानाथ चंद्रमा, शनि नियंत्रक होकर, षष्ठस्थ है। अतः रोग या दुर्घटना दे सकता है। भुक्तिनाथ मंगल भी गुरु से सप्तमेश होकर, अष्टमेश शुक्र के साथ बैठा है। अतः ये अवधि बड़े भाई के लिए अनिष्टप्रद सिद्ध हुई।

2. **द्रेष्काण कुंडली** में (i) **दशानाथ चंद्रमा** तृतीयेश होकर सप्तम (मारक) भाव में द्वितीयेश (मारकेश) बुध से दृष्ट है तो तो (ii) **भुक्तिनाथ मंगल** भी, चंद्र नियंत्रक और सप्तमेश होकर, द्वादश भाव से चंद्रमा को देख रहा है। (iii) द्रेष्काण में भुक्तिनाथ मंगल का दशानाथ चंद्रमा से षष्ठस्थ होना, भाई के लिए रोग या दुर्घटना का संकेत देता है।

3. **योगिनी दशा उल्का-भ्रामरी (शनि-मंगल)**

(i) **जन्म कुंडली** में उल्कापति शनि, सप्तमेश (मारकेश) तथा भ्रामरी नाथ, मंगल से दृष्ट है। पुनः भ्रामरीनाथ मंगल का दृष्टि सबंध एकादश भाव के स्वामी तथा बड़े भाई के नैसर्गिक कारक गुरु से हुआ है।

(ii) **गुरु को लग्न मानकर** बनी बड़े भाई की कुंडली में उल्कापति शनि की दृष्टि सप्तम भाव में स्थित लग्नेश शुक्र तथा भ्रामरी पति मंगल पर है। सप्तमेश मंगल की अष्टमेश शुक्र के साथ युति बड़े भाई के लिए मारक प्रभाव दे सकती है।

4. **द्रेष्काण कुंडली** में शनि (उल्कानाथ) सप्तमस्थ होकर भ्रामरीनाथ मंगल से दृष्ट है। ध्यान रहे मंगल का सप्तमेश होकर दशानाथ से षष्ठ व लग्न से द्वादश

भाव में होना भी महान अनिष्टप्रद है। यहां शनि, गुरु से अष्टमेश होकर षष्ठस्थ है तो मंगल षष्ठेश होकर एकादश भाव में व्ययेश शुक्र के साथ बैठा है। ग्रहों की ये स्थिति निश्चय ही बड़े भाई के लिए अशुभ समय का संकेत देती है।

27.3 नौकरी के लिए चयन (राहु मंगल की दशा में)

जन्म दशा चंद्रमा 0 वर्ष 11 मास 25 दिन शेष

जन्म कुंडली

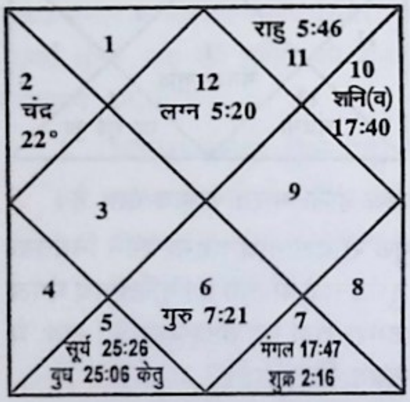

दशांश कुंडली

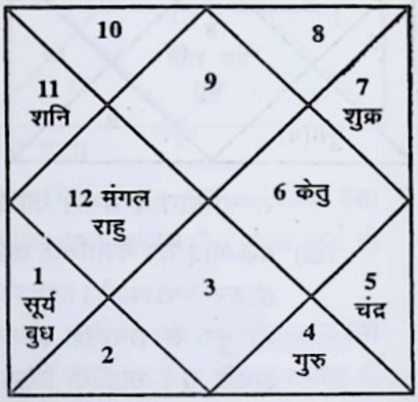

1. **आजीविका** के लिए लग्न तथा चंद्रमा से दशम भाव और दशमेश पर विचार करना चाहिए।
   (i) यदि दशम भाव शुभ युक्त, शुभ दृष्ट और बली हो तथा दशमेश भी शुभ भावों में बली होकर बैठे तो जातक आजीविका के क्षेत्र में धन, मान व सफलता पाता है।
   (ii) सप्तम भाव, को दशम से दशमस्थ होने के कारण, पद प्राप्ति का भाव माना गया है। अतः सप्तम भाव और सप्तमेश की शुभता व शक्ति का विचार भी वांछनीय है।
   (iii) इसके साथ युवावस्था या कार्य जीवन में प्रवेश के समय मिलने वाली दशा भी बहुधा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
   (iv) कुछ विद्वान *कारकात् भावम् सूत्र* के अनुसार पद प्रतिष्ठा व अधिकार प्राप्ति के लिए सूर्य कुण्डली के दशम भाव और दशमेश पर विचार करते हैं तो नौकरी पाने के लिए शनि से दशम भाव और दशमेश का विचार करना भी श्रेष्ठ परिणाम देने वाला मानते हैं।
2. **राहु-मंगल की दशा** : दशानाथ राहु द्वादश भाव में, सूर्य तथा बुध से दृष्ट

है। बुध बुद्धि का कारक है तो सूर्य, षष्ठेश होकर षष्ठस्थ होने से, प्रतियोगिता में सफलता दे सकता है। भुक्तिनाथ मंगल, जन्म कुंडली में भाग्येश होकर, शुक्र से युक्त तथा लाभेश शनि (स्वगृही) से दृष्ट है। ध्यान रहे यहां पर मंगल, राहु नियंत्रक शनि से दृष्ट है तथा दशानाथ राहु से भाग्य स्थान में है। अतः भाग्य वृद्धि में सहायक होगा।

3. **चंद्र कुंडली में** दशानाथ राहु दशम भाव में तो दशमेश शनि भाग्यस्थ है। भुक्तिनाथ मंगल सप्तमेश (पद-प्राप्ति का कारक) होकर षष्ठ भाव में षष्ठेश–लग्नेश शुक्र से युति कर रहा है। अतः प्रतियोगिता में सफलता देगा।
4. **दशांश कुंडली में** दशानाथ राहु, पंचमेश मंगल के साथ बैठकर लग्नेश गुरु, दशम भाव तथा द्वादश भाव को देख रहा है। मंगल की राशि (पंचम भाव) में भाग्येश सूर्य का उच्चस्थ होकर दशमेश बुध से युति करना शुभ परिणाम देता है। भुक्तिनाथ मंगल, अपने नियंत्रक से दृष्ट होकर लाभ स्थान में स्वगृही, लाभेश शुक्र को देख रहा है। ये योग आजीविका के क्षेत्र में एक अच्छी शुरुआत दे सकता है। कारण मंगल को ज्योतिषियों ने युवा ग्रह माना है। ध्यान रहे राहु–मंगल की दशम भाव पर दृष्टि है तो लग्नेश गुरु भी उच्चस्थ होकर राहु–मंगल को देख रहा है। आजीविका के लिए ये एक बहुत शुभ योग है।

योगिनी दशा उल्का-सिद्धा (शनि-शुक्र)

5. **जन्म कुंडली** में उल्कापति शनि लाभ स्थान में लाभेश होकर स्वगृही है तथा दशमेश गुरु एवं भाग्येश मंगल से दृष्ट है। इसी प्रकार सिद्धापति शुक्र, भाग्येश मंगल के साथ अष्टम भाव में स्वगृही होकर, लाभेश शनि से दृष्ट है। लाभेश भाग्येश के संबंध से जातक सफलता व भाग्यवृद्धि पाता है।
6. **चंद्र कुंडली** में शनि, भाग्येश और दशमेश होकर, भाग्यस्थान में स्वक्षेत्री है तो शुक्र लग्नेश-षष्ठेश होकर सप्तमेश मंगल के साथ षष्ठ (प्रतियोगिता) भाव में, भाग्यस्थ शनि से दृष्ट है। अतः ये योग स्पर्धा में सफलता द्वारा नौकरी पाने का संकेतक है।
7. **दशांश कुंडली** में शनि धनेश-पराक्रमेश होकर (पराक्रम भाव से), पंचम भाव में बैठे भाग्येश सूर्य तथा दशमेश बुध एवम भाग्य स्थान में स्थित लग्नेश नियंत्रक चंद्रमा को देखता है। इसी प्रकार **सिद्धा स्वामी शुक्र** लाभ स्थान में स्वगृही होकर पंचमेश मंगल, भाग्येश सूर्य तथा कर्मेश बुध से दृष्ट है। पुनः भुक्तिनाथ शुक्र उल्कानाथ शनि से नवम या भाग्य स्थान में है। अतः भाग्यवृद्धि का संकेत देता है।

8. **निष्कर्ष :** सप्तम भाव या सप्तमेश का संबंध पद प्राप्ति से माना जाता है। दशांश कुंडली में शनि तथा शुक्र का दृष्टि संबंध, सप्तमेश बुध के साथ हुआ है। जातक परीक्षा व साक्षात्कार में सफल होकर भारतीय पुलिस सेवा में अधिकारी बना।

27.4 पदोन्नति (शनि-गुरु की दशा में)

जन्म कुंडली

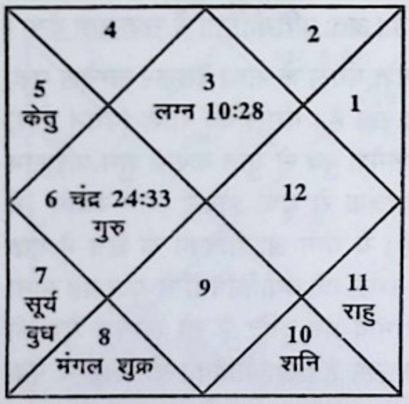

दशांश कुंडली

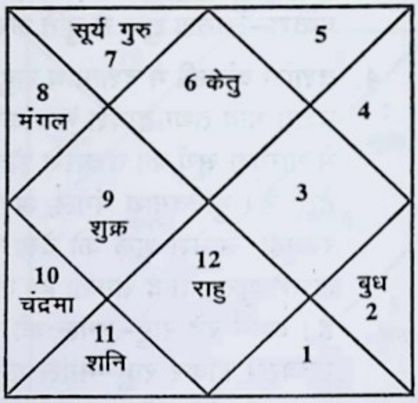

विश्लेषण

1. जन्म कुंडली में दशानाथ शनि नवमेश होकर, अष्टम भाव में, दशमेश गुरु से दृष्ट है। दशानाथ शनि तथा भुक्तिनाथ गुरु की दशम भाव पर दृष्टि, पद वृद्धि का संकेत देती है। गुरु तथा चंद्रमा का केन्द्र संबंध, गज केसरी योग बना रहा है।

2. **चंद्र कुंडली** में चंद्रमा लाभेश होकर, सप्तमेश गुरु के साथ है तो पंचमेश शनि पंचम भाव से लाभ स्थान को देख रहा है। सप्तम भाव पद प्राप्ति का भाव होता है–इस बात से विज्ञ पाठक अनजान नहीं है। चंद्र कुंडली में सप्तम भाव अपने स्वामी तथा पंचमेश से दृष्ट होने के कारण दशा को शुभ बना रहा है।

3. **दशांश कुंडली** में शनि पंचमेश-षष्ठेश होकर तृतीयस्थ मंगल तथा सुखेश-सप्तमेश गुरु से दृष्ट है। भुक्तिनाथ गुरु की द्वितीय भाव में सूर्य के साथ युति तथा दशम भाव पर दृष्टि है, तो गुरु नियंत्रक शुक्र भी दशम भाव को देख रहा है। अतः शनि गुरु की दशा पदोन्नति में सहायक होगी।

योगिनी दशा सिद्धा-सिद्धा (शुक्र-शुक्र)

4. **जन्म कुंडली** में शुक्र, पंचमेश होकर षष्ठ स्थान में लाभेश-षष्ठेश, मंगल

के साथ बैठा है। सिद्धापति शुक्र से युक्त मंगल की दृष्टि भाग्य तथा लग्न पर है। अतएव यह समय भाग्यवृद्धि का सूचक है।

5. **चंद्र कुंडली** में शुक्र, द्वितीयेश-भाग्येश होकर पराक्रमेश मंगल के साथ, पराक्रम भाव में स्थित है तथा नवम भाव में अपनी ही राशि को देख रहा है। भाग्य स्थान का अपने स्वामी से दृष्ट होना, जातक को भाग्यशाली बनाता है।
6. **दशांश कुंडली** में सिद्धपति भाग्येश शुक्र सुख स्थान से दशम भाव को देखता है तो शुक्र नियंत्रक गुरु भी दशम भाव तथा षष्ठस्थ (जन्म भाग्येश) शनि को देख रहा है। ये योग पदोन्नति का संकेत देता है।
7. **निष्कर्ष :** यदि दशानाथ भुक्तिनाथ का संबंध नवम और दशम भाव से हो तो जातक कार्य क्षेत्र में मान प्रतिष्ठा या पद वृद्धि (प्रमोशन) पाता है। इसी अवधि में जातक की पुत्री का भी भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। ध्यान रहे विंशोत्तरी दशानाथ शनि पंचम भाव को देख रहा है तथा स्वयं संतान कारक गुरु से दृष्ट है। ये योग संतान के लिए शुभ व कल्याणकारी है। योगिनी दशा में शुक्र पंचमेश होकर लाभेश से युति कर रहा है। अतः पुत्री के लिए भी यह दशा भुक्ति कल्याणप्रद सिद्ध हुई।

27.5 बच्चे नौकरी की तलाश में विदेश गए (शुक्र-राहु की दशा में)

जन्म कुंडली

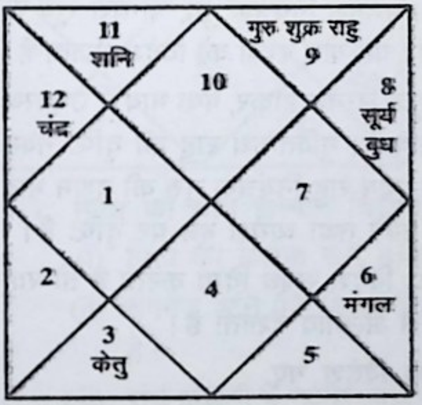

सप्तमांश कुंडली (संतान सुख)

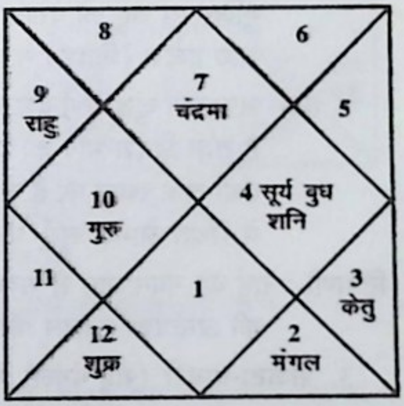

विश्लेषण

अ. **जन्म कुंडली में**

(i) पंचमेश शुक्र की, द्वादशेश गुरु और विच्छेदक ग्रह, राहु के साथ द्वादश भाव में युति दर्शाती है कि जातक के बच्चे विदेश में जाकर बस सकते

हैं।

(ii) संतान कारक गुरु से, द्वादश भाव का स्वामी, मंगल दशमस्थ, तो दशमेश बुध द्वादशस्थ है। ये योग भी बच्चों की आजीविका विदेश में दे सकता है।

ब. सप्तमांश कुंडली में

(i) पंचमेश शनि की लाभेश सूर्य तथा भाग्येश बुध के साथ दशम भाव में युति पर, संतान कारक गुरु की दृष्टि है।

(ii) बुध भाग्येश होने के साथ द्वादश अर्थात् विदेश भाव का भी स्वामी है।

(iii) लग्नेश शुक्र का उच्चस्थ होकर द्वादश भाव को देखना संतान के विदेश गमन की पुष्टि करता है। कारण **सप्तमांश कुंडली का लग्नेश (शुक्र) संतान का प्रतिनिधि होता है।** उसका विदेश भाव से संबंध तथा दशम भाव और भाग्येश का द्वादशेश से संबंध, संतान को विदेश में आजीविका और भाग्यवृद्धि दिया करता है।

2. विंशोत्तरी दशा शुक्र-राहु

(i) **जन्म कुंडली** में दशानाथ शुक्र पंचमेश होकर द्वादश भाव में है तो भुक्तिनाथ राहु भी द्वादश भाव में संतान कारक गुरु के साथ स्थित है।

(ii) **गुरु लग्न कुंडली में** पंचमेश मंगल दशमस्थ होकर दशानाथ शुक्र तथा भुक्तिनाथ राहु को देख रहा है। पंचमेश नियंत्रक बुध, भाग्येश सूर्य के साथ द्वादश (विदेश) भाव में है। यह योग बच्चों को विदेश भेजता है।

(iii) **सप्तमांश कुंडली** में दशानाथ शुक्र लग्नेश होकर, षष्ठ भाव में उच्चस्थ है तथा विदेश भाव को देख रहा है। भुक्तिनाथ राहु की दृष्टि नवम तथा लाभ स्थान पर है तो शुक्र एवम् राहु नियंत्रक गुरु की दशम भाव में स्थित लाभेश सूर्य, पंचमेश शनि तथा व्ययेश बुध पर दृष्टि हैं।

टिप्पणी : राहु का नवम भाव से संबंध प्रायः विदेश संबंध दिया करता है तो राहु की अन्तर्दशा स्वजन परिजन से अलगाव दर्शाती है।

3. संकटा-भ्रामरी (राहु-मंगल) में बच्चे विदेश गए

(i) **जन्म कुंडली में** राहु विदेश भाव में, भाग्य स्थान में बैठे लाभेश मंगल से दृष्ट है। राहु की युति पंचमेश (संतान) शुक्र से है। अतः संतान का विदेश गमन युक्ति संगत जान पड़ता है।

(ii) **गुरु कुंडली में** सुखेश गुरु लग्नस्थ होकर पंचमेश मंगल (दशमस्थ) से दृष्ट है तो राहु भी गुरु के साथ लग्न में बैठ कर पंचम तथा नवम (पिता)

भाव को देखता है। षष्ठेश लाभेश शुक्र पर विदेश पति मंगल, की दशम भाव से दृष्टि है।

(iii) **सप्तमांश कुंडली में** संकटापति राहु सप्तम, नवम तथा लाभ स्थान को देखता है तो मंगल अष्टमस्थ होकर राहु को देख रहा है। इसी प्रकार राहु नियंत्रक गुरु, दशम भाव तथा अष्टमस्थ मंगल को देखता है। मंगल नियंत्रक शुक्र भी विदेशभाव को देख रहा है।

(iv) **गुरु लग्न सप्तमांश कुंडली में** लाभेश मंगल पंचमस्थ होकर गुरु से दृष्ट है तो राहु द्वादश भाव में होने से विदेश संबंध की पुष्टि करता है। पुनः पंचमस्थ मंगल पर द्वादशेश गुरु की दृष्टि बच्चों के विदेश गमन की पुष्टि करती है।

27.6 पिता के लिए मान सम्मान का समय (बुध-चंद्र की दशा)

जन्म कुंडली

द्वादशांश कुंडली

1. **पिता को मान सम्मान दिलाने वाले योग**

(i) पिता का कारक सूर्य उच्चराशिस्थ है।

(ii) नवमेश शनि (पिता), लग्नेश शुक्र तथा पंचमेश बुध के साथ, लग्नस्थ है।

(iii) सूर्य कुंडली में नवमेश गुरु, नवम भाव तथा लग्नेश मंगल को देख रहा है। चंद्र कुंडली के नवमेश मंगल पर दशमेश गुरू की दृष्टि है।

(iv) नवम भाव (मकर लग्न) की कुंडली का दशमेश शुक्र, पंचम भाव में नवमेश बुध तथा लग्नेश शनि के साथ स्वगृही हो कर बैठा है। ये योग पिता को भाग्यशाली तथा यशस्वी बनाता है।

2. **द्वादशांश कुंडली से पिता के सुखका विचार किया जाता है**

(i) यहां पिता की आजीविका स्थिति का प्रतीक, दशमेश-लाभेश शनि, नवमस्थ होकर लाभ स्थान तथा लग्नेश मंगल को देख रहा है।

(ii) कुछ विद्वान नवम भाव को पिता का कारक मानते हैं। नवम भाव का अपने स्वामी गुरु तथा लग्नेश मंगल से दृष्ट होना, पिता को भाग्यशाली व आत्मबली बनाता है।

(iii) द्वादशांश कुंडली में पिता के कारक सूर्य को यदि लग्न मानें तो सूर्य दशमेश होकर लग्नस्थ है। पंचमेश गुरु की दशम भाव स्थित, लाभेश बुध तथा भाग्येश चंद्रमा पर दृष्टि शुभ परिणाम दर्शाती है।

3. **विंशोत्तरी दशा बुध-चंद्रमा**

(i) **जन्म कुंडली में** दशानाथ बुध, द्वितीयेश-पंचमेश होकर, नवमेश (पिता) दशमेश (पिता का धन) शनि तथा लग्नेश शुक्र के साथ लग्नस्थ है। दशानाथ बुध का दिग्बली होकर नवमेश से युति करना पिता के लिए कल्याणप्रद हैं। ध्यान रहे पंचम भाव, नवम से नवम होने के कारण, पिता का भाग्य स्थान भी है।

(ii) **भुक्तिनाथ चंद्रमा लाभस्थान में** बैठने से शुभ है। कारण लाभ स्थान में बैठा कोई भी ग्रह भले ही कितना भी पापी क्यों न हो अपनी दशा भुक्ति में निश्चित रूप से धन लाभ दिया करता है। पुनः चंद्रमा की नवम से नवम अर्थात् पंचम भाव पर दृष्टि पिता के भाग्य की वृद्धि करती है।

(iii) **सूर्य कुंडली में** दशानाथ बुध की युति दशमेश शनि तथा धनेश शुक्र के साथ धन भाव में है तो भुक्तिनाथ चंद्रमा, सुखेश होकर भाग्येश गुरु से दशमस्थ तथा दशानाथ बुध से लाभ स्थान में है। चंद्रमा जनता का कारक है और चतुर्थ भाव को विद्वानों ने लोकसभा या संसद भी माना है।

(iv) **द्वादशांश कुंडली में** दशानाथ बुध पंचम अर्थात् पिता के भाग्य स्थान में है। कारण पंचम भाव, नवम से नवम होता है। लग्न से तृतीय व षष्ठ भाव का स्वामी बुध, भाग्येश गुरु (लग्नस्थ) से दृष्ट होकर, एकादश (लाभ, सफलता) स्थान को देख रहा है। इसी प्रकार भुक्तिनाथ चंद्रमा भी चतुर्थेश होकर भाग्येश गुरु से दृष्ट है। दशानाथ और भुक्तिनाथ का भाग्येश गुरु से संबंध, इस अवधि को पिता के लिए विशेष लाभप्रद बना रहा है।

(v) **द्वादशांश सूर्य कुंडली में** दशानाथ बुध, लाभेश होकर दशमस्थ है तो भुक्तिनाथ चंद्रमा भाग्येश होकर धनेश तथा पंचमेश गुरु से दृष्ट है। विद्वानों की मान्यता है कि *द्वादशस्थ कोई भी ग्रह शुभ होने पर लग्न को बल प्रदान करता है।*

4. **योगिनी दशा उल्का-सिद्धा (शनि-शुक्र)**

(i) **उल्कापति शनि,** जन्म कुंडली में नवमेश–दशमेश होकर लग्नेश, शुक्र के साथ लग्नस्थ है। ध्यान रहे शुक्र सिद्धापति होकर अन्तर्दशानाथ भी है। निश्चय ही ये दशा पिता के लिए बहुत शुभ होगी। कारण शुक्र नवम भाव का दशमेश भी तो है।

(ii) **सूर्य कुंडली में** शनि दशमेश-लाभेश होकर धन भाव में धनेश तथा भुक्तिनाथ शुक्र के साथ है।

(iii) **द्वादशांश कुंडली में** उल्कानाथ शनि, नवम (पिता) भाव में स्थित होकर, नवमेश गुरु तथा लग्नेश मंगल से दृष्ट है। सिद्धापति शुक्र सप्तमेश होकर, व्यय भाव (शनि से सुख स्थान) में उच्चस्थ है तथा लग्नेश मंगल से दृष्ट भी है।

(iv) **द्वादशांश सूर्य कुंडली में** शनि (उल्का पति) तृतीयेश-चतुर्थेश होकर, धन भाव में द्वितीयेश-पंचमेश गुरु से दृष्ट है तो सिद्धापति शुक्र, सप्तमेश होकर पंचम भाव में उच्चस्थ है।

5. **निष्कर्ष :** इस जातक का पिता, अपने पुत्र के जन्म के बाद मात्र 5 वर्ष में ही देश का प्रधानमंत्री पद पाने में सफल हुआ।

27.7 पिता की मृत्यु (शनि-चंद्रमा की दशा में)

1. नवम भाव, नवमेश या पिता के नैसार्गिक कारक सूर्य पर पाप प्रभाव पिता के आयुष्य की हानि करता है।

1. पिता के मारक योग निम्न प्रकार है–

(i) अष्टमेश नवम भाव में तो नवमेश त्रिक (6,8,12वें) भाव में हो।

(ii) अष्टम भाव में (सूर्य+नवमेश) की युति हो।

(iii) व्ययेश नवमस्थ तो नवमेश भी नीचस्थ हो।

(iv) राहु नवम भाव से अष्टमस्थ अर्थात लग्न से चतुर्थ भाव में और सूर्य पंचम भाव (नवम से नवम भाव) में हो। लग्न से पंचम भाव में सूर्य, "कारकात भावम्" के अनुसार, पिता के लिए अनिष्टप्रद है।

(v) नवमेश का व्ययेश के साथ राशि परिवर्तन हो।

(vi) तृतीय भाव में सूर्य तो नवम भाव में राहु हो।

(vii) द्वितीय भाव में सूर्य और अष्टम भाव में शनि हो

इनमें से कोई भी योग पिता के लिए अनिष्ट प्रद तो कभी मारक बनता है।

2. ध्यान रहे तृतीय व नवम भाव पिता का लग्न व सप्तम भाव बनता है। उसका पापत्व मारक प्रभाव देगा। इसी प्रकार द्वितीय व अष्टम भाव का पापत्व पिता का षष्ठ व द्वादश भाव होने से उसे रोग व देह कष्ट देता है। पंचम पिता का भाग्य स्थान होता है, उस पर पाप प्रभाव भी पिता को दुख दुर्भाग्य देता है।

3. **पिता की मृत्यु निम्न दशाओं में होना संभव है**

(i) जन्म कुंडली के तृतीय या दशम भाव में बैठे ग्रह की दशा, पिता के लिए मारक भाव में स्थित ग्रह की दशा होने से अनिष्ट प्रद होती है।

(ii) सूर्य या नवमेश से द्वितीय और सप्तम भाव के स्वामी, इन भावों में स्थित ग्रह अपनी दशा भुक्ति में पिता को मृत्यु भय देते हैं।

(iii) पिता के मारकेश (नवम भाव से द्वितीय व सप्तम भाव के स्वामी) या इनसे संबंध रखने वाले ग्रह की दशा भुक्ति पिता को मृत्यु भय दिया करती है।

(iv) नवम भाव या नवमेश पर पाप प्रभाव डालने वाले ग्रह की दशा भुक्ति जातक के पिता की मृत्यु कर सकती है।

4. **ग्रह स्पष्ट**

लग्न	01:11:50	जन्म दशा गुरु 7 वर्ष 8 मास 5 दिन शेष			
सूर्य	02:7:50	चंद्रमा	10:26:56	मंगल	11:07:51
बुध	03:02:57	गुरु (व)	09:17:49	शुक्र	02:27:26
शनि	02:01:36	राहु	08:14:37	केतु	02:14:37

5. इस कुंडली में पिता संबंधी मारक (मृत्यु) योग निम्न प्रकार है

(i) अष्टमेश गुरु नवम (पिता) भाव में नीचस्थ होकर द्वितीयेश (पिता के लिए षष्ठेश) बुध से दृष्ट है।

(ii) नवमेश शनि तथा पिता का कारक सूर्य द्वितीय भाव के राहु केतु अक्ष में है।

(iii) तृतीयेश (पिता का सप्तमेश) चंद्रमा, दशमस्थ (नवम से द्वितीय या मारक भाव में) होकर चतुर्थ भाव या नवम से अष्टम भाव को देख रहा है।

(iv) इस जातक की कुंडली में नवमेश शनि तथा सूर्य की, षष्ठेश शुक्र के साथ युति पर, अष्टमस्थ राहु की दृष्टि, नवम भाव (पिता) संबंधी अनिष्ट की सूचना देती है।

(v) **द्वादशांश कुंडली** में भी अष्टमेश मंगल, षष्ठेश शनि से युति कर, पिता कारक सूर्य को (लग्न में) तथा पिता के अष्टम भाव में चंद्रमा को देख रहा है।

(vi) नवमेश शुक्र का अष्टमस्थ होना शुक्र की दशा भुक्ति में पिता को मृत्यु दे सकता है। कारण शुक्र नवम भाव से व्यय भाव में स्थित है।

6. विंशोत्तरी दशा शनि-चंद्रमा में पिता की मृत्यु

(i) **जन्म कुंडली में** नवमेश शनि षष्ठेश शुक्र के साथ द्वितीय या मारक स्थान में है तो मंगल, सप्तमेश होकर द्वितीय भाव में सूर्य शुक्र शनि केतु की युति एवम्, षष्ठ (दुर्घटना) भाव को देख रहा है। नवमेश का षष्ठेश सप्तमेश से संबंध पिता की, वाहन दुर्घटना में, मृत्यु का कारण बना। भुक्तिनाथ चंद्रमा नवम भाव से सप्तमेश (मारकेश) होकर द्वितीयस्थ होने से पिता का मारकेश है।

(ii) **द्वादशांश कुंडली में** दशानाथ शनि षष्ठेश होकर अष्टमेश मंगल के साथ दशम भाव (नवम से द्वितीय या मारक भाव) में स्थित होकर नवम से अष्टमस्थ भुक्तिनाथ चंद्रमा से दृष्ट है। जो भाव, त्रिक भाव के स्वामी से दृष्टि युति संबंध पाए वह नष्ट हो जाता है। यहां पिता के अष्टम भाव में भुक्तिनाथ चंद्रमा पर मंगल, शनि की दृष्टि मृत्यु देने वाली सिद्ध हुई।

7. **योगिनी दशा सिद्धा-उल्का (शुक्र-शनि) में पिता की मृत्यु**

(i) **जन्म कुंडली में** सिद्धापति शुक्र, षष्ठेश होने से, दुर्घटना का प्रतिनिधित्व करता है। षष्ठेश की नवमेश तथा पिता कारक सूर्य से युति, पिता को दुर्घटनाग्रस्त कर सकती है। पुनः उल्कापति शनि यहां स्वयं नवमेश होने से पिता का कारक है। नवमेश का नवम से षष्ठस्थ होकर अष्टमेश सूर्य से युति करना सड़क दुर्घटना में पिता को मृत्यु देने वाला बना।

(ii) **द्वादशांश कुंडली में** सिद्धानाथ शुक्र नवमेश और राहु नियंत्रक होकर (लग्न तथा सूर्य से) अष्टम भाव में सप्तमेश (मारकेश) गुरु से दृष्ट है। इसी प्रकार उल्कापति शनि भी षष्ठेश होकर अष्टमेश (शुक्र नियंत्रक) मंगल से युक्त है तथा लग्नेश बुध को देख रहा है।

8. **निष्कर्ष :** यदि कुंडली का नवम भाव, नवमेश तथा कारक सूर्य पीड़ित हो तो इनकी दशा भुक्ति में जातक के पिता की मृत्यु संभव है। इस कुंडली में अष्टमेश का नवमस्थ होना, नवमेश तथा सूर्य की षष्ठेश से युति पर अष्टमस्थ राहु की दृष्टि, जातक को मात्र 19 वर्ष की अल्पायु में पिता के सुख से वंचित करने वाली बनी।

27.8 समीक्षा

1. इस अध्याय में किसी जन्म कुंडली से माता, पिता, पुत्र या भाई बहन के जीवन में होने वाली घटना का ज्ञान, वर्ग कुंडली द्वारा कैसे प्राप्त किया जाए इस विषय पर चर्चा हुई है।
2. विभिन्न कुंडलियों का तुलनात्मक विवरण तालिका में देखें।

कुंडली संख्या	दशा विंशोत्तरी योगिनी	ग्रहों का संबंध	घटना
27.1	विंशोत्तरी दशा शनि-राहु	शनि सप्तम भाव से पंचम या लाभ भाव में स्वगृही है तो राहु पर सप्तमेश बुध की दृष्टि है। **नवांश कुंडली में** शनि सप्तमेश होकर लाभस्थ है तो राहु चतुर्थ भाव (सप्तम से दशम) में बैठ कर दशम को देखता है।	पत्नी सांसद बनी

कुंडली संख्या	दशा विंशोत्तरी योगिनी	ग्रहों का संबंध	घटना
	योगिनी दशा भद्रिका-संकटा	बुध चतुर्थेश सप्तमेश होकर सूर्य से युक्त तथा भुक्तिनाथ राहु से दृष्ट है। **नवांश में** बुध लाभेश–धनेश होकर चतुर्थ भाव में लग्नेश सूर्य तथा राहु से युति कर दशम भाव को देख रहा है।	
27.2	विंशोत्तरी दशा चंद्र-मंगल	चंद्रमा एकादश भाव में कारक गुरु से षष्ठस्थ है तो मंगल द्वादश भाव में शनि से दृष्ट एवं गुरु से सप्तम (मारक) भाव में हैं।	बड़ा भाई दुर्घटनाग्रस्त हुआ
		द्रेष्काण कुंडली में चंद्रमा सप्तम भाव में शनि से युक्त होकर सप्तमेश मंगल से दृष्ट है।	
	योगिनी दशा उल्का-भ्रामरी (शनि-मंगल)	शनि, नवमेश-दशमेश होकर पराक्रम भाव में, सप्तमेश मंगल (व्ययस्थ) से दृष्ट है। भ्रामरी नाथ मंगल की दृष्टि बड़े भाई के कारक गुरु (षष्ठस्थ) पर है। **द्रेष्काण** कुंडली में शनि सप्तम (मारक) भाव में सप्तमेश मंगल से दृष्ट है।	
27.3	विंशोत्तरी दशा राहु-मंगल	राहु पर स्वगृही षष्ठेश सूर्य तथा बुध की दृष्टि है तो मंगल भाग्येश होकर अपने नियंत्रक शुक्र से युक्त तथा लाभेश शनि एवं राहु से दृष्ट है। **दशांश कुंडली** के चतुर्थ भाव में राहु-मंगल की युति और दशम भाव पर दृष्टि है। पंचम भाव में नवगंश दशमेश की युति पद प्रतिष्ठा देती है।	जातक प्रतियोगिता में सफलता पाकर नौकरी के लिए चुना गया।

कुंडली संख्या	दशा विंशोत्तरी योगिनी	ग्रहों का संबंध	घटना
	योगिनी दशा उल्का सिद्धा (शनि-शुक्र)	**जन्म कुण्डली में** शनि उल्कानाथ होकर लाभ स्थान में स्वगृही है ओर भाग्येश के साथ बैठे स्वक्षेत्री सिद्धानाथ शुक्र को देख रहा है। दशम भाव से, शनि धनेश तो शुक्र लाभेश होकर स्वराशिस्थ हैं। **दशांश कुंडली** में शनि अपनी मूल त्रिकोण राशि का होकर भाग्य स्थान को देखता है तो भाग्येश सूर्य की लाभेश शुक्र (स्वगृही) पर दृष्टि है।	
27.4	विंशोत्तरी दशा शनि-गुरु योगिनी दशा सिद्धा-सिद्धा (शुक्र-शुक्र)	**जन्म कुंडली** में शनि भाग्येशहोकर दशमेश गुरु से दृष्ट है। दशम भाव भी शनि तथा गुरु से दृष्ट है। **दशांश कुंडली** में शनि पंचमेश-षष्ठेश होकर षष्ठ भाव में स्वगृही है तथा गुरु से दृष्ट है। भुक्तिनाथ गुरु की सूर्य से युति तथा दशम भाव पर दृष्टि है। **जन्म कुंडली** में सिद्धापति शुक्र, पंचमेश होकर षष्ठ भाव में षष्ठेश तथा लाभेश मंगल से युति कर रहा है। **दशांश कुंडली में** शुक्र भाग्येश होकर सुख स्थान से दशम भाव को देख रहा है।	जातक की पदोन्नति हुई।
27.5	विंशोत्तरी दशा शुक्र-राहु	**जन्म कुंडली में** शुक्र पंचमेश होकर राहु के साथ द्वादश (विदेश) भाव में स्थित है।	बच्चे नौकरी के लिए विदेश गए।

कुंडली संख्या	दशा विंशोत्तरी योगिनी	ग्रहों का संबंध	घटना
		सप्तमांश कुंडली में शुक्र लग्नेश होकर द्वादश (विदेश) भाव को देख रहा है तो राहु की दृष्टि नवम भाव पर है। राहु नियंत्रक गुरु, दशम भाव में स्थित पंचमेश शनि, लाभेश सूर्य तथा भाग्येश बुध को देख रहा है।	
	योगिनी दशा संकटा-भ्रामरी (राहु-मंगल)	**जन्म कुंडली में** संकटापति राहु, पंचमेश तथा द्वादशेश के साथ द्वादश भाव में स्थित होकर, भाग्यस्थ लाभेश मंगल (भ्रामरीनाथ) से दृष्ट है। **सप्तमांश कुंडली में** राहु पराक्रम भाव से भाग्य स्थान तथा लाभ स्थान को देखता है तो धनेश मंगल भी राहु नियंत्रक गुरु से दृष्ट होकर लाभ स्थान को देख रहा है।	
27.6	विंशोत्तरी दशा बुध-चंद्रमा	**जन्म कुंडली में** दशानाथ बुध पंचमेश होकर, लग्नेश शुक्र तथा नवमेश शनि के साथ लग्न में है। पंचम भाव नवम से नवम होने के कारण पिता का भाग्य स्थान है। भुक्तिनाथ चंद्रमा लाभस्थ होकर पंचम भाव को देख रहा है। **द्वादशांश कुंडली में** बुध पंचमस्थ होकर नवमेश (पिता के लग्नेश) गुरु से दृष्ट है तो चंद्रमा भी सुखेश होकर गुरु से दृष्ट है।	पिता को मान सम्मान मिला

कुंडली संख्या	दशा विंशोत्तरी योगिनी	ग्रहों का संबंध	घटना
	योगिनी दशा उल्का-सिद्धा (शनि-शुक्र)	**जन्म कुंडली** में उल्कानाथ शनि नवमेश दशमेश होकर लग्न में सिद्धानाथ स्वगृही शुक्र से युति कर रहा है। पिता के लग्न और धन भाव का स्वामी शनि संतान के लग्नेश शुक्र तथा बुध के साथ लग्न में है। **द्वादशांश** कुंडली में शनि भाग्यस्थ होकर भाग्येश गुरु से दृष्ट है तो शुक्र उच्चस्थ होकर षष्ठ (नवम से दशम) भाव को देख रहा है।	
27.7	विंशोत्तरी दशा शनि-चंद्रमा	**जन्म कुंडली** में शनि नवमेश दशमेश होकर द्वितीय भाव में चतुर्थेश (नवम से अष्टमेश) सूर्य के साथ है तो चंद्रमा (नवम भाव से सप्तमेश होकर) नवम से द्वितीय (पिता के मारक) स्थान में है। **द्वादशांश कुंडली में** शनि पंचमेश-षष्ठेश होकर दशम भाव में अष्टमेश मंगल से युक्त और लाभेश चंद्रमा से दृष्ट है। चंद्रमा का नवम भाव से अष्टमस्थ होना मारक प्रभाव दे गया।	पिता की मृत्यु हो गई।
	योगिनी दशा सिद्धा-उल्का (शुक्र-शनि)	**सिद्धानाथ शुक्र** षष्ठेश होकर पिता कारक सूर्य तथा नवमेश शनि (उल्कानाथ) से गुक्त है। शुक्र शनि की नवम से षष्ठ भाव में युति पिता का अशुभ कर सकती है।	

कुंडली संख्या	दशा विंशोत्तरी योगिनी	ग्रहों का संबंध	घटना
		द्वादशांश कुंडली शुक्र नवमेश होकर अष्टमस्थ है तो शनि भी, षष्ठेश होकर दशम (नवम से द्वितीय) या, पिता के मारक भाव में बैठा है।	

3. अगले अध्याय में वर्ष कुंडली में दशा विचार किया जाएगा।

●●●

अध्याय-28

वर्ष कुण्डली में दशा विचार

28.1 योगिनी दशा

वर्ष कुंडली में योगिनी दशा की पहचान करने के लिए बीते पूर्ण वर्ष, में जन्म नक्षत्र संख्या तथा 3 जोड़ने के बाद मिली संख्या को 8 से भाग देने पर जो शेष बचे उसे योगिनी दशा का क्रमांक जानें। **उदाहरण**–यदि किसी व्यक्ति का जन्म उत्तर फाल्गुनी (नक्षत्र संख्या 12) में हुआ है और उसका 45वें वर्ष के लिए वर्ष कुंडली बनानी हो तो

योगिनी दशा (जन्म नक्षत्र संख्या+3+बीते पूर्ण वर्ष) भाग 8= शेष जो बचे वही वर्ष योगिनी दशा का आरम्भ होगा।

जन्म नक्षत्र = 12; बीते पूर्ण वर्ष = 44

$(44 + 12 + 3) = 59 \div 8 = 7$ भजनफल शेष 3

अर्थात् धान्या दशा से वर्ष का आरंभ होगा

शेष बचा	योगिनी दशा	योगिनीपति	वर्ष दशा अवधि		
			वर्षयोगिनी दिनों मे	मास	दिन
1.	मंगला	चंद्रमा	10	0	10
2.	पिंगला	सूर्य	20	0	20
3.	धान्या	गुरु	30	1	0
4.	भ्रामरी	मंगल	40	1	10
5.	भद्रिका	बुध	50	1	20
6.	उल्का	शनि	60	2	0
7.	सिद्धा	शुक्र	70	2	10
8.	संकटा	राहु	80	2	20

टिप्पणी : यहां प्रत्येक मास में तीस दिन की अवधि मानी जाती है। अतः

12 मास के 360 दिन का वर्ष होता है। नक्षत्र का भुक्त भोग्य काल दशा अवधि ा का भुक्त और भोग्य काल बनता है। जन्म नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी में यदि 3 डिग्री 20 मिनट भुक्त हो तथा 10 डिग्री भोग्य हो तो धान्या दशा का भोग्य काल 22 दिन 12 घंटे शेष होगा। धान्या का भुक्त भाग 7 दिन 12 घंटे वर्ष के अंतिम भाग में पड़ेगा।

आगे के उदाहरणों में वर्ष योगिनी का उपयोग नहीं हुआ है। अपितु वर्ष कुंडली में, योगिनी दशापति की स्थिति पर विचार किया गया है।

28.2 विदेश में छात्रवृति (गुरु-राहु; संकटा-संकटा में)

जन्म कुंडली

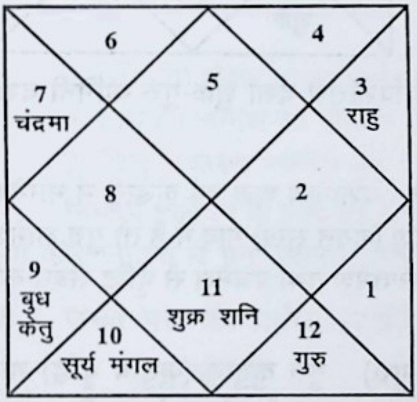

वर्ष कुंडली

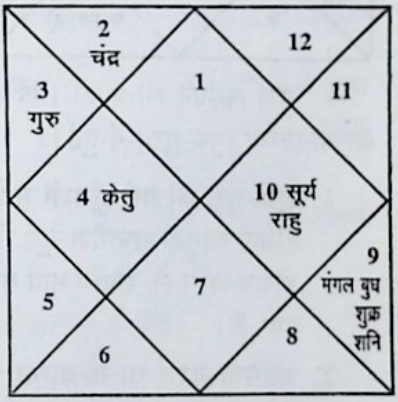

विंशोत्तरी दशा गुरु–राहु   योगिनी संकटा–संकटा (राहु–राहु)

1. **वर्ष कुंडली में दशानाथ गुरु-राहु की स्थिति :** गुरु, भाग्येश और द्वादशेश होकर पराक्रम भाव से, भाग्य स्थान में स्थित लग्नेश मंगल, दशमेश–लाभेश शनि, द्वितीयेश शुक्र तथा पराक्रमेश बुध को देख रहा है। भुक्तिनाथ राहु दशम भाव में पंचमेश सूर्य से युति कर रहा है। राहु नियंत्रक शनि का भाग्यस्थ होकर गुरु से दृष्टि संबंध विद्या के क्षेत्र में उत्कृष्ट सफलता का संकेत दिया करता है।

2. **योगिनी दशा संकटा (राहु) :** संकटापति राहु दिग्बली पंचमेश सूर्य के साथ दशमस्थ है। राहु नियंत्रक शनि का भाग्यस्थ होकर लाभ स्थान को देखना भाग्यवृद्धि और लाभ प्राप्ति का संकेतक है। पुनः जन्म कुंडली के भाग्य स्थान की मेष राशि का वर्ष लग्न बनना भी इस वर्ष को शुभ व सफलता देने वाला वर्ष बनाता है।

28.3 लड़की की शादी (शुक्र-गुरु; धान्या-धान्या में)

जन्म कुंडली

वर्ष कुंडली

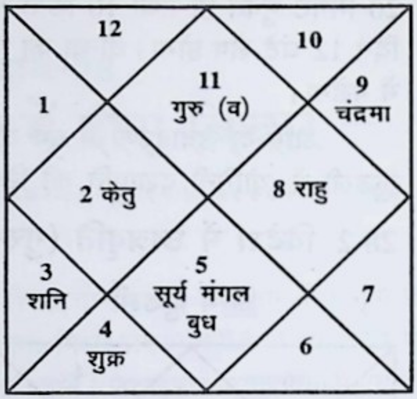

इस लड़की की शादी 19वें वर्ष में विंशोत्तरी दशा शुक्र-गुरु **योगिनी दशा** धान्या-धान्या (गुरु-गुरु) में हुई।

1. **शुक्र-गुरु की वर्ष कुंडली में स्थिति** : दशानाथ शुक्र वर्ष कुंडली में भाग्येश होकर स्वगृही सप्तमेश सूर्य से द्वादश (शयन सुख) भाव में है तो गुरु लाभेश होकर लग्न से, सप्तम भाव में बैठे सप्तमेश तथा पंचमेश से दृष्टि संबंध कर रहा है।
2. **योगिनी दशा धान्या-धान्या (गुरु-गुरु)** : गुरु कुटुम्ब (कुटुम्ब वृद्धि) भाव का स्वामी होकर लग्नस्थ है तथा पंचम भाव में बैठे लग्नेश शनि, सप्तम भाव तथा भाग्यस्थान को देख रहा है। विद्वानों ने गुरु को पतिप्रदाता व स्त्रियों के सौभाग्य सुख को बढ़ाने वाला माना है। गुरु का वर्ष कुंडली में लग्नस्थ होकर सप्तम भाव को देखना विवाह की पुष्टि करता है।

28.4 कैंसर रोग (राहु-केतु; धान्या-धान्या में)

1. **वर्ष कुंडली में राहु केतु की स्थिति** : दशानाथ राहु का दृष्टि संबंध सूर्य, चंद्रमा तथा द्वितीयेश-सप्तमेश (मारकेश) मंगल से हुआ है तो राहु नियंत्रक गुरु, द्वादशेश बुध और लग्नेश शुक्र के साथ द्वादश भाव में मारकेश मंगल से दृष्ट है। भुक्तिनाथ केतु की मारकेश मंगल से युति तथा लग्न पर दृष्टि है। विद्वानों का मत है कि **षष्ठेश-द्वादशेश का परस्पर संबंध रोग समाप्ति का सूचक है।**
2. **योगिनी दशा धान्या-धान्या (गुरु-गुरु)** : धान्यापति गुरु षष्ठेश (रोग

जन्म कुंडली

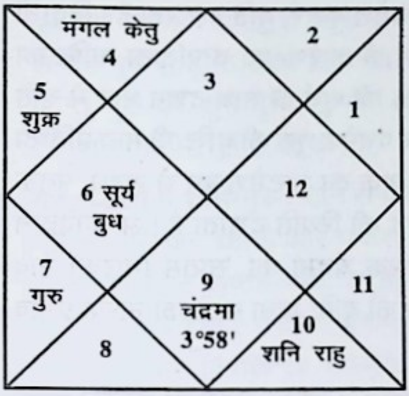

59वें वर्ष की कुंडली

भावाधिपति) होकर द्वादश (अस्पताल) भाव में भाग्येश बुध और लग्नेश शुक्र के साथ है। लग्नेश का नीचस्थ होना मन में जीवन के प्रति संशय दे सकता है, किंतु उच्चस्थ भाग्येश बुध से यहां नीच भंग राजयोग बना है।

निष्कर्ष : जीवन के 59वें वर्ष में जातक का कैंसर के लिए सफल ऑपरेशन हुआ और जातक ने पुनः स्वास्थ्य लाभ किया।

28.5 उच्च पद की प्राप्ति (योगिनी दशा सिद्धा में)

जन्म कुंडली

41वें वर्ष की कुंडली

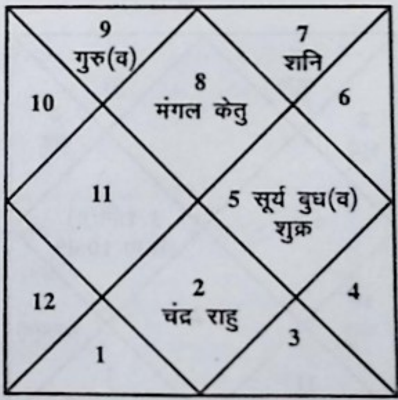

श्री राजीव गांधी ने अपनी माता श्रीमती इंदिरा गांधी की मृत्यु के बाद 1 नवंबर 1984 को प्रधानमंत्री पद संभाला उस समय उनकी सिद्धा योगिनी दशा चल रही थी।

1. **योगिनी दशा सिद्धा (शुक्र) :** वर्ष कुंडली में शुक्र, सप्तमेश होकर दशम भाव में, दशमेश सूर्य (दिग्बली) तथा लाभेश बुध से युति कर रहा है। विद्वानों ने सप्तम भाव को दशम से दशम होने के कारण, पद व प्रतिष्ठा प्राप्ति का भाव माना है। दशानाथ सिद्धापति शुक्र की सूर्य के साथ दशम भाव में युति प्रधानमंत्री पद देने वाली बनी। शुक्र पर पंचमेश गुरु की दृष्टि भी मान प्रतिष्ठा की वृद्धि का संकेत देती है। दशानाथ शुक्र का अष्टमेश बुध से संबंध, मृतक धन, वसीयत या माता की मृत्यु के बाद की स्थिति दर्शाता है। अन्य विद्वान कहते हैं कि वर्ष कुंडली में माता कारक चंद्रमा का, सप्तम (मारक) भाव में राहु से युतिकर, चंद्र सप्तमेश मंगल की दृष्टि पाना माता को मारक प्रभाव दे रहा है।
2. **वर्ष कुंडली से माता की मृत्यु का ज्ञान :** यदि चतुर्थ स्थान को माता का लग्न मानें तो गुरु द्वितीयेश तथा सूर्य सप्तमेश होने से मारकेश बने हैं। मारकेश ग्रहों का बली होकर (चतुर्थ भाव से) सप्तम व लाभ स्थान में बैठना माता के लिए अशुभ और अनिष्ट प्रद है। सप्तम भाव में सप्तमेश अष्टमेश की युति तथा द्वितीयेश की दृष्टि माता को मृत्यु भय देती है। चंद्रमा का राहु से युति कर सप्तमेश मंगल से दृष्ट होना माता के जीवन को संकट ग्रस्त कर सकता है। ये बात पहले कही जा चुकी है।

28.6 अपहरण (शनि-गुरु; भद्रिका-भद्रिका)

जन्म कुंडली

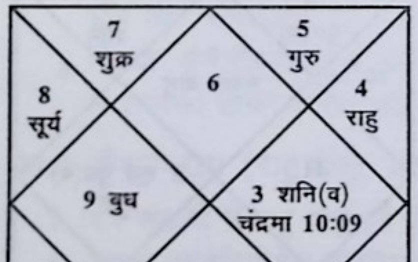

47वें वर्ष की कुंडली

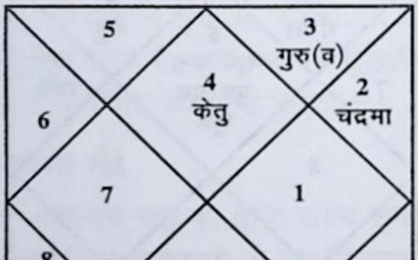

विंशोत्तरी दशा शनि-गुरु; **योगिनी दशा** भद्रिका-भद्रिका (बुध-बुध)

1. **विंशोत्तरी दशा शनि-गुरु की जन्म कुंडली में स्थिति :** शनि षष्ठेश होकर

दशम भाव में चंद्रमा से युति तथा लग्नेश बुध से दृष्टि संबंध कर रहा है। भुक्तिनाथ गुरु द्वादश (बंधन; भाव से लग्नेश बुध, षष्ठ एवम् अष्टम भाव को देख रहा है। अष्टमेश मंगल का द्वादशस्थ गुरु तथा द्वादशेश सूर्य एवम् लग्नेश बुध से दृष्टि संबंध है। जातक का आतंकवादियों द्वारा अपहरण हुआ किन्तु गुरु की शुभ दृष्टि लग्नेश बुध तथा षष्ठ भाव पर होने से जातक सकुशल वापिस लौट आया।

2. **वर्ष कुंडली में शनि-गुरु :** शनि सप्तमेश-अष्टमेश होकर षष्ठ स्थान में व्ययेश, बुध से युति कर रहा है और षष्ठेश-भाग्येश गुरु से दृष्ट है। शनि तथा गुरु दोनों की दृष्टि अष्टम भाव पर है। ध्यान रहे लग्नेश चंद्रमा से दृष्ट और सूर्य से युक्त होकर पंचमेश मंगल भी अष्टम भाव को देख रहा है। अष्टम भाव कई बार विपत्ति या अपमान दिया करता है।

3. **योगिनी दशा भद्रिका-भद्रिका (बुध-बुध) :** वर्ष कुंडली में बुध तृतीयेश-व्ययेश होकर षष्ठ भाव में सप्तमेश अष्टमेश शनि से युक्त होकर अपने नियंत्रक गुरु (द्वादशस्थ) से दृष्ट है। षष्ठ भाव में बुध शनि की युति और पाप मध्यत्व निश्चय ही अनिष्टप्रद है किन्तु गुरु की अमृत दृष्टि विषम परिस्थितियों से रक्षा करती है।

निष्कर्ष : दशानाथ और भुक्तिनाथ की वर्ष कुंडली में स्थिति उनका भाव भावेश संबंध, किसी भी घटना के शुभाशुभ परिणाम को जानने में सहायक होता है। त्रिक भाव या त्रिकेश से संबंध प्रायः अनिष्ट परिणाम दिया करता है।

28.7 समीक्षा

1. विंशोत्तरी तथा योगिनी दशा के स्वामी वर्ग कुंडली में यदि किसी संबंधी के जीवन को प्रभावित करने वाली घटना का सकेत देते हैं तो वर्ष कुंडली में इन ग्रहों की स्थिति भी शुभाशुभ परिणाम का संकेत देती है।

कुंडली संख्या	दशा	ग्रहों का वर्ष कुंडली में संबंध	घटना
28.2	विंशोत्तरी दशा गुरु-राहु	गुरु भाग्येश होकर भाग्य स्थान को देखता है। राहु की युति पंचमेश के साथ दशम भाव में है।	विदेश में शिक्षा पाने के लिए छात्रवृति मिली।

कुंडली संख्या	दशा	ग्रहों का वर्ष कुंडली में संबंध	घटना
	योगिनी दशा संकटा-संकटा (राहु-राहु)	संकटानाथ राहु दशम भाव में पंचमेश सूर्य से युक्त है तो राहु नियंत्रक शनि भाग्यस्थ होकर विदेश भाव के स्वामी तथा भाग्येश गुरु से दृष्ट है।	
28.3	विंशोत्तरी दशा शुक्र-गुरु योगिनी दशा धान्या-धान्या (गुरु-गुरु)	शुक्र चतुर्थ व नवम भाव का स्वामी होकर षष्ठ भाव से शयन सुख या द्वादश भाव को तो गुरु द्वितीयेश होकर सप्तम भाव तथा स्वगृही सप्तमेश को देख रहा है। धान्यानाथ गुरु कुटुम्ब भाव का स्वामी होकर लग्नस्थ है तथा पंचम भाव में लग्नेश, सप्तम भाव में सप्तमेश तथा भाग्य स्थान को देख रहा है। पति सुख प्रदाता गुरु की दशा-भुक्ति शादी कराती है।	लड़की का विवाह 19वें वर्ष में संपन्न हुआ।
28.4	विंशोत्तरी दशा राहु-केतु	दशानाथ राहु की दृष्टि चंद्रमा, मंगल तथा सूर्य पर है तो राहु नियंत्रक गुरु षष्ठेश होकर षप्ठ स्थान को देख रहा है। केतु की युति नवम भाव में मारकेश मंगल के साथ है।	कैंसर रोग से छुटकारा

कुंडली संख्या	दशा	ग्रहों का वर्ष कुंडली में संबंध	घटना
	योगिनी दशा धान्या-धान्या (गुरु-गुरु)	धान्यनाथ गुरु षष्ठेश होकर द्वादश भाव में लग्नेश शुक्र तथा भाग्येश-भोगेश बुध से युति कर रहा है और मंगल से दृष्ट है। अतः रोग से मुक्ति देता है।	
28.5	विंशोत्तरी दशा राहु-गुरु	दशानाथ राहु की भाग्येश चंद्रमा के साथ, सप्तम भाव (पद-प्राप्ति) में युति पर लग्नेश मंगल की दृष्टि है। भुक्तिनाथ गुरु द्वितीयेश- पंचमेश होकर दशम भाव में राहु नियंत्रक शुक्र तथा दशमेश दिग्बली सूर्य और लाभेश बुध को देख रहा है।	उच्चपद प्राप्ति श्री राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने।
	योगिनी दशा सिद्धा-सिद्धा (शुक्र-शुक्र)	सिद्धनाथ शुक्र सप्तमेश होकर दशमेश सूर्य तथा लाभेश बुध के साथ दशम भाव में द्वितीयेश-पंचमेश गुरु से दृष्ट है।	
28.6	विंशोत्तरी दशा शनि-गुरु	शनि सप्तमेश-अष्टमेश होकर षष्ठ भाव में पराक्रमेश के साथ स्थित है। इस पर व्यय भाव में बैठे भाग्येश गुरु की दृष्टि है।	अपहरण और सकुशल वापिसी

कुंडली संख्या	दशा	ग्रहों का वर्ष कुंडली में संबंध	घटना
	योगिनी दशा भद्रिका-भद्रिका (बुध-बुध)	भद्रिकनाथ बुध द्वादश और तृतीय भाव का स्वामी होकर षष्ठस्थ है तथा षष्ठेश गुरु से दृष्ट भी है। बुध की शनि से युति मन और देह को पीड़ा देने वाली है।	

2. अगले अध्याय में 'राशि दशा' पर विचार किया जायेगा।

●●●

अध्याय-29
राशि दशा फल

29.0 बहुधा विद्वान ज्योतिषी दशा फल विचार में राशि (भाव) दशा को उचित महत्त्व नहीं देते। यदि भाव दशा का अध्ययन करें तो सही फलादेश करना बहुत सरल हो जाएगा। महर्षि पराशर ने अपनी कालजयी रचना बृहत्पाराशर होराशास्त्र में राशि दशा फल पर विस्तार से लिखा है। इस अध्याय में उनके द्वारा प्रतिपादित उपयोगी सूत्रों पर चर्चा की गई है।

29.1 भाव (राशि) फल का सामान्य नियम

1. किसी भी राशि का दशा फल उसके स्वामी के बल व शुभत्व के अनुसार होता है। यदि भावेश पूर्ण बली हो तो पूर्ण फल, मध्यबली हो तो मध्य फल किन्तु अल्प या हीनबली हो तो स्वल्प फल कहें।

2.(i) जो राशि शुभ ग्रह से युक्त हो अथवा जिस राशि के द्वादश भाव में (पीछे) शुभ ग्रह हो तो उसकी दशा शुभ फलप्रद होती है।

(ii) इस विपरीत पापग्रह युक्त राशि की दशा अशुभ जानें।

(iii) जिस राशि में कोई भी ग्रह नहीं हो उसे निष्प्रभवी दशा कहें।

3. जिस राशि में सूर्य, मंगल, राहु या शनि स्थित हो उसकी दशा या अन्र्तदशा अवनति, पतन या **राजकोप से भय** और पीड़ा देती है। कारण, विद्वानों ने इन्हें पाप ग्रह कहा है।

4. जिस राशि में स्वग्रही या उच्चस्थ ग्रह हो उस राशि की दशा **धन, मान व सुख** प्रदान करती है।

5. जिस राशि से पंचम, नवम (त्रिकोण) भाव, अष्टम तथा द्वादश भाव में शुभ ग्रह हों तो उसकी दशा बहुत शुभ व **कल्याणकारी** होती है। इसके विपरीत जिस राशि के त्रिकोण, अष्टम तथा द्वादश भाव में पापग्रह हों उसकी दशा अशुभ परिणाम अर्थात् कष्ट, क्लेश व असफलता देती है।

29.2 दशाप्रद राशि का भाव संबंध

1. विचाराधीन राशि से **दूसरी और आठवीं** राशि का, दृष्टि युति संबंध पाप ग्रह से होने पर, उस राशि की दशा दुःख व क्लेश दिया क़रती है।
2. जिस राशि के **तृतीय तथा षष्ठ** भाव में पापग्रह हों तो उसकी दशा, संघर्ष शक्ति व शौर्य बढ़ाकर, स्पर्धा व प्रतियोगिता में **विजयी** बनाती है।
3. **लग्नस्थ राशि** की दशा प्रायः शुभ परिणाम देती है। यदि लग्न में कोई शुभ या पाप ग्रह हो तब लग्न की राशि दशा **धन लाभ व यश** प्रदान करती है।
4. जिस राशि के **द्वितीय और पंचम** भाव में शुभ ग्रह हों तो उसकी दशा में शत्रु पर विजय, **राज सम्मान** तथा राजा की प्रसन्नता व अनुकूलता प्राप्त होती है।
5. जिस राशि के **चतुर्थ तथा अष्टम** भाव (राशि) में शुभ ग्रह हों तो उसकी दशा **देह सुख,** आरोग्य व स्नेह और **सम्मान** देती है।
6. जिस राशि के **नवम भाव** में शुभ ग्रह हो, उसकी राशि दशा गुरु कृपा, पुण्य लाभ तथा धर्म वृद्धि करने से **सुखदायी** होती है।
7. दशाप्रद राशि के केन्द्र में शुभ ग्रह होने से उस राशि की दशा धन लाभ, सफलता और **शत्रु पर विजय** दिलाती है।

29.3 अशुभ राशि दशा

1. जिस राशि का **भोग स्थान** (द्वादश भाव) पापयुक्त हो तो उसकी दशा देहकष्ट व मानसिक क्लेश देती है।
2. जिस राशि के **सप्तम भाव** में पापग्रह हो तो उसकी दशा स्त्री को कष्टप्रद होती है। कभी ऐसा जातक, पत्नी से वैर–विरोध के कारण, दांपत्य सुख में कमी पाता है।
3. जिस राशि के **चतुर्थ भाव** में पाप ग्रह हो तो स्थानच्युति, बंधु–बांधव या परिवार में विवाद होने से मानसिक संताप होता है।
4. दशाप्रद राशि के **पंचम भाव** में पाप ग्रह होने से पुत्र कष्ट, मित्रों से विवाद या शिक्षा प्राप्ति में बाधा होती है।
5. जिस राशि की दशा हो उसके **दशम भाव** में पाप ग्रह की दृष्टि युति होने से कार्यक्षेत्र में विघ्न बाधा तथा यशकीर्ति की हानि होती है।
6. जिस राशि के **नवम भाव में** पाप ग्रह हो उसकी दशा में पिता को कष्ट तथा गुरु के कुपित होने से धर्म और भाग्य की हानि होती है।

7. दशाप्रद राशि से **एकादश (लाभ)** स्थान में पापग्रह होने से देहकष्ट, अपमान व धनहानि के कारण संताप बढ़ता है।

टिप्पणी : यदि ऊपर बताए स्थानों में पापग्रह के साथ शुभ ग्रह भी हों या गोचर में इन भावों का संबंध शुभ ग्रहों से हो जाए तो पाप फल नष्ट हो जाता है। यदि पापग्रह के विपरीत शुभ ग्रह स्थित हों तो राशि दशा **सुख, सम्मान व धन** वैभव दिया करती है।

29.4 बाधास्थान व बाधापति

1. चर राशि के लिए एकादश भाव बाधास्थान तथा एकादशेश को बाधापति कहा गया है। इस प्रकार मेष के लिए कुंभ, कर्क के लिए वृष, तुला के लिए सिंह तथा मकर के लिए वृश्चिक (11वीं राशि होने से) बाधास्थान तो इसके स्वामी बाधापति या बाधकेश कहलाते हैं। यदि दशाप्रद राशि का स्वामी बाधास्थान में हो अथवा बाधाकेश का दृष्टि युति संबंध भावेश (राशीश) से हो तो उस राशि की दशा अन्तर्दशा महान विपत्ति, कष्ट और संत्रास देती है। स्थिर राशि के लिए नवम तो द्विस्वभाव राशि के लिए सप्तम भाव को अनेक विद्वानों ने बाधास्थान कहा है।

29.5 दशाप्रद राशि से त्रिकस्थ राहु अनिष्टप्रद

जिस राशि के 6,8,12वें भाव में राहु हो तो उसकी दशा या भुक्ति में राजदंड, शत्रुभय, प्रवासपीड़ा या बंधनभय होता है।

29.6 शुभ दशा

1. जिस राशि से त्रिकोण में कोई ग्रह स्वक्षेत्री या उच्चस्थ हो तो उसकी दशा में उच्च अधिकार, **सत्तासुख, धन लाभ** तथा पद–प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।
2. भावेश (राशीश) यदि शुभ राशि में स्थित होकर गुरु से दृष्ट हो तो उसकी दशा **धन, मान व संतान** संबंधी **सुख** दिया करती है।
3. (i) जो भावेश राजयोग कारक हो।
   (ii) जो भाव या भावेश शुभकर्तरी योग में हो अथवा
   (iii) जिस राशि से द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) हों तो उसकी दशा शुभ व **कल्याणप्रद** होती है।
4. शुभ राशि या राशीश की दशा में शुभ का अन्तर, निश्चय ही शुभ फल दिया

करता है।

5. जिस भाव में शुभ स्वामी (केन्द्र, त्रिकोण, धन व लाभ भावाधिपति) या उच्चस्थ ग्रह हो उसकी दशा भुक्ति में **धन, मान व यश** की प्राप्ति होती है।
6. जो भाव अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो तो उसकी दशा बहुत **धन लाभ** व मान–सम्मान देती है।

29.7 राशि दशा प्रवेश कुंडली

1. जिस दशा के आरंभ में भाव या भावेश का संबंध, अपने मित्र या शुभ ग्रहों से हो तो वह दशा बहुत शुभ व कल्याणप्रद होती है।
2. दशारंभ के समय यदि नवम पंचम में शुभ ग्रह हों तो उसकी दशा बहुत शुभ होती है।
3. इसके विपरीत दशा आरंभ के समय यदि भाव या भावेश हीनबली या नीचस्थ हो अथवा पापपीड़ित हो तो उसकी दशा रोग, शोक, भय व हानि देती है।

29.8 नीचस्थ ग्रह से भाग्यहानि

1. (i) जिस राशि में नीचराशिस्थ ग्रह हो।
   (ii) जिसके त्रिकोण में नीच राशिस्थ ग्रह हो।
   (iii) जो भावेश स्वयं नीचस्थ हो या
   (iv) भावेश का नीचस्थ ग्रह से संबंध हो तो उसकी दशा भाग्य में कमी, धन–धान्य की क्षति, रोग शोक तो कभी अपमान और अपयश भी देती है।

29.9 मारक दशा

1. (i) यदि किसी भाव का भावेश, मारक स्थान में हो अथवा
   (ii) मारकेश से युति करे तो वह दशा राजकोप, अर्थदंड या धनहानि दिया करती है।
2. दशा का अन्त शत्रु ग्रह की राशि में हो अथवा दशान्त वाली राशि राहु की दृष्टि युति पाए तो राजकोप से धन की क्षति जानें।

29.10 राहु का प्रभाव

1. राहु के दशान्त में सर्वक्षय, मरण, जेल, देश निकाला या अन्य बड़ा कष्ट होता है।

2. यदि राहु से त्रिकोण (5,9) भाव में पापग्रह हों तो पाप फल की पुष्टि जानें किन्तु यदि राहु से त्रिकोण भाव में शुभ ग्रहों की दृष्टि युति हो तो अरिष्ट भंग होता है।
3. दशारंभ के समय गोचरवश दशाप्रद राशि पर राहु का गोचर होने से देहसुख की हानि, रोग या घर परिवार संबंधी क्लेश होता है।
4. **धन भाव में राहु** होने पर धन–संपदा का क्षय होता है। इसके विपरीत चंद्रमा या शुक्र धनस्थ होने पर धन संपदा तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि करते हैं।
5. जिस राशि से **दशम भाव में राहु** हो उसकी दशा पुण्य बल, तीर्थयात्रा तथा **सत्कार्य से सुख और सम्मान** देती है।
6. जिस राशि से **षष्ट और अष्टम** में राहु–केतु या अन्य पाप ग्रह अथवा अस्तंगत या नीच राशि के ग्रह हों तो उसकी राशि दशा में राजा, रोग व शत्रु से त्रास और असह्य भय होता है।
7. जिस राशि से **चतुर्थ भाव** में राहु हो तो उस राशि की दशा में घर–परिवार संबंधी सुख की कमी, चोरी से धन नाश तथा विष का भय होता है।

29.11 दशाप्रद राशि के त्रिकोण का पापत्व

जिस राशि के त्रिकोण (5,9) भाव मे राहु केतु रहें तो उसकी दशा में पुत्र पीड़ा, धन क्षय, परदेश गमन, कष्ट तथा भय होते हैं। मतान्तर से जिस भाव के पंचम, नवम में पापग्रह हों तो उसकी दशा में धन हानि, अवनति या संतान से क्लेश, पिता को कष्ट तथा मानसिक संताप होते हैं। जिस भाव से त्रिकोण (5,9) भाव में अष्टमेश, द्वादशेश या सूर्य, मंगल, शनि हो उसकी दशा अशुभ फल देती है।

29.12 राशि दशा पर चतुर्थस्थ ग्रह का प्रभाव

1. जिस राशि से चतुर्थ भाव में–
   (i) उच्चराशिस्थ ग्रह
   (ii) त्रिकोण भावाधिपति या
   (iii) शुभ ग्रह चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र हों तो उसकी दशा में भूमि भवन, वाहन, घर–परिवार तथा बंधु–बांधवों का श्रेष्ठ सुख मिलता है।
2. दशाप्रद राशि के **चतुर्थ भाव में चंद्रमा** होने पर धन धान्य की वृद्धि तथा मन को सुख शान्ति होती है।
3. जिस राशि से **चतुर्थ भाव में गुरु** स्थित हो उसकी दशा में उच्च कोटि

का **धन लाभ** तथा पद–प्रतिष्ठा प्राप्ति का सुख होता है।

4. जिस राशि के **चतुर्थ भाव में बुध** हो तो उसकी दशा में जातक विद्वानों तथा मित्रों का स्नेह सहयोग पाता है, विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा उसका समय मित्रों के साथ आनन्दपूर्वक व्यतीत होता है। उसे पर्यटन या यात्रा से लाभ मिलता है।
5. जिस राशि के **चतुर्थ भाव में शुक्र** हो तो उसकी दशा में सुख वैभव की वृद्धि, उत्तम वाहन सुख तथा महिलाओं का स्नेह व समर्थन मिलता है। कोई जातक ललित कला, सौन्दर्य प्रसाधन या सज्जाकार्य से लाभ व यश पाता है।
6. इसके विपरीत किसी भी राशि से **चतुर्थस्थ पाप ग्रह** उसकी दशा में भूसंपदा, घर तथा वाहन सुख की हानि करता है।
7. दशाप्रद राशि के **चतुर्थ भाव में सूर्य** हो तो उस राशि दशा में मन में उद्विग्नता, अहंता का टकराव या बड़ों का अनादर करने से राजकोप या राजदंड का भय होता है।
8. दशाप्रद राशि के **चतुर्थ भाव में मंगल** होने से उस राशि दशा में घर में अग्निकांड से क्षति, या परिवार में कहल–क्लेश व अलगाव की संभावना होती है।
9. जिस राशि के **चतुर्थ भाव में शनि** हो तो उसकी दशा में हृदय रोग, उच्च या निम्न रक्तचाप, हृदयशूल या हृदय आघात (Heart Attack) की संभावना बढ़ती है।
10. जिस राशि के **चतुर्थ भाव में राहु** हो तो चोर या विष का भय जानें। कभी गुप्त शत्रु भी त्रास देता है।

29.13 राशि दशा में शुभ ग्रहों की भूमिका

1. जिस राशि से **9, 10, 11वें भाव में शुभ ग्रह** हों तो उसकी दशा, धन, धर्म, यश, सद्विद्या तथा पुरुषार्थ की वृद्धि कर सुख देती है।
2. जिस राशि से **5, 6, 7वें भाव में शुभ ग्रह** हों तो उसकी दशा में स्त्री–पुत्र सौख्य तथा मान–सम्मान मिलता है। जिस राशि से **2, 3, 4 भाव में शुभ ग्रह** हों उसकी दशा शुभ व कल्याणप्रद होती है।
3. जिस राशि में लग्नेश, चतुर्थेश, दशमेश, त्रिकोणेश या लाभेश स्थित हो उसकी दशा में क्रमशः देह–सुख, घर- परिवार का सुख, कार्यक्षेत्र में उन्नति

और लाभ, मित्र, संतान, विद्या तथा **भाग्य संबंधी सुख** या सभी प्रकार का लाभ व कार्यसिद्धि का सुख बढ़ता है।

4. जिस राशि में **गुरु, शुक्र या त्रिकोण के स्वामी** हों तो उसकी दशा विविध प्रकार की सुख–सुविधा तथा धन–वैभव देती है। जातक देवपूजन कर सभी कार्यों में सफलता व सुख पाता है।
5. जो भाव **लग्नेश, भाग्येश, दशमेश** या बली शुभ ग्रहों से युक्त हो उसकी दशा सर्वार्थ सिद्धि, पदप्रतिष्ठा व सत्तासुख देती है।

29.14 राशि दशा में 18 गुणों का महत्त्व

विद्वानों के मतानुसार प्रत्येक ग्रह या राशि की दशा अपने 18 गुणों के अनुसार फल दिया करती है। ये गुण निम्नलिखित हैं–

1. **परम उच्च** (संपूर्णा)	धन-वैभव तथा सत्ता सुख।
2. **उच्च राशिस्थ** (पूर्णा)	सुख–सुविधा तथा धन संबंधी सुख।
3. **मूल त्रिकोण** राशिस्थ (सुखदा)	धन, मान व सुख।
4. **स्वराशिस्थ** (स्वस्थ)	भूमि, भवन और पारिवारिक सुख।
5. **अधिमित्र की राशि में स्थित** (प्रमुदित)	मित्रों के स्नेह सहयोग से धन, मान व यश प्राप्ति।
6. **मित्र ग्रह की राशि में स्थित** (मुदित)	मित्र समागम से लाभ व प्रसन्नता।
7. **समक्षेत्री ग्रह** (सम दशा)	अपने प्रयत्न प्रयास से सफलता।
8. **शत्रुक्षेत्री** (दुःखी)	शत्रु के कारण विघ्न–बाधा और धन की क्षति।
9. **अधिशत्रु क्षेत्री** (विकल)	शत्रु से भय, त्रास अपमान व हानि।
10. **नीच राशिस्थ** (दीन)	पतन, अपयश तथा अर्थाभाव।
11. **परमनीच** (रिक्ता)	रोग, शोक, विपत्ति व कष्ट।
12. **आरोही ग्रह** (नीच से उच्चता की ओर अग्रसर)	दुःख, रोग, शोक से मुक्ति, उन्नति व लाभ।
13. **अवरोही ग्रह** (उच्चराशि से अपनी नीचराशि की ओर जाने वाला ग्रह)	अवनति, हानि, असफलता।
14. **केन्द्र भाव में स्थित ग्रह** (राज्यप्रद)	धन, सत्तासुख, धैर्य व संतोष व मन की स्थिरता।

15. त्रिकोण भाव में स्थित ग्रह (शुभ)	विद्या, बुद्धि, धर्म तथा भाग्य वृद्धि से सुख।
16. त्रिकभाव में स्थित ग्रह (अशुभ)	रोग, दुर्घटना, चोर या अग्नि से भय और हानि।
17. अस्तंगत ग्रह (कुपित)	शिक्षा में बाधा, धन और भू–संपदा की क्षति, राजदंड से हानि।
18. युद्ध में पराजित ग्रह (खल)	स्वजन का वियोग, अपयश, धन संपदा का नाश व शत्रु से बाधा और कष्ट।

अन्य विद्वानों ने परमोच्च, उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, समक्षेत्री ग्रह या इनसे संबंधित राशि की दशा को शुभ, श्रेष्ठ या उत्तम दशा कहा है। शुभ दशा बहुधा धन, मान, यश तथा देह सुख प्रदान करती है।

इसके विपरीत शत्रुक्षेत्री, नीचस्थ, अवरोही, अस्तंगत अथवा पराजित ग्रह से संबंधित राशि की दशा अधमा कहलाती है। अशुभ या अधमा दशा रोग, शोक, भय व दरिद्रता देती है।

29.15 उच्चस्थ ग्रह की राशि दशा

(i) **सूर्य से युक्त मेष राशि** की दशा धन, वैभव, बल तथा प्रताप की वृद्धि करती है।

(ii) **चंद्र से युक्त वृष राशि** की दशा वस्त्राभूषण तथा धन–धान्य का सुख देती है।

(iii) **मंगल से युक्त मकर राशि** की दशा जातक को बल, साहस, शौर्य और यश देती है।

(iv) **बुध से युक्त कन्या राशि** की दशा जातक को मेधावी, विद्वान तथा कार्यकुशल बनाती है। वह मिलनसार, हँसमुख तथा वाक्पटु होता है।

(v) **गुरु से युक्त कर्क राशि** की दशा जातक को धन, मान, ख्याति और सुख देती है। वह विद्वान और समस्या सुलझाने में दक्ष होता है।

(vi) **शुक्र से युक्त मीन राशि** की दशा में जातक हास्य–विलास, ललित कला तथा संगीत और नृत्य से धन लाभ और सुख पाता है।

(vii) **शनि से युक्त तुला राशि** की दशा में जातक ग्राम, नगर या जनपद का आधिपत्य पाता है। कभी वह वन–उत्पाद या हीन महिलाओं से लाभ व

सुख पाता है।

29.16 मूल त्रिकोण राशि की दशा

(i) सिंह राशि के प्रथम 20 अंश में स्थित **सूर्य** की दशा धन, वैभव, कार्यकुशलता तथा श्रेष्ठता देती है।

(ii) वृष राशि में 3 से 30 अंश के बीच बैठे **चंद्रमा** की दशा जातक के सद्‌गुण और सुख वैभव की वृद्धि करती है।

(iii) मेष राशि के प्रथम 12 अंश में स्थित **मंगल** की दशा जातक को बल, पराक्रम व पद प्रतिष्ठा देती है। कोई व्यक्ति अपने दल का नेता व क्रूर कर्मी होता है।

(iv) कन्या राशि के 15 से 20 अंश के बीच स्थित **बुध** की दशा हास–परिहास, मित्र समागम तथा तकनीकी गोष्ठियों में सहभागिता से सफलता और सुख देती है।

(v) धनु राशि के प्रथम दस अंश में स्थित **गुरु** की दशा जातक को परोपकारी, नीतिनिपुण, धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति बनाती है।

(vi) तुला राशि के प्रथम 15 अंश में स्थित **शुक्र** की दशा जातक को धन, वैभव, पद प्रतिष्ठा या सत्तासुख देती है। वह नगर या ग्राम का अधिपति होता है।

(vii) कुंभ राशि के प्रथम 20 अंश में स्थित मूल त्रिकोणस्थ **शनि** की दशा जातक को धन, मान व बल या अधिकार देती है। वह श्रमिक या हीनवर्ग के लोगों का नेता बनकर, उनके सहयोग से यश व प्रतिष्ठा पाता है।

29.17 स्वराशिस्थ ग्रह की राशि दशा

(i) सूर्य से युक्त **सिंह राशि** की दशा बल, प्रताप की वृद्धि कर महत्त्वपूर्ण कार्यों में सफलता देती है।

(ii) चंद्रमा से युक्त **कर्क राशि** की दशा धर्म में रुचि देकर, मनस्वी या चिंतनशील बनाती है।

(iii) मंगल से युक्त **मेष या वृश्चिक राशि** की दशा में जातक धनी, पराक्रमी, जोखिमपूर्ण कार्य करने वाला प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

(iv) बुध से युक्त **मिथुन या कन्या राशि** की दशा जातक को विद्वान, पंडित और प्रिय वक्ता बनाती है। वह कार्यकुशल तथा मिलनसार होता है।

(v) गुरु से युक्त **धनु या मीन राशि** की दशा धर्मग्रन्थों, सत्कार्यों या धार्मिक

समारोह में रुचि देकर धन व यश देती है।

(vi) **वृष या तुला राशि** में स्थित शुक्र की दशा धन वैभव तथा वाहन सुख देती है। जातक महिलाओं का स्नेहभाजन होता है।

(vii) शनि से युक्त **मकर या कुंभ राशि** की दशा जातकं को लोकपूज्य, गरीबों का मसीहा या सर्वहारा वर्ग का नेता बनाकर सुख देती है।

29.18 मित्र राशिस्थ ग्रह की दशा

(i) **सूर्य** यदि चंद्रमा, मंगल या गुरु की राशि में हो तो जातक राजा व गुरुजन का कृपाभाजन, पिता का सुख, सेवक तथा पुत्र से स्नेह व सम्मान तथा बंधु–बांधवों का सहयोग पाने वाला होता है। उसे वस्त्राभूषण तथा धन संबंधी सुख मिलता है।

(ii) **चंद्रमा** यदि सूर्य अथवा बुध की राशि में हो तो उसकी दशा में उच्च अधिकारियों की मैत्री व सहयोग से धन, यश व सफलता मिलती है। वह हँसमुख और मिलनसार होने से लोकप्रिय और सम्मानित व्यक्ति होता है।

(iii) **मंगल** यदि सूर्य, चंद्रमा अथवा गुरु की राशि में हो तो उसकी दशा में शत्रु से संधि, समझौता या मैत्री होती है। कभी चोर या अग्नि से धन की हानि होती है। प्रभावशाली व्यक्तियों के सहयोग से सम्मान व सफलता मिलती है।

(iv) **बुध** यदि सूर्य या शुक्र की राशि में हो तो उसकी दशा धन, मान व यश की वृद्धि करती है। वह ग्रंथ रचना या लेखन क्षेत्र में सफलता पाता है। उसे उपाधि मिलती है।

(v) **गुरु** यदि सूर्य, चंद्र, मंगल की राशि में हो तो राजा से मैत्री, विद्या क्षेत्र में यश व सफलता तथा धन वैभव की प्राप्ति होती है।

(vi) **शुक्र** यदि बुध या शनि की राशि में हो तो जातक जन कल्याण व परोपकार के कामों में धन व यश पाता है। वह विविध कलाओं का ज्ञाता तथा सुप्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

(vii) **शनि** यदि बुध अथवा शुक्र की राशि में हो तो उसकी दशा में जातक कर्त्तव्यनिष्ठा, शिल्पकार्य, बल तथा पराक्रम से धन व यश पाता है। निश्चय ही मित्रों के सहयोग से वह उन्नति करता है किन्तु उसे थोड़ा दुःख भी अवश्य होता है।

29.19 शत्रु राशिस्थ ग्रह की·दशा

(i) [illegible] यदि शुक्र अथवा [illegible] की राशि में हो तो उसकी दशा में जातक स्त्री,

पुत्र तथा धनसंबंधी कष्ट पाता है। उसे अग्नि, चोर या राजा से भय होता है। कभी माता–पिता से विवाद या विरोध भी दुःख बढ़ाता है।

(ii) **चंद्रमा** शत्रु राशि में होने से उसकी दशा में वस्त्राभूषण तथा वाहन की हानि, विदेश में नौकरी तथा बंधुओं से वियोग के कारण जातक दुःख और क्लेश पाता है।

(iii) **मंगल** यदि बुध की राशि (मिथुन, कन्या) में हो तो उसकी दशा स्पर्धा या प्रतियोगिता में पराजय, अग्नि, राजा या शत्रु से हानि तथा बल–पराक्रम में कमी से असफलता और अपयश देती है।

(iv) **बुध** यदि चंद्रमा की कर्क राशि में हो तो उसकी दशा स्मृतिदोष, शत्रु या राजकोप से हानि और भय देती है। कभी दुष्ट स्वामी की सेवा करने या स्त्री और संतान के कारण धन नष्ट होने का दुःख (विषाद) होता है।

(v) **गुरु** यदि बुध अथवा शुक्र की राशि में हो तो उसकी दशा में स्त्री, पुत्र, सेवक व भाइयों को कष्ट होता है। कभी राजा, अग्नि या चोर से धन हानि होती है। कोई जातक राजसम्मान, धन, शय्या और वस्त्राभूषण का सुख भी अवश्य पाता है।

(vi) **शुक्र** यदि सूर्य अथवा चंद्रमा की राशि में हो तो उसकी दशा में स्त्री, पुत्र तथा धन वैभव के सुख में कमी या हानि होती है। वह उच्च अधिकारियों का कोपभाजन होने से क्लेश पाता है।

(vii) **शनि** यदि सूर्य, चंद्रमा अथवा मंगल की राशि में हो तो उसकी दशा में पदप्रतिष्ठा की हानि, देहकष्ट व जनविरोध के कारण कष्ट होता है।

29.20 नीच राशिस्थ ग्रह की दशा

(ii) **तुला राशि में सूर्य** होने से उसकी दशा में राजदंड से अपमान, अवनति या धन की क्षति होती है। कमी स्त्री, पुत्र और मित्रों से वियोग भी क्लेश देता है। व्यर्थ का विवाद अपयश (बदनामी) देता है।

(ii) **वृश्चिक राशि में चंद्रमा** होने से उसकी दशा में विपत्ति, क्लेश, बंधन या वनवास होता है। कभी चोर, अग्नि या राजा से हानि·और भय तथा परिवार से वियोग होता है।

(iii) **कर्क राशि में मंगल** होने से उसकी दशा में धन, धान्य और वाहन संबंधी सुख में कमी अथवा चोर, अग्नि या राजा से कष्ट मिलता है। कभी जातक हीनवृत्ति (रोजगार) से कुटुम्ब का पालन करता है।

(iv) **मीन राशि में बुध** होने से उस (मीन राशि) की दशा पदभंग, देह कष्ट, असफलता और बंधु वियोग का क्लेश देती है। कोई जातक तन में रोग और मन में व्याकुलता पाता है।

(v) **मकर राशि में गुरु** होने से उसकी राशि दशा में पुत्रों से मतभेद या वैर–विरोध होने से मानसिक क्लेश होता है। कभी अनिच्छापूर्वक यात्रा भी दुःख व कष्ट देती है।

(vi) **कन्या राशि में शुक्र** होने से उसकी राशि दशा में जातक रोग व देहकष्ट से संताप पाता है। व्यर्थ के कामों में उलझकर धन व बल की हानि करता है। कभी स्त्री व पुत्रों को रोग पीड़ा भी क्लेश बढ़ाती है।

(vii) **मेष राशि में शनि** होने से उसकी दशा में स्त्री, पुत्र और भाइयों से वियोग, कृषि या उद्यम की हानि तथा हीनवृत्ति से जीवन निर्वाह होता है।

29.21 राहु अधिष्ठित राशि की दशा

1. वृष राशि की युति राहु (उच्चस्थ) से होने पर उसकी दशा सत्तालाभ, मित्र समागम, धन–धान्य की वृद्धि तथा **बहुत सुख** देती है।
2. वृश्चिक राशि में राहु (नीचस्थ) होने से उसकी दशा चोर, अग्नि या राजा से हानि या कष्ट देती है। कोई जातक कारावास या प्राणदंड पाता है।
3. कन्या राशि का राहु होने से उसकी दशा में स्त्री व **पुत्र संबंधी सुख,** सत्तालाभ तथा **धन वैभव** प्राप्त होता है।

29.22 केतु अधीष्ठित राशि की दशा

1. वृश्चिक राशि में उच्चस्थ केतु होने से उसकी दशा सफलता और सुख देती है। जातक धन व यश पाता है। वह धर्म और अध्यात्म की ओर उन्मुख होकर सुख–संतोष पाता है।
2. वृष राशि में नीचस्थ केतु होने से उसकी दशा राजा से भ्रान्तिजन्य विरोध, रोग पीड़ा, धनसंपदा की क्षति व स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से मतभेद के कारण क्लेश व त्रास देती है।
3. मीन राशि में केतु होने से उसकी दशा में जातक धर्म में आस्था, **तीर्थाटन** व मंत्रसिद्धि से अनासक्ति व मोक्ष पाता है। उसकी सभी **चिन्ताएँ मिट जाती हैं।**

29.23 भाग्यप्रद राशि दशा

1. भाग्येश का गुरु से दृष्टियुति या स्थान सम्बन्ध होने पर भाग्य तथा गुरु

अधीष्ठित राशियों की दशा सुख तथा सौभाग्य बढ़ाती है।

2. जन्म के समय जो ग्रह भाग्यवृद्धि करने वाले हों वे मार्गी होने पर पूर्ण फल देते हैं। भाग्यवृद्धिप्रद ग्रह से संबंध करने वाले ग्रह भी अपनी अधिष्ठित राशि की दशा में भाग्य, **धन और सुख की वृद्धि** करते हैं।
3. केन्द्रस्थ शुभ राशि यदि अपने स्वामी से दृष्टि–युति संबंध करे अथवा अन्य शुभ ग्रह से युक्त हो तो उसकी दशा भी **भाग्यवृद्धि** में सहायक होती है।

29.24 राशि दशा का फल कब?

1. **शीर्षोदयी राशि** (5, 6, 7, 8, 3, 11वीं राशि) में स्थित ग्रह की (राशि) दशा के आरंभ में ही दशा फल मिलना शुरु हो जाता है।
2. **पृष्ठोदयी राशि** (1, 2, 4, 9, 10वीं राशि) में स्थित ग्रह की दशा के उत्तरार्ध में दशा संबंधी शुभ या अशुभ फल प्राप्त होते हैं।
3. **उभयोदयी राशि** (12वीं) में स्थित ग्रह की दशा मध्य भाग में दशा संबंधी फल दिया करती है। कुछ विद्वान मिथुन को भी उभयोदयी राशि मानते हैं।

29.25 राशि दशा में शुभता विचार

1. लग्नेश के नैसर्गिक या तात्कालिक मित्रों की दशा या अन्तर्दशा **देह सुख व सम्मान** बढ़ाती है।
2. भावेश के नैसर्गिक या तात्कालिक मित्रों की अन्तर्दशा भाव संबंधी **शुभ फल की वृद्धि** करती है।
3. जो राशि शुभ ग्रह से दृष्ट–युक्त हो, अथवा जो भावेश शुभ ग्रहों से दृष्टि युति पाए उसकी दशा बहुत **शुभ** हुआ करती है।
4. जिस राशि को अष्टकवर्ग में अधिक शुभ बिंदु प्राप्त हों उसकी दशा अन्तर्दशा **धन, मान व सफलता** देती है।
5. संबंधित वर्ग में जो राशि शुभ व बली ग्रहों की दृष्टि युति पाए उसकी दशा भुक्ति में भाव संबंधी शुभ फल प्राप्त होते हैं।
6. (i) इसके विपरीत लग्न के नैसर्गिक या तात्कालिक शत्रु की दशा;

   (ii) त्रिक (6, 8, 12वीं) राशि की दशा अन्तर्दशा,

   (iii) पापग्रह अधिष्ठित राशि की दशा,

   (iv) नीचस्थ या शत्रुक्षेत्री ग्रह से युक्त राशि की दशा,

(v) अल्प शुभ बिंदु पाने वाली राशि की दशा में, घर परिवार में कलह क्लेश, धनहानि, रोगभय, स्वजन का वियोग या अपमान और अपकीर्ति सरीखे पाप फल मिलते हैं।

29.26 विशेष राशि दशा फल

महर्षि पराशर के सभी नियम राशि दशा पर भी लागू होते हैं। पाठकों की सुविधा के लिए उन्हें फिर से बताया जा रहा है–

सुख विचार	भाव	भावेश और कारक
1. देह सुख, आरोग्य	लग्न	लग्नेश, चंद्रमा, सूर्य
2. धन संपदा, रत्नाभूषण	द्वितीय	द्वितीयेश, गुरु, बुध
3. साहस, पराक्रम, अनुज	तृतीय	तृतीयेश, मंगल
4. भूसंपदा, वाहन या मन की सुख शान्ति	चतुर्थ	चतुर्थेश, चंद्रमा, शुक्र, मंगल
5. विद्या–बुद्धि, संतान	पंचम	पंचमेश, गुरु, बुध
6. स्पर्धा प्रतियोगिता, रोग, ऋण, शत्रुभय, दुर्घटना	षष्ठ	षष्ठेश, बुध, शनि, मंगल
7. पति–पत्नी और दांपत्य–सुख, साझेदारी	सप्तम	सप्तमेश, शुक्र
8. आयुष्य, विपदा, मृत्यु	अष्टम	अष्टमेश, शनि
9. भाग्य, धर्म, पिता, संतान की शिक्षा	नवम	गुरु, सूर्य
10. आजीविका, पद–प्रतिष्ठा, अधिकार प्राप्ति, सत्कर्म	दशम	दशमेश सूर्य (पदप्रतिष्ठा) बुध (वाणिज्य व्यापार) मंगल (तकनीकी व स्पर्धात्मक क्षमता) गुरु (उच्चता, श्रेष्ठता, धन) शनि (सेवा, मशीन कार्य व सेवकों में लोकप्रियता)।
11. सफलता, सम्मान, धन लाभ व कार्य सिद्धि	एकादश	एकादशेश, गुरु
12. हानि, रोग व ऋण से मुक्ति, बंधन, विदेश यात्रा, लौकिक सुख–वैभव	द्वादश	द्वादशेश, शनि (हानि, बंधन) शुक्र (लौकिक सुख वैभव)

इसी प्रकार पिता के सुख–दु:ख जानने के लिए नवम भाव को लग्न मानकर कुंडली बनाएँ तथा दशम भाव को पिता का धन तो पंचम भाव को पिता का भाग्य और षष्ठ को पिता की आजीविका कहें। ध्यान रहे चतुर्थ भाव, नवम से अष्टम होने के कारण पिता की मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट दर्शाएगा। माता के लिए चतुर्थ भाव, संतान के लिए पंचम तो पत्नी के लिए सप्तम भाव को लग्न मानकर बनी कुंडली इनके सुख–दु:ख जानने में सहायक होती है।

29.27 समीक्षा

1. इस अध्याय में राशि दशा के महत्त्व और उपयोगिता पर विचार करते हुए पैरा 29.1 में सामान्य नियम पैरा 29.2 में दशाप्रद राशि का भाव संबंध तथा 29.3 में अशुभ राशि दशा पर विचार हुआ है।
2. पैरा 29.4 में बाधास्थान तथा बाधापति तथा 29.5 में त्रिकस्थ राहु के अनिष्ट परिणाम पर चर्चा के बाद 29.6 में शुभ दशा पर विचार हुआ है।
3. दशा प्रवेश के समय दशाप्रद राशि का बल शुभ परिणाम देता है। नीचस्थ ग्रह वाली राशि अनिष्ट प्रद तो मारक भाव या मारकेश से संबंधित राशि दशा धन हानि व राजदंड का भय देती है।
4. राहु का प्रभाव पैरा 29.10 में तो त्रिकोण में पापग्रह का अशुभ प्रभाव पैरा 29.11 में बताया गया है।
5. चतुर्थ भाव सुख स्थान है। दशाप्रद राशि के चतुर्थ भाव में विभिन्न ग्रहों की स्थिति का प्रभाव पैरा 29.12 तथा शुभ ग्रहों की विभिन्न भावों में भूमिका पैरा 29.13 पर देखें।
6. पैरा 29.14 से 29.20 तक राशि दशा में 18 गुणों के महत्त्व पर विस्तार से चर्चा हुई है।
7. पैरा 29.21 तथा 29.22 में राहु–केतु की उच्च, नीच व स्वराशि की दशा पर विचार हुआा है।
8. पैरा 29.23 में भाग्यप्रद राशि दशा तो पैरा 29.24 में राशि दशा का फल कब पर चर्चा की गई है। पैरा 29.25 में राशि दशा की शुभता पर विचार हुआ है।
9. अध्याय की समाप्ति पैरा 29.26 में बनी 'भाव संबंधी सुख विचार' की तालिका के साथ हुई है।
10. अगले अध्याय में 'घटना का समय व स्वरूप निर्धारण' पर विचार किया जाएगा।

●●●

अध्याय-30

घटना का समय और स्वरूप निर्धारण

30.1 घटना का स्वरूप

1. घटना का समय और स्वरूप का निश्चय करना ही ज्योतिष शास्त्र का लक्ष्य और एक विद्वान ज्योतिषी की सफलता कसौटी है। बहुधा छोटी सी भूल एक विज्ञ ज्योतिषी को भ्रमित कर भविष्यवाणी मिथ्या सिद्ध करती है। उदाहरण के लिए दशम भाव की शुभता सभी ओर सुनने में आती है तो नवम भाव भाग्य भाव माना जाता है। शायद हम भूल जाते हैं कि जन्म कुंडली का नवम भाव उसकी माता के लिए षष्ठ या रोग स्थान है। इसी प्रकार जातक का दशम या एकादश भाव उसकी माता के लिए सप्तम (मारक) तथा अष्टम (मृत्यु) भाव होने से अनिष्ट फल दे सकता है।
2. आचार्य शुकदेव चतुर्वेदी ने एक बहुत सुंदर बात कही है–वे कहते हैं कि जिस प्रकार कारखाने का कोई कारीगर अपने ज्ञान, अनुभव और क्षमता के अनुसार उचित साधन सामग्री मिलने पर, उत्पादन कार्यक्रम के अनुसार, माल तैयार करता है। वैसी ही कुछ बात इस जीव और जीवन की है। यहां ग्रह दशा, कुंडली में बने योगों के अनुरुप फल देती है।
3. जन्म कुंडली में विभिन्न ग्रहों की राशि और भाव गत स्थिति, किसी ग्रह का अन्य ग्रह से दृष्टि संबंध, विभिन्न योगों द्वारा जीवन की संभावनाओं को उजागर करता है। इसमें धन वैभव व संपन्नता देने वाले राजयोग हैं तो रोग कष्ट व दरिद्रता देने वाले अरिष्ट योग भी कुंडली में सहज देखे जा सकते हैं। इसे कुंडली का संभावना (Promise या Possibility) पक्ष मानते हैं।
4. इसके बाद बारी आती है ग्रहों के बल व शुभ फल देने की क्षमता और योग्यता (capacity or capability) की। यदि धन वैभव या पद प्रतिष्ठा देने वाला ग्रह, हीन बली, पाप दृष्ट या राशि और भाव संधि में स्थित हों तब तो उन्हें बली बनाए बगैर कुछ भी पाना असंभव होगा। इस बल को जानने के लिए पंचधा मैत्री चक्र मैत्री बल दर्शाता है तो षोडश वर्गों में किसी ग्रह की शुभता

विंशोपक बल बनती है। इसी प्रकार अष्टक वर्ग के शुभ बिंदु भी ग्रह की योग्यता का आंकलन करते हैं। ग्रहों का षडबल, इष्ट फल, कष्ट फल भी, कौन ग्रह कितना शुभ परिणाम दे पाने में सक्षम है, इस बात को बतलाता है।

5. **अन्त में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात है घटना का समय जानना :** संभावना व क्षमता से आप जान सकते हैं कि जातक बहुत धन, मान व यश पाएगा। ये कन्या, धनी परिवार में विवाह संबंध द्वारा, सुखी व संपन्न होगी अथवा ये जातक विदेश में न केवल अपना, अपने परिवार का अपितु भारत देश को गौरव प्रदान करेगा।

6. घटना का स्वरूप जन्म कुंडली तथा संबंधित वर्ग कुंडली में योगकारक ग्रह (keyplanets) कि स्थिति और बल (position and power) द्वारा सहज ही जाना जा सकता है। घटना का समय या timing of events के लिए निम्न बातों पर विचार करना आवश्यक है।

   (i) ग्रह दशा क्रम (sequence of planetary period)

   (ii) ग्रह गोचर (planetary transit)

   (iii) वर्ष कुंडली में सक्रिय ग्रहों की स्थिति (position of active planets in the annual chart)

   किसी भी ज्योतिषी को इन तीन बातों पर निर्भर रहना पड़ता है।

   यदि संभावना और शक्ति है किन्तु उचित दशा, भुक्ति और गोचर नहीं मिला या कहें वांछित समय नहीं मिला तब भी वह ग्रह "घटना" नहीं दे पायेगा।

30.2 संभावनाएं

विद्वानों का कथन है कि जन्म कुंडली में ग्रहों का परस्पर संबंध तथा उनकी भाव गत स्थिति राजयोग द्वारा मान प्रतिष्ठा, तो धनयोग द्वारा धन वैभव दिया करती है। उदाहरण के लिए:–

अ. राजयोग

(i) नवमेश तथा पंचमेश का परस्पर दृष्टि युति संबंध अथवा स्थान परिवर्तन जातक को राजा या नृपतुल्य प्रतापी व प्रतिष्ठित व्यक्ति बनाता है।

(ii) यदि चतुर्थेश व दशमेश परस्पर राशि परिवर्तन कर पंचमेश या नवमेश से दृष्टि युति संबंध करें या

(iii) लग्नेश, चतुर्थेश, पंचमेश या दशमेश का संबंध नवमेश से हो अथवा

(iv) चतुर्थेश तथा दशमेश का दृष्टि युति संबंध पंचमेश या नवमेश से हो या

(v) त्रिकोण भाव के स्वामी केंद्र स्थान में हों या

(vi) भाग्येश गुरु भाग्यस्थान में शुक्र से युति कर पंचमेश से संबंध करे तो

इनमें से कोई भी योग मनुष्य को **पद प्रतिष्ठा व सत्ता लाभ** दिया करता है।

विश्लेषण :

(1) नेताजी सुभाष चंद्र बोस (जन्म 23 जनवरी 1897)

(i) लग्नेश मंगल की दृष्टि पंचम तथा नवम भाव पर है।

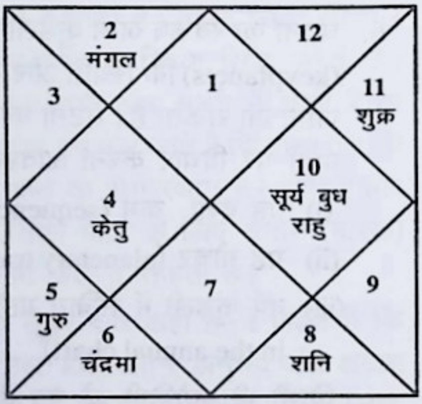

(ii) लग्नेश की दृष्टि भाग्येश गुरु पर है तो भाग्येश, लग्न और भाग्य स्थान को देख रहा है।

(iii) दशमेश शनि की दृष्टि दशम भाव में सूर्य (पंचमेश) बुध (पराक्रमेश) तथा लग्नेश मंगल और भाग्येश गुरु पर है।

(iv) नेताजी का नाम आज भी बड़े आदर व श्रद्धा के साथ लिया जाता है। उन्होंने आजाद हिन्द फौज की स्थापना की तथा आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(2) महारानी लक्ष्मीबाई

विश्लेषण : महारानी लक्ष्मीबाई के लग्न में, दशमेश चंद्रमा की चतुर्थेश- पंचमेश शनि तथा नवमेश बुध के साथ युति, प्रबल राजयोग बना रही है। लग्नेश शुक्र भी, पराक्रम भाव से, नवम भाव को देख रहा है। इसी प्रकार योग कारक शनि, का लग्नस्थ होकर लग्नेश शुक्र तथा, दशम भाव को देखना भी कल्याणप्रद है। इनका अद्भुत साहस और शौर्य आज भी याद किया जाता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम

में इनका बहुमूल्य योगदान रहा है।

(3) छत्रपति शिवाजी

विश्लेषण

(i) छत्रपति शिवाजी की जन्म कुंडली के सप्तम भाव में लग्नेश सूर्य तथा पंचमेश गुरु की युति है।

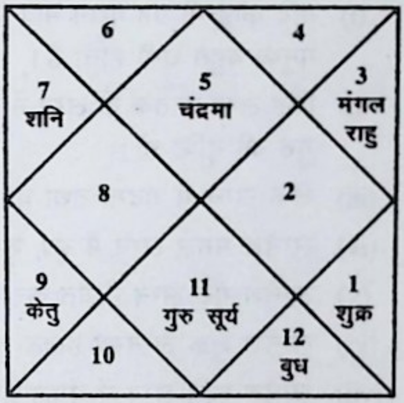

(ii) नवमेश मंगल की दृष्टि पंचम भाव में बैठे केतु पर है।

(iii) दशमेश शुक्र, नवमस्थ होकर पंचमेश नियंत्रक, शनि से दृष्ट है।

(iv) मंगल केन्द्र व त्रिकोण भाव का स्वामी होने से योगकारक है।

(v) योगकारक मंगल का दशमेश नियंत्रक होकर पंचम व षष्ठ भाव को देखना इन्हें बल, बुद्धि तथा यश देने वाला बना।

(4) सरदार पटेल 18 अक्तूबर 1875

विश्लेषण :

(i) सरदार पटेल की जन्म कुंडली के दशम भाव में दशमेश शनि की लग्नेश मंगल (उच्चस्थ) से युति है।

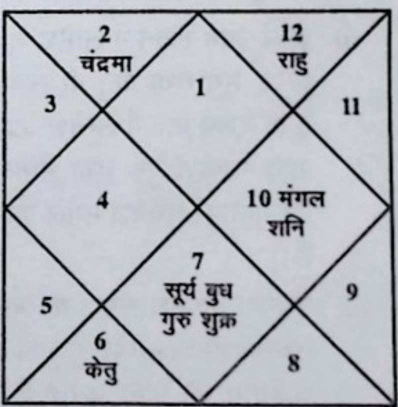

(ii) लग्नेश मंगल की दृष्टि लग्न, चतुर्थ तथा पंचम भाव पर है तो दशमेश शनि का दृष्टि संबंध, पंचमेश सूर्य नवमेश गुरु तथा पराक्रमेश बुध से हुआ है।

(iii) सप्तम भाव में सप्तमेश शुक्र की पराक्रमेश बुध, पंचमेश सूर्य तथा नवमेश गुरु से युति पर लग्नेश युक्त दशमेश शनि की दृष्टि ने इन्हें अद्भुत पराक्रम, बुद्धि व कौशल प्रदान किया। भारत की छः सौ से अधिक रियासतों का विलय कर, भारत को सुदृढ़ राष्ट्र बनाने का चमत्कार, इन्होंने अपनी सूझ-बूझ से, कर दिखाया जो निश्चय ही अविस्मरणीय है।

ब. धनयोग :

महर्षि पराशर ने अपने बृहत् पराशर होरा शास्त्र में धन योगों पर विशद चर्चा की है। कुछ प्रमुख योग निम्नलिखित हैं।

(i) यदि कोई भी ग्रह पंचम भाव में स्वगृही हो अर्थात पंचमेश पंचमस्थ हो तो मनुष्य बहुत धनी होता है।

(ii) सिंह लग्न जातक के लग्न में सूर्य तथा भाग्येश मंगल की युति पर पंचमेश गुरु की दृष्टि हो।

(iii) कर्क लग्न में चंद्रमा तथा बुध की युति पर भाग्येश गुरु की दृष्टि हो।

(iv) लग्नेश मंगल लग्न में बुध, शुक्र से युक्त तथा शनि से दृष्ट हो

(v) लग्नेश गुरु लग्न में बैठ कर मंगल तथा बुध से दृष्टि युति करे

(vi) लग्नेश शुक्र लग्नस्थ होकर बुध तथा शनि से दृष्टि युति करे।

(vii) लग्नेश शनि लग्न में मंगल तथा गुरु से दृष्टि युति संबंध करे।

इनमें से कोई भी योग जन्म कुंडली में होने से जातक धनी मानी होता हे। इनके अतिरिक्त भी अनेक धन योग हैं।

(5) सर शेषाद्रि अय्यर

विश्लेषण :

ये मैसूर के दीवान तथा धनिकों में अग्रगण्य थे।

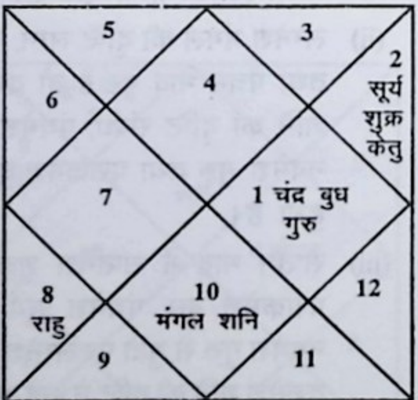

(i) इनके लाभ स्थान में लाभेश शुक्र की धनेश सूर्य तथा केतु के साथ युति है तो दशम भाव में लग्नेश चंद्रमा के साथ भाग्येश गुरु तथा भोगेश बुध की युति पर पंचमेश मंगल की दृष्टि है।

(ii) पंचमेश दशमेश मंगल का केन्द्र में उच्चस्थ होकर भाग्येश गुरु को देखना राजयोग की पुष्टि करता है।

(iii) दशमेश-पंचमेश मंगल योग कारक होकर, सप्तम भाव में सप्तमेश शनि से युति तो दशम भाव, लग्न व धन भाव से दृष्टि संबंध कर रहा है।

(6) पाकिस्तान के संस्थापक श्री जिन्ना
जन्म 20 कक्तूबर 1875, 14:30 घंटे, कराची (पाक)

विश्लेषण

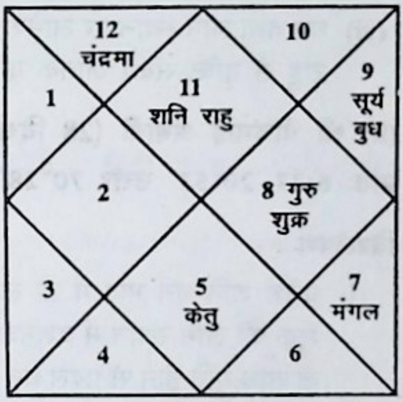

(i) धनेश-लाभेश गुरु की दशम भाव में नवमेश शुक्र के साथ युति है। ऐसा जातक कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट सफलता व धन पाता है।

(ii) नवमेश-दशमेश का राशि परिवर्तन तथा स्वगृही लग्नेश की दशम भाव पर दृष्टि राजयोग की पुष्टि कर धन वैभव बढ़ाती है।

(iii) **चंद्र कुंडली** में पंचमेश चंद्रमा लग्नस्थ है तो दशमेश गुरु भाग्यस्थान से लग्न व पंचम भाव को देख रहा है।

(iv) धनेश मंगल का अष्टम भाव से धन भाव को देखना जातक को आजीवन धनी बनाए रखता है।

(7) हैनरी फोर्ड (मोटरगाड़ी उद्योग के पितामह)
जन्म 30 जुलाई 1863, 14:10 ग्रीन फील्ड (इंग्लैंड)

विश्लेषण :

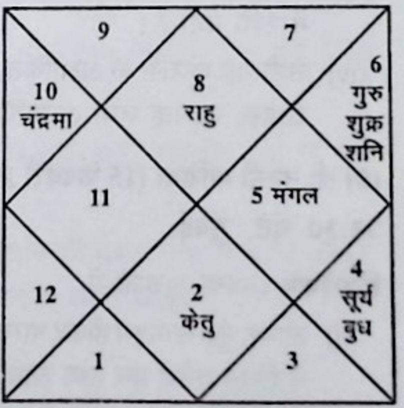

(i) धनेश गुरु सुखेश शनि तथा भोगेश शुक्र के साथ लाभ स्थान में है।

(ii) भाग्यस्थान में दशमेश सूर्य के साथ लाभेश बुध की युति, जातक को भाग्यशाली और धनी बनाती है।

(iii) लग्नेश मंगल का दशमस्थ होकर लग्न तथा पंचम भाव को देखना, जातक को आत्मविश्वास तथा बुद्धि बल दिया करता है।

(iv) **चंद्र कुंडली** में षष्ठेश बुध की अष्टमेश सूर्य के साथ सप्तम भाव में युति तथा चंद्रमा पर दृष्टि है। यह योग जातक को संघर्ष व स्पर्धात्मक शक्ति तथा अनुसंधान या अन्वेषण में रुचि प्रदान करता है।

(v) पंचमेश-दशमेश शुक्र का नवम भाव में लग्नेश शनि से युति करना तथा पराक्रमेश गुरु का भाग्य स्थान से चंद्रमा, पराक्रम भाव तथा पंचमस्थ केतु को देखना जातक को बुद्धिमान परिश्रमी तथा व्यवहार कुशल बनाता है।

(vi) धन तथा लाभ स्थान पर लाभेश मंगल की दृष्टि तथा धनेश शनि का लाभस्थ राहु से दृष्टि संबंध जातक को धनी बनाने में सहायक सिद्ध हुआ।

(8) श्री धीरुभाई अंबानी (28 दिसंबर 1932)

प्रातः 6:37, $20^0 53'$ उत्तर $70^0 28'$ पूर्व

विश्लेषण :

(i) धनेश शनि धन भाव में तो लाभेश शुक्र की लाभ स्थान में दशमेश बुध के साथ युति होने से प्रबल धन योग बना है।

(ii) पंचमेश मंगल, लग्नेश गुरु तथा स्वगृही धनेश शनि का सुख भाव से दृष्टि संबंध, जातक को बुद्धिमान, भाग्यशाली, धनी मानी और सुखी व्यक्ति बनाता है।

(iii) भाग्येश सूर्य की अष्टमेश चंद्रमा के साथ लग्न में युति तथा लग्नेश गुरु की धन भाव और धनेश पर दृष्टि, जातक को, कुछ नया काम कर, लाभ कमाने में रुचि देती है।

(iv) सभी ग्रह कुंडली के अलोकित भाग में होने से जातक ने बुद्धि बल, पराक्रम, साहस, उत्साह तथा आत्मविश्वास से धन मान व यश पाया।

(9) श्री नल्सी वाड़िया (15 फरवरी 1944)

13:30 घंटे, मुंबई

विश्लेषण : जन्म कुंडली में

(i) लाभेश गुरु उच्चस्थ होकर भाग्यस्थान में स्थित धनेश बुध तथा लाभ स्थान को देख रहा है।

(ii) दशमेश भाग्येश शनि, योग कारक होकर, लग्न मे भोगेश मंगल से युति कर, पराक्रम भाव में लाभेश गुरु

सप्तम भाव तथा दशम भाव में सुखेश सूर्य को देख रहा है।

(iii) **चंद्र कुंडली** में लाभेश सूर्य पंचमस्थ होकर लाभ स्थान को देख रहा है तो धन भाव पर धनेश मंगल तथा पंचमेश शनि की दृष्टि है।

(iv) दशम भाव में पराक्रमेश गुरु की राहु से युति पर नवमेश बुध की दृष्टि है। धनेश मंगल के लाभ स्थान से दृष्टि संबंध ने जातक को धनी व भाग्यशाली बनाया।

(10) बिल गेट्स (28 अक्तूबर 1955), रात्रि 20:58 सियाटल (अमेरिका)

विश्लेषण : जन्म कुंडली में

(i) चतुर्थ भाव में धनेश चंद्रमा (दशमस्थ) की, लाभेश मंगल तथा लग्नेश-सुखेश बुध की युति पर, दृष्टि है तो लाभ स्थान भी अपने स्वामी से दृष्ट है।

(ii) पंचमेश शुक्र, पराक्रमेश सूर्य तथा भाग्येश शनि की पंचम भाव में युति तथा लाभ स्थान पर दृष्टि अति शुभ व कल्याणकारी है।

(iii) दशमेश गुरु का नवम तथा, लाभ स्थान से दृष्टि संबंध है। **चंद्र कुंडली में**

(iv) पंचमेश चंद्रमा पर धनेश-भाग्येश मंगल तथा सुखेश बुध की दृष्टि है।

(v) अष्टम भाव में लाभेश शनि की, षष्ठेश सूर्य तथा अष्टमेश शुक्र से युति **विपरीत राजयोग** देती है।

(vi) लग्नेश गुरु, धनेश मंगल तथा लाभेश शनि की दशम भाव पर दृष्टि जातक को कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट सफलता, धन व कीर्ति प्रदान करती है

30.3 समीक्षा

घटना के स्वरूप निर्धारण में जन्म कुंडली की ग्रह स्थिति द्वारा बने योग और संभावनाओं पर विचार करना आवश्यक है। यहां 10 कुंडलियों पर विचार किया गया है।

कुंडली लग्न और लग्नेश	ग्रहों का संबंध	परिणाम
(1) **मेष**–मंगल की दृष्टि नवम भाव, नवमेश गुरु तथा दशमेश लाभेश शनि पर है तो भाग्येश गुरु पंचमस्थ होकर भाग्य तथा लग्न को देखता है।	पंचमेश सूर्य की तृतीयेश-षष्ठेश बुध तथा राहु के साथ दशम भाव में युति पर दशमेश शनि की दृष्टि है। धनेश शुक्र लाभस्थान में भाग्येश गुरु से दृष्ट है। दशम भाव अपने स्वामी की दृष्टि पाने से बली है।	नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिन्द फौज की स्थापना कर अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए विवश किया
(2) **तुला**–लग्नेश शुक्र तृतीय या पराक्रम भाव से भाग्यस्थान को देख रहा है तो भाग्येश बुध की योगकारक शनि और दशमेश चंद्रमा के साथ लग्न में युति है।	धनेश मंगल दशमस्थ होकर लग्न, चतुर्थ व पंचम भाव को देखता है तो लाभेश सूर्य धन स्थान में तृतीयेश-षष्ठेश गुरु से दृष्ट है।	भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महारानी लक्ष्मीबाई का शौर्य व साहस अविस्मरणीय है।
(3) **सिंह**–सूर्य; लग्नेश सूर्य की पंचमेश- अष्टमेश गुरु के साथ युति तथा लग्नस्थ चंद्रमा पर दृष्टि है।	चतुर्थेश-नवमेश योगकारक मंगल लाभस्थ हो कर धन भाव, पंचम तथा षष्ठ भाव को देख रहा है। पराक्रमेश शुक्र तथा पंचमेश गुरु का दृष्टि संबंध षष्ठेश शनि से हुआ है।	छत्रपति शिवाजी ने मुगल शासन के प्रति विद्रोह का बिगुल बजाकर इतिहास को नया मोड़ दिया।
(4) मेष–मंगल; पंचमेश सूर्य, नवमेश गुरु, तृतीयेश षष्ठेश बुध तथा द्वितीयेश सप्तमेश शुक्र की सप्तम भाव में युति और लग्न पर दृष्टि है।	दशमेश शनि की लग्नेश-अष्टमेश मंगल के साथ दशम भाव में युति है। लाभेश शनि का धनेश शुक्र के साथ दृष्टि संबंध है।	सरदार पटेल ने छोटी रियासतों का भारत में विलय कर देश को सुदृढ़ बनाया।

कुंडली लग्न और लग्नेश	ग्रहों का संबंध	परिणाम
(5) **कर्क**–चंद्रमा; लग्नेश चंद्रमा की भाग्येश गुरु तथा पराक्रमेश बुध के साथ दशम भाव में युति है तो दशमेश मंगल, शनि से युति कर लग्न तथा दशम भाव को देख रहा है।	लाभ स्थान में धनेश सूर्य की लाभेश शुक्र के साथ युति है तो भाग्येश गुरु तथा दशमेश मंगल की धन भाव पर दृष्टि है।	मैसूर राज्य के भूतपूर्व दीवान सर अय्यर प्रतिष्ठित धनी मानी व्यक्ति थे।
(6) **कुंभ**–शनि; लग्नेश-व्ययेश शनि की लग्न में राहु के साथ युति है। लग्नेश शनि पराक्रम भाव तथा धनेश और भाग्येश को देख रहा है।	धनेश–लाभेश गुरु की भाग्येश शुक्र के साथ युति तथा धन भाव पर दृष्टि है। नवमेश–दशमेश का राशि परिवर्तन हुआ है। पंचम भाव तथा पराक्रम भाव अपने स्वामी से दृष्ट है।	श्री जिन्ना प्रतिष्ठित वकील तथा पाकिस्तान के संस्थापक बने।
(7) वृश्चिक–मंगल; लग्नेश मंगल दशमस्थ होकर लग्न को देख रहा है।	भाग्य स्थान में दशमेश सूर्य तथा लाभेश बुध की युति पर भाग्येश चंद्रमा की दृष्टि है। धनेश गुरु का लाभ स्थान में भोगेश शुक्र तथा तृतीयेश–चतुर्थेश शनि के साथ युति और पंचम भाव पर दृष्टि है।	श्री हेनरी फोर्ड मोटर गाड़ी उद्योग के पितामह तथा संसार के सार्वधिक धनी व्यक्ति माने जाते थे।
(8) **धनु**–गुरु; भाग्येश सूर्य तथा अष्टमेश चंद्रमा की लग्न में युति है तो लग्नेश गुरु दशम भाव से द्वितीयस्थ द्वितीयेश को देख रहा है।	पंचमेश मंगल नवमस्थ है। धनेश शनि धन भाव में स्वगृही है तो लाभ स्थान में लाभेश शुक्र की दशमेश बुध के साथ युति है।	श्री धीरूभाई अंबानी की गणना संसार के सर्वाधिक धनी व्यक्तियों में होती है। द्वितीयेश का लाभेश से संबंध योगकारक है।

कुंडली लग्न और लग्नेश	ग्रहों का संबंध	परिणाम
(9) वृष–शुक्र; नवमेश-दशमेश शनि की सप्तमेश-व्ययेश मंगल के साथ लग्न में युति है तो लग्नेश शुक्र अष्टमस्थ होकर धन भाव को देख रहा है।	धनेश बुध की भाग्य स्थान में केतु से युति पर लाभेश गुरु की, पराक्रम भाव से, दृष्टि है। लाभेश गुरु का दृष्टि संबंध धनेश बुध, भाग्य स्थान तथा लाभ स्थान से हुआ है।	श्री नल्सी वाडिया भारत के प्रमुख उद्योगपति हैं। इन्होंने देश विदेश में धन व यश कमाया।
(10) मिथुन–बुध लग्नेश बुध सुख भाव में उच्चस्थ होकर लाभेश मंगल से युक्त तथा धनेश चंद्रमा से दृष्ट है।	दशमेश गुरु की सप्तम, नवम तथा लाभ स्थान पर दृष्टि है। दशमेश नियंत्रक पराक्रमेश सूर्य की पंचमेश शुक्र तथा भाग्येश शनि (उच्चस्थ) के साथ पंचम भाव में युति तथा लाभ स्थान पर दृष्टि है। लग्नेश और लाभेश दशमस्थ धनेश को देखते हैं तो लाभ स्थान भी अपने स्वामी से दृष्ट है।	श्री बिल गेट्स को कम्प्यूटर सम्राट तथा संसार का सार्वधिक धनी व्यक्ति होने का गौरव प्राप्त है।

30.4 क्षमता व सामर्थ्य (Capacity and Capability)

1. कभी योगकारक ग्रह इतने दुर्बल या हीनबली होते हैं कि वे वांछित परिणाम नहीं दे पाते। इस बात को इस प्रकार समझें यदि किसी अकुशल व्यक्ति को उच्च पद या अधिकार दे दिया जाए तो वह, प्रबन्ध कुशलता या योग्यता की कमी के कारण, शुभ परिणाम दे पाने में असमर्थ रहता है। अतः संभावनाओं को सत्य बनाने के लिए संबंधित ग्रहों की शक्ति व शुभता का आंकलन करना आवश्यक है।
2. विद्वानों ने ग्रह बल और भाव बल जानने के लिए षडबल पद्धति का विकास

किया। ये स्रोत हैं स्थान, काल, दिशा, दृष्टि, चेष्टा और नैसर्गिक बल। इसी प्रकार अष्टक वर्ग के शुभ बिन्दु भी ग्रह की शक्ति व शुभता की जानकारी दिया करते है। कुछ विद्वान जैमिनी सूत्रों का उपयोग कर ग्रह की कार्य क्षमता व शक्ति का मूल्यांकन किया करते हैं।

3. अन्य विद्वानों का मत है कि जो ग्रह (i) शुभ भावों के स्वामी हो (ii) शुभ स्थान में हों (iii) शुभ ग्रहों से दृष्टि युति करें (iv) अपनी उच्च, मूलत्रिकोण या स्वराशि में स्थित हों तथा (v) पाप ग्रह या पाप भावाधिपति से किसी भी प्रकार का संबंध नहीं करते हों तो उनकी क्षमता व योग्यता पर संदेह नहीं करना चाहिए। ऐसे शुभ व बली ग्रह, अपनी दशा या भुक्ति में उपयुक्त गोचर मिलने पर प्रायः शुभ परिणाम दिया करते हैं।

4. (i) **ध्यान रहे** महर्षि पराशर व अन्य विद्वानों ने दुःस्थान (6, 8, 12 भाव) में हीन बली, शत्रुक्षेत्री या नीचराशिस्थ ग्रहों को शुभ माना है।

(ii) दुःस्थान (त्रिक भाव) के स्वामी यदि हीनबली व निर्बल हों तो वे भी शुभ परिणाम दिया करते हैं।

(iii) त्रिक भावेश यदि त्रिक भाव में ही हों अर्थात षष्ठेश यदि अष्टम अथवा द्वादश भावों में हो या अष्टमेश षष्ठ अथवा द्वादश भाव में हो या फिर व्ययेश षष्ठ या अष्टम भाव में हो तो **विपरीत राजयोग** बनने से जातक शुभ परिणाम पाता है।

5. विद्वानों का विचार है कि पाप ग्रह का दुर्बल या हीन बली होना भी शुभ प्रभाव दिया करता है। अनुभव में पाया गया कि अनिष्ट भाव में अनिष्ट ग्रह तथा शुभ स्थान में शुभ ग्रह शुभ परिणाम दिया करते हैं किन्तु केन्द्र भावों के स्वामी यदि शुभ ग्रह हों तो वे अधिक शुभ फल नहीं दे पाते इसी प्रकार पाप ग्रह, यदि केन्द्र या त्रिकोण के स्वामी हों तो वे, भी पाप फल नहीं दिया करते।

6. **त्रिषडाय भाव** (3, 6, 11 भाव) के स्वामी अशुभ माने जाते हैं किन्तु इन भाव में स्थित बली क्रूर ग्रह बहुधा शुभ फल दिया करते हैं। द्वितीय व सप्तम भाव को मारक कहा गया है। इनमें स्थित ग्रह या इन भावों के स्वामी अनिष्ट प्रभाव दे दिया करते हैं। इसी प्रकार एकादश भाव षष्ठ से षष्ठ होने के कारण धन वैभव देने के बावजूद देह सुख मे कमी देता है तो तृतीय भाव में स्थित शुभ ग्रह भाइयों का सुख तो देता है किन्तु अष्टम से अष्टम होने के कारण कभी थोड़ी बहुत, परेशानी या विपदा भी देता है।

7. ग्रह की क्षमता व सामर्थ्य की जांच करते समय उसकी भाव गत स्थिति और भावधिपत्य पर विचार करना, शुभ या अशुभ परिणाम की पहचान करने मे उपयोगी सिद्ध होता है। जो ज्योतिषी, मात्र ग्रह बल से शुभता की बात कहते हैं, कभी वे असत्य बात कहने से उपहास के पात्र बनते हैं। अनेक विद्वान किसी ग्रह के इष्ट फल और कष्ट फल को दशा विचार में उपयोगी पाते हैं। उनका विचार है कि जिस ग्रह के इष्ट फल अधिक और कष्ट फल कम हों उसकी दशा में शुभ फल पाने की संभावना अधिक होती है।

30.5 ग्रह दशा क्रम

1. जन्म के बाद किसी बालक को (i) यदि शुभ ग्रहों की दशा मिले तो उसका विकास निर्बाध रूप से होता है। वह जटिल व कठिन रोगों में नहीं फंसता, उसका लालन पालन तथा प्रारंभिक शिक्षा समुचित रूप से संपन्न होती है।

(ii) व्यक्तित्व निर्माण काल (formation of personality period) या **किशोरावस्था** में शुभ दशा, जातक का व्यक्तित्व निखारती है। उसमें आत्मविश्वास जगाती है तथा उसमें उमंग, उत्साह के साथ साहस व शौर्य की वृद्धि कर उसकी प्रतिमा निखारती है।

(iii) **यौवनकाल** में प्राप्त शुभ दशा अच्छी पत्नी, बच्चे व आजीविका संबंधी सुख बढ़ाती है। जातक समाज में प्रतिष्ठित लोगों का स्नेह भाजन बन कर उन्नति करता है।

(iv) **प्रौढ़ावस्था** में शुभ ग्रह की दशा जातक की आर्थिक व सामाजिक स्थिति सुदृढ़ करती है। उसकी संतान गुणी व सदाचारी होती है। जातक का पारिवारिक सुख बढ़ता रहता है।

(v) **वृद्धावस्था** में प्राप्त शुभ ग्रह की दशा जातक को स्वस्थ व संपन्न बनाती है। वह समाज में मान, प्रतिष्ठा व यश पाता है।

2. बचपन में पाप ग्रह की दशा कभी बालारिष्ट सरीखा प्रभाव देकर मारक सिद्ध होती है तो कभी कोई जातक शारीरिक या मानसिक अपंगता पाता है। जैसा कि पहले भी कहा गया जन्म कुंडली के अच्छे बुरे योग बहुधा संबंधित ग्रह की दशा में ही फलीभूत होते हैं। कभी अल्पवयस में माता पिता की स्नेह छाया से वंचित हो जाना या पढ़ाई आधी अधूरी छूट जाना भावी जीवन पर भी दुष्प्रभाव डालता है। ऐसा व्यक्ति सामान्य जीवन जीने में कठिनाई का अनुभव करता है।

3. अनेक विद्वान विवाह या नया व्यापार आरंभ करते समय ग्रह दशाक्रम पर

अवश्य विचार करते हैं। बहुधा ऐसा होता है कि अल्पावधि के लिए बहुत शुभ अन्तर्दशा और गोचर के प्रभाव से व्यक्ति बहुत धन, मान व यश पाता है। किन्तु यदि इसके बाद की दशाभुक्ति अशुभ और अनिष्टप्रद हो तो उसका पतन भी बहुत ही शीघ्रता से होता है। ऐसा जान पड़ता है मानो एक सुखद स्वप्न था जो आंख खुलते ही विलुप्त भी हो गया। *विज्ञज्योतिषी का कर्तव्य है कि वह दुर्बल या अनिष्ट प्रद दशा के बुरे प्रभावों से बचने का समुचित उपाय पहले से करा ले और स्वप्न सरीखी शुभ अवधि में भी जातक को सावधान व सजग बनाए रखे।*

4. ग्रह दशा जातक को विशेष क्षेत्र में उपलब्धि या सफलता पाने के अवसर प्रदान करती है। उदाहरण के लिए 15 से 21 वर्ष तक की आयु विद्या प्राप्ति या दक्षता बढ़ाने की आयु है। इस समय पंचम या नवम भाव से संबंधित ग्रह की दशा उच्चशिक्षा प्रदान करती है। ध्यान रहे दशा मार्गदर्शक सरीखी होती है। भुक्ति या अन्तर्दशा का स्वामी ग्रह घटना के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करता है तो गोचर मानो परिणाम की पोटली थमाने वाला डाकिया या डिलीवरी मैन है।

30.6 घटना का स्वरूप (Nature of Events)

1. घटना का समय और स्वरूप ग्रह दशा से किस प्रकार प्रभावित होता है इसे समझने के लिए संजय गांधी की जन्म कुंडली का विश्लेषण करें।

उदाहरण : श्री संजय गांधी (युवा कांग्रेस के अध्यक्ष)

लग्न	09:02:29				
सूर्य	07:28:27	चंद्र	04:12:31	मंगल	08:04:25
बुध	07:08:19	गुरु	06:23:53	शुक्र	06:24:40
शनि(व)	03:15:46	राहु	01:17:52	केतु	07:17:52

जन्म दशा केतु 5 मास 5 दिन

2. विश्लेषण

जन्म कुंडली (i) लग्न पर लग्नेश की दृष्टि जातक को प्रसिद्धि देती है। (ii) लग्नेश शनि सप्तमस्थ होकर अपने शत्रु मंगल से दृष्ट है तो सप्तमेश चंद्रमा अष्टमस्थ है। ऐसा योग दांपत्य सुख में कमी देता है। (iii) सत्ता सुख का कारक सूर्य षष्ठेश-नवमेश बुध के साथ लाभ स्थान में राहु से दृष्ट है। (iv) दशम भाव में स्वगृही दशमेश-पंचमेश (योगकारक) शुक्र की पराक्रमेश गुरु से युति होना शुभ है। ऐसा जातक साहसी, पराक्रमी व श्रेष्ठ कर्म करने वाला होता है (v) अलोकित

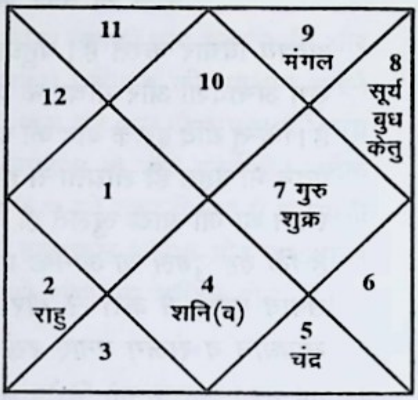

भाग में अधिक ग्रहों का जमघट जातक को मिलनसार, खुशमिजाज व सामाजिक व्यक्ति बनाता है। वह मित्रों में लोकप्रिय तथा समारोह की जान होत है (vi) त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रहों का ाव जातक के सुरक्षा कवच को दुर्बल बनाता है।

3. **चंद्र कुंडली :** व्ययेश चंद्रमा लग्न में तो लग्नेश सूर्य की धनेश-लाभेश बुध के साथ चतुर्थ भाव में युति, माता की श्रेष्ठता दर्शाती है। जातक की माता श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधानमंत्री रहीं। दशमेश शुक्र की पंचमेश गुरु के साथ पराक्रम भाव में युति, पुत्र को पराक्रमी व साहसी बनाती है। षष्ठेश-सप्तमेश शनि का व्यय भाव में मंगल से दृष्ट होना अनिष्ट प्रद है। चंद्रमा से दशमस्थ राहु राजयोग बनाता है।

4. **नवांश कुंडली :** (i) मकर लग्न वर्गोतम है। (ii) लग्न अपने स्वामी शनि तथा सप्तमेश स्वगृही चंद्रमा से दृष्ट है। ऐसा जातक प्रेयसी पत्नी का सुख पाता है। (iii) पंचम भाव में चतुर्थेश-लाभेश मंगल, पराक्रमेश गुरु तथा, पंचमेश-दशमेश शुक्र की युति पर लग्नेश की दृष्टि है। (iv) नवम भाव अपने स्वामी बुध से युक्त तथा पराक्रम भाव में स्थित अष्टमेश सूर्य तथा पराक्रमेश, गुरु से दृष्ट है। यह योग जातक को साहसी और पराक्रमी बनाता है। वह निर्भय शूरवीर होता है।

नवांश कुंडली

5. **घटना चक्र**

घटना	तारीख	विंशोत्तरी दशा
(1) पिता की मृत्यु	9 सितंबर 1960	शुक्र-शनि
(2) माता प्रधानमंत्री बनी	जनवरी 1966	शुक्र-बुध
(3) विवाह	29 सितंबर 1974	चंद्रमा-मंगल
(4) माता चुनाव हारी	मार्च 1977	चंद्रमा-गुरु
(5) जातक सांसद बना	जनवरी 1980	चंद्रमा-बुध
(6) विमान दुर्घटना में जातक की मृत्यु	23 जून 1980	चंद्र-बुध-शनि

6. **पिता की मृत्यु (शुक्र-शनि)**

श्री संजय गांधी ने मात्र 14 वर्ष की आयु में पिता की मृत्यु देखी। जन्म कुंडली में पिता की आयु संबंधी अरिष्ट पर ध्यान दें।

गोचर कुंडली

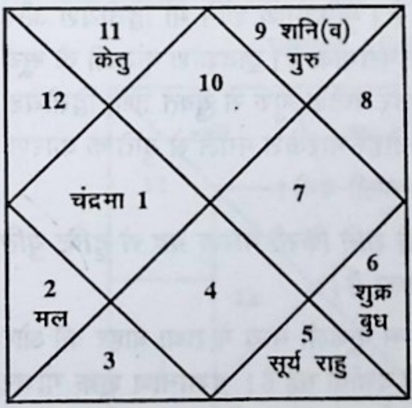

द्वादशांश कुंडली

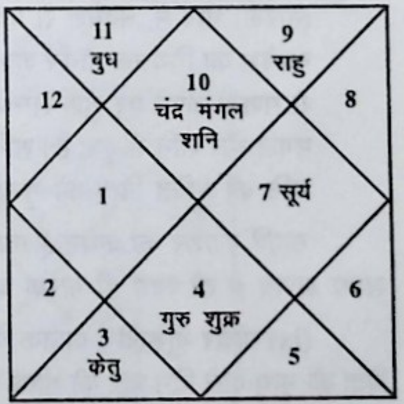

(i) नवमेश (पिता का लग्नेश) बुध अष्टमेश (पिता के व्ययेश) सूर्य के साथ है।
(ii) पिता का कारक सूर्य जातक की जन्म कुंडली में राहु केतु अक्ष में है।
(iii) इसी प्रकार सूर्य से नवमस्थ वक्री शनि; सूर्य षष्ठेश मंगल से दृष्ट है।
(iv) **नवांश कुंडली** का नवमेश बुध भले ही उच्चस्थ होने से शुभ जान पड़े किन्तु अष्टमेश सूर्य से दृष्ट होने के कारण पापी और अशुभ हो गया है।

(v) **द्वादशांश कुंडली** में भी नवमेश बुध, नवम भाव से षष्ठस्थ होकर षष्ठस्थ केतु से दृष्ट है तो कारक सूर्य अष्टमेश होकर नीचस्थ है तथा अपने शत्रु शनि से दृष्ट भी है।

(vi) **शुक्र शनि की दशा** शुक्र जन्म कुंडली का दशमेश या नवम भाव के लिए द्वितीयेश होने से, पिता के लिए मारकेश है। नवम भाव से गणना करने पर द्वितीय तथा सप्तम भाव के स्वामी गुरु शुक्र की मारक भाव में युति, शुक्र के मारक प्रभाव (पिता के लिए) को बढ़ा रही है। भुक्तिनाथ शनि की नवम भाव पर दृष्टि है। नवम भाव से गणना करने पर, शनि षष्ठेश होकर एकादश भाव (षष्ठ से षष्ठ) में है। पुनः स्वयं जातक के लिए शनि द्वितीयेश होकर सप्तमस्थ है अतः अशुभ प्रभाव देने में पूर्ण रूप से सक्षम है।

(vii) **सूर्य कुंडली** में दशानाथ शुक्र, सप्तमेश और राहु नियंत्रक होने से, प्रबल मारकेश है तो भुक्तिनाथ शनि, शत्रु क्षेत्री हो कर, नवमस्थ है। कारक सूर्य से नवम भाव भी, पिता का प्रतिनिधित्व करता है। पुनः नवमस्थ शनि पर षष्ठेश मंगल की दृष्टि तथा दशानाथ शुक्र की द्वितीयेश गुरु के साथ द्वादश भाव में युति पिता के लिए अनिष्टप्रद है।

(viii) **द्वादशांश कुंडली** में दशानाथ शुक्र, राहु नियंत्रक व्ययेश गुरु के साथ सप्तम (मारक) भाव में, नवमेश से षष्ठस्थ है। भुक्तिनाथ शनि भी द्वितीयेश और नवमेश का नियंत्रक होकर शुक्र से समसप्तक है। द्वादशांश कुंडली के **सूर्य से गणना करने पर** शुक्र लग्नेश होकर षष्ठेश, गुरु से युक्त तथा द्वितीयेश मंगल और शनि से दृष्ट है। शनि की दोहरे मारकेश मंगल से युति के कारण, शनि की भुक्ति पिता को मृत्यु देने वाली बनी।

महर्षि पराशर का कथन है जब कभी शनि किसी मारक ग्रह से दृष्टि युति संबंध करता है तो स्वयं ही मारक बन जाता है।

(ix) **गोचर कुंडली :** जातक की जन्म कुंडली मध्य में तथा बाहर की ओर पिता की मृत्यु वाले दिन ग्रहों की गोचर स्थिति दर्शायी गई है। **दशानाथ शुक्र** गोचर में नीचस्थ होकर नवम भाव में नवमेश के साथ है तथा भुक्तिनाथ शनि से दृष्ट है। गोचरवश दशानाथ-भुक्तिनाथ का नवम भाव तथा नवमेश से संबंध, पिता के लिए अनिष्टप्रद सिद्ध हुआ। पिता का कारक सूर्य अष्टमस्थ होकर, राहु से युक्त तथा मंगल (नवम भाव के लिए अष्टमेश) से दृष्ट है।

निष्कर्ष : शुक्र व शनि, नवम भाव से अनिष्ट भावों के स्वामी अर्थात् द्वितीयेश व षष्ठेश होने के कारण, पिता को मृत्यु देने वाले सिद्ध हुए।

9 सितंबर 1960 का गोचर

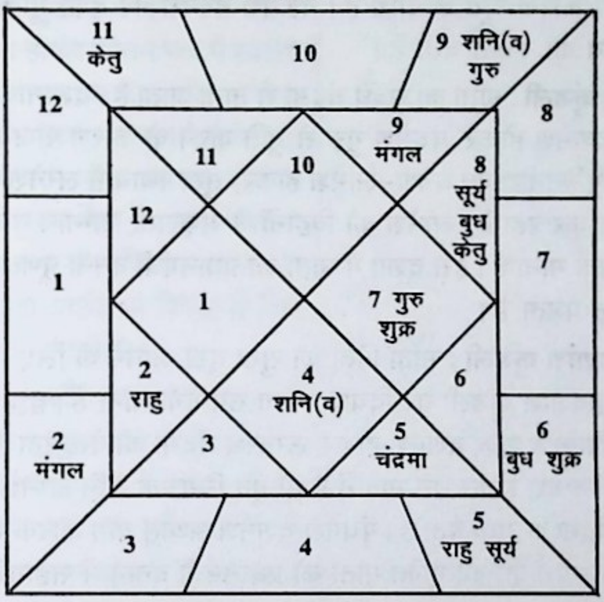

7. माता ने प्रधानमंत्री पद संभाला (शुक्र-बुध)

(i) जन्म कुंडली में दशानाथ शुक्र, पंचमेश-दशमेश होने से योगकारक होकर,

जनवरी 1966 का गोचर

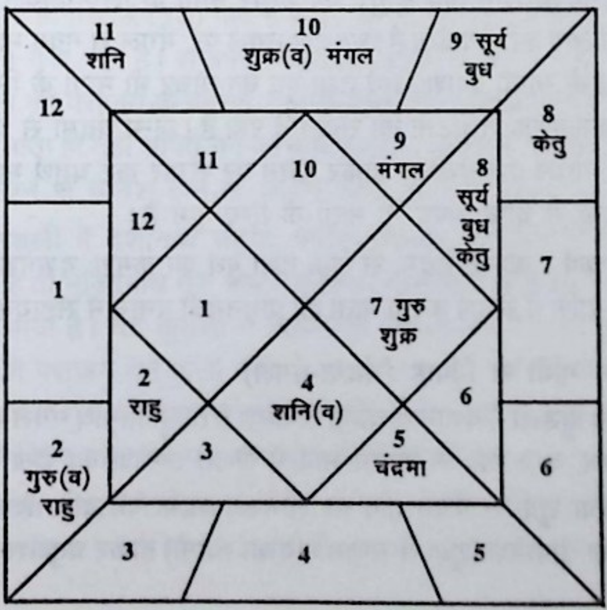

दशम भाव में स्वगृही है तो भुक्तिनाथ बुध भाग्येश होकर लाभ स्थान में सत्ता कारक सूर्य के साथ है। दशमेश-नवमेश की दशा भुक्ति बहुधा शुभ समय का संकेत देती है।

(ii) **चंद्र कुंडली** : माता का संबंध चंद्रमा से माना जाता है। दशानाथ शुक्र, चंद्रमा से दशमेश होकर, पंचमेश गुरु से युति करने के कारण राजयोग बना रहा है। भुक्तिनाथ बुध धनेश–लाभेश होकर, सुख स्थान में लग्नेश सूर्य के साथ युति कर रहा है। लाभेश को विद्वानों ने सफलता, सम्मान व उपलब्धि का कारक माना है। इस दशाा में माता का प्रधानमंत्री बनना पूर्णतया तर्कसंगत जान पड़ता है।

(iii) **द्वादशांश कुंडली** : माता पिता का सुख दुख जानने के लिए महर्षि पराशर ने द्वादशांश कुंडली पर विचार करना उपयोगी माना है। द्वादशांश कुंडली में दशानाथ शुक्र, दशमेश होकर, लग्नस्थ चंद्रमा को देख रहा है। भुक्तिनाथ बुध भाग्येश होकर धन भाव में है तो बुध नियंत्रक शनि लग्नेश होकर लग्न में चंद्रमा के साथ बैठा है। पंचमेश-दशमेश अर्थात् योग कारक शुक्र की दशा में, भाग्येश बुध की भुक्ति माता को प्रधानमंत्री बनाने में सहायक सिद्ध हुई।

(iv) **गोचर कुंडली** : जन्म कुंडली के चतुर्थ भाव की मेष राशि पर गोचर शनि (जन्म लग्नेश) तथा लग्न में स्थित उच्चराशिस्थ लाभेश तथा चतुर्थेश मंगल की दृष्टि है। ये योग माता के लिए बहुत शुभ व कल्याणकारी है। *जन्म चंद्रमा से दशम भाव में गुरु का गोचर माता के लिए कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट सफलता का योग देता है।* चतुर्थेश मंगल पर, मंगल से नवम भाव तथा दशम भाव के स्वामी क्रमशः, सूर्य तथा बुध का गोचर भी माता के लिए बहुत शुभ व कल्याणकारी घटना का संकेत दे रहा है। जन्म चंद्रमा से चतुर्थेश मंगल का, गोचर वश उच्चस्थ होकर, लग्न पर संचार कर चतुर्थ भाव तथा जन्म चंद्रमा से दृष्टि संबंध भी माता के लिए शुभ है।

निष्कर्ष : कारक चंद्रमा से शुक्र तथा बुध का क्रमशः दशमेश और लाभेश होकर शुभ राशि में संचार करना माता को प्रधानमंत्री बनाने में सहायक सिद्ध हुआ।

8. मेनका गांधी से विवाह (चंद्रमा-मंगल)

(i) **जन्म कुंडली** में दशानाथ चंद्रमा सप्तमेश है तो भुक्तिनाथ मंगल सुखेश-लाभेश होकर, व्यय भाव से सप्तम भाव में स्थित लग्नेश का देख रहा है।

(ii) **कारक शुक्र** से पंचम भाव पर लाभस्थ चंद्रमा की दृष्टि है तो भुक्तिनाथ मंगल, सप्तमेश (शुक्र से सप्तम भाव का स्वामी) होकर चतुर्थेश-पंचमेश, शनि

से दृष्टि संबंध कर रहा है।

(iii) **नवमांश कुंडली** में दशानाथ चंद्रमा सप्तमेश होकर सप्तम भाव में स्वगृही है तो मंगल, लाभेश और लग्नेश नियंत्रक होकर, पंचम भाव में पंचमेश तथा दांपत्य सुख कारक स्वक्षेत्री शुक्र के साथ बैठा है। पुनः नवमांश लग्नेश शनि की भुक्तिनाथ मंगल पर दृष्टि, इस अवधि को विवाह के लिए उपयोगी बनाती है।

विवाह का गोचर

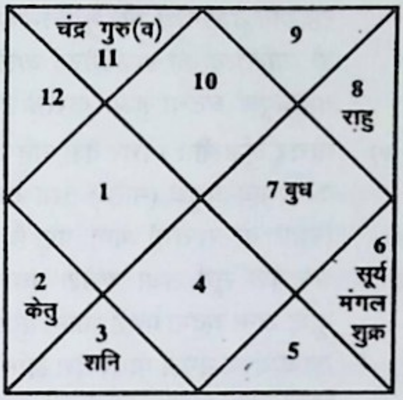

(iv) **गोचर कुंडली :** दशानाथ चंद्रमा गुरु के साथ कुटुम्ब भाव में है। चंद्रमा के साथ बैठे गुरु का दृष्टि संबंध शनि (लग्नेश) तथा बुध (भाग्येश) से हुआ है। भुक्तिनाथ मंगल, का भाग्य भाव में कारक शुक्र से युति करना, विवाह कराने में सहायक हुआ।

(v) **निष्कर्ष :** जन्म कुंडली में दशानाथ चंद्रमा तथा मंगल का संबंध सप्तम भाव से होने के कारण इनकी दशा भुक्ति विवाह कराने वाली बनी।

9. माता की चुनाव में पराजय (चंद्रमा-गुरु)

(i) **जन्म कुंडली** में दशानाथ चंद्रमा, माता का नैसार्गिक कारक होकर, अष्टम (अपमान, विपत्ति, अपयश) भाव में है, तो गुरु भी व्ययेश होकर चतुर्थ (माता) भाव को देख रहा है। सप्तमेश चंद्रमा की दशा में, व्ययेश गुरु की भुक्ति में, माता की पराजय के कारण, जातक ने मानसिक क्लेश पाया। ध्यान रहे चंद्रमा माता ही नहीं अपितु मन का कारक भी है। पुनः गुरु, चंद्रमा से अष्टमेश और लग्न से व्ययेश होने के कारण, पापी हो गया है।

(ii) **चंद्र कुंडली** में दशानाथ चंद्रमा, षष्ठेश-सप्तमेश शनि का नियंत्रक तथा व्ययेश है तो भुक्तिनाथ गुरु, अष्टमेश होकर दशमेश से युति करने से अनिष्ट प्रद हो गया है। चंद्र कुंडली में व्ययेश की दशा में अष्टमेश की भुक्ति यदि माता को पराजय देने वाली बनी तो इसमें आश्चर्य कैसा। ध्यान रहे चंद्रमा से अष्टमेश गुरु की दशमेश शुक्र से युति, कभी माता के लिए आजीविका क्षेत्र में विघ्न बाधा या पद भंग योग दिया करती है।

(iii) **द्वादशांश कुंडली** में चंद्रमा (सप्तमेश होने से) मारकेश होकर लग्न में व्ययेश गुरु (सप्तम या मारक भाव में स्थित) से दृष्ट है। पुनः व्ययेश गुरु की दशमेश

से युति भी माता के कार्यक्षेत्र में बाधा या व्यवधान का संकेत देती हैं। *ध्यान रहे यदि दशानाथ और भुक्तिनाथ का संबंध लग्न या लग्नेश से हो तो जातक के व्यक्तित्व को झकझोरने वाली, या जीवन में उथल पुथल मचाने वाली, महत्वपूर्ण घटना हुआ करती है।*

(iv) **गोचर कुंडली :** गोचर वश राहु केतु का प्रभाव चतुर्थ (माता) तथा दशम (माता के सप्तम) भाव पर है तो अष्टमेश सूर्य तथा षष्ठेश बुध की दृष्टि जन्म चंद्रमा पर है। जन्म कुंडली का व्ययस्थ मंगल गोचर वश लग्नस्थ होकर चतुर्थ भाव को देख रहा है। व्ययेश गुरु भी पंचमस्थ होकर भाग्य, लाभ तथा लग्न को देख रहा है। व्ययेश का भुक्तिनाथ होकर भाग्य या लाभ स्थान को देखना भाग्य और लाभ की हानि करता है। ध्यान रहे गोचर कुंडली में चतुर्थ भाव (माता), मंगल, शनि तथा राहु की दृष्टि के कारण, अत्याधिक पीड़ित हो गया है।

मार्च 1977 की गोचर कुंडली

निष्कर्ष : जन्म कुंडली में चंद्रमा सप्तमेश होकर अष्टमस्थ होने से अशुभ हो गया है। इस प्रकार गुरु भी चंद्रमा से अष्टमेश और लग्न से व्ययेश होने के कारण अनिष्टप्रद हो गया है।

10. जातक चुनाव जीतकर सांसद बना (चंद्रमा-बुध)

(i) **जन्म कुंडली** में चंद्रमा सप्तमेश होकर अष्टमस्थ है। सप्तम भाव, दशम से दशम होने के कारण पद, प्रतिष्ठा या सत्ता लाभ का भाव माना गया है। कभी सप्तमेश की दशा यदि उच्च अधिकार दिलाए तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। फिर यहाँ तो भुक्तिनाथ बुध भाग्येश होकर लाभस्थ है तथा दशानाथ से दशम (व्यापार व्यवसाय) भाव को भी देख रहा है।

दशांश कुंडली

(ii) **दशांश कुंडली** में दशानाथ चंद्रमा लाभेश होकर दशम भाव में बैठे भाग्येश शुक्र को देख रहा है। चंद्रमा की दशा में, भाग्यवृद्धि तथा कार्यक्षेत्र में सफलता व उन्नति पाना तर्क संगत है। भुक्तिनाथ बुध दशमेश-लग्नेश होकर लग्न में उच्चस्थ है। भुक्तिनाथ बुध का दशानाथ चंद्रमा से दशम भाव में उच्चस्थ होना कार्यक्षेत्र में उच्चपद व प्रतिष्ठा दिलाता है।

(iii) **नवांश कुंडली** में चंद्रमा सप्तमेश होकर सप्तम भाव में स्वक्षेत्री है। सप्तमेश कार्यक्षेत्र में पद प्रतिष्ठा दिलाता है। बुध षष्ठेश (स्पर्धा, प्रतियोगिता) नवमेश होकर नवम भाव में उच्चस्थ है। चंद्रमा अर्थात् सप्तमेश की दशा में भाग्येश बुध की भुक्ति ने जातक को सांसद बना दिया।

(iv) **गोचर कुंडली :** गोचर में दशमेश शुक्र लग्न में तो लग्नेश शनि भाग्य स्थान में है। लग्नेश शनि वक्री होने के कारण सिंह राशि से प्रभावी माना जाएगा। उस स्थिति में वक्री शनि की दृष्टि दशम भाव पर होगी। जन्मांग का चंद्र लग्नेश सूर्य, सत्ता का कारक होकर, गोचर वश भुक्तिनाथ बुध से युक्त तथा अपने नियंत्रक गुरु से दृष्ट है। चतुर्थेश मंगल वक्री होने से दशम भाव तथा दशमेश को देख रहा है। विद्वानों ने चतुर्थ भाव को जनता का सहयोग व समर्थन तो दशम भाव को राजा या राज्य प्राप्ति का भाव माना है।

जनवरी 1980 की गोचर कुंडली

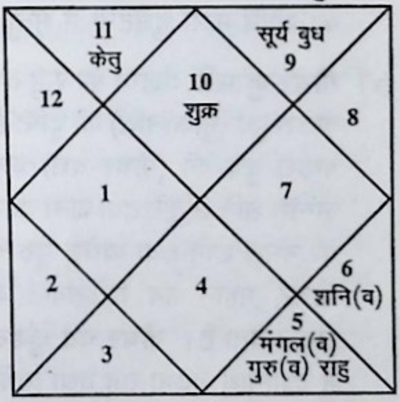

11. विमान दुर्घटना में जातक की मृत्यु (चंद्रमा बुध)

(i) जब किसी दशा भुक्ति में अच्छी बुरी दोनों प्रकार की घटनाएं होती हैं तो ज्योतिष प्रेमी काफी परेशान और उद्विग्न हो जाते हैं। उनका मन ये बात स्वीकार नहीं कर पाता कि जिस दशा भुक्ति ने जातक को जनता का समर्थन दिलाकर चुनाव जीतकर संसद भवन तक पहुँचा दिया, उसी दशा और भुक्ति में भला जातक की मृत्यु क्यों कर संभव हुई। विनम्र निवेदन है यही तो उस नीले अम्बर वाले की लीला है। उसके खेल समझ पाना सामान्य मनुष्य के लिए सहज संभव नहीं है।

(ii) **जन्म कुंडली** में दशानाथ चंद्रमा सप्तमेश होकर अष्टम भाव में है। ऐसे चंद्रमा

की दशा में मारक प्रभाव प्रत्यक्ष दिखता है। इसी प्रकार भुक्तिनाथ बुध षष्ठेश (दुर्घटना का स्वामी) होकर, एकादश भाव में अष्टमेश सूर्य से युक्त और राहु से दृष्ट है। बुध नियंत्रक मंगल का, द्वादशस्थ होकर लग्नेश शनि को देखना भी अचानक दुर्घटना को घातक बना रहा है।

(iii) **चंद्र कुंडली** में चंद्रमा से द्वितीय (मारक) भाव का स्वामी भुक्तिनाथ बुध, लग्नेश सूर्य से युति व राहु से दृष्टि संबंध कर रहा है; तो दशानाथ चंद्रमा षष्ठेश-सप्तमेश शनि का नियंत्रक तथा व्ययेश होने से अनिष्टप्रद है।

(iv) **नवांश कुंडली** में दशानाथ चंद्रमा सप्तमेश (मारकेश) होकर सप्तम (मारक) भाव में बैठने से प्रबल मारक हो गया है। इसी प्रकार भुक्तिनाथ बुध षष्ठेश तथा राहु नियंत्रक होकर अष्टमेश सूर्य से दृष्ट है। षष्ठ और अष्टम भाव का संबंध कभी दुर्घटना में मृत्यु होने का संकेत देता है।

(v) **गोचर कुंडली** : लग्न पर राहु तथा षष्ठेश बुध (भुक्तिनाथ) की दृष्टि है। षष्ठेश बुध की (गोचर वश) जन्म लग्नेश शनि से युति तथा जन्म चंद्रमा पर मंगल शनि तथा व्ययेश गुरु का गोचर, महान भय या संकट का संकेत देता है। **गोचर चंद्र कुंडली** में दशानाथ चंद्रमा राहु तथा व्ययेश नियंत्रक है तो भुक्तिनाथ बुध भी व्ययेश होकर राहु से ग्रस्त है। यहां अष्टमेश, अष्टम भाव में स्वगृही होने से, मृत्यु भय दे रहा है। इसी प्रकार षष्ठेश गुरु की सप्तमेश-द्वितीयेश (दोहरे मारकेश) मंगल तथा जन्म लग्नेश शनि से युति भी अनिष्टप्रद है। ध्यान रहे, मंगल तथा गुरु से युति के कारण, शनि पाप पीड़ित है। पापी शनि की चंद्रमा, अष्टम भाव तथा अष्टमेश शुक्र पर दृष्टि, आकस्मिक दुर्घटना तथा मृत्यु देने वाली बनी।

मृत्यु 23 जून 1980

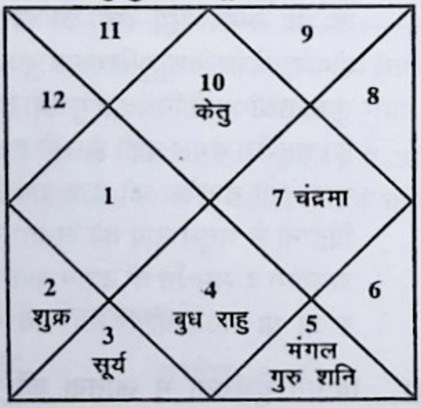

निष्कर्ष : चंद्रमा का सप्तमेश होकर अष्टमस्थ होना अशुभ है ये बात दोहराने की आवश्यकता नहीं है। भुक्तिनाथ बुध का षष्ठेश होकर गोचर वश राहु से युति कर [illegible] लग्नेश से संबंध करना मत्युप्रद सिद्ध हुआ।

29.7 कारकत्व विचार

दशा या भुक्तिनाथ का किसी भाव या भावेश से संबंध अधोलिखित कारकत्व दर्शाता है।

1. **लग्न :** देह, अंग या अवयव, देह संबंधी सुख-दुख, जन्मस्थान, ज्ञान, बल, आयु, यश, प्रतिष्ठा, राजनीति, आनन्द, रंग रूप, आजीविका, अभिमान, सिर और केश, दूसरों के लिए जुआ खेलना, मान-अपमान, निद्रा, त्वचा, दक्षता, परधन (बैंक का शेयर बाजार) दूसरों को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति, आरोग्य लाभ, असंतोष, स्वभाव या प्रकृति, ऐजेन्सी (अभिकरण), पशु-पालन, जाति बंधुओं से स्नेह, सम्मान या तिरस्कार पाना सरीखी बातों का विचार लग्न, लग्नेश या इनसे संबंध करने वाले ग्रह की दशा भुक्ति में किया जाना चाहिए।
2. **द्वितीय भाव :** धन, वाणी, कुल परंपरा में आस्था, दूसरों को आश्रय देना, न।खून, मनोरंजन, सत्यवादिता, जिह्वा (स्वाद), नेत्र (दृष्टि), वस्त्र या पोशाक, तांबा, हीरा, मोती, रत्न, दृढ़ निश्चय, सुगंध, कुटुम्ब, व्यापार, वाणी की सौम्यता, उदारता, धन संचय संबंधी प्रयास, मित्र या मैत्री संबंध, वैभव, कृपणता, छात्रवृति पाना, स्वर्ण, चांदी, अनाज, विनम्रता, नासिका (गंध), मन की स्थिरता, निकट संबंधी (आश्रित), आवागमन के नियम (रेल या विमान की समय सारिणी) तथा जीवन शक्ति का विचारं द्वितीय भाव, द्वितीयेश या इनसे दृष्टि युति करने वाले ग्रह की दशा भुक्ति में करते हैं। सभी भावों के लिए यही नियम है। द्वितीय भाव मारक स्थान, पत्नी का आयुष्य तथा धन और रत्नाभूषण को भी दर्शाता है।
3. **तृतीय भाव :** साहस, पराक्रम, शौर्य, छोटे भाई-बहन, कान, टांगें, सड़क के किनारे वाले स्थान, मतिभ्रम, स्वर्ण, चुस्त-दुरुस्त शरीर, दुःखदायी घटना, सैनिक, स्वप्न, निकट संबंधी, मित्र, पर्यटन (भ्रमण), गला (कंठ), शुद्ध भोजन खाना, संपदा का विभाजन, आभूषण, गुणवत्ता, ज्ञानार्जन, मनोरंजन, देह बल (भुजबल, मांसल शक्ति), लाभ, शारीरिक विकास, उच्चकुल से संबंध, दास-दासी, अंगूठे और प्रथम उंगली के मध्य का भाग, छोटी व श्रेष्ठ गाड़ी से यात्रा, बड़ा उपक्रम, धार्मिक कर्तव्य आदि तीसरे भाव से विचारें। कुछ विद्वान अष्टम से अष्टम होने के कारण इसे आयुष्य का भाव, चतुर्थ से द्वादश तथा नवम से सप्तम होने से माता-पिता के लिए मारक भाव मानते हैं। तृतीयेश व्यापारिक वाहन, दूर संचार तथा पर्यटन का कारक भी है।
4. **चतुर्थ भाव :** विद्या, राज्य, घर, यात्रा, वाहन, माता, बंधु बांधव तेल लगाना, जाति, वस्त्र, जल, जलाशय या नलकूप, दूध, सुगंध, सुख-संतोष यश प्रशंसा,

दिव्य औषधि, विश्वास (भरोसा), मिथ्या आरोप, टैन्ट या मंडप, विजय, थकाने वाले या ऊब भरे कार्य, भूमि, वाटिका, भूमि उत्खनन; जन कल्याण के लिए बांध या जलाशय का निर्माण; ननसाल, विवेक, निर्मल बुद्धि, श्वसुर, धन को भूमि में छिपाना, सुन्दर भवन या महल, समापन (निष्कर्ष), स्वभाव, घर छूटना, पैतृक भूसंपदा, देवताओं को समर्पित भोजन, चोरी की वस्तु कहां छिपी है उसका संकेत, चींटियों की बांबी, वैदिक व शास्त्रीय ग्रंथों पर टीका, गाय भैंस तथा हाथी घोड़े, धान्य तथा फसल की बहुलता आदि का विचार चतुर्थ भाव से करें। अन्य विद्वानों ने चतुर्थ भाव का संबंध जनता लोकसभा, तथा जनता के समर्थन से प्राप्त सिंहासन से माना है। इस भाव का स्वामी, या इस भाव से दृष्टि युति करने वाले ग्रह, अपनी दशा भुक्ति में कारकत्व संबंधी फल दिया करते हैं।

5. **पंचम भाव :** संतान, पिता का पुण्य, राजा या मंत्री, नैतिकता, बुद्धि, विद्या, गर्भ, चयन (चुनना discretion) छतरी, नीति कथाएं, मंगल उत्सव संबंधी निमंत्रण पत्र, पोशाक, महत्वपूर्ण वांछित कार्य, पैतृक धन संपदा, दूर दृष्टि, पत्नी के भाग्य से प्राप्त संपदा; रूपसियों का साथ, वैभव, दृढ़ता, रहस्य, गरिमा (decorum) या मर्यादा, कथा उपन्यास लिखना, कुशल क्षेम, मैत्री, साहित्य लेखन (पुस्तक प्रबंधन); कार्य आरंभ करना, उदर (पेट); मंत्रों की उपासना, कुबेर सरीखा धन वैभव; तुरंत खाने योग्य पदार्थों का दान, पाप पुण्य में भेद करने की क्षमता, वैदिक मंत्रों का उच्चारण (मंत्र गान), बुद्धिमत्ता, गहन चिंतन मनन, धन कमाने का साधन, मंगल उत्सव जिसमें गाना बजाना हो; परम सुख व संतोष, उच्च शिक्षा (पांडित्य), परंपरा से प्राप्त मुनीमी या सचिव का पद आदि का विचार पंचम भाव से करें। अन्य विद्वान संतान संबंधी सुख, यश प्रतिष्ठा, विद्या, बुद्धि, विचार, भावनाएं, अभिरुचि तथा पिता के भाग्य का विचार भी इसी भाव से करते हैं।

6. **षष्ठ भाव :** रोग, अवयव की सूजन, घाव, फोड़ा, संघर्ष, बाधा, मामा मौसी, बलगम, क्रूर कर्म (उत्पीड़न); पागलपन (insanity), शत्रुता, कृपणता, पके हुए चावल, थकान, कमजोरी,ऋृण (कर्जा) अपयश, शत्रु को सुख, क्षय, गर्मी, जलने कटने का घाव, मानसिक चिन्ता (चित्त क्लेश), बहु व्यथा, अनेकों से द्वेष या विरोध, नेत्र रोग, सहायता या उपहार पाना, असमय व अनियमित भोजन, वाहन से ग़िरना, जातिबंधु से भय और कष्ट, परिश्रम या प्रतियोगिता से लाभ, विष, हरनिया की पीड़ा, मान सम्मान की रक्षा करना, मूल-मूत्र संबंधी रोग, षडरस व्यंजन, प्रताड़ना, चाकरी, चोरी, विपदा, बंधन, भाईयों और

जाति बंधुओं के बीच गलतफहमी या भ्रान्तियों का विचार षष्ठ भाव से करें। अन्य विद्वानों ने इस भाव को दुर्घटना, प्रतियोगिता, संघर्ष, समझौता, मुकद्मा, चोट, बाधा व लड़ाई झगड़े का कारक माना है।

7. **सप्तम भाव :** विवाह, प्रेम में सफलता, व्यभिचार, दुष्ट स्त्रियों से वैर विरोध, सही मार्ग से भटकना, इत्र या सुगन्ध, पुष्प, गीत संगीत, पौष्टिक पदार्थों का सेवन, पान चबाना, यात्रा भंग होना, दही, स्मृति नाश (भूलने की बीमारी), वस्त्रों की प्राप्ति, वीर्य, पुंसत्व, पति की निष्ठा या पवित्रता, एकाधिक पत्नी (सौत), प्रजनन अंग, मूत्र, गुदा, व्यापार, मीठे पेय, सुधा, सूप या घी का सेवन, सत्ता या राज्य नाश, उपहार, शत्रु को परास्त करना, दूसरे स्थान में रखा धन, विवाद, मैथुन या संभोग, दत्तक पुत्र की प्राप्ति, घी में बनी वस्तुओं का स्वाद, विदेश, पत्नी, चोरी तथा मैथुन संबंधी गुप्त रहस्य का विचार सप्तम भाव से करें। सप्तम भाव मारक होने से कभी मृत्यु दे सकता है। दशम से दशम होने से ये भाव कार्य क्षेत्र में पद प्रतिष्ठा व उपलब्धि, समाज में मान प्रतिष्ठा तथा पत्नी के रंग रूप व स्वभाव को भी दर्शाता है।

8. **अष्टम भाव :** आयुष्य, सुख, पराजय, बीमे का मुआवजा, विकृत चेहरा, मूत्र रोग, विपदा, भाई का शत्रु, पत्नी को देह कष्ट, केश सज्जा, शत्रु का किला (दुर्ग स्थल) आलस्य, राजदंड, भय, धन नाश, ऋण देना, (किसी को पैसा उधार देना), प्रमादवश या भूल से दूसरों के धन की प्राप्ति, पुरानी या विवादग्रस्त संपत्ति, दुष्ट व्यक्ति का दर्शन (मिलना); पाप, जीवहत्या, अंग हानि, सिर कटना, दुख और क्लेश मिलना, चित्त को व्यथित या उद्विग्न बनाने वाला समाचार या किस्सा, लगातार एक के बाद दूसरे कष्ट की प्राप्ति, पाप कर्मो में उलझना, युद्ध, अत्याधिक मानसिक क्लेश या मनोव्यथा आदि अष्टम भाव से विचारें। विद्वानों ने अष्टम भाव को मृत्यु, पदभंग, स्थान परिवर्तन, अपमान अपयश तथा अप्रत्याशित घटनाओं का कारक माना है।

9. **नवम भाव :** पिता, पौत्र, भाग्य, धर्म, दान, तप, पवित्र तीर्थ, गुरुजन का आदर, औषधि, चरित्र, पवित्र व निष्कलुष मन, देवोपासना, विद्या प्राप्ति के लिए प्रयास या परिश्रम, वैभव, वाहन, बाहुल्य (विपुलता), नीति, धर्म कथा (सत्कथा); यात्रा पर्यटन, गंगास्नान, पुष्टि, साधु संगति, शुभता व सुख, पैतृक संपदा, पुत्र-पुत्री, विविध भोग ऐश्वर्य, हाथी, घोड़े, भैंस, राज्याभिषेक भवन, ब्रह्मज्ञान की मठ स्थापना, वैदिक यज्ञ व धार्मिक अनुष्ठान तथा धन के दान या वितरण आदि का विचार नवम भाव से करें।

10. **दशम भाव :** व्यापार व्यवसाय आजीविका, उपलब्धि उच्च अधिकार, पद

प्रतिष्ठा, पिता का धन, राज सम्मान, घुड़सवारी, खेलकूद, राजकाज, चाकरी, कृषि, चिकित्सक, यश, कोष संरक्षण, यज्ञ व धार्मिक उत्सव, उत्कृष्टता, बड़े बूढ़े लोग, यंत्र-मंत्र, माता, प्रगति (विस्तार); पुण्य (परोपकार), औषधि, घुटना, देवता, इष्ट सिद्धि, वैभव, दत्तक पुत्र, स्वामी (नियोजक), पथ, मान-सम्मान, सम्मान युक्त जीवन, राजकुमार, यश, प्रशिक्षण या अध्यापन, मोहर, गौरव, प्रबन्ध कौशल (आधीनस्थ कर्मचारियों का नियंत्रण); हुकुम चलाने की प्रवृत्ति का विचार दशाम भाव से होता है।

11. **एकादश भाव :** विविध प्रकार के लाभ, सभी प्रकार की प्राप्तियां, पराधीनता, दुराशा (मिथ्या मनोरथ) कुत्सित इच्छा, चाचा बुआ, देव पूजा, संत व गुणी जन का पूजन, विद्या प्राप्ति, धन कमाने की क्षमता, पैतृक धन, आगे बढ़ने या प्रगति करने की योग्यता, घुटना, श्रेष्ठ पदवी, रत्नाभूषण में आसक्ति, स्वामी (नियोजक) का धन; पूंजी निवेश पर ब्याज में हानि, प्रेमिका को रत्नाभूषण के उपहार देना, प्रज्ञा (प्रतिभा); मंत्रीपद (सचिव); श्वसुर से लाभ, भाग्योदय, अभीष्ट सिद्धि, सहज लाभ, भोजन पकाना, आशा (इच्छा), माता की आयु, टागें, मनोरम चित्रकारी, दस्तकारी (शिल्प कार्य) में निपुणता; बड़ा भाई तथा रोग (षष्ठ से षष्ठ होने के कारण) आदि का विचार इस भाव से करें।

12. **द्वादश भाव :** निद्रा से जगना, मानसिक क्लेश, दोनों पांव (चरण); शत्रु से भय, बंधन, पीड़ा से मुक्ति, ऋण से छुटकारा, हाथी घोड़े, पैतृक सम्पदा, शत्रु, स्वर्ग गमन, बायीं आंख, अंग भंग, जन विरोध, जनता से शत्रुता; विवाहेत्तर प्रणय संबंध (सौत या परपुरुष); विवाह बंधन टूटना, शयन सुख, त्याग, सत्तानाश (राज्य नष्ट होना), शत्रु द्वारा बंधन पाना, मनोव्यथा, दीनता, हानि पिता तथा भाई के सुख की हानि, विवाद (झगड़ा), क्रोध, देह क्षति (चोट), मृत्यु; विदेश यात्रा, सभी प्रकार के व्यय और हानि, पत्नी सुख का नाश आदि का विचार बारहवें भाव से करें। अन्य विद्वानों ने इस भाव को कपट, षडयंत्र, घोटाले, अस्पताल, आश्रम, बंदी सरीखा जीवन तथा विदेश यात्रा या विदेश संबंध का कारक माना है। श्री भसीन ने सूर्य, शनि, राहु के साथ व्ययेश को भी विच्छेदक (अलगाव देने वाला) ग्रह माना है।

29.8 समीक्षा

1. घटना का स्वरूप जानने के लिए सभावना, क्षमता, दशाक्रम तथा गोचर पर विचार करना सटीक परिणाम देता है।

2. संभावनाओं के अन्तर्गत 10 कुंडलियों पर विस्तृत चर्चा हुई है। बाद में तालिका बनाकर इन कुंडलियों की समीक्षा हुई है।
3. ग्रह का बल व क्षमता जानने के लिए षडबल, अष्टक वर्ग या इष्ट फल कष्ट फल पर विचार होना चाहिए।
4. जीवन के आरंभ में अच्छी दशा मिलना विद्या प्राप्ति तथा आजीविका में सहायक होता है। इसके विपरीत अशुभ दशा जीवन को अस्थिर व कष्टमय बनाती है।
5. घटना के समय व स्वरूप निर्धारण में दशा, भुक्ति तथा गोचर का महत्त्व श्री संजय गांधी के जीवन की छः महत्त्वपूर्ण घटनाओं द्वारा स्पष्ट किया गया है।

6. संजय गांधी के जीवन की समीक्षा

घटना व तारीख	विंशोत्तरी दशा	ग्रह स्थिति और संबंध
(1) पिता की मृत्यु 09-09-60	शुक्र-शनि	शुक्र दशमेश होकर दशम भाव में है तो शनि द्वितीयेश होकर नवम भाव को देखता है। नवम भाव से द्वितीयेश शुक्र की दशा में षष्ठेश की भुक्ति पिता के लिए अनिष्टप्रद रही। **द्वादशांश** में शुक्र, पिता का मारकेश है तो शनि, पिता का षष्ठेश व लग्नेश नियंत्रक होकर अष्टमेश मंगल से युक्त है तथा पंचम भाव से सप्तमेश गुरु और दशानाथ शुक्र को देखता है।
(2) माता प्रधानमंत्री बनी जनवरी 1966	शुक्र-बुध	शुक्र दशमेश होकर चतुर्थ भाव को देखता है। माता के कारक ग्रह चंद्रमा से, शुक्र दशमेश तो बुध लाभेश है। शुक्र, चंद्रमा से नवम (भाग्य) भाव को देख रहा है तो बुध दशम को देखता है। **गोचर** में बुध शुक्र, चतुर्थ भाव (माता) से क्रमशः नवम भाव और दशम भाव में हैं।

घटना व तारीख	विंशोत्तरी दशा	ग्रह स्थिति और संबंध
(3) मेनका गांधी से विवाह 29.9.1974	चंद्रमा-मंगल	चंद्रमा सप्तमेश है तो भुक्तिनाथ मंगल भोग स्थान (द्वादश) में बैठकर सप्तम भाव को देख रहा है। **गोचर** कुंडली में दशानाथ चंद्रमा की गुरु से युति तथा सप्तमेश पर दृष्टि है। भुक्तिनाथ मंगल की युति सप्तमेश नियंत्रक सूर्य तथा योगकारक शुक्र के साथ है।
(4) माता चुनाव में हारी मार्च 1977	चंद्रमा-गुरु	चतुर्थ भाव को यदि लग्न मानें तो दशानाथ चंद्रमा दशमेश शनि का नियंत्रक होकर दशमेश से मारक (द्वितीय) भाव में है। गुरु व्ययेश होकर, सप्तम भाव में सप्तमेश से युक्त है। अतः अनिष्ट प्रभाव देने वाला बना। **गोचर कुंडली** में मंगल शनि और केतु की दृष्टि जन्म चंद्रमा पर है। भुक्तिनाथ गुरु चतुर्थ से द्वितीय (मारक) स्थान में होने से अशुभ प्रभाव देने वाला बना।
(5) जातक सांसद बना जनवरी 1980	चंद्रमा-बुध	दशानाथ चंद्रमा सप्तमेश (पद प्रतिष्ठा) है तो बुध भाग्येश होकर लाभ स्थान में है। **दशमांश** में चंद्रमा लाभेश होकर दशम भाव को देखता है तो भुक्तिनाथ बुध दशमेश होकर लग्न में उच्चस्थ है। **गोचर** में जन्म चंद्रमा का संबंध लाभेश मंगल तथा गुरु से हुआ है। भाग्येश बुध का चंद्र नियंत्रक से संबंध हुआ है। पुनः बुध लाभेश मंगल से दृष्ट है।

घटना व तारीख	विंशोत्तरी दशा	ग्रह स्थिति और संबंध
(6) विमान दुर्घटना में मृत्यु 23 जून 1980	चंद्र-बुध	चंद्रमा सप्तमेश होकर अष्टमस्थ है तो बुध षष्ठेश होकर एकादश भाव में अष्टमेश से युक्त है। **गोचर** कुंडली में चंद्रमा, राहु का नियंत्रक है तो षष्ठेश बुध की राहु से युति और लग्न पर दृष्टि ने मृत्यु दी।

7. अध्याय के अंत में भाव संबंधी कारकत्व पर विस्तृत चर्चा हुई है।
8. इस अध्याय में कुल 16 कुण्डलियों पर विचार हुआ है।
9. अगले अध्याय में 'अशुभ दशा के उपचार' पर चर्चा होगी।

●●●

अध्याय-31

अशुभ दशा के उपचार

31.1 अशुभ दशा

1. विद्वानों ने सूर्य, मंगल, शनि तथा राहु को अशुभ या पाप ग्रह माना है। यदि ये पाप ग्रह, कभी जन्म कुंडली के दुःस्थान अर्थात षष्ठ, अष्टम और द्वादश भाव या इनके स्वामी ग्रहों से दृष्टि युति संबंध करें तो अवश्य ही चिन्ता परेशानी बढ़ाते हैं। कुछ विद्वानों ने तृतीय भाव को भी अशुभ या अनिष्टप्रद माना है। कारण यह दशम (अजीविका) से षष्ठ है तो षष्ठ का दशम अर्थात शत्रु या रोग का कर्म भाव भी है। अन्य शब्दों में तृतीय भाव यूँ तो पराक्रम, परिश्रम तथा साहस शौर्य या संचार साधनों का भाव तथा भाग्य का पूरक स्थान होने से शुभ है, किन्तु कभी व्यापार या नौकरी में शत्रुओं के कारण विघ्न या बाधा को भी दर्शाता है।
2. नीचराशिस्थ, शत्रु क्षेत्री या पापदृष्ट शुभ ग्रह भी, बहुधा अशुभ परिणाम दिया करते हैं। लग्नेश या कार्येश के शत्रु ग्रह की दशा और भुक्ति अथवा गोचरवश लग्न या लग्नेश पर पाप ग्रहों का प्रभाव अनिष्ट परिणाम दिया करता है। विज्ञ ज्योतिषी का दायित्व है कि वह जातक को संभावति अनिष्ट परिणामों की पूर्व जानकारी देकर सावधान कर दे।

31.2 सावधानी और सुरक्षा

1. अशुभ ग्रहों की दशा यूं तो बहुत लंबी होती है किन्तु समूची दशा एक सरीखी खराब नहीं होती। शनि की महादशा 19 वर्ष तो राहु महादशा 18 वर्ष बहुधा अनेक बार जातक को असफलता, निराशा, अर्थसंकट और अपयश दिया करती है। मंगल 7 वर्ष तो सूर्य की 6 वर्ष की अवधि में भी मन में क्षोभ, व्यग्रता, उद्विग्नता या रोग और दुर्घटना की संभावना बढ़ती है।
2. सूर्य संक्रान्ति के समय मन्दिर में खाद्य पदार्थों का दान (घी, चावल, आटा, दाल, नमक, हल्दी, गुड़ आदि) अशुभ प्रभाव को कम करता है।
3. इसी प्रकार जन्म नक्षत्र पूजन से मन में शांति बनी रहती है। स्वास्थ्य अच्छा

रहता है तथा देह पीड़ा या कष्ट से जातक की सहज ही रक्षा होती है।

4. नित्य प्रति इष्ट देव की उपासना, कमाई का चालीसवां भाग दान करना, धार्मिक समारोह में तन–मन धन से सहयोग करना तथा दीन दुःखी प्राणियों की सेवा सहायता करना बहुधा ग्रहों के अनिष्ट परिणाम से जातक को सुरक्षा प्रदान करता है।
5. कुछ विद्वानों का अनुभव है कि ग्रहों का अनिष्ट प्रभाव बढ़ने पर, तीर्थ स्थानों में पवित्रता पूर्वक रहना, तीर्थस्थल पर यज्ञ आदि करना बहुत प्रभावशाली व सटीक उपचार है।

31.3 ग्रहों के कारकत्व

(i) **सूर्य**–साहस, शौर्य, प्रतिष्ठा, अधिकार, ऊर्जा, आरोग्य, सम्मान व यश को दर्शाता है। सूर्य का पापत्व नेत्र रोग, अस्थि रोग, कलह, सिर दर्द, पित्त की अधिकता, ज्वर व देह की पीड़ा के साथ, कभी पद प्रतिष्ठा की हानि भी दिया करता है। **सूर्य, शनि और राहु** पृथकता Separation देने वाले ग्रह हैं। सूर्य जिस भाव या भावेश से संबंध करे अपनी दशा में, पाप भुक्ति मिलने पर, उक्त भाव के कारकत्व से अलगाव दे दिया करता है।

(ii) **चंद्रमा**–मन, माता, सुख संतोष, कोमल भावनाएं, संवेग, परिवारिक संबंध तथा वक्ष स्थल को दर्शाता है। देह में जलतत्व बढ़ने से होने वाले रोग यथा जलोदर, पेचिश, सर्दी जुकाम, श्वांस रोग, दमा तथा प्रदूषित जल से होने वाले रोग या रक्त विकार के रोग देता है। कभी स्मृति नाश, अवसाद, निराशा तथा दुःख और दरिद्रता, का मूल कारण भी चंद्रमा की अशुभता हुआ करती है। हृदय रोग, रक्तचाप में अनियमितता, माता के देह कष्ट को भी चंद्रमा का ही अशुभ फल जानें।

(iii) **मंगल**–बल, साहस, शौर्य, पराक्रम, परिश्रम, मांस पेशियों का बल, छोटे भाई बहन, भू संपदा, रक्तशुद्धि, रक्तचाप, उपद्रव, दुर्घटना तथा शल्य क्रिया का कारकत्व मंगल को प्राप्त है। मंगल की अशुभ दशा में रक्त विकार, चोट या दुर्घटना से देह में रक्त की कमी, मांस पेशियों की दुर्बलता, चोरी, दुर्घटना या अग्निकांड से आर्थिक क्षति होती है। कभी जलने कटने से बने घाव, फोड़े या अस्थिमज्जा Bone Marrow के रोग भी जातक को कष्ट देते हैं। नाहक विवाद कर शत्रुता मोल लेना या भाई बहन से मन मुटाव, हानि व क्लेश देना मंगल का स्वभाव है।

(iv) **बुध**–खेल कूद, दोस्तों के साथ मौज मस्ती, हास्य विनोद, मामा, दत्तकपुत्र,

व्यापार, पढ़ाई, वाणी, गणित, बुद्धि चातुर्य व हस्तशिल्प का प्रतिनिधि बुध है। त्वचा संबंधी रोग, मित्र व परिजनों से विवाद, पाचनतंत्र, स्नायुविक दुर्बलता, वाणी दोष, पुंसत्व की कमी, सांस नली या अंतडियों के रोग बुध के अशुभ परिणाम हैं। व्यापार में हानि, खातों में गड़बड़ी, मित्रों से धोखा मिलना, संबंधी व परिजन से अपमान, संचार व्यवस्था (रेल, बस, विमान यात्रा या टेलिफोन, कूरियर सेवा) के कारण कष्ट, भी बुध के पापत्व का परिणाम जानें।

(v) **गुरु**–बड़े भाई, विवेक, ज्ञान, अध्यात्म, संतान, गुरु तथा कानूनी मामलों का कारक है। गुरु पर पाप प्रभाव होने से प्रगति व धन लाभ में बाधा पड़ती है। कभी बड़े भाई, गुरुजन या संतान से मतभेद या विवाद क्लेश देता है। गुरु की राहु या शनि के साथ दृष्टि–युति हो अथवा राहु शनि गुरु की राशि धनु या मीन में बैठ कर, गुरु को देखें तो गुरु की दशा में धन, धर्म और यश की हानि होती है। कभी कोई स्त्री गुरु के पापत्व के कारण पति के सुख से वंचित हो जाती है। गुरु का पापत्व संतान को दुःख व कष्ट दिया करता है। मोटापा, विषव्रण, हार्निया, गुर्दे Kidney संबंधी रोग भी गुरु की अशुभ दशा–अंतर्दशा में हो सकते है।

(vi) **शुक्र**–गीत संगीत, सौंदर्य प्रसाधन, रत्नाभूषण, वैभव सामग्री, पति–पत्नी, वाहन, दांपत्य सुख, कलाकृतियां, सिनेमा, दूरदर्शन, विज्ञापन, मॉडल व स्वागतकर्ता Receptionist आदि पर शुक्र का अधिकार है। शुक्र पर पाप प्रभाव प्रमेह, रक्त की कमी, वीर्य दोष, यौन संसर्ग से हुए रोग या दांपत्य सुख की हानि दिया करता है। शनि या बुध क्षेत्री राहु, यदि शुक्र अथवा सप्तम भाव से संबंध करे तो पति पत्नी में अलगाव देता है।

(vii) **शनि** को रोग, अभाव, बंधन, दैन्यता व भय का कारक माना जाता है। पापग्रस्त शनि की दशा में, जातक वायुजनित रोग, वात पीड़ा, गठिया दमा या सुदीर्घ अवधि के जटिल रोगों से कष्ट पाता है। शनि, काल पुरुष का दुख होने से धन, मान और देह सुख की हानि कर, मनुष्य को भीतर से तोड़ कर उसे एकाकी बनाता है। कभी घृणित रोग या सेवकों का दुर्व्यवहार भी पीड़ा बढ़ाता है।

(viii) **राहु** को सर्प या विष कहा जाता है। राहु की दशा में विघ्न बाधा, श्रमिक या नीच (दुष्ट) लोगों के कारण हानि या उपद्रव, उत्पात से कष्ट होता है। कभी शनि और राहु अर्धांग, पागलपन या बेहोशी के दौरे दिया करता है। जहाँ गुरु वृद्धि कर कैंसर देता है वहाँ शनि और राहु विकास को अवरुद्ध कर पोलियोग्रस्त या मंदबुद्धि किया करता है। संक्रमण रोग, अपच, बुद्धि

भ्रम, वायु विकार, विष प्रभाव, कुष्ठ या विषैले जीवाणु से जातक कष्ट पाता है। विद्वानों ने राहु को नाना और दादी कहा है। राहु की दशा में पाप भुक्ति कभी नाना या दादी से वियोग करा के क्लेश देती है।

(xi) केतु यदि केतु अनिष्ट प्रभाव में होतो अपनी दशा भुक्ति में सूक्ष्म जीवाणु Virus से उत्पन्न जटिल रोग और कष्ट देता है। मतान्तर से यदि राहु दुःख और कष्ट की वृद्धि कर जातक का मोह भंग करता है तो केतु उसे प्रभु चरणों की ओर मोड़कर मोक्ष पथ का पथिक बनाता है। कभी केतु मंगल सरीखे अशुभ परिणाम अर्थात् रक्तस्राव, जलने कटने से बने घाव, चोर, शस्त्र घात या अग्निभय से धनहानि व चिन्ता भी देता है।

31.4 उपचार की आवश्यकता

(1) कुछ विद्वान सहज जिज्ञासावश प्रश्न करते हैं यदि प्रारब्ध का भोग अवश्यंभावी है तथा दैवीय विधान को बदला नहीं जा सकता तब ये उपचार किसलिए? यहाँ जन्म कुंडली में छिपे रहस्य को समझने के लिए आचार्य वराह मिहिर का कथन बहुत सटीक है।

कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि, यत्तस्य पंक्ति समभिव्यनक्ति

पूर्व जन्म में कमाये गए, शुभ अशुभ कर्मों कि अनुसार ही, जन्म के समय ग्रह स्थिति प्राप्त होती है। अन्य शब्दों में जन्म कुंडली में ग्रहों के संबंध से बने योग और दशा क्रम अपने ही किए कर्मों का फल हैं।

(ii) विनम्र निवेदन है कि गलत खानपान से वायु कुपित होने से उत्पन्न सिर दर्द में दर्द निवारक औषधि पीड़ा से मुक्ति दिलाती है। असावधानी वश हुई सड़क दुर्घटना में लगी चोट पर मरहम पट्टी कराने से स्वास्थ्य लाभ मिलता है। थोड़े में यदि एक पाप कर्म या कर्मदोष से कष्ट बढ़ता है तो दूसरा कर्म औषधि लेना, उस कष्ट को कम भी तो करता है। यह हम सभी का अनुभव है।

(iii) महर्षि पराशर का स्पष्ट आदेश है अनिष्ट परिणाम से बचने के लिए ग्रहशान्ति करानी चाहिए

"पराशर उवाच –

भास्कराद्याः खगाः पूर्वम् ये मया नव वर्णिताः
प्रभावितं जगदिदं समस्तमपि तैः सदा
तद्धीनं प्राणिनां तु सुख दुःखमतो जनः
तत् शान्ति धन वृष्टिः आयु कामस्तद्यज्ञमाचेरत।।

(बृहत्पाराशर होरा शास्त्र ग्रहशान्ति अध्याय 2:3)

पराशर जी बोले–मैंने सूर्यादि ग्रहों के विषय में पहले जो कुछ कहा है उन्हीं ग्रहों से ये सारा संसार प्रभावित है। प्राणियों के सुख दु:ख इन ग्रहों के अधीन है। अतः मनुष्य को धन, वर्षा तथा आयु की कामना से ग्रहों की यज्ञ (जप और हवन) द्वारा ग्रह शान्ति करनी चाहिए।

(iv) **जपानुष्ठानतः खेटा प्रीताः शुभ फल प्रदाः**

जप अनुष्ठान से प्रसन्न हुए ग्रह कल्याणकारी होते हैं।

(v) **दुष्टस्थान स्थितं खेटं जपहोमादि पूजनैः**
विप्राणां भोजनैर्दानैर्यत्नतः शान्तयेद बुधः।

दु:स्थान (6, 8, 12 भाव में) स्थित ग्रहों की शान्ति जप, पूजन, हवन, ब्राह्मण भोजन, दान आदि से करनी चाहिए। यही बुद्धिमान व्यक्ति का कर्त्तव्य है।

(v) **ग्रहे अनुकूले मनुजाः सुखिनो अभ्युन्नताः सदा**
प्रतिकूले दु:खभाज स्मस्मात्तान् परिपूजयेत।।

(बृहत्पाराशर होराशास्त्र ग्रहशान्तयाध्याय)

ग्रहों की अनुकूलता में मनुष्य सुखी और ग्रहों की प्रतिकूलता में दुखी रहते हैं। अतः पूजन आदि से ग्रह अरिष्ट की शान्ति करें।

(viii) संक्षेप में जब अच्छे बुरे कर्मों का फल, मनुष्य को अवश्य प्राप्त होता है तब अनजाने या अनचाहे रुप से हुए, पाप कर्म का दोष समाप्त करने के लिए क्यों न हम समझदारी से काम लेते हुए शुभ कर्म करें। शायद यही अरिष्ट शान्ति का दर्शन शास्त्र है।

31.5 ग्रह पूजन

सूर्यादि नवग्रह की मूर्ति 108 अंगुल ऊँची (मतान्तर से 108 सैन्टीमीटर) बनाकर मंत्रोच्चारण पूर्वक उन ग्रहों की दिशा में स्थापित करें।

ग्रह	धातु	आकृति
सूर्य	तांबा	सात घोड़े वाले रथ पर बैठे, सूर्य भगवान की दो भुजाएं हैं। वे कमल पर आसीन, पद्महस्त तथा कमल सरीखे, उज्जवल वर्ण वाले हैं।
चंद्रमा	स्फटिक (कांच)	दश घोडे के रथ पर सवार, सफेद रंग, सफेद वस्त्र तथा अलंकरणों से युक्त गदाधारी चंद्रमा दो भुजा वाले हैं।

ग्रह	धातु	आकृति
मंगल	लाल चंदन	लाल वस्त्र तथा लाल माला से सुशोभित चार भुजाधारी शूल शक्ति गदा तथा वर मुद्राधारण किए मंगल देव भेड़ पर सवार हैं।
बुध	सोना	पीली माला तथा पीले वस्त्र पहने, गदा कवच खडग तथा वर प्रदाता चतुर्भज बुध शेर पर सवार हैं।
गुरु	सोना	पीली कान्ति वाला अक्षसूत्र तथा दंड धारण किए वर प्रदाता गुरु हैं।
शुक्र	चांदी	सफेद आभावाले हाथ में कंमडल लिए वर प्रदान करने वाले शुक्र हैं।
शनि	लोहा	नील कान्ति, धनुष बाण, शूल तथा वर मुद्रा धारण किए चतुर्भुज शनि गिद्ध पर सवार हैं।
राहु	सीसा Lead	भयावह चेहरा, त्रिशूल, खड़ग धारण किए नील कान्ति वाले अशुभ कारक राहु सिंह पर सवार हैं।
केतु	कांसा Bronze	धूम्र वर्ण वाले गदाधारी द्विभुज वर दाता केतु गिद्ध पर सवार हैं।

31.6 ग्रहों के मंत्र और जप संख्या

(i)	सूर्य	ॐ हां हीं हौं सः सूर्याय नमः	(7 हजार)
(ii)	चंद्रमा	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः	(11 हजार)
(iii)	मंगल	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	(10हजार)
(iv)	बुध	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	(9 हजार)
(v)	गुरु	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	(19 हजार)
(vi)	शुक्र	ॐ द्रां द्रीं द्रौ स शुक्राय नमः	(16 हजार)
(vii)	शनि	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	(23 हजार)
(viii)	राहु	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	(18हजार)
(ix)	केतु	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	(7 हजार)

यदि ग्रह की मूर्ति उपलब्ध न हो तो ग्रह के चित्र का प्रयोग करें गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित **नवग्रह** (कोड 108) में ग्रहों के चित्र उपलब्ध हैं। कुछ विद्वान ग्रहों के यंत्र का भी उपयोग करते हैं।

ग्रहों के यंत्र

सूर्य यंत्र

6	1	8
7	5	3
2	9	4

ॐ आं आदित्याय नमः

चंद्र यंत्र

7	2	9
8	6	4
3	10	5

ॐ सों सोमाय नमः

मंगल यंत्र

8	3	10
9	7	5
4	11	6

ॐ भोम् भौमाय नमः

बुध यंत्र

9	4	11
10	8	6
5	12	7

ॐ बुं बुधाय नमः

गुरु यंत्र

10	5	12
11	9	7
6	13	8

ॐ गुं गुरवे नमः

शुक्र यंत्र

11	6	13
12	10	8
7	14	9

ॐ शुं शुक्राय नमः

शनि यंत्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

ॐ शं शनये नमः

राहु यंत्र

13	8	15
14	12	10
9	16	11

ॐ रां राहवे नमः

केतु यंत्र

14	9	16
15	13	11
10	17	12

ॐ कें केतवे नमः

1. कुछ विद्वान एक सहस्र मंत्र का जप तथा उसका दशांश हवन आहुती कर यंत्र को भुजा या गले में तावीज सरीखा बनाकर धारण करने की सलाह देते हैं। ये यंत्र तांबा तथा चांदी को हो तो उत्तम है।
1. अन्य विद्वान कागज पर यंत्र लिखने की सलाह देते हैं। चार खाने वाली कापी में बाहरी वर्ग बनाक, यंत्र में अंकों का लेखन न्यूनतम अंक से आरंभ कर क्रमशः बढ़ते हुए अधिकतम अंक को सबसे बाद में लिखें।
1. यदि यंत्र के अंक मंत्र पढ़ते हुए लिखें तो विशेष फलदायी होता है।
1. प्रतिदिन 100 यंत्र बनाना मात्र 6 से 8 मास में कार्यसिद्धि देता है।

31.7 ग्रहों का हवन और दान

जप पूर्ण होने पर घी, शहद, दूध, दही और गुड़ (चीनी) से 108 बार हवन करें। सूर्य के लिए अर्क (अकौन) चंद्रमा का पलाश, मंगल का खदिर, बुध का अपामार्ग (चिर चिरी) गुरु का पीपल (अश्वत्य), शुक्र का गूलर शनि का शमी, राहु का दूर्वा, केतु का कुश ये हवन की लकड़ियां हैं।

ससर्पिर्मधुना दहन जुहुयात् पयसाऽपि वा
अष्टोत्तर शतं वापि मनुयुक प्रमिंत बुधः।।

घृत, मधु, दही या दूध से 108 आहुतियां दें।

दान और जप से अनिष्ट फल नष्ट होता है। ग्रह का अशुभ प्रभाव मिट जाता है। इसके विपरीत रत्न धारण करने से निर्बल किंतु शुभ ग्रह को बल प्राप्त होता है और उसके शुभ फल में वृद्धि होती है। दान आर्थिक स्थिति के अनुरुप होना चाहिए। दान में कृपणता करना मूर्खता है। यदि सामान से लदा ट्रक कीचड़ में फंस जाए तो उसे खींचकर बाहर निकालने के लिए 20-25 व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है। ट्रक मात्र 15 मिनट में बाहर निकल जाएगा। यदि कोई व्यक्ति 2-3 मजदूरों से ट्रक बाहर निकालने का प्रयास करे तब तो मजदूर भी थकेगें और ट्रक भी फंसा रहेगा। असफलता और हताशा ही हाथ लगेगी। अभी पिछले दिनों सर्वोच्च न्यायलय ने जब जयललिता के विरुद्ध निर्णय दिया तो जातिका ने मन्दिर में हाथी दान कर पुनः मुख्यमंत्री का पद प्राप्त किया। ये आश्चर्य, सर्वोच्च न्यायालय की अवमानना कर सत्ता प्राप्त करना, समूचे विश्व ने देखा।

1. **सूर्य का दान** माणिक, स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, गुड़, घृत, लाल कपड़ा, लाल फूल केसर, मूंगा, लाल गाय या लाल चंदन का दान रविवार को प्रातः काल करें।
2. **चंद्रमा का दान** मोती, चांदी, चावल, मिसरी, दूध, दही, सफेद कपड़ा या फूल , शंख, कपूर, सफेद गाय, सफेद चंदन का दान सोमवार संध्या समय

करें।

3. **मंगल का दान** मूंगा, तांबा, मसूर, गुड़, घी, हरा वस्त्र, सभी प्रकार के पुष्प और फल, कपूर, चीनी, दस्ती औजार, तारपीन का तेल मंगलवार को सूर्यास्त से पूर्व अंतिम 5 घटी (या दो घंटे) में करें।
4. **बुध का दान** पन्ना, कांसा, मूंग, खांड, घी,हरा वस्त्र सभी प्रकार के पुष्प और फल, कपूर, चीनी, शिल्प कर्म के उपकरण या तारपीन का तेल बुधवार को सूर्यास्त से पूर्व, दिन के अन्तिम 5 घटी या दो घंटे में करें।
5. **गुरु का दान** पुखराज, कांसा Bronze, चने की दाल, बेसन, खांड, पीला कपड़ा, पीला पुष्प, हल्दी, घोडा, घी, शक्कर, बूंदी या बेसन के लड्डू का दान बृहस्पतिवार की शाम को अंतिम 5 घटी में करें।
6. **शुक्र का दान** हीरा, चांदी, चावल, मिसरी, दूध, दही, सफेद कपड़े, सफेद पुष्प, सुगंध, सफेद घोड़ा, सफेद चंदन का दान शुक्रवार सूर्योदय के समय पहले दो घंटे में करें।
7. **शनि का दान** नीलम, लोहा, उड़द, कुलथी, तेल, काला वस्त्र या पुष्प, कस्तूरी, काली गाय, भैंस, जूता, छाता, कृषि या बागवानी के यंत्र और उपकरण का दान शनिवार को संध्या काल में करें।
8. **राहु का दान** गोमेद, सीसा, तिल, नीले वस्त्र और पुष्प, खड़ग, कंबल, घोड़ा, सूप, कोयला, सप्त धान्य (उड़द, मूंगी, गेहूँ, चना जौ, चावल कंगनी) का दान सोमवार को सूर्योदय के समय पहली पांच घटी में करें।
9. **केतु का दान** लहसुनिया, लोहा, तिल, सप्त धान्य, तेल, धूम्र वस्त्र, नारियल, दस्ती औजार, कंबल का दान, रविवार को सूर्यादय के समय पहली 5 घटी (2 घंटे) में करें। कुत्ते को भोजन दें।

31.8 अन्य उपाय

(i) प्राच्य ऋषियों की मान्यता है कि यदि मणि, मंत्र और औषधि का सही प्रयोग किए जाए तो कठिन से कठिन रोग, बाधा और क्लेश निश्चित रुप से मिट जाता है।

(ii) कभी कुंडली उपलब्ध नहीं होती तो ज्योतिषी प्रश्न कुंडली बनाकर ग्रहों की गोचर स्थिति के अनुरुप ग्रह का उपचार करते हैं। कुछ विद्वान ईश्वर प्रार्थना को सर्वोपरि साधन मानते हैं। उनका तर्क है कि ग्रह तो आकाश में भटकते रहतें हैं, उनके पीछे मन को भटकाना उचित नहीं है। वे बस भगवान की पूजा उपासना को ही सही और अचूक उपचार मानतें हैं।

अहं सर्वस्य प्रभवो, मत्तः सर्वं प्रवर्तते
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भाव समन्विताः।।

(श्रीमद्भगद्गीता 10:8)

भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा "मैं ही मूल कारण हूँ समूची सृष्टि का मेरे ही प्रभाव से इस जगत की सत्ता है। इस तथ्य को जानकर, बुद्धिमान और विवेकी जन; भक्ति भाव से, नित्य प्रति मेरी उपासना करते हैं।

(iii) वे लोग भगवान के नाम जप, सत्संग, संकीर्तन तथा गीता, रामायण, भागवत, दुर्गा सप्तशती या पुराण पढ़ने सुनने को ही श्रेष्ठ उपाय मानते हैं।

(iv) गौरी पूजन, नील शनि स्तोत्र, विष्णु सहस्रनाम, संकट नाशन गणेश स्तोत्र, भवानी अष्टक, दुर्गा सप्तश्लोकी, कनक धारा स्तोत्र, जानकी मंगल, हनुमान चालीसा, संकट मोचन हनुमानाष्टक आदि अनेकों सिद्ध मंत्र और स्तोत्र हैं। विज्ञ पाठक गीता प्रेस गोरखपुर की दुर्गा सप्तशती (कोड 1346) स्तोत्र रत्नावली (कोड 052) विष्णु सहस्रनाम (कोड 206) श्री लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्र (कोड 710) स्तुति संग्रह (कोड 1355) आरती संग्रह (कोड 153), हनुमान चालीसा (कोड 1094) गजेन्द्र मोक्ष (कोड 225) का अवलोकन कर लाभ उठाएं।

31.9 विद्वानों के अनुभव और संस्मरण

(i) डॉक्टर सुरेन्द्र शर्मा शास्त्री, ज्योतिष मर्मज्ञ ने अपना अनुभव बताया जो इस प्रकार है। "पहले तो आतंकवाद के कारण कश्मीरी पंडितों ने कश्मीर घाटी से पलायन किया, बाद में सेना और आतंकवादी गतिविधियों से त्रस्त होकर संपन्न व संभ्रान्त मुस्लिम परिवारों को भी जम्मू आना पड़ा। एक दिन प्रातः जब दरवाजे की घंटी बजी तो मैं हैरान और शायद थोड़ा भयभीत था। सर्दी की रात का अन्तिम प्रहर, सूर्योदय में लगभग 5 घटी का समय शेष–और ये आगन्तुक कौन हो सकता है भला। साहस जुटा कर द्वार खोला तो, बन्दूक लिए एक व्यक्ति को सामने खड़ा पाया। अपना भय व झुंझलाहट छिपाकर, विनयपूर्वक मैंने उसके आने का कारण पूछा तो जो करुण कथा उसने सुनायी, उससे मेरा भय और क्षोभ; संवेदना, सहानुभूति या परदुखकातरता में बदल गया।

उस पठान की पुत्री को ससुराल वालों ने मात्र इस कारण निकाल दिया कि उसने पुत्र को नहीं बल्कि पुत्री को जन्म दिया। मैंने माता वैष्णवी का ध्यान किया और इस निरपराध बच्ची के लिए

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।

जप अनुष्ठान का संकल्प लिया। तीन दिन बाद वह पुनः दरवाजे पर था। प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही, बोला पंडित जी, "वे लड़की को बुला रहे हैं। अपने व्यवहार पर शर्मिंदा हैं। आप कहें तो बेटी को ससुराल भेज दूं।" मैंने कहा अभी नहीं भेजो 4-5 दिन रुको, फिर बिरादरी इकट्ठी कर समारोह कर उसे वापस भेजना। वह मेरी बात मान गया। मैंने भी अनुष्ठान पूरा कर लिया। वह लड़की पूरे मान सम्मान के साथ अपने ससुराल वापस पहुंची। कृतज्ञ पिता ने दक्षिणा के रूप में मुझे कुछ रत्नाभूषण व नगदी दी–पता नहीं क्यों, मुझे ऐसा लगा कि कहीं वह धन दूषित न हो। अतः पास के मन्दिर की दान पेटी में वह दक्षिणा डाल दी। इस मंत्र का प्रभाव सच में ही चौंका देने वाला है।"

(ii) एक व्यक्ति के विवाह में बाधा पड़ती थी, घर की परिस्थितियां भी थोड़ी विचित्र थीं। रोग पीड़ित वृद्ध पिता, तलाक प्राप्त कर घर में बैठी बहन, भला ऐसे परिवार में कौन पिता अपनी पुत्री देगा। वह भी थोड़ा निराश और उदास होकर बोला, "क्या मेरी शादी का कोई उपाय है?" विज्ञ पाठक कृपया ध्यान दें जब प्रश्न सीधा और निष्कपट भाव से किया जाये तो ज्योतिषी का दायित्व है कि वह अपनी योग्यता के अनुसार सटीक और अचूक उपाय बताए। जन्म कुंडली तो जन्म समय पर आश्रित ग्रह स्थिति है। यदि जन्म समय गलत है तो जन्म कुंडली भी भरोसे लायक नहीं होगी। उसे "**सप्तश्लोकी दुर्गा**" के नित्य दस पाठ, सौ दिन तक करने का परामर्श दिया। प्रभु कृपा से उसका विवाह एक सुन्दर सुशील कन्या से संपन्न हुआ और वह सुखी जीवन जी रहा है।

(iii) विवाह के लिए वर तलाशते माता पिता की पुत्री यदि दुर्घटनाग्रस्त हो जाये और मन में ये सन्देह हो कि वह कभी सामान्य भी हो सकेगी या नहीं; तो उनके मानसिक संताप को समझ पाना काफी कठिन है। किन्तु सत्य तो बहुधा कल्पना की उड़ान को भी पीछे छोड़ जाता है। यहां भी ऐसा ही हुआ। कन्या रोग पीड़ित है इसकी चर्चा भी उसके विवाह में बड़ी बाधा बन सकती है। माता और पुत्री हताशा, निराशा व दुःख की अंधियारी गुफा में जीवन का मार्ग खोज रही थीं किन्तु शायद सभी ओर गहरा अंधियारा था। एक विद्वान ज्योतिषी ने उन्हें सलाह दी 'प्रभु की शरण जाओ, उनसे प्रार्थना करो, निश्चय ही सुख सफलता मिलेगी।' वे दोनों जप, भजन, आरती, स्तुति, व्रत और पूजा पाठ में लग गयीं। कलिकाल में ऐसी श्रद्धा या आस्था तो सुनायी

भी नहीं पड़ती, लेकिन पड़ौसियों और आत्मीयजन ने ये चमत्कार भी देखा। रोग पीड़ित कन्या स्वास्थ्य लाभ करने लगी, उसका आत्मविश्वास लौट आया। माता को भी लगा कि दुःख के बादल छटने लगे हैं। मात्र 10 माह में सगाई हो गई और अब वह विवाह के बाद ससुराल में सुखी जीवन जी रही है।

31.10 समीक्षा

(i) इस अध्याय के आरम्भ में अशुभ दशा की चर्चा के बाद सावधानी और सुरक्षा का महत्व बताया है। धर्म संचय या पुण्य बल से अरिष्ट फल नष्ट हो जाता है।

(ii) ग्रहों के कारकत्व की चर्चा के बाद उपचार की आवश्यकता पर बल दिया गया है। उपचार के अभाव में ज्योतिष शास्त्र आधा अधूरा तथा अप्रासंगिक हो जाता है।

(iii) पैरा 30.5 में ग्रह पूजन, 30.6 पर ग्रहों के मंत्र तथा 30.7 में हवन और दान का वर्णन है।

(iv) पैरा 30.7 में अन्य उपाय में भगवान की प्रार्थना, स्तुति और नाम जप से मिली सफलता की घटनाएं दी गई हैं।

●●●

परिशिष्ट 1–चंद्र स्पष्ट से ग्रह दशा का भोग्य काल जनना

चंद्र स्पष्ट		चंद्रमा मेष सिंह,धनु मे				चंद्रमा वृष कन्या मकर में				चंद्रमा मिथुन तुला कुभ में				चंद्रमा कर्क वृश्चिक मीन में			
Long. of Moon		Moon in Mesha Simha, Dhanus				Moon in Vrisha Kanya, Makara				Moon in Mithuna Tula, Kumbha				Moon in Karkata Vrischika, Mina			
°	'		y	m	d		y	m	d		y	m	d		y	m	d
0	0	Ketu	7	0	0	Sun	4	6	0	Mars	3	6	0	Jupiter	4	0	0
0	20	केतु	6	9	27	सूर्य	4	4	6	मंगल	3	3	27	गुरु	3	7	6
0	40		6	7	24		4	2	12		3	1	24		3	2	12
1	0		6	5	21		4	0	18		2	11	21		2	9	18
1	20		6	3	18		3	10	24		2	9	18		2	4	24
1	40		6	1	15		3	9	0		2	7	15		2	0	0
2	0		5	11	12		3	7	6		2	5	12		1	7	6
2	20		5	9	9		3	5	12		2	3	9		1	2	12
2	40		5	7	6		3	3	18		2	1	6		0	9	18
3	0		5	5	3		3	1	24		1	11	3		0	4	24
3	20		5	3	0		3	0	0		1	9	0	Saturn	19	0	0
3	40		5	0	27		2	10	6		1	6	27		18	6	9
4	0		4	10	24		2	8	12		1	4	24	शनि	18	0	18
4	20		4	8	21		2	6	18		1	2	21		17	6	27
4	40		4	6	18		2	4	24		1	0	18		17	1	6
5	0		4	4	15		2	3	0		0	10	15		16	7	15
5	20		4	2	12		2	1	6		0	8	12		16	1	24
5	40		4	0	9		1	11	12		0	6	9		15	8	3
6	0		3	10	6		1	9	18		0	4	6		15	2	12
6	20		3	8	3		1	7	24		0	2	3		14	8	21
6	40		3	6	0		1	6	0	Rahu	18	0	0		14	3	0
7	0		3	3	27		1	4	6		17	6	18		13	9	9
7	20		3	1	24		1	2	12	राहु	17	1	6		13	3	18
7	40		2	11	21		1	0	18		16	7	24		12	9	27
8	0		2	9	18		0	10	24		16	2	12		12	4	6
8	20		2	7	15		0	9	0		15	9	0		11	10	15
8	40		2	5	12		0	7	6		15	3	18		11	4	24
9	0		2	3	9		0	5	12		14	10	6		10	11	3
9	20		2	1	6		0	3	18		14	4	24		10	5	12
9	40		1	11	3		0	1	24		13	11	12		9	11	21
10	0		1	9	0	Moon	10	0	0		13	6	0		9	6	0
10	20		1	6	27	चंद्रमा	9	9	0		13	0	18		9	0	9
10	40		1	4	24		9	6	0		12	7	6		8	6	18
11	0		1	2	21		9	3	0		12	1	24		8	0	27
11	20		1	0	18		9	0	0		11	8	12		7	7	6
11	40		0	10	15		8	9	0		11	3	0		7	1	15
12	0		0	8	12		8	6	0		10	9	18		6	7	24
12	20		0	6	9		8	3	0		10	4	6		6	2	3
12	40		0	4	6		8	0	0		9	10	24		5	8	12
13	0		0	2	3		7	9	0		9	5	12		5	2	21
13	20	Venus	20	0	0		7	6	0		9	0	0		4	9	0
13	40	शुक्र	19	6	0		7	3	0		8	6	18		4	3	9
14	0		19	0	0		7	0	0		8	1	6		3	9	18
14	20		18	6	0		6	9	0		7	7	24		3	3	27
14	40		18	0	0		6	6	0		7	2	12		2	10	6
15	0		17	6	0		6	3	0		6	9	0		2	4	15
15	20		17	0	0		6	0	0		6	3	18		1	10	24
15	40		16	6	0		5	9	0		5	10	6		1	5	3
16	0		16	0	0		5	6	0		5	4	24		0	11	12
16	20		15	6	0		5	3	0		4	11	12		0	5	21
16	40		15	0	0		5	0	0		4	6	0	Mercury	17	0	0
17	0		14	6	0		4	9	0		4	0	18		16	6	27
17	20		14	0	0		4	6	0		3	7	6	बुध	16	1	24
17	40		13	6	0		4	3	0		3	1	24		15	8	21
18	0		13	0	0		4	0	0		2	8	12		15	3	18
18	20		12	6	0		3	9	0		2	3	0		14	10	15
18	40		12	0	0		3	6	0		1	9	18		14	5	12
19	0		11	6	0		3	3	0		1	4	6		14	0	9

चंद्र स्पष्ट से ग्रह दशा का भोग्य काल जनना–क्रमशः

y = वर्ष m = मास d = दिन

चंद्र स्पष्ट		चंद्रमा मेष सिंह, धनु में				चंद्रमा वृष कन्या मकर में				चंद्रमा मिथुन तुला कुंभ में				चंद्रमा कर्क वृश्चिक मीन में			
Long. of Moon		Moon in Mesha Simha, Dhanus				Moon in Vrisha Kanya, Makara				Moon in Mithuna Tula, Kumbha				Moon in Karkata Vrischika, Mina			
°	'		y	m	d		y	m	d		y	m	d		y	m	d
19	0	Venus	11	6	0	Moon	3	3	0	Rahu	1	4	6	Merc.	14	0	9
19	20	शुक्र	11	0	0	चंद्रमा	3	0	0	राहु	0	10	24	बुध	13	7	6
19	40		10	6	0		2	9	0		0	5	12		13	2	3
20	0		10	0	0		2	6	0	Jupiter	16	0	0		12	9	0
20	20		9	6	0		2	3	0	गुरु	15	7	6		12	3	27
20	40		9	0	0		2	0	0		15	2	12		11	10	24
21	0		8	6	0		1	9	0		14	9	18		11	5	21
21	20		8	0	0		1	6	0		14	4	24		11	0	18
21	40		7	6	0		1	3	0		14	0	0		10	7	15
22	0		7	0	0		1	0	0		13	7	6		10	2	12
22	20		6	6	0		0	9	0		13	2	12		9	9	9
22	40		6	0	0		0	6	0		12	9	18		9	4	6
23	0		5	6	0		0	3	0		12	4	24		8	11	3
23	20		5	0	0	Mars	7	0	0		12	0	0		8	6	0
23	40		4	6	0	मंगल	6	9	27		11	7	6		8	0	27
24	0		4	0	0		6	7	24		11	2	12		7	7	24
24	20		3	6	0		6	5	21		10	9	18		7	2	21
24	40		3	0	0		6	3	18		10	4	24		6	9	18
25	0		2	6	0		6	1	15		10	0	0		6	4	15
25	20		2	0	0		5	11	12		9	7	6		5	11	12
25	40		1	6	0		5	9	9		9	2	12		5	6	9
26	0		1	0	0		5	7	6		8	9	18		5	1	6
26	20		0	6	0		5	5	3		8	4	24		4	8	6
26	40	Sun	6	0	0		5	3	0		8	0	0		4	3	0
27	0	सूर्य	5	10	6		5	0	27		7	7	6		3	9	27
27	20		5	8	12		4	10	24		7	2	12		3	4	24
27	40		5	6	18		4	8	21		6	9	18		2	11	21
28	0		5	4	24		4	6	18		6	4	24		2	6	18
28	20		5	3	0		4	4	15		6	0	0		2	1	15
28	40		5	1	6		4	2	12		5	7	6		1	8	12
29	0		4	11	12		4	0	9		5	2	12		1	3	9
29	20		4	9	18		3	10	6		4	9	18		0	10	6
29	40		4	7	24		3	8	3		4	4	24		0	5	3
30	0		4	6	0		3	6	0		4	0	0		0	0	0

PROPORTIONAL PARTS FOR DASA OF PLANETS

(To be subtracted from the balance of *dasa* for increase by minutes of the longitude of Moon)

	Ketu (7y)		Venus (20y)		Sun (6y)		Moon (10y)		Mars (7y)		Rahu (18y)		Jupiter (16y)		Saturn (19y)		Merc. (17y)		
	m	d	m	d	m	d	m	d	m	d	m	d	m	d	m	d	m	d	
1	0	3	0	9	0	3	0	5	0	3	0	8	0	7	0	9	0	8	1
2	0	6	0	18	0	5	0	9	0	6	0	16	0	14	0	17	0	15	2
3	0	9	0	27	0	8	0	14	0	9	0	24	0	22	0	26	0	23	3
4	0	13	1	6	0	11	0	18	0	13	1	2	0	29	1	4	1	1	4
5	0	16	1	15	0	14	0	23	0	16	1	11	1	6	1	13	1	8	5
6	0	19	1	24	0	16	0	27	0	19	1	19	1	13	1	21	1	16	6
7	0	22	2	3	0	19	1	2	0	22	1	27	1	20	2	0	1	24	7
8	0	25	2	12	0	22	1	6	0	25	2	5	1	28	2	8	2	1	8
9	0	28	2	21	0	24	1	11	0	28	2	13	2	5	2	17	2	9	9
10	1	1	3	0	0	27	1	15	1	1	2	21	2	12	2	26	2	17	10
15	1	17	4	15	1	11	2	8	1	17	4	2	3	18	4	8	3	25	15
20	2	3	6	0	1	24	3	0	2	3	5	12	4	24	5	21	5	3	20

परिशिष्ट 2-ग्रह की दश अन्तर्दशा क्रम और अवधि

Antardasa अन्तर्दशा	Sun (Ravi)—6						Moon (Chandra)—10						Mars (Mangala)—7					
	Sub Periods			Total			Sub Periods			Total			Sub Periods			Total		
	y	m	d	y	m	d	y	m	d	y	m	d	y	m	d	y	m	d
Sun	0	3	18	0	3	18		—			—			—			—	
Moon	0	6	0	0	9	18	0	10	0	0	10	0		—			—	
Mars	0	4	6	1	1	24	0	7	0	1	5	0	0	4	27	0	4	27
Rahu	0	10	24	2	0	18	1	6	0	2	11	0	1	0	18	1	5	15
Jupiter	0	9	18	2	10	6	1	4	0	4	3	0	0	11	6	2	4	21
Saturn	0	11	12	3	9	18	1	7	0	5	10	0	1	1	9	3	6	0
Mercury	0	10	6	4	7	24	1	5	0	7	3	0	0	11	27	4	5	27
Ketu	0	4	6	5	0	0	0	7	0	7	10	0	0	4	27	4	10	24
Venus	1	0	0	6	0	0	1	8	0	9	6	0	1	2	0	6	0	24
Sun		—			—		0	6	0	10	0	0	0	4	6	6	5	0
Moon		—			—			—			—		0	7	0	7	0	0

Antardasa	Rahu—18						Jupiter (Brihaspati)—16						Saturn (Sani)—19					
	Sub Periods			Total			Sub Periods			Total			Sub Periods			Total		
	y	m	d	y	m	d	y	m	d	y	m	d	y	m	d	y	m	d
Rahu	2	8	12	2	8	12		—			—			—			—	
Jupiter	2	4	24	5	1	6	2	1	18	2	1	18		—			—	
Saturn	2	10	6	7	11	12	2	6	12	4	8	0	3	0	3	3	0	3
Mercury	2	6	18	10	6	0	2	3	6	6	11	6	2	8	9	5	8	12
Ketu	1	0	18	11	6	18	0	11	6	7	10	12	1	1	9	6	9	21
Venus	3	0	0	14	6	18	2	8	0	10	6	12	3	2	0	9	11	21
Sun	0	10	24	15	5	12	0	9	18	11	4	0	0	11	12	10	11	3
Moon	1	6	0	16	11	12	1	4	0	12	8	0	1	7	0	12	6	3
Mars	1	0	18	18	0	0	0	11	6	13	7	6	1	1	9	13	7	12
Rahu		—			—		2	4	24	16	0	0	2	10	6	16	5	18
Jupiter		—			—			—			—		2	6	12	19	0	0

Antardasa	Mercury (Budha)—17						Ketu—7						Venus (Sukra)—20					
	Sub Periods			Total			Sub Periods			Total			Sub Periods			Total		
	y	m	d	y	m	d	y	m	d	y	m	d	y	m	d	y	m	d
Mercury	2	4	27	2	4	27		—			—			—			—	
Ketu	0	11	27	3	4	24	0	4	27	0	4	27		—			—	
Venus	2	10	0	6	2	24	1	2	0	1	6	27	3	4	0	3	4	0
Sun	0	10	6	7	1	0	0	4	6	1	11	3	1	0	0	4	4	0
Moon	1	5	0	8	6	0	0	7	0	2	6	3	1	8	0	6	0	0
Mars	0	11	27	9	5	27	0	4	27	2	11	0	1	2	0	7	2	0
Rahu	2	6	18	12	0	15	1	0	18	3	11	18	3	0	0	10	2	0
Jupiter	2	3	6	14	3	21	0	11	6	4	10	24	2	8	0	12	10	0
Saturn	2	8	9	17	0	0	1	1	9	6	0	3	3	2	0	16	0	0
Mercury		—			—		0	11	27	7	0	0	2	10	0	18	10	0
Ketu		—			—			—			—		1	2	0	20	0	0

परिशिष्ट 3-अर्न्तदशा में प्रत्यन्तर दशा तालिका

m = मास d = दिन h = घंटे

सूर्य SUN—Sun सूर्य	m	d	h
Sun	0	5	10
Moon	0	9	0
Mars	0	6	7
Rahu	0	16	5
Jupiter	0	14	10
Saturn	0	17	2
Mercury	0	15	7
Ketu	0	6	7
Venus	0	18	0
Total	**3**	**18**	**0**

सूर्य SUN—Moon चंद्र	m	d	h
Moon	0	15	0
Mars	0	10	12
Rahu	0	27	0
Jupiter	0	24	0
Saturn	0	28	12
Mercury	0	25	12
Ketu	0	10	12
Venus	1	0	0
Sun	0	9	0
Total	**6**	**0**	**0**

सूर्य SUN—Mars मंगल	m	d	h
Mars	0	7	8
Rahu	0	18	22
Jupiter	0	16	19
Saturn	0	19	23
Mercury	0	17	21
Ketu	0	7	8
Venus	0	21	0
Sun	0	6	7
Moon	0	10	12
Total	**4**	**6**	**0**

सूर्य SUN—Rahu राहु	m	d	h
Rahu	1	18	14
Jupiter	1	13	5
Saturn	1	21	7
Mercury	1	15	22
Ketu	0	18	21
Venus	1	24	0
Sun	0	16	5
Moon	0	27	0
Mars	0	18	22
Total	**10**	**24**	**0**

सूर्य SUN—Jupiter गुरु	m	d	h
Jupiter	1	8	10
Saturn	1	15	14
Mercury	1	10	19
Ketu	0	16	19
Venus	1	18	0
Sun	0	14	10
Moon	0	24	0
Mars	0	16	19
Rahu	1	13	5
Total	**9**	**18**	**0**

सूर्य SUN—Saturn शनि	m	d	h
Saturn	1	24	3
Mercury	1	18	11
Ketu	0	19	23
Venus	1	27	0
Sun	0	17	2
Moon	0	28	12
Mars	0	19	23
Rahu	1	21	7
Jupiter	1	15	15
Total	**11**	**12**	**0**

सूर्य SUN—Mercury बुध	m	d	h
Mercury	1	13	8
Ketu	0	17	20
Venus	1	21	0
Sun	0	15	7
Moon	0	25	12
Mars	0	17	21
Rahu	1	15	22
Jupiter	1	10	19
Saturn	1	18	11
Total	**10**	**6**	**0**

सूर्य SUN—Ketu केतु	m	d	h
Ketu	0	7	8
Venus	0	21	0
Sun	0	6	7
Moon	0	10	12
Mars	0	7	8
Rahu	0	18	22
Jupiter	0	16	20
Saturn	0	19	23
Mercury	0	17	20
Total	**4**	**6**	**0**

सूर्य SUN—Venus शुक्र	m	d	h
Venus	2	0	0
Sun	0	18	0
Moon	1	0	0
Mars	0	21	0
Rahu	1	24	0
Jupiter	1	18	0
Saturn	1	27	0
Mercury	1	21	0
Ketu	0	21	0
Total	**12**	**0**	**0**

MOON—SUB-PERIODS — 10 YEARS

MOON — Inter-Periods

चंद्र MOON—Moon चंद्र	m	d	h
Moon	0	25	0
Mars	0	17	12
Rahu	1	15	0
Jupiter	1	10	0
Saturn	1	17	12
Mercury	1	12	12
Ketu	0	17	12
Venus	1	20	0
Sun	0	15	0
Total	**10**	**0**	**0**

चंद्र MOON—Mars मंगल	m	d	h
Mars	0	12	6
Rahu	1	1	12
Jupiter	0	28	0
Saturn	1	3	6
Mercury	0	29	18
Ketu	0	12	6
Venus	1	5	0
Sun	0	10	12
Moon	0	17	12
Total	**7**	**0**	**0**

चंद्र MOON—Rahu राहु	m	d	h
Rahu	2	21	0
Jupiter	2	12	0
Saturn	2	25	12
Mercury	2	16	12
Ketu	1	1	12
Venus	3	0	12
Sun	0	27	0
Moon	1	15	0
Mars	1	1	0
Total	**18**	**0**	**0**

अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर दशा तालिका–क्रमशः

चंद MOON—Jupiter गुरु	m	d	h
Jupiter	2	4	0
Saturn	2	16	0
Mercury	2	8	0
Ketu	0	28	0
Venus	2	20	0
Sun	0	24	0
Moon	1	10	0
Mars	0	28	0
Rahu	2	12	0
Total	**16**	**0**	**0**

चंद MOON—Saturn शनि	m	d	h
Saturn	3	0	6
Mercury	2	20	18
Ketu	1	3	6
Venus	3	5	0
Sun	0	28	12
Moon	1	17	12
Mars	1	3	6
Rahu	2	25	12
Jupiter	2	16	0
Total	**19**	**0**	**0**

चंद MOON—Mercury बुध	m	d	h
Mercury	2	12	18
Ketu	0	29	18
Venus	2	25	0
Sun	0	25	0
Moon	1	12	12
Mars	0	29	18
Rahu	2	16	12
Jupiter	2	8	0
Saturn	2	20	18
Total	**17**	**0**	**0**

चंद MOON—Ketu केतु	m	d	h
Ketu	0	12	6
Venus	1	5	0
Sun	0	10	12
Moon	0	17	12
Mars	0	12	6
Rahu	1	1	12
Jupiter	0	28	0
Saturn	1	3	6
Mercury	0	29	18
Total	**7**	**0**	**0**

चंद MOON—Venus शुक्र	m	d	h
Venus	3	10	0
Sun	1	0	0
Moon	1	20	0
Mars	1	5	0
Rahu	3	0	0
Jupiter	2	20	0
Saturn	3	5	0
Mercury	2	25	0
Ketu	1	5	0
Total	**20**	**0**	**0**

चंद MOON—Sun सूर्य	m	d	h
Sun	0	9	0
Moon	0	15	0
Mars	0	10	12
Rahu	0	27	0
Jupiter	0	24	0
Saturn	0	28	12
Mercury	0	25	12
Ketu	0	10	12
Venus	1	0	0
Total	**6**	**0**	**0**

MARS—SUB-PERIODS — 7 YEARS

MARS — Inter-Periods

चंद MARS—Mars मंगल	m	d	h
Mars	0	8	13.8
Rahu	0	22	1.2
Jupiter	0	19	14.4
Saturn	0	23	6.6
Mercury	0	20	19.8
Ketu	0	8	13.8
Venus	0	24	12.0
Sun	0	7	8.4
Moon	0	12	6.0
Total	**4**	**27**	**0.0**

चंद MARS—Rahu राहु	m	d	h
Rahu	1	26	16.8
Jupiter	1	20	9.6
Saturn	1	29	20.4
Mercury	1	23	13.2
Ketu	0	22	1.2
Venus	2	3	0.0
Sun	0	18	21.6
Moon	1	1	12.0
Mars	0	22	1.2
Total	**12**	**18**	**0.0**

चंद MARS—Jupiter गुरु	m	d	h
Jupiter	1	14	19.2
Saturn	1	23	4.8
Mercury	1	17	14.4
Ketu	0	19	14.4
Venus	1	26	0.0
Sun	0	16	19.2
Moon	0	28	0.0
Mars	0	19	14.4
Rahu	1	20	9.6
Total	**11**	**6**	**0.0**

चंद MARS—Saturn शनि	m	d	h
Saturn	2	3	4.2
Mercury	1	26	12.6
Ketu	0	23	6.6
Venus	2	6	12.0
Sun	0	19	22.8
Moon	1	3	6.0
Mars	0	23	6.6
Rahu	1	29	20.4
Jupiter	1	23	4.8
Total	**13**	**9**	**0.0**

चंद MARS—Mercury बुध	m	d	h
Mercury	1	20	13.8
Ketu	0	20	19.8
Venus	1	29	12.0
Sun	0	17	20.4
Moon	0	29	18.0
Mars	0	20	19.8
Rahu	1	23	13.2
Jupiter	1	17	14.4
Saturn	1	26	12.6
Total	**11**	**17**	**0.0**

चंद MARS—Ketu केतु	m	d	h
Ketu	0	8	13.8
Venus	0	24	12.0
Sun	0	7	8.4
Moon	0	12	6.0
Mars	0	8	13.8
Rahu	0	22	1.2
Jupiter	0	19	14.4
Saturn	0	23	6.6
Mercury	0	20	19.8
Total	**4**	**27**	**0.0**

अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर दशा तालिका–क्रमशः

मंगल MARS—Venus शुक्र	m	d	h
Venus	2	10	0
Sun	0	21	0
Moon	1	5	0
Mars	0	24	12
Rahu	2	3	0
Jupiter	1	26	0
Saturn	2	6	12
Mercury	1	29	12
Ketu	0	24	12
Total	**14**	**0**	**0**

मंगल MARS—Sun सूर्य	m	d	h
Sun	0	6	7.2
Moon	0	10	12.0
Mars	0	7	8.4
Rahu	0	18	21.6
Jupiter	0	16	19.2
Saturn	0	19	22.8
Mercury	0	17	20.4
Ketu	0	7	8.4
Venus	0	21	0.0
Total	**4**	**6**	**0**

मंगल MARS—Moon चंद्र	m	d	h
Moon	0	17	12
Mars	0	12	6
Rahu	1	1	12
Jupiter	0	28	0
Saturn	1	3	6
Mercury	0	29	18
Ketu	0	12	6
Venus	1	5	0
Sun	0	10	12
Total	**7**	**0**	**0**

RAHU—SUB-PERIODS — 18 YEARS

RAHU — Inter-Periods

राहु RAHU—Rahu राहु	m	d	h
Rahu	4	25	19.2
Jupiter	4	9	14.4
Saturn	5	3	21.6
Mercury	4	17	16.8
Ketu	1	26	16.8
Venus	5	12	0.0
Sun	1	18	14.4
Moon	2	21	0.0
Mars	1	26	16.8
Total	**32**	**12**	**0.0**

राहु RAHU—Jupiter गुरु	m	d	h
Jupiter	3	25	4.8
Saturn	4	16	19.2
Mercury	4	2	9.6
Ketu	1	20	9.6
Venus	4	24	0.0
Sun	1	13	4.0
Moon	2	12	0.8
Mars	1	20	9.6
Rahu	4	9	14.4
Total	**28**	**24**	**0.0**

राहु RAHU—Saturn शनि	m	d	h
Saturn	5	12	10.8
Mercury	4	25	8.4
Ketu	1	29	20.4
Venus	5	21	0.0
Sun	1	21	7.2
Moon	2	25	12.0
Mars	1	29	20.4
Rahu	5	3	21.6
Jupiter	4	16	19.2
Total	**34**	**6**	**0.0**

राहु RAHU—Mercury बुध	m	d	h
Mercury	4	10	1.2
Ketu	1	23	13.2
Venus	5	3	0.0
Sun	1	15	21.6
Moon	2	16	12.0
Mars	1	23	13.2
Rahu	4	17	16.8
Jupiter	4	2	9.6
Saturn	4	25	8.4
Total	**30**	**18**	**0.0**

राहु RAHU—Ketu केतु	m	d	h
Ketu	0	22	1.2
Venus	2	3	0:0
Sun	0	18	21.6
Moon	1	1	12.0
Mars	0	22	1.2
Rahu	1	26	16.8
Jupiter	1	20	9.6
Saturn	1	29	20.4
Mercury	1	23	13.2
Total	**12**	**18**	**0.0**

राहु RAHU—Venus शुक्र	m	d	h
Venus	6	0	0
Sun	1	24	0
Moon	3	0	0
Mars	2	3	0
Rahu	5	12	0
Jupiter	4	24	0
Saturn	5	21	0
Mercury	5	3	0
Ketu	2	3	0
Total	**36**	**0**	**0**

राहु RAHU—Sun सूर्य	m	d	h
Sun	0	16	4.8
Moon	0	27	0.0
Mars	0	18	21.6
Rahu	1	18	14.4
Jupiter	1	13	4.8
Saturn	1	21	7.2
Mercury	1	15	21.6
Ketu	0	18	21.6
Venus	1	24	0.0
Total	**10**	**24**	**0.0**

राहु RAHU—Moon चंद्रमा	m	d	h
Moon	1	15	0
Mars	1	1	12
Rahu	2	21	0
Jupiter	2	12	0
Saturn	2	25	12
Mercury	2	16	12
Ketu	1	1	12
Venus	3	0	0
Sun	0	27	0
Total	**18**	**0**	**0**

राहु RAHU—Mars मंगल	m	d	h
Mars	0	22	1.2
Rahu	1	26	16.8
Jupiter	1	20	9.6
Saturn	1	29	20.4
Mercury	1	23	13.2
Ketu	0	22	1.2
Venus	2	3	0.0
Sun	1	18	21.6
Moon	1	1	12.0
Total	**12**	**18**	**0.0**

अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर दशा तालिका–क्रमशः

गुरु JUPITER—Jupiter गुरु	m	d	h
Jupiter	3	12	9.6
Saturn	4	1	14.4
Mercury	3	18	19.2
Ketu	1	14	19.2
Venus	4	8	0.0
Sun	1	8	9.6
Moon	2	4	0.0
Mars	1	14	19.2
Rahu	3	25	4.8
Total	25	18	0.0

गुरु JUPITER—Saturn शनि	m	d	h
Saturn	4	24	9.6
Mercury	4	9	4.8
Ketu	1	23	4.8
Venus	5	2	0.0
Sun	1	15	14.4
Moon	2	16	0.0
Mars	1	23	4.8
Rahu	4	16	19.2
Jupiter	4	1	14.4
Total	30	12	0.0

गुरु JUPITER—Mercury बुध	m	d	h
Mercury	3	25	14.4
Ketu	1	17	14.4
Venus	4	16	0.0
Sun	1	10	19.2
Moon	2	8	0.0
Mars	1	17	14.4
Rahu	4	2	9.6
Jupiter	3	18	19.2
Saturn	4	9	4.8
Total	27	6	0.0

गुरु JUPITER—Ketu केतु	m	d	h
Ketu	0	19	14.4
Venus	1	26	0.0
Sun	0	16	19.2
Moon	0	28	0.0
Mars	0	19	14.4
Rahu	1	20	9.6
Jupiter	1	14	19.2
Saturn	1	23	4.8
Mercury	1	17	14.4
Total	11	6	0.0

गुरु JUPITER—Venus शुक्र	m	d	h
Venus	5	10	0
Sun	1	18	0
Moon	2	20	0
Mars	1	26	0
Rahu	4	24	0
Jupiter	4	8	0
Saturn	5	2	0
Mercury	4	16	0
Ketu	1	26	0
Total	32	0	0

गुरु JUPITER—Sun सूर्य	m	d	h
Sun	0	14	9.6
Moon	0	24	0.0
Mars	0	16	19.2
Rahu	1	13	4.8
Jupiter	1	8	9.6
Saturn	1	15	14.4
Mercury	1	10	19.2
Ketu	0	16	19.2
Venus	1	18	0.0
Total	9	18	0.0

गुरु JUPITER—Moon चंद्र	m	d	h
Moon	1	10	0
Mars	0	28	0
Rahu	2	12	0
Jupiter	2	4	0
Saturn	2	16	0
Mercury	2	8	0
Ketu	0	28	0
Venus	2	20	0
Sun	0	24	0
Total	16	0	0

गुरु JUPITER—Mars मंगल	m	d	h
Mars	0	19	14.4
Rahu	1	20	9.6
Jupiter	1	14	19.2
Saturn	1	23	4.8
Mercury	1	17	14.4
Ketu	0	19	14.4
Venus	1	26	0.0
Sun	0	16	19.2
Moon	0	28	0.0
Total	11	6	0.0

गुरु JUPITER—Rahu राहु	m	d	h
Rahu	4	9	14.4
Jupiter	3	25	4.8
Saturn	4	16	19.2
Mercury	4	2	9.6
Ketu	1	20	9.6
Venus	4	24	0.0
Sun	1	13	4.8
Moon	2	12	0.0
Mars	1	20	9.6
Total	28	24	0.0

SATURN—Sub-Periods — 19 Years

SATURN — Inter-Periods

शनि SATURN—Saturn शनि	m	d	h
Saturn	5	21	11.4
Mercury	5	3	10.2
Ketu	2	3	4.2
Venus	6	0	12.0
Sun	1	24	3.6
Moon	3	0	6.0
Mars	2	3	4.2
Rahu	5	12	10.8
Jupiter	4	24	9.6
Total	36	3	0.0

शनि SATURN—Mercury बुध	m	d	h
Mercury	4	17	6.6
Ketu	1	26	12.6
Venus	5	11	12.0
Sun	1	18	10.8
Moon	2	20	18.0
Mars	1	26	12.6
Rahu	4	25	8.4
Jupiter	4	9	4.8
Saturn	5	3	10.2
Total	32	9	0.0

शनि SATURN—Ketu केतु	m	d	h
Ketu	0	23	6.6
Venus	2	6	12.0
Sun	0	19	22.8
Moon	1	3	6.0
Mars	0	23	6.6
Rahu	1	29	20.6
Jupiter	1	23	4.8
Saturn	2	3	4.1
Mercury	1	26	12.5
Total	13	9	0.0

अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर दशा तालिका–क्रमशः

शनि SATURN—Venus शुक्र	m	d	h
Venus	6	10	0
Sun	1	27	0
Moon	3	5	0
Mars	2	6	12
Rahu	5	21	0
Jupiter	5	2	0
Saturn	6	0	12
Mercury	5	11	12
Ketu	2	6	12
Total	38	0	0

शनि SATURN—Sun सूर्य	m	d	h
Sun	0	17	2.4
Moon	0	28	12.0
Mars	0	19	22.8
Rahu	1	21	7.2
Jupiter	1	15	14.4
Saturn	1	24	3.6
Mercury	1	18	10.8
Ketu	0	19	22.8
Venus	1	27	0.0
Total	11	12	0.0

शनि SATURN—Moon चंद	m	d	h
Moon	1	17	12
Mars	1	3	6
Rahu	2	25	12
Jupiter	2	16	0
Saturn	3	0	6
Mercury	2	20	18
Ketu	1	3	6
Venus	3	5	0
Sun	0	28	12
Total	19	0	0

शनि SATURN—Mars मंगल	m	d	h
Mars	0	23	6.6
Rahu	1	29	20.4
Jupiter	1	23	4.8
Saturn	2	3	4.2
Mercury	1	26	12.6
Ketu	0	23	6.6
Venus	2	6	12.0
Sun	0	19	22.8
Moon	1	3	6.0
Total	13	9	0.0

शनि SATURN—Rahu राहु	m	d	h
Rahu	5	3	21.6
Jupiter	4	16	19.2
Saturn	5	12	10.8
Mercury	4	25	8.4
Ketu	1	29	20.4
Venus	5	21	0.0
Sun	1	21	7.2
Moon	2	25	12.0
Mars	1	29	20.4
Total	34	6	0.0

शनि SATURN—Jupiter गुरु	m	d	h
Jupiter	4	1	14.4
Saturn	4	24	9.6
Mercury	4	9	4.8
Ketu	1	23	4.8
Venus	5	2	0.0
Sun	1	15	14.4
Moon	2	16	0.0
Mars	1	23	4.8
Rahu	4	16	19.2
Total	30	12	0.0

MERCURY—Sub-Periods — 17 Years

MERCURY — Inter-Periods

बुध MERCURY—Mercury बुध	m	d	h
Mercury	4	2	19.8
Ketu	1	20	13.8
Venus	4	24	12.0
Sun	1	13	8.4
Moon	2	12	6.0
Mars	1	20	13.8
Rahu	4	10	1.2
Jupiter	3	25	14.4
Saturn	4	17	6.6
Total	28	27	0.0

बुध MERCURY—Ketu केतु	m	d	h
Ketu	0	20	19.8
Venus	1	29	12.0
Sun	0	17	20.4
Moon	0	29	18.0
Mars	0	20	19.8
Rahu	1	23	13.2
Jupiter	1	17	14.4
Saturn	1	26	12.6
Mercury	1	20	13.8
Total	11	27	0.0

बुध MERCURY—Venus शुक्र	m	d	h
Venus	5	20	0
Sun	1	21	0
Moon	2	25	0
Mars	1	29	12
Rahu	5	3	0
Jupiter	4	16	0
Saturn	5	11	12
Mercury	4	24	12
Ketu	1	29	12
Total	34	0	0

बुध MERCURY—Sun सूर्य	m	d	h
Sun	0	15	7.2
Moon	0	25	12.0
Mars	0	17	20.4
Rahu	1	15	21.6
Jupiter	1	10	19.2
Saturn	1	18	10.8
Mercury	1	13	8.4
Ketu	0	17	20.4
Venus	1	21	0.0
Total	10	6	0.0

बुध MERCURY—Moon चंद	m	d	h
Moon	1	12	12
Mars	0	29	18
Rahu	2	16	12
Jupiter	2	8	0
Saturn	2	20	18
Mercury	2	12	6
Ketu	0	29	18
Venus	2	25	0
Sun	0	25	12
Total	17	0	0

बुध MERCURY—Mars मंगल	m	d	h
Mars	0	20	19.8
Rahu	1	23	13.2
Jupiter	1	17	14.4
Saturn	1	26	12.6
Mercury	1	20	13.8
Ketu	0	20	19.8
Venus	1	29	12.0
Sun	0	17	20.4
Moon	0	29	18.0
Total	11	27	0.0

अर्न्तदशा में प्रत्यन्तर दशा तालिका–क्रमशः

बुध MERCURY—Rahu राहु	m	d	h
Rahu	4	17	16.8
Jupiter	4	2	9.6
Saturn	4	25	8.4
Mercury	4	10	1.2
Ketu	1	23	13.2
Venus	5	3	0.0
Sun	1	15	21.6
Moon	2	16	12.0
Mars	1	23	13.2
Total	**30**	**18**	**0.0**

बुध MERCURY—Jupiter गुरु	m	d	h
Jupiter	3	18	19.2
Saturn	4	9	4.8
Mercury	3	25	14.4
Ketu	1	17	14.4
Venus	4	16	0.0
Sun	1	10	19.2
Moon	2	8	0.0
Mars	1	17	14.4
Rahu	4	2	9.6
Total	**27**	**6**	**0.0**

बुध MERCURY—Saturn शनि	m	d	h
Saturn	5	3	10.2
Mercury	4	17	6.6
Ketu	1	26	12.6
Venus	5	11	12.0
Sun	1	18	10.8
Moon	2	20	18.0
Mars	1	26	12.6
Rahu	4	25	8.4
Jupiter	4	9	4.8
Total	**32**	**9**	**0.0**

KETU—Sub-Periods — 7 Years

KETU — Inter-Periods

केतु KETU—Ketu केतु	m	d	h
Ketu	0	8	13.8
Venus	0	24	12.0
Sun	0	7	8.4
Moon	0	12	6.0
Mars	0	8	13.8
Rahu	0	22	1.2
Jupiter	0	19	14.4
Saturn	0	23	6.6
Mercury	0	20	19.8
Total	**4**	**27**	**0.0**

केतु KETU—Venus शुक्र	m	d	h
Venus	2	10	0
Sun	0	21	0
Moon	1	5	0
Mars	0	24	12
Rahu	2	3	0
Jupiter	1	26	0
Saturn	2	6	12
Mercury	1	29	12
Ketu	0	24	12
Total	**14**	**0**	**0**

केतु KETU—Sun सूर्य	m	d	h
Sun	0	6	7.2
Moon	0	10	12.0
Mars	0	7	8.4
Rahu	0	18	21.6
Jupiter	0	16	19.2
Saturn	0	19	22.8
Mercury	0	17	20.4
Ketu	0	7	8.4
Venus	0	21	0.0
Total	**4**	**6**	**0.0**

केतु KETU—Moon चंद	m	d	h
Moon	0	17	12.0
Mars	0	12	6.0
Rahu	1	1	12.0
Jupiter	0	28	0.0
Saturn	1	3	6.0
Mercury	0	29	18.8
Ketu	0	12	6.0
Venus	1	5	0.0
Sun	0	10	12.0
Total	**7**	**0**	**0.0**

केतु KETU—Mars मंगल	m	d	h
Mars	0	8	13.8
Rahu	0	22	1.2
Jupiter	0	19	14.4
Saturn	0	23	6.6
Mercury	0	20	19.8
Ketu	0	8	13.8
Venus	0	24	12.0
Sun	0	7	8.4
Moon	0	12	6.0
Total	**4**	**27**	**0.0**

केतु KETU—Rahu राहु	m	d	h
Rahu	1	26	7.2
Jupiter	1	20	12.0
Saturn	1	29	8.4
Mercury	1	23	21.6
Ketu	0	22	19.2
Venus	2	3	22.8
Sun	0	18	20.4
Moon	1	1	8.4
Mars	0	22	0.0
Total	**12**	**18**	**0.0**

केतु KETU—Jupiter गुरु	m	d	h
Jupiter	1	14	19.2
Saturn	1	23	4.8
Mercury	1	17	14.4
Ketu	0	19	14.4
Venus	1	26	0.0
Sun	0	16	19.2
Moon	0	28	0.0
Mars	0	19	14.4
Rahu	1	20	9.6
Total	**11**	**6**	**0.0**

केतु KETU—Saturn शनि	m	d	h
Saturn	2	3	4.2
Mercury	1	26	12.6
Ketu	0	23	6.6
Venus	2	6	12.0
Sun	0	19	22.8
Moon	1	3	6.0
Mars	0	23	6.6
Rahu	1	29	20.4
Jupiter	1	23	4.8
Total	**13**	**9**	**0.0**

केतु KETU—Mercury बुध	m	d	h
Mercury	1	20	7.2
Ketu	0	20	12.0
Venus	1	29	8.4
Sun	0	17	21.6
Moon	0	29	19.2
Mars	0	20	22.8
Rahu	1	23	20.4
Jupiter	1	17	8.4
Saturn	1	26	0.0
Total	**11**	**27**	**0.0**

अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर दशा तालिका–क्रमशः
शुक्र अन्तर्दशाएं अवधि = 20 वर्ष

शुक्र VENUS—Venus शुक्र

	m	d	h
Venus	6	20	0
Sun	2	0	0
Moon	3	10	0
Mars	2	10	0
Rahu	6	0	0
Jupiter	5	10	0
Saturn	6	10	0
Mercury	5	20	0
Ketu	2	10	0
Total	40	0	0

शुक्र VENUS—Sun सूर्य

	m	d	h
Sun	0	18	0
Moon	1	0	0
Mars	0	21	0
Rahu	1	24	0
Jupiter	1	18	0
Saturn	1	27	0
Mercury	1	21	0
Ketu	0	21	0
Venus	2	0	0
Total	12	0	0

शुक्र VENUS—Moon चंदमा

	m	d	h
Moon	1	20	0
Mars	1	5	0
Rahu	3	0	0
Jupiter	2	20	0
Saturn	3	5	0
Mercury	2	25	0
Ketu	1	5	0
Venus	3	10	0
Sun	1	0	0
Total	20	0	0

शुक्र VENUS—Mars मंगल

	m	d	h
Mars	0	24	12
Rahu	2	3	0
Jupiter	1	26	0
Saturn	2	6	12
Mercury	1	29	12
Ketu	0	24	12
Venus	2	10	0
Sun	0	21	0
Moon	1	5	0
Total	14	0	0

शुक्र VENUS—Rahu राहु

	m	d	h
Rahu	5	12	0
Jupiter	4	24	0
Saturn	5	21	0
Mercury	5	3	0
Ketu	2	3	0
Venus	6	0	0
Sun	1	24	0
Moon	3	0	0
Mars	2	3	0
Total	36	0	0

शुक्र VENUS—Jupiter गुरु

	m	d	h
Jupiter	4	8	0
Saturn	5	2	0
Mercury	4	16	0
Ketu	1	26	0
Venus	5	10	0
Sun	1	18	0
Moon	2	20	0
Mars	1	26	0
Rahu	4	24	0
Total	32	0	0

शुक्र VENUS—Saturn शनि

	m	d	h
Saturn	6	0	12
Mercury	5	11	12
Ketu	2	6	12
Venus	6	10	0
Sun	1	27	0
Moon	3	5	0
Mars	2	6	12
Rahu	5	21	0
Jupiter	5	2	0
Total	38	0	0

शुक्र VENUS—Mercury बुध

	m	d	h
Mercury	4	24	12
Ketu	1	29	12
Venus	5	20	0
Sun	1	21	0
Moon	2	25	0
Mars	1	29	12
Rahu	5	3	0
Jupiter	4	16	0
Saturn	5	11	12
Total	34	0	0

शुक्र VENUS—Ketu केतु

	m	d	h
Ketu	0	24	12
Venus	2	10	0
Sun	0	21	0
Moon	1	5	0
Mars	0	24	12
Rahu	2	3	0
Jupiter	1	26	0
Saturn	2	6	12
Mercury	1	29	12
Total	14	0	0

N.B. : The months of *Dasas* shown in this Ephemeris are of 30 days each and the year is of 360 days. दशा में प्रत्येक मास 30 दिन का लो वर्ष 360 दिन का जाने।

परिशिष्ट-4

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

लेखक ने इस पुस्तक के संपादन में जिन पुस्तकों का उपयोग किया उनकी सूची निम्न प्रकार है। अधिक जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक विज्ञ पाठक इन पुस्तकों का अवलोकन कर सकते हैं। इन पुस्तकों के लेखक, प्रकाशक व विक्रेता निश्चय ही धन्यवाद के पात्र हैं, जो इस दिव्य ज्ञान के प्रचार प्रसार में संलग्न होकर समाज की भलाई कर रहे हैं।

क्र०	पुस्तक व लेखक का नाम	प्रकाशक
1.	वृहत् पाराशर होरा शास्त्रम् –डा० सुरेश चंद्र मिश्र	रंजन पव्लिकेशन्स 16 अन्सारी रोड़ नई दिल्ली–110002 Ph. 3278835
2.	जातक तत्त्वम् –डा० सुरेश चंद्र मिश्र	उपरोक्त
3.	जातकाभरणम् –श्री सीताराम झा	श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार कचोड़ी गली, वाराणसी–1
4.	ज्योतिष रत्नाकर –श्री देवकी नन्दन सिंह	मोतीलाल बनारसी दास यू.ए. बंगलो रोड़, जवाहर नगर दिल्ली–110007
5.	Gochar Phal Deepika –Dr. U.S. Pullippani	एल्फा पब्लिकेशन 2640, रोशनपुरा, नई सड़क दिल्ली–110006 Tel. : 3268053, 3275468
6.	भृगु संहिता –श्री राकेश शास्त्री	साधना पाकेट बुक्स 39, यू.ए. बँगलो रोड़ दिल्ली–110007

7.	फलित विकास –पंडित रामयल ओझा	रंजन पब्लिकेशन 16 अंसारी रोड़, दरियागंज दिल्ली–110002
8.	भाव मंजरी –आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ (व्याख्या डा० सुरेश चंद्र मिश्र)	उपरोक्त
9.	Practical Vedic Astrology –G.S. Agarwal	सागर पब्लिकेशन्स वेद मेन्शन, 72 जनपथ नई दिल्ली–110001 Tel. : 3320648
10.	The Prediction Book of Astrology	गौरव पब्लिशिंग हाउस 9265 गली नं० 6 मुलतानी ढांडा, पहाड़गंज नई दिल्ली–110055 Tel : 734247
11.	Systems Appraoch for interpreting Horoscopes —Prof. V.K. Choudhry M.B.A.	सागर पब्लिकेशन्स 72 जनपथ, वेद मेन्शन नई दिल्ली–110001 Tel. : 3320648
12.	Predictive Techniques & the application of Astrological Remedial Measures —Prof. V.K. Choudhary & K. Rajesh Choudhary	उपरोक्त
13.	Predictive Astrology and Financial Prosperity —Mahan Vir Tuli	ज्ञान सागर पब्लिकेशन्स सी–143, प्रीत विहार दिल्ली–110092
14.	जातक परिजात –गोपेश कुमार शास्त्री	मोतीलाल बनारसी दास

15. ज्योतिष में भवन वाहन और कीर्ति योग –डा० भोजराज द्विवेदी — डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा०) लि० X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेज–2, नई दिल्ली–110020 Tel. : 6841033, 682803, 6822804

16. सारावली–कल्याण वर्मा — रंजन पब्लिकेशन्स

17. वृहत् जातक –श्री केदार दत्त जोशी — मोती लाल बनारसी दास

18. Advanced Techniques of Astrological Predictions. —Editor K.N. Rao — भारतीय प्राच्य एवम् सनातन विज्ञान संस्थान, 4649/21, दरियागंज नई दिल्ली–110002

19. सर्वार्थ चिन्तामणि –जगन्नाथ भसीन — सागर पब्लिकेशन्स

20. योगिनी दशा –श्री राजीव झांजी व श्री एन. के. शर्मा — सागर पब्लिकेशन्स

इन पुस्तकों के अतिरिक्त Astrological Magzine, बाबाजी, Vedic Astrology News Letter (ICAS) Delhi Chapter के पुराने अंक तथा विविध ज्योतिषीय समारोह की स्मारिकाओं से सामग्री का चयन किया गया अथवा अन्य प्रकार से सहायता ली गई। लेखक सभी विद्वानों का हृदय से आभारी व कृतज्ञ है।

* * *

Bookkish.com Bookstore
UG-1, Madhu Vihar Market, IP Extn.,
Patparganj, Delhi - 110092., India.
9958138227

पुस्तक एक दृष्टि में

अध्याय	विवरण
1	दशाफल विचार के कपितय सूत्र दशा का प्रभाव जानने में उपयोगी है।
2-10	सूर्य, चंद्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु व शुक्र की दशाओं और अर्न्तदशाओं पर विचार किया गया है। इन ग्रहों के राशि प्रभाव पर भी चर्चा हुई है।
11	ग्रह दशा विशिष्ट फलम् में उच्च राशि, मूल त्रिकोण, स्वराशि या मित्र राशि में स्थित ग्रह की दशा के विशेष फल के बाद भावेश फल पर विचार हुआ है। वक्री ग्रह की दशा के दुष्परिणाम से बचने के लिए सुझाव दिए हैं।
12-20	गोचर स्कंध में सूर्य से केतु पर्यन्त सभी नौ ग्रहों का गोचर फल बताया गया है।
21	गोचर ग्रह वेध फलम् के अन्तर्गत वेध का महत्त्व, नक्षत्र वेध तथा शनि की ढैय्या और साढ़ेसाती पर विस्तार से चर्चा हुई है।
22	महत्त्वपूर्ण ग्रहों का गोचर फल में दशमेश का गोचर आजीविका को कैसे प्रभवित करता है तथा कारक ग्रह कारक भाव में आने पर कैसे शुभत्व बढ़ाता है, इसकी चर्चा हुई है।
23	अष्टग वर्ग का उपयोग में छोटी व महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान देकर सुख समृद्धि बढ़ाने पर विचार हुआ है।
24-25	योगिनी दशा और उसके प्रयोग में योगिनी दशा के फल और उसके उपयोग पर विस्तार से चर्चा हुई है।
26-28	योगिनी और विंशोत्तरी का जन्म कुण्डली, वर्ग कुण्डली तथा वर्ष कुण्डली में प्रयोग कर घटना की पुष्टि करें इस पर विचार हुआ है।
29	राशि दशा फल में शुभ या अशुभ समय की पहचान पर जानकारी दी गई है।
30	घटना का समय और स्वरूप निर्धारण के लिए कुण्डली में छिपी संभावना, क्षमता व सामर्थ्य दशा क्रम तथा गोचर का प्रयोग कैसे करें, इस पर उदाहरण सहित चर्चा हुई है।
31	अशुभ दशा के उपचार में मंत्र व दान बताने के बाद विद्वानों के अनुभूत प्रयोगों पर चर्चा हुई है।

(इस पुस्तक में लगभग 50 कुण्डलियों पर विचार हुआ है।)

ALPHA
एल्फा पब्लिकेशन
2640 रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली-110006

ISBN: 81-7948-016-X
Rs. 250.00